इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

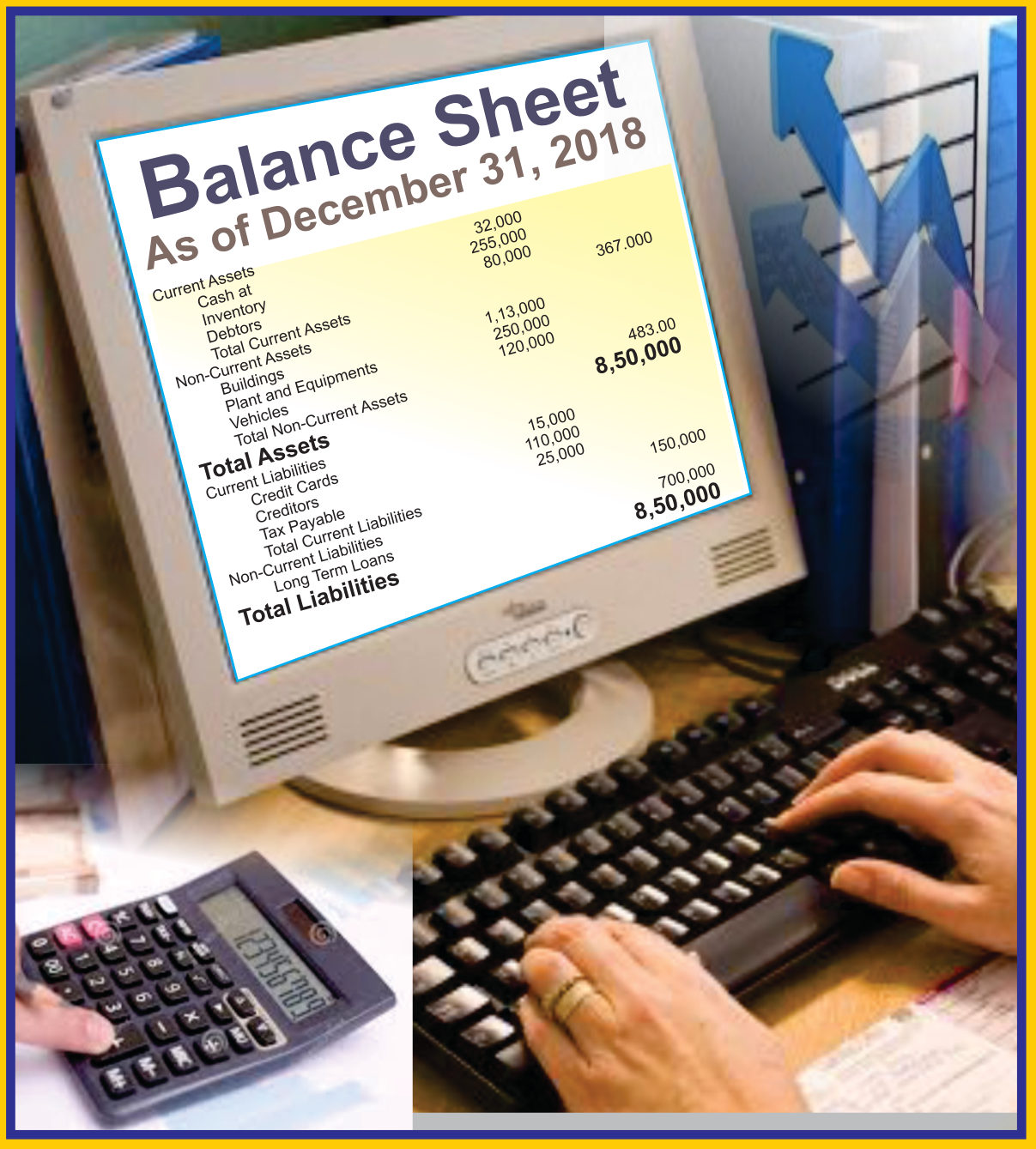

अवक्रय लेखा तथा अंतर्देशीय शाखाएँ 4

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

खंड

4

अवक्रय लेखा तथा अंतर्देशीय शाखाएँ

इकाई 11
अवक्रय लेखा-I 5

इकाई 12
अवक्रय लेखा-II 30

इकाई 13
ब्रांच लेखा-I 68

इकाई 14
ब्रांच लेखा-II 93

कार्यक्रम डिजाइन समिति – बी.कॉम (सी.बी.सी.एस.)

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. आर.पी. हुडा
पूर्व कुलपति, एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रो. बी.आर. अनंथन
रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगाँव, कर्नाटक

प्रो. आई. वी. त्रिवेदी
पूर्व कुलपति, एम.एल. सुखादिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. पुरुषोत्तम राव (सेवानिवृत्त)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. डी.पी.एस. वर्मा (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के.वी. भानुमूर्ति (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. कविता शर्मा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. खुर्शीद अहमद बट
डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

प्रो. डेवब्रत्ता मित्रा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय,डार्जिलिंग

प्रो. आर.के. (सेवानि.)
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम डिजाइन समिति

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. ए.ए. अंसारी, जामिया मिलिया ईस्लामिया, दिल्ली

सुश्री सुरभि गुप्ता
विवेकानंदा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम निर्माण दल

लेखाविधि-II : **ई.सी.ओ.-14**

प्रो. सुनील कुमार द्वारा संशोधित इकाइयाँ 1, 2, 4, 5 व 6)
प्रो. एस. एन. महरोत्रा, बी.एच.यू., बनारस
प्रो. टी. पी. मैतीन, पटना विश्वविद्यालय, पटना
प्रो. आर. के. ग्रोवर, (सेवानिवृत्त), एस.ओ.एम.एस., इग्नू
श्री अभिताभ के. नाग, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कोलकता

प्रो. एम.एस.एस. राजू (पाठ्यक्रम समन्वयक)
प्रो. सुनील कुमार (संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)
प्रो. एन.वी. नरसिम्हम (संपादक)

अनुवाद

श्री एस. एन. शर्मा, सत्यवती कालेज, दिल्ली
श्री के. के. खन्ना, जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली
प्रो. आर.के. ग्रोवर, (सेवानिवृत्त), एस.ओ.एम.एस., इग्नू
श्री रामतप पांडेय

सामग्री निर्माण

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2019
©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019
ISBN : 978-93-89499-43-8
सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059
मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 4 अवक्रय लेखा तथा अंतर्देशीय शाखाएँ (Hire Purchase and Inland Branches)

किश्तों में भुगतान के आधार पर वस्तुओं को बेचना आजकल आम बात हो गई है। इसके दो रूप हो सकते हैं : (i) अवक्रय प्रणाली या (ii) किश्तों में भुगतान प्रणाली। इन दोनों ही स्थितियों में विक्रेता द्वारा ली जाने वाली कीमत संबंधित वस्तु की नकद कीमत से अधिक होती है क्योंकि इसके अंतर्गत ब्याज की वह राशि भी शामिल होती है जो भुगतान के स्थगन के लिए दी जाती है। इसलिए लेखा पुस्तकों में ऐसे लेन–देनों का रिकार्ड करते समय ब्याज की राशि को ध्यान में रखना होता है। ऐसे क्रय–विक्रय से संबंधित सभी लेन–देनों का रिकार्ड करने के लिए लेखाकारों ने समुचित प्रणालियां विकसित की हैं। इस खंड में चार इकाइयां हैं जिनमें आप उन लेखा प्रणालियों के संबंध में पढ़ेंगे जिनके अंतर्गत क्रेताओं और विक्रेताओं की पुस्तकों में इन लेन–देनों को रिकार्ड किया जाता है।

इकाई 11 में अवक्रय प्रणाली के स्वरूप, उसकी विधिक स्थिति तथा क्रेता और विक्रेता की पुस्तकों में ऐसे अवक्रय लेन–देनों का लेखाकरण जिनका संबंध उन बेची गई वस्तुओं के विक्रय से है जिनका मूल्य बहुत अधिक होता है।

इकाई 12 में अवक्रय करार के अंतर्गत क्रेता द्वारा भुगतान में चूक और विक्रेता द्वारा वस्तुओं के पुनर्ग्रहण के लेखाकरण के संबंध में बताया गया है। इसमें किश्त भुगतान प्रणाली के अंतर्गत खरीदी गई वस्तुओं से संबंधित लेन–देनों के लेखाकरण का विवेचन किया गया है। इसमें अवक्रय पर बेची गई कम मूल्य वाली वस्तुओं के लेन–देन से संबंधित मूल रिकार्ड को रखने की प्रणाली का स्पष्टीकरण किया गया है। इसमें उस प्रणाली का भी विवेचन किया गया है जो ऐसे व्यवसाय में लाभ या हानि का पता लगाने के लिए काम में लाई जाती है।

इकाई 13 में आश्रित ब्रांचों, जो पूर्ण रूप से अलग हिसाब–किताब नहीं रखती हैं, की लेखा विधि के संबंध में चर्चा की गयी है।

इकाई 14 में स्वतंत्र ब्रांचों, जो अलग से पूरा हिसाब–किताब रखती हैं, की लेखा विधियों को स्पष्ट किया गया है।

इकाई 11 अवक्रय लेखा-I

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अवक्रय करार की प्रकृति

11.3 विधिक स्थिति

- 11.3.1 परिभाषा
- 11.3.2 अवक्रय करार की विशेषताएं
- 11.3.3 अवक्रेता के अधिकार

11.4 ब्याज/नकद मूल्य ज्ञात करना

- 11.4.1 ब्याज की राशि ज्ञात करना
- 11.4.2 कुल नकद मूल्य ज्ञात करना

11.5 अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा

- 11.5.1 जब परिसम्पत्ति कुल नकद मूल्य पर रिकॉर्ड की जाती है
- 11.5.2 जब परिसम्पत्ति के नकद मूल्य के भुगतान किए गये भाग पर रिकॉर्ड की जाती है

11.6 विक्रेता की पुस्तकों में लेखा

11.7 सारांश

11.8 शब्दावली

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.10 स्व–परख प्रश्न/अभ्यास

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- अवक्रय्र करार की परिभाशा कर सकें;
- अवक्रय करार की कानूनी स्थिति का वर्णन कर सकें;
- अवक्रय करार के संबंघ में ब्याज तथा नकद माल का परिकलन कर सकें; और
- अवक्रेता तथा विक्रेता दोनों की पुस्तकों में मूल लेखा प्रविष्टियां कर सकें।

11.1 प्रस्तावना

जब माल बेचा जाता है तब क्रेता या तो मूल्य का पूरा भुगतान तुरन्त कर सकता है अथवा उसे स्थगित कर सकता है। जब भुगतान स्थगित किया जाता है तो मूल्य का भुगतान मासिक, त्रैमासिक अथवा वार्षिक किश्तों में किया जा सकता है। जब वस्तु का मूल्य किश्तों में दिया जाता है तो दी गई कुल राशि नकद मूल्य वाली राशि से अधिक होती

है। राशि का यह आधिक्य ब्याज तथा जोखिम के लिए मुआवजा होता है। भुगतान को किश्तों में देने की यह व्यवस्था विक्रेता और क्रेता दोनों के लिये लाभप्रद है। इसके द्वारा विक्रेता अपने माल की बिक्री बढ़ा सकता है और क्रेता अपने सीमित साधनों से महंगी वस्तुएं भी खरीद सकता है। आस्थगित भुगतान की दो पद्धतियां हैं: (i) अवक्रय पद्धति (Hire Purchase System), तथा (ii) किश्तों में भुगतान की पद्धति (Instalment Payment System)। इस इकाई में आप अवक्रय पद्धति के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे तथा उससे संबंधित लेखा प्रविष्टियां करना सीखेंगे।

11.2 अवक्रय करार की प्रकृत्ति

अवक्रय करार एक ऐसा करार है जिसके अंतर्गत क्रेता माल की सुपुर्दगी उसके मूल्य को निश्चित किश्तों में भुगतान करने का वचन देकर लेता है तथा प्रत्येक किश्त को माल के प्रयोग के लिये किराये की तरह मानता है। वास्तव में अवक्रय करार में निम्नलिखित शर्तें होती हैं:

1. माल के स्वामी द्वारा अवक्रेता को माल की सुपुर्दगी दी जायेगी;
2. मूल्य का भुगतान किश्तों में किया जायेगा;
3. प्रत्येक किश्त किराये की तरह मानी जायेगी ताकि अगर आखिरी किश्त तक के भुगतान में भी चूक हो जाये तो विक्रेता, अवक्रेता की किसी भी रूप में क्षतिपूर्ति किये बिना, माल को वापस लेने का अधिकारी हो सके; और
4. यदि सारी किश्तों का भुगतान कर दिया जाता है और अन्य शर्तें पूरी हो जाती हैं तो माल का स्वामित्व क्रेता को हस्तांतरित हो जायेगा।

इस प्रकार अवक्रय की स्थिति में, विक्रेता माल की केवल सुपुर्दगी देता है, वह माल का स्वामित्व तब तक अपने पास रखता है जब तक अन्तिम किश्त का भुगतान न कर दिया जाये। दूसरे शब्दों में, अवक्रेता माल का स्वामी नहीं होता, वह तो केवल माल का प्रयोग करने वाला है। यदि वह किसी भी किश्त का भुगतान करने में असफल रहता है तो विक्रेता अपना माल वापस ले लेगा। उसके अलावा, विक्रेता अवक्रेता (hire purchaser or hirer) से प्राप्त हुई राशि वापस नहीं करेगा। ऐसी राशि को माल का किराया मान लिया जायेगा। इसलिये अवक्रेता के पास अंतिम किश्त का भुगतान करने तक विकल्प होता है कि वह उस विशेष वस्तु को खरीदे या न खरीदे।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अवक्रय पद्धति के अंतर्गत अवक्रेता द्वारा चुकाया गया मूल्य, नकद मूल्य से हमेशा अधिक होता है। इसका कारण यह है कि अवक्रय मूल्य में नगद मूल्य के अलावा निम्नलिखित मदें भी शामिल होती हैं :

i) भुगतान स्थगित किए जाने के लिये ब्याज,

ii) विक्रेता द्वारा उठाये गये जोखिम के लिये भुगतान, और

iii) रजिस्ट्री, बीमा और माल की सुपुर्दगी देने आदि पर व्यय।

11.3 विधिक स्थिति

11.3.1 परिभाषा

अवक्रय अधिनियम 1972 की धारा 2(c) के अनुसार अवक्रय करार वह करार है जिसके अन्तर्गत माल किराये पर दिया जाता है और अवक्रेता के पास करार की शर्तों के अनुसार

माल को खरीदने का विकल्प होता है और इसमें एक करार शामिल होता है जिसके अन्तर्गत :

i) माल के स्वामी द्वारा माल का कब्जा किसी व्यक्ति को इस शर्त पर दिया जाता है कि वह व्यक्ति निश्चित राशि का भुगतान आवधिक किश्तों (periodical instalments) में करेगा;

ii) अन्तिम किश्त का भुगतान होने पर माल का स्वामित्व उस व्यक्ति के पास चला जाए; और

iii) वह व्यक्ति स्वामित्व के ऐसे हस्तांतरण से पहले, किसी भी समय उस करार को रद्द कर सकता है।

11.3.2 अवक्रय करार की विशेषताएँ

अवक्रय करार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

1. यह लिखित होना चाहिए और इस पर इसके सभी पक्षकारों के हस्ताक्षर होने चाहिए (धारा 3)

2. अवक्रय अधिनियम 1972 की धारा 4 के अनुसार करार में निम्नलिखित विवरण दिया जाना चाहिएः

   क) उस माल का अवक्रय मूल्य (hire purchase price) जिसके बारे में करार है;

   ख) माल का नकद मूल्य (cash price) यानि वह मूल्य जिस पर अवक्रेता माल को नकद भुगतान पर खरीद सकता है;

   ग) वह तिथि जिस पर करार शुरू हुआ माना जाएगा;

   घ) किश्तों की संख्या जिनके द्वारा अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जाना है, इनमें से प्रत्येक किश्त की राशि और देय तिथि वह तिथि निर्धारित करने की विधि जिस पर यह देय है, वह व्यक्ति जिसे यह देय है, तथा वह स्थान जहां पर यह देय है; और

   ड़) जिस माल के संबंध में करार किया गया है उसका ऐसी रीति से वर्णन जिससे कि उसे पहचाना जा सके।

ऊपर दी गई शर्तों के अलावा करार में उस राशि का पूरा विवरण जिसका भुगतान नकद किया जाता है या यदि कोई भुगतान चैक द्वारा किया जाना है तो उसका पूरा विवरण दिया जाना चाहिये।

11.3.3 अवक्रेता के अधिकार

अवक्रय करार के अनुसार अवक्रेता का माल को विक्रेता को वापस करने का अधिकार होता है। इसके अलावा अवक्रय अधिनियम अवक्रेता को निम्नलिखित अधिकार प्रदान करता है।

1. माल का स्वामी किराये के भुगतान में चूक के लिये, या किसी अनाधिकृत कार्य के लिये अथवा अभिव्यक्त शर्तों के भंग किए जाने के कारण करार को समाप्त नहीं कर सकता जब तक कि अवक्रेता को इस बारे में लिखित रूप में नोटिस न दिया गया हो। नोटिस की अवधि (i) जहां किराया साप्ताहिक या उससे कम अन्तराल पर देय है, एक सप्ताह होती है, और (ii) अन्य स्थितियों में यह दो सप्ताह होती है।

2. निम्नलिखित परिस्थितियों में विक्रेता को माल पर पुनः कब्जा पाने का अधिकार नहीं होगा जब तक कि न्यायालय द्वारा इसकी मंजूरी न दी गई हो :

   i) जहां अवक्रय मूल्य 15,000 रु. से कम है और आधे अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जा चुका है।

   ii) जहां अवक्रय मूल्य इससे अधिक है और तीन चौथाई अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जा चुका है।

   मोटर गाड़ियों की स्थिति में पुनः कब्जे का अधिकार समाप्त हो जायेगा यदि (i) अवक्रय मूल्य 5,000 रु. से कम है और आधी राशि का भुगतान किया जा चुका है, या (ii) अन्य स्थितियों में, (जहां अवक्रय मूल्य 5,000 रु. या उससे अधिक है) अवक्रय मूल्य के तीन चौथाई भाग का भुगतान किया जा चुका है। जहां अवक्रय मूल्य 15,000 रु. या उससे अधिक है वहां केन्द्रीय सरकार को इस सीमा को 9/10 तक बढ़ाने का अधिकार है।

3. खर्चे के लिए एक रुपये देकर अवक्रेता को माल के स्वामी से एक ऐसा विवरण प्राप्त करने का अधिकार होता है जिसमें अवक्रेता द्वारा (या उसकी ओर से) भुगतान की गयी राशि, वह राशि जो करार के अन्तर्गत देय हो गई है किन्तु अदत्त है (और उनकी सम्बद्ध तिथियाँ भी) तथा वह राशि जो करार के अन्तर्गत अभी देय नहीं हुई है (और उनकी तिथि तथा भुगतान की विधियां) दी हुई होती हैं।

4. यदि माल के पुनः कब्जे की तिथि एक अवक्रेता द्वारा भुगतान की गई राशि और पुनः कब्जे की तिथि पर माल का मूल्य, ये दोनों मिलाकर अवक्रय मूल्य से अधिक है तो यह अन्तर अवक्रेता को देय होता है। माल का मूल्य ज्ञात करने के लिये, माल के स्वामी या विक्रेता को माल के पुनः कब्जे के लिये, उसे स्टोर करने या उसकी मरम्मत कराने के लिये, उसके विक्रय के लिये और कर की बकाया राशि के भुगतान के लिये उचित खर्च घटाने का अधिकार होता है।

बोध प्रश्न क

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) माल के विक्रय के लिये अनुबन्ध या तो विक्रय हो सकता है या विक्रय करने का ..... हो सकता है।

   ii) अवक्रय विक्रय एक ..... करार है।

   iii) अवक्रय करार के अन्तर्गत माल का स्वामित्व कुछ ..... के पूरा होने पर ..... होता है।

   iv) अवक्रय करार के अन्तर्गत भुगतान ..... में किये जाते हैं।

   v) प्रत्येक किश्त का भुगतान ..... की तरह समझा जाता है।

   vi) यदि अवक्रेता अन्तिम किश्त देने में भी असफल होता है तो विक्रेता माल का ..... लेने का अधिकारी हो जायेगा।

   vii) विधिक दृष्टि से अवक्रेता करार ..... होना चाहिए।

   viii) अवक्रेता अन्तिम किश्त के भुगतान से पहले करार की गई राशि का विक्रेता को भुगतान करके करार को ..... करने का अधिकार होता है।

ix) एक अवक्रेता अवक्रय करार के अंतर्गत अपने .... तथा अपने हित का समनुदेशन (assignment) कर सकता है।

2. बताइये कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं अथवा **गलत** हैं।

i) अवक्रय करार एक विक्रय सौदा होता है।

ii) यदि अवक्रेता अन्तिम किश्त देने में असफल होता है तो पहले भुगतान की गई राशि को किराया माना जाता है।

iii) अवक्रय करार एक निष्पादित अनुबंध होता है और किश्त विक्रय एक निष्पादनीय अनुबंध होता है।

iv) यदि अवक्रेता देय तिथियों से पहले पूरा भुगतान करने का चयन करता है तो उसे छूट (rebate) मिलनी चाहिए।

v) यदि अवक्रेता केवल अन्तिम किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो विक्रेता माल का पुनः कब्जा नहीं ले सकता।

vi) अवक्रय अधिनियम 1972 आजकल लागू है।

11.4 ब्याज/नकद मूल्य ज्ञात करना

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जब माल अवक्रय पर बेचा जाता है तो विक्रेता द्वारा लिया गया मूल्य नकद मूल्य से हमेशा अधिक होता है। वास्तव में, अवक्रय मूल्य में ब्याज और आस्थगित भुगतान के जोखिम के लिए मुआवजा शामिल होते हैं। परन्तु लेखाकरण में इन दोनों मूल्यों के अन्तर को ब्याज के रूप में ही रिकार्ड किया जाता है। इस प्रकार अवक्रय मूल्य में निम्नलिखित मदें शामिल होती हैं :

1. नकद मूल्य, जो परिसम्पत्ति के क्रय के लिये पूंजीगत व्यय है, और

2. ब्याज जो आयगत (revenue) प्रकृति की मद है।

क्योंकि नकद मूल्य पूंजीगत प्रकृति का है और ब्याज आयगत प्रकृति का अतः लेखा पुस्तकों में इन दोनों को विभिन्न रीतियों से रिकार्ड किया जाएगा। इसलिये अवक्रय मूल्य को नकद मूल्य और ब्याज में विभक्त करना आवश्यक है। यह ध्यान रखिये कि करार पर हस्ताक्षर करने के बाद तुरंत किये गये भुगतान (down payment) में ब्याज शामिल नहीं होगा। दूसरी ध्यान रखने वाली बात यह है कि प्रत्येक किश्त में ब्याज की राशि समान नहीं होती। प्रत्येक किश्त के साथ यह घटती जाती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि ब्याज देय मूलधन की शेष राशि पर लिया जाता है, पूरी राशि पर नहीं । इसलिये उचित आवंटन के लिये नकद मूल्य, अवक्रय मूल्य और ब्याज की राशि जानना आवश्यक होता है।

11.4.1 ब्याज की राशि ज्ञात करना

ब्याज का परिकलन करते समय हमारे सामने निम्नलिखित दो स्थितियाँ आ सकती हैं :

अ) जब ब्याज की दर, कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों।

ब) जब कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों लेकिन ब्याज की दर नहीं दी गई हो।

ऊपर बतायी गई दोनों ही स्थितियों में ब्याज का परिकलन करना होता है। अब हम इन स्थितियों का एक–एक करके विचार करेंगे।

जब ब्याज की दर, कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों

इस स्थिति में प्रत्येक किश्त में शामिल ब्याज की राशि निकालने से पहले ब्याज की कुल राशि ज्ञात करना उपयोगी होगा। यह राशि अवक्रय मूल्य में से कुल नकद मल्य घटाने से ज्ञात हो जायेगी। इसके बाद प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए:

i) कुल नकद मूल्य में से तुरन्त भुगतान (down payment) की राशि घटाकर पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य निकालिये।

ii) पहली किश्त पर ब्याज निकालिये। यह पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य (outstanding cash price) पर दी हुई ब्याज की दर लगाकर ज्ञात किया जाता है। इस संबंध में किश्त की विधि ध्यान में रखना चाहिए अर्थात् किश्त वार्षिक है, अर्धवार्षिक या त्रैमासिक। प्रायः भारी उपकरणों की खरीद की स्थिति में किश्त वार्षिक होती है।

iii) पहली किश्त की राशि में से ऊपर (ii) में निकाली गई ब्याज की राशि घटाकर पहली किश्त में शामिल नकद मूल्य का भाग ज्ञात कीजिए।

iv) पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य में से पहली किश्त में शामिल नकद मूल्य घटाकर दूसरी किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य निकालिये यानि (i) – (iii)।

v) दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य पर ब्याज की दर लगाकर दूसरी किश्त पर ब्याज निकालिये।

बाद की किश्तों पर ब्याज की राशि इसी विधि से निकाली जा सकती है। यानि पहले देय किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य का परिकलन करके और इसके बाद इस राशि पर ब्याज की दर लगाकर। लेकिन अन्तिम किश्त पर ब्याज की राशि भिन्न तरीके से निकाली जाती है। **यह राशि अन्तिम किश्त की राशि में से अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य को घटाने से पता लग जाती है।** इसे अवक्रय मूल्य में शामिल की गई ब्याज की कुल राशि में से पिछली सभी किश्तों पर ब्याज की राशियों के योग को घटाकर भी मालूम किया जा सकता है। इस प्रकार निकाली गई ब्याज की राशि की जाँच अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य पर ब्याज की दर लगाकर भी की जा सकती है। इन दोनों में थोड़ा सा अन्तर होगा जो इस कारण हो सकता है कि अवक्रय मूल्य का निर्धारण ब्याज की सुनिश्चित राशि शामिल करके नहीं किया जाता। इसे प्रायः शून्यान्त अंकों (round figure) में निर्धारित किया जाता है। लेकिन यदि अन्तर की राशि बड़ी है तो आपको प्रत्येक किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य और ब्याज के सभी परिकलनों की जाँच करनी चाहिये। उदाहरण 1 ऊपर बतायी गई विधि से ब्याज का परिकलन करने में सहायक होगा।

उदाहरण 1

A Ltd. ने जनवरी 2016 को Z Ltd. से तुरन्त 8,000 रु. देकर एक मशीन अवक्रय खरीदी और आठ–आठ हजार रुपये की तीन वार्षिक किश्तें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को देने का करार किया। मशीन का नगद मूल्य 29,800 रु. है और विक्रेता 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लेता है। क्रेता द्वारा विक्रेता को प्रति वर्ष दी गई ब्याज की राशि का परिकलन कीजिये।

हल

कुल ब्याज = अवक्रय मूल्य–नगद मूल्य

अवक्रय मूल्य = तुरन्त नगद भुगतान. + किश्तें

= 8,000 रु.. + 3(8,000) रु.

= 8,000 रु.. + 24,000 रु.

= 32,000 रु.

नगद मूल्य = 29,800 रु.

अतः कुल ब्याज = 32,000 रु. – 29,800 रु. = 2,200 रु.

अब हम प्रत्येक किश्त पर ब्याज का परिकलन निम्नलिखित रूप में कर सकते हैं।

i) **पहली किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

कुल नगद मूल्य – तुरंत भुगतान

= 29,000 रु. – 8,000 रु. = 21,000 रु.

ii) **पहली किश्त पर ब्याज**

अदत्त नगद मूल्य × ब्याज की दर

= 21,800 रु. × 5 / 100

= 1,090 रु.

iii) **पहली किश्त का नगद मूल्य**

किश्त – पहली किश्त पर ब्याज

= 8,000 रु. – 1,090 रु. = 6,910 रु.

iv) **दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

पहली किश्त के समय अदत्त मूल्य – पहली किश्त का नगद मूल्य

= 21,800 रु. – 6,910 रु.

= 14,890 रु.

v) **दूसरी किश्त पर ब्याज**

$$= \frac{14,890 \times 5}{100} = \text{Rs. } 745$$

vi) **दूसरी किश्त का नगद मूल्य**

= 8,000 रु. – 745 रु. = 7,255 रु.

vii) **तीसरी (अन्तिम) किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

= 14,890 रु. – 7,255 रु. = 7,635 रु.

viii) **अन्तिम किश्त पर ब्याज**

= किश्त – अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य

= 8,000 रु. – 7,635 रु.

= 365 रु.

विकल्पतः कुल ब्याज– सभी पिछले वर्षों के ब्याज का योग

= 2,200 रु. – (1,090 रु.. 745 रु.)

= 2,200 रु. – 1,835 रु.

= 365 रु.

जाँच

अन्तिम किश्त के साथ अदत्त नकद मूल्य $\times \frac{\text{ब्याज की दर}}{100}$

$= 7,635 \times \frac{5}{100}$

= Rs. 382

जैसा कि पहले बताया गया था, ऊपर परिकलित राशि वही नहीं है जो (viii) में परिकलित की गई थी। लेकिन अन्तर बहुत थोड़ा है यानि केवल 17 रु. (382 रु. – 365 रु.)।

(i) से (viii) तक के परिकलन में निम्नलिखित तालिका सहायक होगी।

	(1) कुल नकद मूल्य रु	(2) भुगतान की गयी किश्तें रु	(3) भुगतान किया गया ब्याज रु	(2-3) किश्तों का नगद मूल्य रु
कुल नकद मूल्य	29,800			
Less तुरन्त भुगतान	−8000	8000		8000
पहली किश्त के समय अदत्त राशि	21,800	8000	$(21,800 \times \frac{5}{100})$	(8,000-1,090)
Less Cash price of the Instalment	−6,910		1,090	6,910
दूसरी किश्त के समय अदत्त राशि	14890	8000	$(14,890 \times \frac{5}{100})$	(8,000-745)
Less Cash price of the Instalment	−7,255		745	7,255
तीसरी (अंतिम) किश्त के समय अदत्त राशि	7635	8,000	(8,000-7,635)	
	−7635		365	7,635

आपको ब्याज और नगद मूल्य का परिकलन ऊपर दी गई तालिका की सहायता से करना चाहिए। इससे आपका काम सरल हो जाता है।

जब कुल नगद मूल्य और किश्तें दी हुई हों लेकिन ब्याज की दर नही दी गई हो।

जब कुल नगद मूल्य, तुरन्त भुगतान की राशि और प्रत्येक किश्त की राशि दी हुई हो लेकिन ब्याज की दर नहीं दी गई हो तो ब्याज नीचे दी गई विधि द्वारा निकाला जायेगा।

i) अवक्रय मूल्य में से कुल नगद मूल्य घटाकर कुल ब्याज की राशि निकालिये।

ii) तुरन्त भुगतान की रकम घटाने के बाद प्रत्येक वर्ष के शुरू में अदत्त अवक्रय राशियों का परिकलन कीजिये।

iii) चरण (ii) में परिकलित अदत्त राशियों का अनुपात निकालिये। यदि प्रत्येक किश्त की राशि बराबर है तो अनुपात ज्ञात करना सरल होगा। उदाहरण के लिये, समान राशि की 4 किश्तें हैं तो अनुपात 4:3:2:1 होगा और यदि समान राशि की तीन किश्तें हैं तो अनुपात 3:2:1 होगा।

iv) इस अनुपात में कुल ब्याज को बांटिये और प्रत्येक किश्त पर ब्याज की रकम निकालिये। अब हम एक उदाहरण की सहायता से प्रत्येक किश्त में शामिल किए गए ब्याज के परिकलन की विधि को स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण 2

उदाहरण 1 से ब्याज की दर को छोड़कर अन्य संबद्ध आंकड़े लेकर, प्रत्येक किश्त में ब्याज की राशि का परिकलन निम्नलिखित रूप में करते हैं :

अवक्रय मूल्य 32,000 रु. [8,000 रु. + 3(8,000) रु.]

नकद मूल्य 29,800 रु

तुरन्त भुगतान 8,000 रु.

हल

कुल ब्याज = 32,000 रु. − 29,800 रु.

= 2,200 रु.

वर्ष के प्रारंभ में	अदत्त राशि (रु.)	अनुपात	ब्याज (रु.)
1	24,000(32,000 − 8000)	24(3)	$2,200 \times \frac{3}{6}$ = 1,100
2	16,000(24,000 − 8000)	16(2)	$2,200 \times \frac{2}{6}$ = 733
3	8,000(16,000 − 8000)	8(1)	$2,200 \times \frac{1}{6}$ = 367
	योग	48(6)	2,200

आप देखेंगे कि अनुपात की सहायता से प्रत्येक किश्त के लिये निकाली गई ब्याज की राशियाँ लगभग वही हैं जो आपने दी ब्याज की दर की सहायता से निकाली थी।

11.4.2 कुल नकद मूल्य ज्ञात करना

कभी–कभी कुल नकद मूल्य नहीं दिया होता। ऐसी स्थिति में हम अवक्रय लेन–देन का लेखाकरण नहीं कर सकते क्योंकि क्रेता की पुस्तकों में जिस राशि को पूंजी व्यय में परिणित करना है वह नगद मूल्य से अधिक नहीं हो सकती। नगद मूल्य के परिकलन की विभिन्न विधियां नीचे दी गई हैं:

अ) वार्षिकी तालिका की सहायता के बिना

ब) वार्षिकी तालिका की सहायता से

आइये अब इन दोनों विधियों पर विचार करें।

वार्षिकी तालिका की सहायता के बिना (Without the help of Annuity Table)

इस विधि के अन्तर्गत ब्याज का परिकलन अन्तिम किश्त से शुरू किया जाता है। मान लीजिये तीन किश्तें हैं। ब्याज पहले तीसरी किश्त पर निकाला जाएगा, फिर दूसरी किश्त पर और अन्त में पहली किश्त पर। तुरन्त भुगतान पर ब्याज नहीं निकाला जाता क्योंकि इसमें कोई ब्याज शामिल नहीं होता।

आपको पता है कि ब्याज नगद मूल्य की अदत्त राशि पर निकालना होता है। लेकिन क्योंकि यह ज्ञात नहीं है, इसलिये इसे अवक्रय मूल्य पर देय कुल राशि की सहायता से निकालना पड़ेगा। इसके लिये हमें पहले प्रत्येक किश्त में शामिल ब्याज की राशि निकालने के लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करना होगा और फिर ब्याज की इस राशि को कुल देय राशि में से घटाना होगा ताकि नगद मूल्य की अदत्त राशि निकाली जा सके।

$$\text{ब्याज} = \text{किश्त के समय कुल देय राशि} \times \frac{\text{ब्याज की दर}}{1 + \text{ब्याज की दर}}$$

अब हम देखेंगे कि प्रत्येक किश्त के समय देय नगद मूल्य कैसे निकाला जाएगा, यह मानते हुए कि तीन वार्षिक किश्तें हैं।

क) तीसरे साल की किश्त पर ब्याज निकालिये। इस किश्त में से ब्याज घटाइये। जो राशि आई वह तीसरी (अन्तिम) किश्त के समस्त अदत्त नगद मूल्य है।

ख) ऊपर (क) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को दूसरे वर्ष की किश्त की राशि में जोड़ दीजिये। इस प्रकार प्राप्त राशि पर ब्याज निकालिये और दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य ज्ञात करने के लिये दूसरे वर्ष के अन्त में कुल देय राशि में से इसे घटा दीजिये।

ग) ऊपर (ख) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को पहले वर्ष की किश्त की राशि में जोड़ दीजिये और इस प्रकार प्राप्त राशि पर ब्याज निकालिये। ब्याज की इस राशि को पहले वर्ष के अन्त में देय राशि में से घटा दीजिये। इस प्रकार जो राशि आएगी वह पहली किश्त के समय देय नगद मूल्य है।

घ) ऊपर (ग) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को तुरन्त भुगतान, यदि कोई है, में जोड़ दें। इस प्रकार जो योग आएगा वह कुल नगद मूल्य होगा। उदाहरण 3 में नगद मूल्य का परिकलन को समझने में सहायता करेगा।

उदाहरण 3

रेनूका ने एक मशीन 1 जनवरी, 2018 को 5,000 रु. में अवक्रय पर खरीदी, राशि निम्न प्रकार से देय है:

	(रु.)
तुरन्त भुगतान	930
पहले वर्ष के अन्त में (पहली किश्त)	1,426
दूसरे वर्ष के अन्त में (दूसरी किश्त)	1,804
तीसरे वर्ष के अन्त में (तीसरी किश्त)	840

ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष

मशीन का नगद मूल्य और प्रत्येक किश्त के साथ दिया गया ब्याज निकालिये।

हल

	राशि (रु .)	**ब्याज (रु .)**
तीसरी किश्त पर देय कुल राशि	840	$840 \times \frac{5}{105} = 40$
–ब्याज	– 40	
तीसरी किश्त का अदत्त मूल्य	800	
+ दूसरी किश्त	1,804	
दूसरी किश्त पर देय कुल राशि	2,604	$2,604 \times \frac{5}{105} = 124$
–ब्याज	– 124	
	2,480	
+ पहली किश्त	+1,426	
पहली किश्त पर देय कुल राशि	3,906	$3,906 \times \frac{5}{105} = 186$
– ब्याज	– 186	
Outstanding Cash Price of Ist Instalment	3,720	
तुरंत भुगतान	930	
कुल नगद मूल्य	4650	350

अतः कुल नकद मूल्य 4,650 रु. है। और कुल ब्याज 350 रु. है।

टिप्पणीः इस परिकलन की जाँच प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालने की उस विधि द्वारा की जा सकती है जिसका प्रयोग तब किया जाता है, जब नगद मूल्य, किश्तें, भुगतान और ब्याज की दर दी हुई हो।

वार्षिकी तालिका की सहायता से (With the help of Annuity Table)

यदि वार्षिकी तालिका उपलब्ध हो तो प्रत्येक किश्त के अन्तर्गत ब्याज की राशि निकालना सरल हो जाता है। वार्षिकी तालिका में ब्याज की दर पंक्तियों में (rows) में दी हुई होती है और वर्ष कालमों (columns) में दिये हुए होते हैं। तालिका की सहायता से प्रत्येक किश्त का वर्तमान मूल्य निकाला जा सकता है। इस प्रकार निकाले गये वर्तमान मूल्यों का योग यदि तुरन्त नकद भुगतान में जोड़ दिया जाए तो नकद मूल्य निकल आयेगा।

क) दी हुई ब्याज की दर देखो और वर्ष कालम में और तालिका में ब्याज और वर्ष की तत्स्थानी (corresponding) संख्या ज्ञात करो।

ख) यह संख्या 1 रु. का वर्तमान मूल्य है।

ग) 1 रु. के इस वर्तमान मूल्य की किश्त की राशि से गुणा करो।

घ) इस प्रकार जो राशि आएगी वह किश्त का वर्तमान मूल्य है। यही नगद मूल्य की राशि है जो किश्त में शामिल है।

च) इसी तरीके से सारी किश्तों का वर्तमान मूल्य निकालो।

छ) सभी किश्तों के वर्तमान मूल्यों के योग को तुरन्त भुगतान, यदि कोई है, में जोड़ दो। इस प्रकार जो राशि आएगी वह कुल नकद मूल्य है।

उदाहरण 4 वार्षिकी तालिका की सहायता से कुल नकद मूल्य निकालने की विधि को समझने में सहायक होगा।

उदाहरण 4

X Ltd. ने एक मशीन अवक्रय पर खरीदी। भुगतान निम्नलिखित रूप में किया गयाः

	रु.
नकद भुगतान	232.50
पहली किश्त	356.50
दूसरी किश्त	451
तीसरी किश्त	210

भुगतान क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे वर्ष के अन्त में किया जाता है। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है। वार्षिक तालिका के अनुसार 1 रु. का वर्तमान मूल्य 1 वर्ष, 2 वर्ष 3 वर्ष के लिये क्रमशः .9524 .9070 और .8639 है। मशीन का नकद मूल्य परिकलित करो।

	(1) किश्त (रु.)	(2) 1 रु. का वर्तमान मूल्य	(1×2) किश्त का वर्तमान मूल्य
तुरन्त भुगतान	232.50	1	232.50
पहली किश्त	356.50	.9524	339.53
दूसरी किश्त	451.00	.9070	409.08
तीसरी किश्त	210.00	.8619	189.42
योग	1,250.00		1,162.53

अतः कुल नकद मूल्य 1,162.53 रु. है।

बोध प्रश्न ख

1. निम्नलिखित स्थितियों में कुल ब्याज और प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालिये।

   i) एक मशीन का नकद मूल्य 349 रु. है। तुरन्त भुगतान 100 है और इसके बाद तीन वार्षिक किश्तें देनी हैं। प्रत्येक किश्त 100 रु. की है। ब्याज की दर 10% प्रति वर्ष है।

   .....

   .....

   .....

   ii) मशीन का नकद मूल्य 1,900 रु हैं। भुगतान 3 किश्तों में करना है, प्रत्येक किश्त 800 रु. की है।

   .....

   .....

   .....

2. निम्नलिखित स्थितियों में नकद मूल्य निकालिये।

   i) एक मशीन के मूल्य का भुगतान 4 किश्तों मे करना है। प्रत्येक किश्त 5,000 रु. की है पहली किश्त प्रांरभिक भुगतान के रूप में हैं। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है और किश्त का भुगतान वार्षिक है।

   .....

   .....

   .....

   ii) एक मशीन के मूल्य का भुगतान दस–दस हजार रु. की 5 वार्षिक किश्तों में किया जाता है। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है पहली किश्त का भुगतान पहले

वर्ष के अन्त में करना है। 5% ब्याज की दर पर 1 रु. का जो प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय है, 5 वर्ष के लिये वर्तमान मूल्य 4.3294 रु. है।

.....

.....

.....

11.5 अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा

अवक्रय करार के दो पक्षकार होते हैं, विक्रेता और अवक्रेता। दोनों पक्षकारों को लेखा पुस्तकें रखनी होती हैं, और उस विशेष अवक्रय से संबंधित सभी लेन–देनों की प्रविष्टियाँ करनी होती हैं। लेखाविधि समझने से पहले आईये, यह देखें कि लेखा पुस्तकों में अवक्रय संबंधी लेन–देन रिकार्ड करने के लिए किन सूचनाओं की आवश्यकता होती है। ये सूचनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. क्रय की तिथि तथा तुरन्त भुगतान की (down payment) राशि
2. वह तिथि जिन पर किश्तें देय होती हैं।
3. नकद मूल्य (cash price)
4. अवक्रय मूल्य (hire purchase price)
5. किश्तों की संख्या, प्रत्येक किश्त की राशि तथा भुगतान की विधि
6. ब्याज की दर
7. मूल्यह्रास की दर
8. मूल्यह्रास की विधि

आईये अब यह देखें कि अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा किस प्रकार किया जाता है। अवक्रेता द्वारा अवक्रय संबंधी लेन–देनों को रिकार्ड करने की दो विधियाँ हैं : 1) जब परिसम्पत्ति पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है, तथा ii) जब परिसम्पत्ति भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है। आईये अब हम इन विधियों का विस्तार से अध्ययन करें।

11.5.1 जब परिसम्पत्ति कुल नकद मूल्य पर रिकॉर्ड की जाती है

इस विधि में यह माना जाता है कि अवक्रेता का सारी किश्तों का भुगतान करने का इरादा है। यह भी विश्वास किया जाता है कि अवक्रय अचल सम्पत्ति खरीदने के लिये वित्त जुटाने का एक

तरीका मात्र है। यदि अवक्रेता इस विधि के अन्तर्गत कोई प्लांट और मशीनरी खरीदता है तो प्लांट और मशीनरी खाते को (स्थायी परिसम्पत्ति) नकद मूल्य की कुल राशि से डेबिट किया जाता है। और विक्रेता के खाते (Hire Vendor's Account) को क्रेडिट किया जाता है। ब्याज का परिकलन और उसका लेखा किश्त के देय होने पर ब्याज खाते को डेबिट करके और विक्रेता के खाते को क्रेडिट करके किया जाता है। भुगतान करते समय (चाहे वह तुरन्त भुगतान की राशि हो या किश्त) विक्रेता के खाते को डेबिट और बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है। इस प्रकार अवक्रेता की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1. **जब परिसम्पति क्रय की जाती है।**

Asset A/c	Dr.
To Hire Vendor A/c	
(With the total cash price)	

2. **तत्काल भुगतान के लिये**

Hire Vendor A/c	Dr.
To Bank A/c	

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिये**

Interest A/c	Dr.
To Hire Vendor	

4. **किश्त के भुगतान के लिये**

Hire Vendor	Dr.
To Bank A/c	

5. **लेखावर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिये**

Depreciation A/c	Dr.

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अन्तरित करने के लिए**

Profit and Loss A/c	Dr.
(Individually)	
To Interest A/c	
To Depreciation A/c	

प्रविष्टि संख्या 3, 4, 5 और 6 प्रत्येक किश्त के देय होने पर की जायेगी। उपर्युक्त जर्नल प्रविष्टियों की सहायता से हम परिसम्पत्ति खाता और विक्रेता का खाता आसानी से तैयार कर सकते हैं। उदाहरण 5 का अध्ययन कीजिये और नोट कीजिये कि अवक्रेता की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ किस प्रकार की गई हैं और लेजर खाते कैसे बनाये जाते हैं।

उदाहरण 5

ABC Ltd. ने XYZ Ltd. से एक मशीन 1.1.2016 को भुगतान की अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत खरीदी। इसके अन्तर्गत 2,412 रु. की तीन वार्षिक किश्तें दी जाएंगी। कोई तुरन्त भुगतान नहीं किया गया और नकद मूल्य 6,000 रु. है। ब्याज की दर 10% प्रति वर्ष होगी। मूल्यह्रास (depreciation) सरल रेखा विधि (straight line method) के आधार पर 20% प्रतिवर्ष की दर से लगाया जाएगा ABC Ltd.की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और आवश्यक खाते बनाइये।

हल

पहले हम सभी आवश्यक सूचनाएँ ज्ञात करते हैं।

1) क्रय की तिथि – जनवरी 2016 कोई तुरन्त भुगतान नहीं।

2) किश्तों के देय बनने की तिथि – 31 दिसम्बर, 2016, 2017 और 2018

3) खाता बंद करने की तिथि 31 दिसम्बर

4) नकद मूल्य – 6,000 रु.

5) अवक्रय मूल्य–2,412 रु. ×3 = 7,236 रु.

6) किश्तों की संख्या, राशि और प्रत्येक किश्त के भुगतान की विधि–3 किश्तें, प्रत्येक 2,412 रु. की, प्रत्येक किश्त वार्षिक है।

7) ब्याज की दर –10% प्रति वर्ष

8) मूल्यह्रास की दर – 20% प्रति वर्ष

9) मूल्यह्रास की विधि – सरल रेखा

Journal Entries in the Books of ABC Ltd

Date	Particulars	Amount (Dr.)	Amount (Cr.)
2016		Rs.	Rs.
Jan. 1	Machinery A/c Dr.	6,000	
	To XYZ Ltd.		6,000
	(Being a machine purchased on hire purchase)		
Dec.31	Interest A/c Dr.	600	
	To XYZ Ltd.		600
	(Being the charge of interest @ 10% on Rs. 6,000)		
Dec.31	Depreciation A/c Dr.	1,200	
	To Machinery A/c		
	(Being the charge of depreciation)		1,200
Dec.31	XYZ Ltd. A/c Dr.	2,412	
	To Bank A/c		2,412
	(Being the payment of annual instalment)		
Dec.31	Profit & Loss A/c Dr.	1,800	
	To Interest A/c		600
	To Depreciation A/c		1,200
	(Being the annual charges transferred to Profit & Loss A/c)		
2017			
Dec.31	Interest A/c Dr.	418	
	To XYZ Ltd.		418
	(Being the charge of interest @ 10% on Rs. 4,188)		
Dec.31	Depreciation A/c Dr.	1,200	
	To Machinery A/c		1,200
	(Being the annual charge of depreciation)		
Dec.31	XYZLtd. A/c Dr.	2,412	
	To Bank A/c		2,412
	(Being the payment of annual instalment)		

Dec.31	Profit & Loss A/c Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (Being the transfer of annual charges to Profit & Loss A/c)		1,618	 418 1,200
2018 Dec.31	Interest A/c Dr. To XYZ Ltd. (Being the charge of interest @ 10% on Rs. 2,194)		218	 218
Dec.31	Depreciation A/c Dr. To Machinery A/c (Being theannual charge of depreciation)		1,200	 1,200
Dec.31	XYZ Ltd. A/c Dr. To Bank A/c (Being the 3rd and final instalment paid)		2,412	 2,412
Dec.31	Profit & Loss A/c Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (Being the transfer of annual charges to Profit & Loss A/c)		1,418	 218 1,200

Ledger Accounts in the Books of ABC Ltd

Machinery Account

Dr.					Cr.
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan. 1	To XYZ Ltd	6,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	4,800
		6,000			6,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	4,800	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	3,600
		4,800			4,800
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	3,600	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	2,400
		3,600			3,600

XYZ LTD (Hire Vendor) Account

Dr.					Cr.
2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Machinery A/c	6,000
Dec.31	To Balance c/d	4,188	Dec. 31	By Interest A/c	600
		6,600			6,600
2017			2017		
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Balance b/d	4,188
Dec.31	To Balance c/d	2,194	Dec. 31	By Interest A/c	418
		4,606			4,606
2018			2018		
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Balance b/d	2,194
			Dec. 31	By Interest A/c	218
		2,412			2,412

Working Notes :

	Rs.
Cash Price	6,000
Add : Interest on Ist Instalment	600
	6,600
Less : Ist Instalment	2,412
Amount outstanding at the time of 2nd Instalment	4,188
Add : Interest on 2nd Instalment $(\frac{10}{100} \times 4,188)$	418
	4,606
Less : 2nd Instalment	2,412
Amount outstanding at the time of 3rd instalment	2,194
Add : Interest on 3rd Instalment	218
	2,412

11.5.2 जब परिसम्पत्ति के नकद मूल्य के भुगतान किये गये भाग पर रिकॉर्ड की जाती है

आप जानते हैं कि अवक्रय की स्थिति में माल के स्वामित्व का हस्तांतरण अवक्रेता को अन्तिम किश्त का भुगतान करने पर ही होता है। इसलिये अवक्रेता की पुस्तकों में परिसम्पत्ति खाते को उसके पूरे मूल्य पर तुरन्त डेबिट करना उचित नहीं है। अतः जब परिसम्पत्ति खरीदी जाती है तो जब तक कुछ तुरन्त भुगतान न किया जाये अवक्रेता की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी। जैसे–जैसे किश्तें देय होती हैं और उनका

भुगतान किया जाता है, पुस्तकों में प्रविष्टियाँ की जाती हैं। इस विधि के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियाँ इस प्रकार की जाती हैं।

1. **जब परिसम्पति क्रय की जाती है।**
   No Entry

2. **तत्काल भुगतान के लिये**
   Asset A/c Dr.
   To Bank A/c

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिये**
   Asset A/c Dr. (cash price part of instalment)
   Interest A/c Dr. (interest on instalment)
   To Hire Vendor

4. **किश्त के भुगतान के लिये**
   Hire Ventor A/c Dr.
   To Bank A/C

5. **लेखा वर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिये**
   Depreciation A/c Dr.
   To Asset A/c

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अन्तरित करने के लिये**
   Profit and Loss A/c Dr.
   To Interest A/c
   To Depreciation A/c

यह ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि परिसम्पत्ति (asset) खाते को भुगतान किये गये नकद मूल्य से डेबिट किया जाता है (पूरे नकद मूल्य से नहीं), **मूल्यह्रास पूरे नकद मूल्य पर लगाया जाता है।** बैलेंस शीट में परिसम्पत्ति खाते को डेबिट की गई नकद मूल्य की राशि में से **मूल्यह्रास** की रकम घटा कर दिखाया जायेगा।

उदाहरण 6 देखिये, इससे पता चलता है कि परिसम्पत्ति को वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड करने की स्थिति में लेखा कैसे किया जाता है।

उदाहरण 6

उदाहरण 5 की परिसम्पत्ति को वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य के भाग पर डेबिट करके हल कीजिये।

हलः

Journal Entries in the Books of ABC Ltd.

Date	Particulars		Amount (Dr.) Rs.	Amount (Cr.) Rs.
2016				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	1,812	
	Interest A/c	Dr.	600	
	To XYZ Ltd.			2,412
	(Being first instalment due)			

Dec. 31	XYZ Ltd Dr.		2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being first instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Asset A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,800	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			600
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			
2017				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	1,994	
	Interest A/c	Dr.	418	
	To XYZ Ltd.			
	(Being third instalment due)			2,412
Dec. 31	XYZ Ltd	Dr.	2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being third instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Machinery A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,618	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			418
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			
2018				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	2,194	
	Interest A/c	Dr.	218	2,412
	To XYZ Ltd.			
	(Being third instalment due)			
Dec. 31	XYZ Ltd	Dr.	2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being third instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Asset A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,418	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			218
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			

Note: Depreciation has been charged on straight line method @20% p.a. at the full cash price of Rs. 6,000.

11.6 विक्रेता की पुस्तकों में लेखा

जहां तक विक्रेता का संबंध है, अवक्रय एक साधारण विक्रय की भाँति होता है। अन्तर केवल यह है कि अवक्रय कि स्थिति में मूल्य का भुगतान स्थगित कर दिया जाता है, जो किश्तों में होता है। इसके लिये विक्रेता ब्याज लेता है। वह अवक्रेता के खाते को पूरे नकद मूल्य से डेबिट करता है। और विक्रय खाते को उसी राशि से क्रेडिट करता है। जब किश्त देय होती है तो ब्याज की राशि अवक्रेता के खाते को डेबिट की जाती है। प्राप्त की गई किश्त की राशि अवक्रेता के खाते को क्रेडिट की जाती है और बैंक खाते को डेबिट की जाती है। जो जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं वे निम्नलिखित हैं :

1. **जब माल बेचा जाता है।**
   Hire Purchaser A/c Dr.
   To Sales A/c (with full cash price)
2. **तत्काल भुगतान प्राप्त करते समय**
   Bank A/c Dr.
   To Hire Purchaser A/c
3. **किश्त पर देय ब्याज के लिये**
   Hire Purchaser A/c Dr.
   To Interest A/c
4. **किश्त की राशि की प्राप्ति के लिये**
   Bank A/c Dr.
   To Hire Purchaser A/c

उपर्युक्त प्रविष्टियों की सहायता से आप आसानी से अवक्रेता का खाता तथा ब्याज खाता बना सकते हैं। उदाहरण 7 का अध्ययन कीजिए और नोट कीजिए कि विक्रेता की पुस्तकों में लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 7

1 जनवरी, 2017 को IFB. Ltd. ने 1,886 रु. (नकद मूल्य) में एक मशीन JK. Ltd, से अवक्रय के अन्तर्गत प्राप्त की। तुरन्त भगुतान 400 रु. था। शेष रकम आठ–आठ सौ रु. की दो किश्तों में दी जानी थी। ब्याज की दर 6 प्रतिशत प्रति वर्ष थी। JK. Ltd.की पुस्तकों में लेजर खाते बनाइये। मूल्यह्रास सरल रेखा विधि के अनुसार 10 प्रतिशत प्रति वर्ष के हिसाब से लगाइये।

हलः

In the books of JK. Ltd.
IFB LTD.

Dr.					**Cr.**
2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.	To Sales A/c 1	1,886	Jan. 1	By Bank A/c	400
Dec. 31	To Interest A/c	89	Dec. 31	By Bank A/c (1st Inst.)	800
			Dec. 31	By Balance c/d	775
		1,975			1,975
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	775	Dec. 31	By Bank A/c (2nd Inst.)	800
Dec. 31	To Interest A/c	25			
		800			800

Interest Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	89	Dec. 31	By IFB Ltd.	89
		89			89
2018			2018		
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	25	Dec. 31	By IFB Ltd	25
		25			25

Working Note

Statement having calculation of hire purchases interest and the amount of principal in each instalment.

	Rs.	**Interest Rs.**	**Cash Price Rs.**
Cash Price	1,886	—	400
Less: Down Payment	400		
	1,486		
Add: Interest on 1st instalment to be paid on Dec. 31, 2017 @ 6%	89		
	1,575		
Less : 1st Instalment on Dec. 31, 2017	800	89	711
	775		
Add: Interest on 2nd instalment @ 6%	25		
	800		
Less: 2nd Instalment on Dec. 31, 2018	800	25	775

बोध प्रश्न ग

1 अवक्रय संबंधी लेन–देन का लेखा करने से पहले किन सूचनाओं की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

2 निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन **सही** है और कौन सा **गलत** ।

i) जब परिसम्पत्ति को पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड किया जाता है, तो अवक्रय अचल सम्पत्ति की वित्त व्यवस्था की एक विधि बन जाता है।

ii) जब परिसम्पत्ति को भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड किया जाता है तो पूरे नकद मूल्य से परिसम्पत्ति खाते को डेबिट और विक्रेता के खाते को क्रेडिट किया जाता है।

iii) अवक्रय पर बेचे गये माल के लिये विक्रेता पूरे नकद मूल्य से अवक्रेता के खाते को डेबिट करता है।

iv) जब परिसम्पत्ति भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है तो किश्त देय होने पर कोई प्रविष्टि नहीं की जाती।

v) अवक्रेता का खाता एक व्यक्तिगत खाता है।

11.7 सारांश

अवक्रय करार में क्रेता माल की सुपुर्दगी लेता है और मूल्य का किश्तों में भुगतान करने का करार करता है। इस करार के अन्तर्गत यद्यपि क्रेता माल का कब्जा ले लेता है, लेकिन उसे माल का स्वामित्व हस्तांतरित नहीं होता। स्वामित्व केवल अन्तिम किश्त के भुगतान कर देने के बाद ही हस्तांतरित हुआ माना जाता है। यदि अवक्रेता किसी किश्त का भुगतान करने में सफल होता है तो विक्रेता माल का कब्जा वापस ले सकता है।

अवक्रय मूल्य हमेशा नकद मूल्य से अधिक होता है, दोनो में अन्तर स्थागित भुगतान के लिये लिया गया ब्याज माना जाता है। यदि तीन सूचनाओं यानि अवक्रय मूल्य, नकद मूल्य और ब्याज में से दो दी हुई तो तीसरी सूचना एक सूत्र से मालूम की जा सकती है। यह सूत्र हैः

HP = CP + ब्याज (HP अवक्रय मूल्य है एवं CP नकद मूल्य)

अवक्रय करार के दोनों पक्षकार, यानि विक्रेता और अवक्रेता, अपनी–अपनी पुस्तकों में अवक्रय सौदों को रिकार्ड करते हैं। अवक्रेता दो तरह से लेखा कर सकता है : (i) परिसम्पत्ति पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है या (ii) परिसम्पत्ति वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है। अवक्रेता मुख्यतया दो खाते बनाता है यानि विक्रेता का खाता और परिसम्पत्ति खाता। दूसरी ओर, विक्रेता अवक्रेता का खाता और ब्याज खाता बनाता है।

11.8 शब्दावली

विक्रय का करार (agreement to sell): विक्रय अनुबंध में जब माल का स्वामित्व क्रेता को कुछ शर्तों के पूरा होने पर दिया जाता है तो ऐसे विक्रय को विक्रय करार कहते हैं।

नकद मूल्य (cash price): एकदम नकद विक्रय पर जो राशि देनी होती है।

तुरन्त भुगतान (down payment): अवक्रय करार के अन्तर्गत क्रय के समय किया गया पारंपरिक भुगतान।

किराया (hire charges): यदि अवक्रेता एक करार में अन्तिम किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो तब तक उसने जितनी राशि का भुगतान किया है वह परिसम्पत्ति के प्रयोग के लिये किराया मान ली जाएगी।

अवक्रय (hire purchase): एक विक्रय करार जिसके अन्तर्गत अवक्रेता माल की सुपुर्दगी लेता है और मूल्य का भुगतान किश्तों में तब तक करने का करार करता है जब तक कि पूरा भुगतान न कर दिया जाये और वह भुगतान को माल के प्रयोग के लिए किराया मानने का वचन देता है।

अवक्रेता (hire purchaser): एक अवक्रय अनुबंध में क्रेता।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 1. i) करार ii) विक्रय iii) शर्तों, हस्तांतरित, iv) किश्तों, v) किराये, vi) पुनः कब्जा, vii) लिखित, viii) समाप्त, ix) अधिकार, स्वामित्व

2. i) गलत ii) सही iii) गलत iv) सही v) गलत vi) गलत

ख) 1. कुल ब्याज = (25+17+9) = 51रु.
ii) कुल व्याज = (264+178+58) = 500 रु.

2. i) नकद मूल्य = 18,616 रु., ii) नकद मूल्य 43,294 रु.

ग) 2. i) सही ii) गलत iii) सही iv) गलत v) सही

11.10 स्व–परख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. अवक्रय करार की क्या विशेषताएं हैं ?
2. अवक्रय करार के अन्तर्गत अवक्रेता के अधिकारों का वर्णन कीजिये।
3. जब कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों तो आप ब्याज का परिकलन किस प्रकार करेंगे।

अभ्यास

1. नीचे दिये गये विवरण के आधार पर, अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत अवक्रेता और विक्रेता दोनों की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिये।

   अ) रमेश एंड कं. — अवक्रेता

   क्रय की तिथि – 1 जनवरी 2018, क्रय किया गया माल – ट्रक

   नकद मूल्य – 1,49,000 रु.।

   करार पर हस्ताक्षर करने पर किश्त – 40,000 रु.

   बाकी राशि तीन किश्तों में, प्रत्येक किश्त 40,000 रु. की,

   ब्याज की दर – 5%, मूल्यह्रास की दर – 10% घटते हुए शेष धन पर ।

   ब) सभी विवरण वहीं हैं जो (अ) में दिये गये हैं, केवल ब्याज की दर नहीं दी गयी है। स) सभी विवरण वही हैं जो ऊपर दिये गये हैं केवल नकद मूल्य नहीं दिया गया है।

2. हायर परचेज लि. ने अवक्रय पर एक कार खरीदी। 12,000 रु. सुपुर्दगी पर यानि 1.1.18 को देय थे और बाकी राशि प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय 12,000 रु. प्रति किश्त चार किश्तों में देय थी। विक्रेता हायर वेंडर लि. वार्षिक शेष पर 5% की दर से ब्याज लेने के लिए सहमत हुआ। कार का नकद मूल्य 54,551 रु. था। ह्रासित मूल्य पर 25% की दर से मूल्यह्रास लगाया जाना था। हायर परचेज लि. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये और लेजर खाते बनाइये।

Total Interest Rs. 5449. The written down value of the Car at the end of fourth year Rs. 17260.

3. दिनेश लि. ने अवक्रय पर एक मशीन राजेश लि. से 1.4.15 को खरीदी। मशीन का नकद मूल्य 25,000 रु. था। अनुबंध की तिथि पर 5,000 रु. का भुगतान करना था और बाकी राशि 4 वार्षिक किश्तों में देनी थी। प्रत्येक किश्त की राशि 5,000 रु. थी और साथ ही 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज भी देना था। किश्त प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को देय थी तथा ऐसी पहली किश्त 31.12.15 को देय हुई। मूल्यह्रास 10% की दर से मूल लागत पर लगाना है। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ और लेजर खाते दिखाइये।

Total Interest Rs. 2500, balance of machinery account on 1-1-2019 Rs. 15000/-. The written down value of the Car at the end

4. एक इंजीनियरिंग कम्पनी ने 1.1.16 को एक मशीन अवक्रय प्रणाली पर 3 साल की अवधि पर 846 रु. तुरन्त भुगतान के रूप में देकर खरीदी और आगे के 2,000 के वार्षिक भुगतान 31.12.16, 31.12.17 और 31.12.18 को देय थे। मशीन का नकद मूल्य 6,000 रु. था और विक्रेता कम्पनी को अदत्त शेष राशि पर 8% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लेना था। यह मानते हुए कि मशीन पर 10% प्रति वर्ष की दर से मूल्य ह्रास लगाया जाना था, अवक्रेता की पुस्तकों में उपयुक्त लेजर खाते दिखाइये। यह मान लीजिये कि प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय पूंजीकरण किया जाना था।

(Answer: Inerest total Rs. 846

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 12 अवक्रय लेखा-II

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 चूक तथा पुनर्ग्रहण

12.2.1 विक्रेता के अधिकार

12.2.2 स्वामी (विक्रेता) पर प्रतिबंध

12.3 चूक तथा पुनर्ग्रहण का लेखा

12.3.1 पूर्ण पुनर्ग्रहण

12.3.2 आंशिक पुनर्ग्रहण

12.4 किश्तों में भुगतान प्रणाली

12.5 किश्तों में भुगतान की प्रणाली के लिये लेखा

12.5.1 क्रेता की पुस्तकों में

12.5.2 विक्रेता की पुस्तकों में

12.6 अवक्रय पर बेचे गए मूल्य वाले माल का मूल रिकार्ड

12.7 लाभ–हानि का परिकलन

12.7.1 पुनर्ग्रहण किये गये माल का लेखा

12.7.2 अज्ञात राशियों का परिकलन

12.8 स्टॉक एवं देनदार विधि

12.9 सारांश

12.10 शब्दावली

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.12 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- अवक्रय अनुबंध के संबंध में चूक और पुनर्ग्रहण का अर्थ स्पश्ट कर सकें;
- विक्रेता तथा क्रेता दोनों की पुस्तकों में माल के पूर्ण और आंशिक पुनर्ग्रहण का लेखा कर सकें;
- किश्तों में भुगतान की प्रणाली की व्याख्या कर सकें तथा अवक्रय प्रणाली से इसका अंतर बता सकें;
- यदि कोई परिसंपत्ति किश्तों में भुगतान की प्रणाली के अंतर्गत खरीदी गयी है, तो उसकी लेखा प्रविष्टियाँ कर सकें;

- अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल के मूल रिकॉर्ड का उल्लेख कर सकें;
- अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर हुई लाभ–हानि के संबंध में प्रयोग होने वाले शब्दों की व्याख्या कर सकें;
- अवक्रय व्यापार खाते की सहायता से अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि का परिकलन कर सके;
- स्टॉक एवं देनदार विधि द्वारा अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि ज्ञात कर सकें।

12.1 प्रस्तावना

इकाई 11 में आपने अवक्रय अनुबंध की प्रकृति, उसकी कानूनी स्थिति तथा अवक्रय से संबंधित लेनदेनों के लेखे के संबंध में पढ़ा। जहाँ तक अवक्रय लेखा का संबंध है, अभी तक हमने एक ऐसी सरल स्थिति का वर्णन किया है जिसमें क्रेता ने सारी किश्तों का भुगतान कर दिया था तथा उसे स्वामित्व का हस्तांतरण हो गया। कभी–कभी अवक्रेता सारी किश्तों का भुगतान नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में विक्रेता को यह अधिकार होता है कि वह माल को वापस ले ले तथा दी हुई किश्तों को परिसंपत्ति के उपयोग के लिये दिया गया किराया मात्र मान ले। परंतु, व्यवहार में वह (विक्रेता) अवक्रेता के साथ कोई समझौता कर लेता है जिससे अवक्रेता को अधिक हानि न हो।

इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि किश्तों के भुगतान में चूक होने पर अवक्रेता तथा विक्रेता की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा किया जाता है। यहाँ इस बात का भी विवेचन है कि यदि परिसंपत्ति का क्रय अवक्रय पद्धति की बजाय किश्तों में भुगतान पद्धति के अंतर्गत किया गया हो, तो संबंधित लेन–देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

पिछली इकाईं में आपने अवक्रेता और विक्रेता दोनों की पुस्तकों में अवक्रय लेन–देन के लेखाकरण के बारे में पढ़ा। लेखाकरण की यह पद्धति अधिक विक्रय मूल्य वाले माल के अवक्रय सौदों से संबंधित है। व्यवहार में, कम मूल्य वाले माल जैसे फ्रिज, टी.वी., स्कूटर आदि भी अवक्रय पर बेचे जाते हैं। फुटकर व्यापारी बहुधा इन लेन–देनों का अलग रिकॉर्ड रखते हैं और उनसे होने वाली लाभ–हानि का अलग से परिकलन करते हैं। इस काम के लिये लेखा की एक विशेष विधि प्रयोग की जाती है। इस इकाई में हम इसी विधि पर विचार करेंगे तथा अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल के मूल रिकॉर्ड का भी उल्लेख करेंगे।

12.2 चूक तथा पुनर्ग्रहण (Default and Repossession)

चूक का अर्थ है कार्य करने, उपस्थित होने अथवा भुगतान करने में असफलता अर्थात् किसी दायित्व का निर्वाह करने में असफल होना। अवक्रय करार के अन्तर्गत अवक्रेता का दायित्व होता है कि वह सारी किश्तों का भुगतान करे ताकि उसे स्वामित्व का हस्तांतरण सुगमतापूर्वक हो जाये। यदि वह किसी किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो यह उसकी चूक (default) मानी जायेगी। ऐसी स्थिति में विक्रेता को यह कानूनी अधिकार होता है कि वह माल को वापस ले ले। माल की वापसी के इस कार्य को ही पुनर्ग्रहण (repossession) कहा जाता है। चूक होने की स्थिति में विक्रेता तथा अवक्रेता दोनों की कानूनी स्थिति बड़ी जटिल होती है। अवक्रय अधिनियम 1972 में इस मुद्दे को संहिताबद्ध किया गया था परन्तु इस अधिनियम को लागू नहीं किया गया जिससे आज भी कानूनी स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है।

इस अधिनियम के सम्बद्ध प्रावधान निम्नलिखित हैं।

12.2.1 विक्रेता के अधिकार

1. **विक्रेता को अवक्रय करार समाप्त करने का अधिकारः** करार में दी गयी शर्तों के अनुसार जब अवक्रेता किश्तों के भुगतान में एक से अधिक बार चूक करता है तब विक्रेता को यह अधिकार होगा कि वह लिखित सूचना दे कर करार को समाप्त कर दे।

2. **करार की समाप्ति पर अधिकारः** जब अवक्रय करार को समाप्त कर दिया जाता है तो विक्रेता, जो माल का स्वामी अभी भी है, को अधिकार होगा कि (i) वह अवक्रेता के परिसर में प्रवेश कर सके, (ii) पहले दिये गये किराये को अपने पास रख सके और बकाया किराये की वसूली कर सके, तथा (iii) माल की सुपुर्दगी न मिलने पर हर्जाना वसूल कर सके।

12.2.2 स्वामी (विक्रेता) पर प्रतिबंध

विक्रेता के उपरोक्त अधिकारों के साथ–साथ उस पर कुछ प्रतिबंध भी हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. **स्वामी द्वारा माल वापस ले लेने की स्थिति में अवक्रेता के अधिकारः** जब स्वामी अवक्रय करार के अन्तर्गत दिये गये माल का पुनर्ग्रहण कर लेता है तब अवक्रेता उस (स्वामी) से वह रकम वसूल कर सकता है जिससे अवक्रय मूल्य (hire purchase price) इन दो राशियों के पूर्ण योग से कम पड़ता है – (अ) अभिग्रहण की तिथि तक अवक्रय मूल्य के संबंध में दी गई राशियाँ तथा (ब) अभिग्रहण की तिथि पर माल का मूल्य।

2. **स्वामी के पुनर्ग्रहण के अधिकार पर प्रतिबंधः** जहां माल अवक्रय करार के अन्तर्गत दिया गया हो तथा अवक्रय मूल्य की कानूनी (statury) राशि का भुगतान कर दिया गया हो, वहां स्वामी अवक्रेता से माल के पुनर्ग्रहण के अधिकार को तब तक लागू नहीं कर सकता **जब तक कि उसे यह अधिकार किसी सक्षम अदालत के फैसले द्वारा प्राप्त न हुआ हो।**

12.3 चूक तथा पुनर्ग्रहण का लेखा

आप जानते हैं कि जब अवक्रेता किसी किश्त का भुगतान करने में असफल हो जाता है, तब विक्रेता माल वापिस ले सकता है। परिसम्पत्ति के लिए पहले किये गए भुगतान के भाग की राशि को किराया मान लिया जाता है। जहां तक माल के पुनर्ग्रहण का सम्बन्ध है, विक्रेता या तो सारा माल वापिस ले सकता है या उसका कुछ भाग। आईये अब हम उन प्रविष्टियों का विवेचन करें जो (i) पूर्ण पुनर्ग्रहण, तथा (ii) आंशिक पुनर्ग्रहण की स्थिति में की जाएंगी।

12.3.1 पूर्ण पुनर्ग्रहण (Complete Repossession)

जब अवक्रेता किश्त का भुगतान नहीं करता, तो विक्रेता माल का स्वत्व वापिस ले सकता है। यदि विक्रेता सम्पूर्ण माल का स्वत्व वापिस ले लेता है, तो उसे पूर्ण पुनर्ग्रहण कहते हैं। इसका अर्थ है। कि विक्रेता अपनी पुस्तकों में अवक्रेता का खाता बन्द कर देगा। इसके लिए की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियाँ निम्नलिखित हैं।

विक्रेता की पुस्तकों में

1. चूक की तिथि तक समस्त प्रविष्टियाँ (भुगतान की प्रविष्टि के अतिरिक्त) पहले की भांति की जाती हैं।

2. **अवक्रेता का खाता बन्द करने के लिए :**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Hire Purchaser
(Transfer of balance)

3. **पुनर्ग्रहीत माल की मरम्मत और उस पर किये गए अन्य खर्चों के लिए**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Cash A/c
(Repairs and other expenses)

4. **पुनर्ग्रहीत माल की दुबारा बिक्री के लिए**

Cash A/c Dr.
To Goods Repossessed A/c

5. **पुनर्ग्रहीत माल खाते में बचा हुआ कोई भी शेष लाभ अथवा हानि होता है, जिसे अन्ततः लाभ–हानि खाते को अंतरित कर दिया जाता है। लाभ की स्थिति में प्रविष्टि इस प्रकार होगीः**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

हानि की स्थिति में प्रविष्टि इसके विपरीत होगी।

अवक्रेता की पुस्तकों में

1. **भुगतान की प्रविष्टि के विपरीत, मूल्यह्रास के लिए की जाने वाली प्रविष्टि सहित समस्त प्रविष्टियाँ पहले के समान चूक की तिथि तक की जाएंगी।**

2. **विक्रेता का खाता बन्द करने के लिए**

Hire Vendor A/c Dr.
To Asset A/c

3. **परिसम्पत्ति खाता बन्द करने के लिए**

Profit & Loss A/c Dr.
To Asset A/c

सामान्यतः अवक्रेता को हानि होती है, अतः माल के अभिग्रहण पर होने वाली हानि के लिए उपर्युक्त प्रविष्टि की जाती है। लाभ की स्थिति में इसके विपरीत प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण 1 पर दृष्टि डालिये तथा देखिये कि पूर्ण पुनर्ग्रहण की स्थिति में प्रविष्टियाँ किस प्रकार की जाती हैं तथा पुस्तकों को कैसे बन्द किया जाता है।

उदाहरण 1

1 जनवरी 2017 को ए.बी.सी.लि. ने कुछ प्लांट और मशीनें, जिनका मूल्य 28,000 रु. था, एक्स.वाई. जैड लि. को अवक्रय पर बेचा। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 7,500 रु. तत्काल नकद, तथा तीन वर्षों तक प्रत्येक वर्ष के अन्त में 7,500 रु. प्रत्येक का तीन किश्तें । ब्याज की दर 5% वार्षिक थी, तथा परिसम्पत्ति के लिए मूल्यह्रास की दर 10% वार्षिक थी।

एक्स.वाई.जेड. लि. ने नकद 7,500 रु. तथा प्रथम किश्त का भुगतान तो कर दिया, परन्तु दूसरी किश्त का भुगतान नहीं कर सका। परिणामस्वरूप ए.बी.सी. लि. ने माल का पुनर्ग्रहण कर लिया। ए. बी.सी. लि. ने मरम्मत पर 300 रु. व्यय किये तथा परिसम्पत्ति को 15,350 रु. में बेच दिया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में लेजर खाते खोलिये।

हलः

Books of XYZ Ltd.
Plant & Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To ABC Ltd	28,000	Dec.31	By Depreciation (10% on 28,000)	2800
			Dec.31	By Balance c/d	25,200
		28,000			28,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	25,200	Dec. 31	By Depreciation (10% on 25,200)	2,520
			Dec. 31	By ABC Ltd	14,726
			Dec. 31	By Profit and Loss A/c	7,954
		25,200			25,200

ABC Ltd's Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Cash A/c (down payment)	7,500	Jan. 1	By Plant & Machinery	28,000
			Dec.31	By Interest A/c	1,025
Dec.31	To Cash A/c (first instalment)	7,500			
Dec. 31	To Balance c/d	14,025			
		29,025			29,025
2018			2018		
Dec. 31	To Plant & Machinery A/c (default)	14,726	Jan.1	By Balance b/d	14,025
			Dec.31	By Interest A/c	701
		14726			14,726

Books of ABC Ltd
XYZ Ltd's Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	28,000	Jan.1	By Cash A/c	7,500
Dec.31	To Interest A/c (5% on 20,500)	1,025	Dec.31	By Cash A/c	7,500
			Dec.31	By Balance c/d	14,025
		29,025			29,025
2018			2018		
Jan.1	To Balance b/d	14,025	Dec.31	By Goods Repossessed A/c	14,726
Dec. 31	To Interest A/c (5% on 14,025)	701			
		14,726			14,726

Goods Repossessed Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Dec.31	To XYZ Ltd A/c	14,726	Dec.31	By Cash A/c (sales)	15,350
Dec.31	To Cash A/c (repairs)	300			
Dec.31	To Profit & Loss A/c (profit on sale)	324			
		15,350			15,350

12.3.2 आंशिक पुनर्ग्रहण (Partial Repossession)

कभी–कभी चूक की स्थिति में विक्रेता अवक्रेता से समझौता कर लेता है, तथा पूरे माल का पुनर्ग्रहण नहीं करता, बल्कि माल के केवल एक भाग का पुनर्ग्रहण करता है, जिसे 'आंशिक पुनर्ग्रहण' कहा जाता है। इस स्थिति में परिसम्पत्ति का कुछ भाग अवक्रेता के पास ही रह जाता है। जहां तक आंशिक पुनर्ग्रहण के लिए लेखाविधि का प्रश्न है, ब्याज तथा मूल्यह्रास की प्रविष्टियाँ दोनों पक्षों के खातों में सदा की भांति की जाती हैं, परंतु भुगतान के लिए प्रविष्टि नहीं की जाती। ये प्रविष्टियाँ चूक की तिथि तक की जाती हैं। चूंकि परिसम्पत्ति का कुछ भाग अवक्रेता के पास ही रह जाता है, अतः विक्रेता अपनी पुस्तकों में अवक्रेता के खाते को बन्द नहीं करता, न ही अवक्रेता अपनी पुस्तकों में विक्रेता के खाते को बन्द करता है। वे सम्मत मूल्यह्रास की दर (जो सामान्यतः बढ़ी हुई होती है) की सहायता से पुनर्ग्रहीत परिसम्पत्ति का वर्तमान मूल्य निश्चित करते हैं। विक्रेता इस राशि से पुनर्ग्रहीत माल के खाते को डेबिट कर देता है तथा अवक्रेता के खाते को क्रेडिट कर देता है इसी प्रकार अवक्रेता, विक्रेता के खाते को पुनर्ग्रहीत परिसम्पत्ति के सम्मत मूल्य से डेबिट कर देता है। तथा परिसम्पत्ति खाते को इस राशि से क्रेडिट कर देता है। अपने पास छूटे हुए परिसम्पत्ति के भाग के लिए अवक्रेता मूल्यह्रास की सामान्य दर लागू करता है तथा ह्रासित मूल्य को परिसम्पत्ति खाते में शेष के रूप में दिखाता है। परिसम्पत्ति खाते में शेष राशि (balancing figure) चूक होने पर हुआ लाभ–हानि दर्शाती है। जिसे लाभ–हानि खाते में अन्तरित कर दिया जायेगा। उदाहरण 2 का अध्ययन कीजिये तथा नोट कीजिये कि आंशिक पुनर्ग्रहण की स्थिति में खाते कैसे तैयार किये जाते हैं।

उदाहरण 2

जालान डिस्ट्रीब्यूटर्स ने तीन वाहन 1 जनवरी, 2017 को जैन एन्टरप्राइजेज को अवक्रय पर बेचे। प्रत्येक वाहन की कीमत 90,000 रु. थी जिसका भुगतान निम्न प्रकार से होना तय हुआ।

i) प्रत्येक वाहन के लिये 30,000 रु. तत्काल दिये जायें।

ii) शेष रकम 15% प्रति वर्ष ब्याज सहित तीन बराबर वार्षिक किश्तों में दी जाये।

जैन एन्टरप्राइजेज घटते हुए शेष पर ह्रासित मूल्य विधि (written down value method) के अनुसार 20% प्रति वर्ष की दर से मूल्यह्रास लगाते हैं। 31 दिसम्बर, 2017 को पहली किश्त के भुगतान के बाद वे आगे की किश्त का भुगतान नहीं कर सके। दोनों पक्षों के बीच यह समझौता हुआ कि देय राशि में से दो वाहनों के मूल्य के समायोजन के पश्चात् दो वाहनों का पुनर्ग्रहण कर लिया जाये। पुनर्ग्रहण के उद्देश्य से 30% की वार्षिक दर से मूल्यह्रास लगाया गया। पुनर्ग्रहीत माल की मरम्मत पर 2,000 रु. व्यय किये गए तथा उसे 92,000 रु. पर पुनः बेच दिया गया। पुनर्ग्रहीत माल के मूल्य का परिकलन कीजिये तथा दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते दिखाइये।

हलः

In the books of Jain Enterprises
Light Commercial Vans Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2017		Rs.	2017		Rs.
Jan, 1	To Jalani Distributors (Rs. 90,000×3)	2,70,000	Dec. 31	By Depreciation A/c (20% on 2,70,000)	54,000
			Dec. 31	By Balance c/d	2,16,000
		2,70,000			2,70,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	2,16,000	Dec. 31	By Depreciation A/c (20% on 2,16,600)	43,200
			Dec. 31	By Jalani Distributors (value of two vans on repossession)	88,200
			Dec. 31	By Profit & Loss A/c (loss on repossession)	27,000
			Dec. 31	By Balance c/d	57,600
2019		2,16,000			2,16,000
Jan. 1	To Balance b/d	57,600			

Jalani Distributors' Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c (down payment) (Rs. 30,000×3)	90,000	Jan. 1	By Light Commercial Vans A/c	2,70,000
Dec.31	To Bank A/c (first instalment Rs. 60,000+27,000)	87,000	Dec 31	By Interest A/c $(1,80,000 \times \frac{15}{100})$	27,000

Dec.31	To Balance c/d	1,20,000			
		2,97,000			2,97,000
2018			2018		
Dec. 31	To Light Commercial Vans A/c	88,200	Jan. 1	By Balance b/d	1,20,000
Dec. 31	To Balance c/d	49,800	Dec. 31	By Interest $(1,20,000 \times \frac{15}{100})$	18,000
		1,38,000			1,38,000
			2019		
			Jan. 1	By Balance b/d	49,800

Books of Jalani Distributors
Jain Enterprises' Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	2,70,000	Dec. 31	By Bank A/c (down payment)	90,000
Dec. 31	To Interest A/c $(\frac{15}{100} \times 1,80,000)$	27,000	Dec. 31	By Bank A/c (Ist instalment)	87,000
			Dec. 31	By Balance c/d	1,20,000
		2,97,000			2,97,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	1,20,000	Dec. 31	By Goods Repossessed A/c	88,200
Dec. 31	To Interest A/c $(\frac{15}{100} \times 1,20,000)$	18,000	Dec. 31	By Balance c/d	49,800
		1,38,000			1,38,000
2019					
Jan. 1	To Balance b/d	49,800			

Goods Repossessed Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Dec. 31	To Jain enterprises	88,200	Dec. 31	By Cash A/c (sale)	92,000
Dec. 31	To Cash A/c (repairs)	2,000			
Dec. 31	To Profit & Loss A/c (profit on sale)	1,800			
		92,000			92,000

Working Notes

1. **Calculation of the value of repossessed asset** Rs.

Cost Price of two vans (90,000×2)		1,80,000
Depreciation		
First year $(\frac{30}{100}\times 1,80,000)$	54,000	
Second year $(\frac{30}{100}\times 1,80,000-54,000)$	37,800	91,800
Value of repossessed stock		88,200

2. **Loss on Repossession** Rs.

Cost Price of two vans (90,000×2)		1,80,000
Depreciation		
First year $(\frac{20}{100}\times 1,80,000)$	36,000	
Second year $(\frac{20}{100}\times 1,80,000-36,000)$	28,800	64,800
Depreciated value of two vans		1,15,200
Less : Value of the two vans at higher rate of depreciation for repossession		88,200
Loss on repossession		27,000

12.4 किश्तों में भुगतान प्रणाली (Instalment Payment System)

किश्तों में भुगतान प्रणाली जिसे 'आस्थगित किश्तें' (Deferred Instalment) भी कहा जाता है एक ऐसी प्रणाली है जिसके अन्तर्गत क्रेता को अनुबंध पर हस्ताक्षर होने के समय से ही माल का स्वामित्व व कब्जा दे दिया जाता है। क्रेता को मूल्य का भुगतान किश्तों में करने की सुविधा होती है। किश्तों में भुगतान प्रणाली की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

1. यह एक पूर्ण बिक्री (outright sale) है।
2. अनुबंध पर हस्ताक्षर होते ही स्वामित्व तथा कब्जा दोनों ही क्रेता को हस्तांतरित हो जाते हैं।
3. क्रेता किश्तों में भुगतान कर सकता है।
4. भुगतान में चूक होने की स्थिति में विक्रेता माल का पुनर्ग्रहण नहीं कर सकता।
5. चूक होने तक दी गई राशि को जब्त नहीं किया जाता, तथा विक्रेता देय राशि के लिए क्रेता पर मुकदमा चला सकता है।

उपरोक्त विवेचन से हम यह देख सकते हैं कि किश्तों में भुगतान प्रणाली तथा अवक्रय प्रणाली में कुछ समानताएं हैं, परन्तु कुछ भिन्नताएं भी हैं। ये भिन्नताएं निम्नलिखित हैं।

अवक्रय प्रणाली	किश्तों में भुगतान प्रणाली
1. यह किराए पर लेने का एक करार है।	1. यह बिक्री का एक करार है।
2. अनुबंध पर हस्ताक्षर के समय क्रेता को माल का केवल कब्जा ही मिलता है।	2. अनुबंध पर हस्ताक्षर होने पर क्रेता को माल का कब्जा व स्वामित्व दोनों ही मिल जाते हैं।
3. चूक होने पर माल का पुनर्ग्रहण किया जा सकता है।	3. चूक होने पर माल का पुनर्ग्रहण नहीं जा सकता।
4. चूक होने पर चूक की तिथि तक किये गये भुगतान को जब्त कर लिया जाता है तथा उसे किराया मान लिया जाता है।	4. चूक की तिथि तक किया गया भुगतानपरिसम्पत्ति के मूल्य के रूप में किया भुगतान होता है तथा इसे जब्त नहीं किया जा सकता। विक्रेता केवल देय राशिके लिए क्रेता पर मुकदमा चला सकता है।
5. क्रेता माल को न तो बेच सकता है, न नष्ट कर सकता है न हस्तांतरित कर सकता है, न हानि पहुँचा सकता है और न ही बन्धक रख सकता है।	5. क्रेता माल को बेच सकता है, नष्ट कर सकता है, हानि पहुँचा सकता है, हस्तांतरित कर सकता है, तथा बन्धक रख सकता है

12.5 किश्तों में भुगतान प्रणाली के लिए लेखा

आप जानते हैं कि अनुबंध पर हस्ताक्षर होते ही स्वामित्व तत्काल क्रेता को प्राप्त हो जाता है। अतः जब किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रय का लेखांकन किया जाए, तब इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। तदनुसार क्रेता विक्रेता को दी जाने वाली पूरी राशि (जिसमें कुल ब्याज भी सम्मिलित होता है) से क्रेडिट कर देता है, तथा परिसम्पत्ति को नकद मूल्य से तथा ब्याज निलम्बित खाते (Interest Suspense Account) को ब्याज की कुल राशि से, जो कि कुल देय राशि तथा नकद मूल्य का अन्तर होता है, डेबिट कर देता है। ब्याज निलम्बित खाते को प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय ब्याज की वास्तविक राशि से क्रेडिट कर दिया जाता है तथा इसे ब्याज खाते को अंतरित कर दिया जाता है। इसी प्रकार विक्रेता क्रेता को पूरी राशि से डेबिट कर देता है, तथा बिक्री को नकद मूल्य (cash price) से तथा ब्याज निलम्बित खाते को कुल ब्याज से क्रेडिट कर देता है। वह प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय ब्याज की वास्तविक राशि को ब्याज निलम्बित खाते को डेबिट करके तथा ब्याज खाते को क्रेडिट करके ब्याज खाते को अंतरित कर देता है।

अतः लेखांकन की दृष्टि से किश्तों में भुगतान प्रणाली तथा अवक्रय प्रणाली में मुख्य अन्तर ब्याज के लेखा से सम्बन्धित है किन्तु व्यवहार में इसके बिना भी काम चलाया जा सकता है। क्रेता परिसम्पत्ति खाता अवक्रय प्रणाली के परिसम्पत्ति खाते के समान ही रखता है, अर्थात् मूल्यह्रास प्रचलित रीति के अनुसार ही चार्ज किया जाता है तथा बैलेंस शीट में परिसम्पत्ति का ह्रासित मूल्य दिखाया जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि विक्रेता के खाते का शेष प्रतिवर्ष बैलेंस शीट के देयता पक्ष में दिखाया जाएगा।

आईये, अब हम किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता और विक्रेता दोंनों की पुस्तकों में होने वाली जर्नल प्रविष्टियों का अध्ययन करें।

12.5.1 क्रेता की पुस्तकों में

क्रेता अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ करता है।

1. **जब परिसम्पत्ति क्रय की जाती है।**

Asset A/c	Dr.	(नकद मूल्य से)
Interest Suspense A/c	Dr.	(नकद मूल्य व किश्तों की कुल
To Vendor		राशि के अन्तर से)
		(किश्तों के मूल्य से)

2. **तत्काल भुगतान के लिए**

Vendor	Dr.
To Bank A/c	

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिए**

Interest A/c	Dr.
To Interest Suspense A/c	

4. **किश्त के भुगतान के लिए**

Vendor	Dr.
To Bank A/c	

5. **लेखावर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिए**

Deprecation A/c	Dr.
To Asset A/c	

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अंतरित करने के लिए**

Profit & Loss A/c	Dr.
To Interest A/c	
To Depreciation A/c	

ऊपर दी हुई जर्नल प्रविष्टियाँ करने के पश्चात् क्रेता निम्नलिखित लेजर खाते बनाता है:

i) परिसम्पत्ति खाता (Asset A/c)

ii) विक्रेता खाता (Vendor'sA/c)

iii) ब्याज निलम्बित खाता (Interest Suspense A/c)

iv) ब्याज खाता (Interest A/c)

उदाहरण 3 का अध्ययन कीजिए तथा देखिये कि जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत खरीदा जाता है, तब क्रेता की पुस्तकों में लेजर खाते किस प्रकार बनाए जाते हैं।

उदाहरण 3

फायर इण्डस्ट्रीज लि. ने 1 जनवरी 2016 को एम. एम. सी. लिमिटेड से किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत एक मशीन खरीदी। इसका नकद मूल्य 20,000 रु. था जिसका भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 6,384 रु. तत्काल भुगतान और शेष पांच–पांच हजार रु. की तीन वार्षिक किश्तों में, जिनमें 5% प्रति वर्ष के हिसाब से ब्याज भी शामिल होगा। मूल्य ह्रास ह्रासित मूल्य (W.D.V) पद्धति के अनुसार 10% की दर से लगाया जायेगा। फायर इण्डस्ट्रीज की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये।

In the books of Fire Industries Ltd.
MMC Ltd. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To Bank A/c	6,384	Jan. 1	By Plant A/c	20,000
Dec.31	To Bank A/c (1st Inst.)	5,000	Dec.31	By Interest Suspense A/c	1,384
Dec.31	To Balance c/d	10,000			
		21,384			21,384
2017			2017		
Dec.31	To Bank A/c (2nd Inst.)	5,000	Jan. 1	By Balance b/d	10,000
Dec.31	To Balance c/d	5,000			
		10,000			10,000
2018			2018		
Dec.31	To Bank A/c (3rd Inst.)	5,000	Dec.31	By Balance b/d	5,000
		5,000			5,000

Plant Account

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To MMC Ltd.	20,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	2,000
			Dec. 31	By Balance c/d	18,000
		20,000			20,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	18,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,800
			Dec. 31	By Balance c/d	16,200
		18,000			18,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	16,200	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,620
			Dec. 31	By Balance c/d	14,580
		16,200			16,200

Interest Suspense Account

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To MMC Ltd.	1,384	Dec.31	By Interest A/c	681
			Dec.31	By Balance c/d	703
		1,384			1,384
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	703	Dec. 31	By Interest A/c	465
			Dec. 31	By Balance c/d	268
		703			703
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	238	Dec. 31	By Interest A/c	238
		238			238

Working Note:

Statement showing calculation of Interest for deferment period

Particulars	Amount	Principal	Interest	Total
	Rs.	Rs. (a)	Rs. (b)	Rs. c = (a+b)
Cash Price (6384+13616)	20,000			
1.1.16				
Less : Down payment	6,384	6,384		6,384
	13,616			
31.12.16				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 13,616)$	681			
	14,297			
Less : Ist Instalment	5,000	4,319	681	5,000
	9,297			
31.12.17				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 9,297)$	465			
	9,762			
Less : 2nd Instalment	5,000	4,535	465	5,000
	4,762			
31.12.18				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 4,762)$	238			
	5,000			
Less : 3rd Instalment	5,000	4,762	238	5,000
Total	NIL	20,000	1,384	21,384

12.5.2 विक्रेता की पुस्तकों में

जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अनुसार बेचा जाता है, तब विक्रेता निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ करता है।

1. **जब माल बेचा जाता है**

Purchaser A/c	Dr.	(सकल मूल्य से)
To Sales A/c	Dr.	(नकद मूल्य से)
To Interest Suspense A/c		(सकल मूल्य तथा नकद मूल्य के अन्तर से)

2. **तत्काल भुगतान के रूप में प्राप्त नकद राशि के लिए**

Bank A/c	Dr.	
To Purchaser		

3. **किश्त पर देय ब्याज के लिए**

Interest Suspense A/c Dr.
To Interest A/c

4. **किश्त की राशि प्राप्त के लिए**

Bank A/c Dr.
To Purchaser

5. **ब्याज को लाभ–हानि खातें में अंतरित करने के लिए**

Interest A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

क्रेता की भांति ही विक्रेता भी कुछ लेजर खाते बनाता है, जो इस प्रकार हैं:

i) क्रेता का खाता

ii) ब्याज निलम्बित खाता

iii) ब्याज खाता

उदाहरण 4 का अध्ययन कीजिये तथा देखिये कि जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अनुसार बेचा जाता है तो विक्रेता की पुस्तकों में खाते किस प्रकार रखे जाते हैं।

उदाहरण 4

उदाहरण में दिये गये तथ्यों को लेकर विक्रेता की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइये।

हल:

In the books of MMC Ltd.
Fire Industries Ltd. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	20,000	Jan. 1	By Bank A/c (down payment)	6,384
Dec.31	To Interest Suspense A/c	1,384	Dec.31	By Bank A/c (Ist Instalment)	5,000
			Dec.31	By Balance c/d	10,000
		21,384			21,384
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec.31	By Bank A/c (2nd Instalement)	5,000
			Dec.31	To Balance c/d	5,000
		10,000			10,000
2018			2018		
Jan.1	To Balance b/d	5,000	Dec.31	By Bank A/c (3rd Instalment)	5,000
		5,000			5,000

Interest Suspense Account

Dr. **Cr.**

2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Interest A/c	681	Jan. 1	By Fire Industries Ltd A/c	1,384
Dec.31	To Balance c/d	703	2016		
		1,384			1,384
2017			2017		
Dec.31	To Interest A/c	465	Jan. 1	By Balance b/d	703
Dec.31	To Balance c/d	238			
		703			703
2018			2018		
Dec.31	To Interest A/c	238	Jan. 1	By Balance b/d	238
		238			238

Interest Account

Dr. **Cr.**

2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Profit & Loss A/c	681	Dec.31	By Interest Suspense A/c	681
		681			681
2017			2017		
Dec.31	To Profit & Loss A/c	465	Dec.31	By Interest Suspense A/c	465
		465			465
2018			2018		
Dec.31	To Profit & Loss A/c	238	Dec.31	By Interest Suspense A/c	238
		238			238

बोध प्रश्न क

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

   i) चूक कार्य करने में, उपस्थित होने में या भुगतान करने में ..... है।

   ii) माल पर कब्जा होने का अर्थ होता है माल पर ..... होना।

   iii) ..... की ..... के कार्य को पुनर्ग्रहण कहते हैं।

   iv) जब भुगतान चूक के कारण अवक्रय करार ..... तब विक्रेता को अवक्रेता के परिसर में प्रवेश करने का माल तथा माल के ..... का अधिकार होगा।

   v) भुगतान में चूक के कारण करार समाप्त होने की स्थिति में माल की सुपुर्दगी न होने पर विक्रेता को ..... का अधिकार होता है।

   vi) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत, क्रेता को .....की तिथि पर माल का ..... प्राप्त हो जाता है।

2. बताइए कि निम्न कथन **सही** है अथवा **गलत** है।

i) अवक्रय करार के अन्तर्गत केवल अन्तिम किश्त के भुगतान में असफलता को चूक माना जाएगा।

ii) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत चूक होने पर विक्रेता को पहले दी गई राशि को अपने पास रखने का तथा देय किराये के बकाया को वसूल करने का अधिकार होता है।

iii) पुनर्ग्रहण के पश्चात् विक्रेता को पुनर्ग्रहीत माल को दुबारा बेचने का अधिकार नहीं होता।

iv) किश्तों में भुगतान प्रणाली की स्थिति में क्रेता को खरीदे गए माल को बेचने का अधिकार है।

v) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता किसी भी समय माल वापिस कर सकता है।

12.6 अवक्रय पर बेचे गये मूल्य वाले माल का मूल रिकॉर्ड

आप जानते हैं कि प्रौद्योगिकी की प्रगति और रहन–सहन के स्तर में सुधार के साथ–साथ टिकाऊ उपभोग वस्तुओं जैसे फ्रिज, टी.वी., कारों आदि की माँग पिछले कुछ वर्षों से बहुत बढ़ गयी है। माँग की इस तीव्र वृद्धि का लाभ उठाने के लिये व्यापारियों ने अनेक नई–नई योजनाएं बनाई हैं जो उपभोक्ताओं को ऐसी वस्तुएं खरीदने में सुविधा प्रदान करती हैं। ऐसी एक योजना 'अवक्रय पर विक्रय' करना है। सीमित साधनों वाले उपभोक्ता इस योजना का पूरा लाभ उठाते हैं क्योंकि इसके अन्तर्गत किश्तों में भुगतान करना होता है तथा ब्याज की दर भी उचित होती है। इस संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लेन–देन फुटकर व्यापारी और उपभोक्ताओं के बीच होते हैं, दो व्यावसायिक इकाइयों के बीच नहीं। अतः इनका लेखा केवल विक्रेता की पुस्तकों में ही करना होता है, क्रेता की पुस्तकों में नहीं। आईये, अब यह अध्ययन करें कि जब कम मूल्य वाले माल अवक्रय पर बेचे जाते हैं तब फुटकर विक्रेता की पुस्तकों में इसका लेखा किस प्रकार किया जाता है।

ऐसे लेन–देन काफी मात्रा में होते हैं। अतः विक्रेता के लिये प्रत्येक सौदे के लिये अलग–अलग जर्नल प्रविष्टियाँ करना व्यावहारिक रूप से असुविधाजनक होता है। इसीलिये इन्हें रिकॉर्ड करने की एक ऐसी विधि बनाई गई है जिसके अन्तर्गत कुछ नियंत्रण खातों (control account) के माध्यम से इस प्रकार के सारे लेन–देनों पर पूरा नियंत्रण रखा जा सके तथा इन पर हुई लाभ–हानि ज्ञात की जा सके। इन लेन–देनों का मूल रिकॉर्ड एक सहायक बही जिसे 'अवक्रय विक्रय रजिस्टर' (Hire Purchase Sales Register) कहते हैं, में रखा जाता है। इस रजिस्टर में वह सारी जानकारी रिकॉर्ड की जाती है जिसकी क्रेताओं के व्यक्तिगत खातों को नियमित करने के लिये आवश्यकता होती है। इस रजिस्टर का प्रारूप चित्र 12.1 में दिया गया है।

Fig 12.1 Hire Purchase Sales Register

S.No	Date of Agreement	Name of Article	Name of Customer	Cost Price	Hire Purchase Price	Cash Down Payment	No. of Instalments	Instalments Due				Total installments received	Instalments due but not paid	Instalments not yet due
								1	2	3	4			

इसमें आप देखेंगे कि अवक्रय पर बेचे गये माल का पूरा ब्यौरा दिया गया है। अलग–अलग कालमों में लागत मूल्य, अवक्रय मूल्य, तुरन्त भुगतान की राशि, प्राप्त हुई किश्तों की राशि, प्राप्य किश्तों की राशि और उन किश्तों की राशि जो अभी प्राप्य नहीं हुई हैं ये आंकड़े अवक्रय लेन–देनों का लेखा और उन पर हुई लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये बहुत प्रासंगिक हैं इसीलिये यह बहुत आवश्यक है कि इन राशियों को बहुत सावधानी से रिकॉर्ड किया जाये इन कॉलनों के योग की आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं और उन्हें सम्बद्ध नियंत्रण खातों में पोस्ट किया जाता है। यह कार्यवाही प्रायः मासिक, त्रैमासिक अथवा वार्षिक आधार पर की जाती है।

12.7 लाभ–हानि का परिकलन

अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये हमें एक 'अवक्रय व्यापार खाता' बनाना होता है। यह प्रेषण के माल की लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये बनाये जाने वाले 'प्रेषण खाते' की भांति होता है। अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिये हमें अवक्रय पर बेचे गये माल की राशि, प्राप्त राशि, पुनर्ग्रहीत माल, अवक्रय देनदार (लेखा अवधि के शुरू में और अन्त में) तथा अवक्रय स्टॉक (लेखा अवधि के शुरू में और अन्त में) की राशियों की आवश्यकता होती है। ये राशियाँ अवक्रय रजिस्टर या सम्बद्ध नियंत्रण खातों से मालूम की जा सकती हैं। इन्हें जर्नल में आवश्यक अन्तिम प्रविष्टियाँ (closing entries) करके अवक्रय व्यापार खाते (Hire Purchase Trading Account) में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त हमें भार (loading) का प्रतिशत और अवक्रय पर किया गया खर्च ज्ञात करना पड़ेगा। अवक्रय व्यापार खाते का प्रारूप (Proforma of Hire Purce Trading Account) चित्र 12.2 में दिखाया गया है।

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
To H.P. Stock (opening)	...	By Cash Received	...
To H.P. Debtors (opening)	...	By Goods Repossessed (market value)	...
To Goods Sold on H.P (at H.P. price)	...	By H.P. Stock (closing)	...
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	...	By H.P. Debtors (closing)	...

To Expenses	...	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	...
To Net Profit (transferred to P&L A/c)	...	By Goods Sold on H.P. (loading)	...
	...		...

चित्र 12.2 में दिखाया गया अवक्रय व्यापार खाते का प्रारूप अवक्रय व्यापार खाते का सामान्य रूप है। लेकिन इसे दो भागों में बांटना ज्यादा अच्छा है जैसा कि चित्र 12.3 में दिखाया गया है। पहले भाग में केवल वे मदें आती हैं जो अवक्रय मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं और दूसरा भाग लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये अवक्रय व्यापार से संबंधित भार, खर्चे, हानि आदि का समायोजन दर्शाता है। इस प्रकार बनाये गये अवक्रय व्यापार के पहले भाग के दोनों पक्षों का योग बराबर होता है। यदि ऐसा न हो तो इसका अर्थ होगा कि कहीं कुछ गलती हुई है। केवल इतना ही नहीं, पहले भाग से हमें किसी भी ऐसी मद की राशि ज्ञात करने में सहायता मिलती है जो दी नहीं है क्योंकि यह अज्ञात राशि दोनों ओर के अन्तर (balancing figure) के बराबर मान ली जाती है बशर्ते कि अन्य सभी मदों की राशियाँ उपलब्ध हों।

Figure 12.3 : Another Proforma of Hire Purchase Trading Account

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
To H.P. Stock (opening)	..	By Cash Received	...
To H.P. Debtors (opening)	...	By Goods Repossessed (Instalments unpaids)	...
To Goods Sold on H.P (at H.P. price)	...	By H.P. Stock (closing)	...
		By H.P. Debtors (closing)	...
	...		...
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	...		
To Loss on Goods Repossessed (dif. between market value or cost and unpaid instalments)	....		
	...	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	...
To Expenses (on hire purchase business)	...	By Goods Sold on H.P. (loading)	...
To Net Profit (Transferred to P&L A/c)	...		...

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि अवक्रय व्यापार खाते की सहायता से अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लाभ–हानि कैसे निकाला जाता है।

उदाहरण 5

कैपिटल इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कं. ने अवक्रय आधार पर इलेक्ट्रॉनिक्स माल बेचने के लिये 1.1.18 को व्यवसाय शुरू किया। 31.12.18 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित लेन–देन हुए।

क) कृष्णा ने 3,000 रु. की लागत की एक टी वी 4,500 रु. में खरीदा जिसमें से 1,500 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 250 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

ख) विम ने 1,000 रु. की लागत का एक ग्राइंडर 1,500 रु. में खरीदा जिसमें से 300 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 100 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

ग) अर्जुन ने 2,400 रु. की लागत का एक रेफ्रिजरेटर 3,000 रु. में खरीदा जिसमें से 600 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 200 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

31.12.18 तक सात देय किश्तों में से कृष्णा एक किश्त का भुगतान नहीं कर पाया, पांच किश्तों में से विम एक किश्त का भुगतान नहीं कर सका तथा आठ किश्तों में से अर्जुन दो किश्तों का भुगतान नहीं कर सका। इन अवक्रय लेन–देनों पर होने वाले लाभ–हानि का परिकलन कीजिए।

हल

Hire Purchase Trading Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Goods Sold on Hire Purchase	9,000	By Cash Received	5,500
		By Goods Repossessed	.....
		By Hire Purchase Stock (closing)	2,750
		By Hire Purchase Debtors (closing)	750
	9,000		9,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	810	By Goods Sold on Hire Purchase (closing)	2,600
To Net Profit transferred to P & L A/c	1,790		
	2,600		2,600

Working Notes:

a) **Goods sold on hire purchase** (H.P. Price)

		Rs.
i)	TV purchased by Krishna	4,500
ii)	Grinder purchased by Vim	1,500
iii)	Refrigerator purchased by Arjun	3,000
	Total	9,000

b) **Cash received**

i)	From Krishna [Rs. 1,500 + (250 × 6)]	3,000
ii)	From Vim [Rs. 300 + (100 × 4)]	700
iii)	From Arjun[Rs. 600 + (200 × 6)]	1,800
	Total	5,500

c) Amount of instalment due but not paid (H.P. Debtors)

i)	From Krishna Rs. 250 × 1	250
ii)	From Vim Rs. 100 × 1	100
iii)	From Arjun Rs. 200 × 2	400
	Total	750

d) Amount of instalment which are not due (H.P. Stock)

i)	From Krishna	
	Amount not due Rs. 250 × 5	1,250
ii)	From Vim	
	Amount not due Rs. 100 × 7	700
iii)	From Arjun	
	Amount not due Rs.200 × 4	800
	Total	2,750

e) Loading

i) On goods sold on hire purchase

Hire Purchase Price – Cost Price
= (4,500 + 1,500 + 3,000) – (3,000 + 1,000 + 2,400)
= 9,000 – 6,400
= Rs. 2,600

ii) On hire purchase stock (Closing)

	HP. Stock Rs.	Loading	Rs.
Krishna	1,250	$(\frac{1,500}{4,500} \times 1,250) =$	417
Vim	700	$(\frac{500}{1,500} \times 700) =$	233
Arjun	800	$(\frac{600}{3,000} \times 800) =$	160
		Total	810

12.7.1 पुनर्ग्रहण किए गये माल का लेखा (Accounting Treatment of Goods Repossessed)

आप जानते हैं कि यदि अवक्रेता किश्तों के भुगतान में चूक करता है तो विक्रेता माल वापस ले सकता है। ऐसे माल से संबंधित अदत्त किश्तों की राशि (जिसे देय किश्तें भी कहा जाता है) अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग के क्रेडिट की ओर दिखायी जाती है, जैसा कि चित्र 12.3 में दिखाया गया है।

यदि ऐसे माल का बाजार मूल्य दिया हुआ है या वापस लेने पर इसे तुरन्त बेच दिया गया है तो अदत्त राशि और बाजार मूल्य (यदि बेच दिया गया है तो विक्रय मूल्य) के अन्तर को पुनर्ग्रहण किए गये माल पर हानि या लाभ माना जाता है। यदि यह हानि है तो इसे अवक्रय व्यापार खाते के दूसरे भाग में डेबिट कर दिया जाता है और यदि यह लाभ है (ऐसी स्थिति दुर्लभ है) तो इसे इस खाते के क्रेडिट की ओर दिखाया जाता है। **कठिनाई तब आती है जब पुनर्ग्रहण किए गये माल का बाजार मूल्य या विक्रय मूल्य मालूम न हो। ऐसी स्थिति में ऐसे माल के लिये अदत्त किश्त में जो भार**

शामिल है उसका समायोजन करना पड़ेगा क्योंकि इनका असली मूल्य इसके आनुपातिक लागत के बराबर होता है। इस प्रकार अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग को अदत्त किश्तों की राशि से क्रेडिट करने के बाद आपको इस खाते को अदत्त किश्तों में शामिल भार की राशि से डेबिट करना होगा। विकल्पतः यदि आप अवक्रय व्यापार खाते को दो भागों में नहीं बना रहे हैं, तो इस खाते को ऐसे माल के असली मूल्य/बाजार मूल्य/विक्रय मूल्य से क्रेडिट कीजिये ऐसा करने पर किसी समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी।

उदाहरण 6 देखिए और अध्ययन कीजिए कि पुनर्ग्रहण किए गए माल को अवक्रय व्यापार खाते में किस प्रकार दिखाया जाता है।

उदाहरण 6

ईजी पेमेन्ट्स लि. लागत पर 50% लाभ पर अवक्रय के आधार पर माल बेचता है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित विवरण दिए गए हैं।

	रु.
अवक्रय स्टाक खाता (प्रारंभिक)	18,000
देय किश्तें, ग्राहक भुगतान कर रहे हैं (प्रारंभिक)।	10,000
वर्ष के दौरान अवक्रय पर बेचा गया माल (अवक्रय मूल्य पर)	1,74,000
ग्राहकों से प्राप्त नकद राशि	1,20,000
पुनर्ग्रहण किए गए माल का मूल्य (देय किश्तें 6,000 रु.)	3,000
अंत में अवक्रय स्टाक खाता	60,000
देय किश्तें (अंत में), ग्राहक भुगतान कर रहे हैं	16,000
व्यय	19,000

Hire Purchase Trading Account

Dr. **Cr.**

Date Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Hire Purchase Stock (opening)	18,000	By Cash Received	1,20,000
To Hire Purchase Debtors (opening)	10,000	By Goods Repossessed (instalments unpaid)	6,000
To Goods sold on Hire Purchase	1,74,000	By Hire Purchase Debtors (closing)	16,000
		By Hire Purchase Stock (closing)	60,000
	2,02,000		2,02,000
To Loss on Goods Repossessed (diff. between instalments unpaid and market value)	3,000	By Stock Reserve (Loading on opening H.P. stock)	6,000
		By Goods sold on Hire Purchase (loading)	58,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	20,000		
To Expenses	19,000		
To Profit & Loss A/c (Profit)	22,000		
	64,000		64,000

Working Notes:

1. **Loading**

   a) On Opening H.P. Stock $(18,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 6,000

   b) On GoodsSoldonH.P. $(1,74,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 58,000

   c) On Closing H.P. Stock $(60,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 20,000

2. **Loss on Goods Repossessed:** Amount of unpaid instalments - Market Value

   = 6,000- 3,000 = Rs. 3,000

Alternatively

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		**Rs.**
To Hire Purchase Stock (opening)	18,000	By Cash Received	1,20,000
To Hire Purchase Debtors (opening)	10,000	By Goods Repossessed (market value)	3,000
To Goods sold on Hire Purchase (H.P. Price)	1,74,000	By Hire Purchase Debtors (closing)	16,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	20,000	By Hire Purchase Stock (closing)	60,000
To Expenses	19,000	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	6,000
To Net Profit (Transferred to P & L A/c)	22,000	By Goods sold on Hire Purchase (loading)	58,000
	2,63,000		2,63,000

12.7.2 अज्ञात राशियों का परिकलन (Ascertainment of Missing Figures)

अवक्रय पर बेचे गये माल पर लाभ–हानि निकालने के लिए जिन विभिन्न राशियों की आवश्यकता होती है उनमें से कुछ राशियाँ कई बार नहीं दी जाती हैं, जैसे अवक्रय स्टॉक (प्रारंभिक या अन्तिम), अवक्रय देनदार (प्रारंभिक या अन्तिम), क्रय प्राप्त राशि आदि। अतः पहले अज्ञात इन राशियों को मालूम करना आव यक है, इसके बाद की अवक्रय व्यापार खाता बना कर लाभ–हानि निकाली जा सकती है। **यदि एक ही राशि अज्ञात है तो इसे अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग की सहायता से ही मालूम किया जा सकता हैं** लेकिन यदि एक से अधिक राशियाँ न दी हुई हों तो ऐसी स्थिति में निम्नलिखित विधि अपनानी चाहिए।

1. नीचे दिये हुए क्रम में तीन मेमोरेंडम खाते बनाइयेः

   i) दुकान पर स्टॉक खाता

ii) अवक्रय स्टॉक खाता

iii) अवक्रय देनदार खाता

2. दी हुई सभी राशियों को इन खातों में यथास्थान लिख दीजियें

3. जिस खातें की सबसे अधिक राशियाँ दी हों उससे शुरू करिये इससे आपको उस खाते की वह राशि निकालने में सहायता मिलेगी जो दी नहीं है, दोनों पक्षों के अन्तर के आधार पर।

4. इस प्रकार निकाली गयी राशि को टन; सम्बद्ध खाते में भी लिख लीजिये इससे उस खाते में भी केवल एक ही अज्ञात राशि बचेगी जो उस खातें के दोनों पक्षों के आधार पर निकाली जा सकती है।

5. अन्तरण का यह क्रम तब तक जारी रखिये जब तक कि इन तीनों खातों में सभी राशियाँ न लिख दी जायें।

दुकान पर स्टाक खाते के संबंध में यह बात ध्यान रहे कि इसमें सभी राशियाँ लागत पर लिखी जाती हैं, अवक्रय मूल्य पर नहीं । अतः इस खाते से कोई भी राशि अन्तरित करते समय उसे पहले अवक्रय मूल्य में परिवर्तित कर लेना चाहिये, तभी उसे दूसरे खाते में लिखना चाहिये। इसी प्रकार दूसरे खातों (अवक्रय स्टाक या अवक्रय खाता) से कोई राशि दुकान पर स्टाक खाते में अन्तरित करने के लिये पहले उसे अवक्रय मूल्य में परिवर्तित कर लेना चाहिय।

तीनों मेमोरेंडम खातों के प्रारूप नीचे दिये गये हैं।

Memorandum Stock at Shop Account

Dr.			**Cr.**
To Balance b/d	Rs.	By Goods Sold on Hire Purchase (at cost)(1)	Rs.
To Purchases		By Balance c/d	

Memorandum Hire Purchase Stock Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Instalment Due (2)	
To Goods Sold on Hire Purchase(at HP. price) (1)		By Goods Repossessed (instalments not yet fallen due)	
		By Balance c/d	

Memorandum Hire Purchase Debtors Account

Dr.		Cr.	
	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Cash Received from Customers	
To Stock with Customer Account (total instalments fallen due) (2)		By Goods Repossessed (instalment due but not paid)	
		By Balance c/d	

उदाहरण 7 के अध्ययन से आपको अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिए आवश्यक सभी अज्ञात राशियों के परिकलन की विधि पूरी तरह स्पष्ट हो जायेगी।

उदाहरण 7

होम एप्लाएंसेज लि. अवक्रय मूल्य पर 25% लाभ पर अवक्रय पर माल बेचता है। 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में हुए लेन–देन के विवरण निम्नलिखित हैं।

		रु.
1 जनवरी	लागत पर अवक्रय स्टॉक	6,000
	दुकान पर स्टॉक	1,000
	देय किश्तें	600
	प्राप्त नकद राशि	16,000
31 दिसंबर	लागत पर अवक्रय स्टॉक	6,900
	दुकान पर स्टॉक	1,400
	देय किश्तें	1,000

देनदार प्रणाली के अंतर्गत अवक्रय पर होने वाले लाभ या हानि का परिकलन कीजिए।

हल

Hire Purchase Trading Account

Dr.		Cr.	
	Rs.		Rs.
To Stock with Customers	8,000	By Cash Received	16,000
To Instalment Due	600	By Stock with Customers	9,200
To Goods Sold on Hire Purchase	17,600		
		By Instalment Due	1,000
	26,200		26,200
To Stock Reserve (loading)	2,300	By Stock Reserve (loading)	2,000
To Profit & Loss A/c (Profit)	4,100	By Goods sold on Hire Purchase (loading)	4,400
	6,400		6,400

Working Note :

Calculation of Missing Figure :

Memorandum Stock at Shop Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,000	By Stock with Customers (at cost)	13,200
To Purchases (balance figure)	13,600	By Balance c/d	1,400
	14,600		14,600

Memorandum Stock with Customers Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	8,000	By Instalment Due	16,400
To Stock at Shop (at hire purchase price) (missing figure)	17,600	By Balance c/d	9,200
	25,600		25,600

Memorandum Instalments Due Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	600	By Cash Received	16,000
To Stock with Customers (balancing figure)	16,400	By Balance c/d	1,000
	17,000		17,000

बोध प्रश्न ख

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) कम मूल्य के माल का लेखाकरण केवल .....की पुस्तकों में किया जाता है।

   ii) विक्रेता एक ..... रजिस्टर बनाता है।

   iii) अवक्रय करार पर लाभ या हानि निकालने के लिये विक्रेता ..... खाता बनाता है।

   iv) अवक्रय पर बेचे गये माल को अवक्रय व्यापार खातें के ..... की ओर दिखाया जाता हे।

   v) विक्रेता द्वारा पुनर्ग्रहण किए गए माल पर हानि इस माल के बाजार मूल्य और इसकी ..... के अन्तर के बराबर होती है।

vi) जो राशियाँ मिल नहीं रही है उन्हें ज्ञात करने के लिए जो तीन खाते बनाये जाते हैं वे दुकान पर स्टॉक खाता ..... खाता और देय किश्त खाता है।

2. अवक्रय देनदार से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

3. अवक्रय स्टॉक का अर्थ समझाइये।

.....

.....

.....

.....

12.8 स्टॉक एवं देनदार विधि (Stock and Debtors System)

अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लेखा अवधि में हुई लाभ–हानि एक अन्य विधि द्वारा भी ज्ञात की जा सकती है। इस विधि को 'स्टाक एवं देनदार विधि' कहते हैं। यह विधि शाखा खातों के लिये अपनायी गयी स्टॉक विधि जैसी ही है। इस प्रणाली के अन्तर्गत हम चार नियंत्रण खाते बनाते हैं। ये हैं : (i) अवक्रय स्टॉक खाता (Hire Purchase Stock Account), (ii) अवक्रय देनदार खाता (Hire Purchase Debtors Account), (iii) पुनर्ग्रहीत माल खाता (Goods Repossessed Account), तथा (iv) अवक्रय पर बेचा गया माल खाता (Goods Sold on Hire Purchase Account)। फिर अवक्रय समायोजन खाते में अवक्रय पर बेचे गये माल तथा अवक्रय स्टॉक (किश्तें जो अभी तक देय नहीं हैं) की प्रारम्भिक और अन्तिम राशियों में, अन्तर्गस्त भार (loading) की प्रविष्टियाँ की जाती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें अवक्रय व्यापार से संबंधित खर्चें तथा हानियाँ डेबिट की जाती हैं। अवक्रय समायोजन खाते के दोनों पक्षों का अन्तर अवक्रय व्यापार की लाभ हानि को दर्शाता है।

इस प्रणाली के अंतर्गत लेजर में आव यक खाते खोलने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1. **अवक्रय पर बेचे गये माल के लिये**

Hire Purchase Stock A/c	Dr.	
To Goods sold on H.P. A/c		

2. **उन किश्तों की कुल राशि के लिये जो चालू वर्ष में देय हुई**

Hire Purchase Debtors A/c	Dr.	
To Hire Purchase Stock A/c		

3. **प्राप्त राशि के लिये**

Cash A/c	Dr.	
To Hire Purchase Debtors A/c		

4. **पुनर्ग्रहण किये गये माल के लिये (अदत्त किश्तें)**
Goods Repossessed A/c Dr.
To Hire Purchase Stock A/c

5. **अवक्रय पर बेचे गये माल पर भार के लिये**
Goods sold on H.P. A/c Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c

6. **प्रारम्भिक अवक्रय स्टाक पर भार के लिये**
Stock Reserve A/o Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c

7. **अन्तिम अवक्रय स्टाक पर भार के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

8. **पुनर्ग्रहण किये गये माल पर हुई हानि के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Goods Repossessed A/c
(With difference between instalments unpaid and market value of goods repossessed or for loading only)

9. **अवक्रय लेन–देनों से सम्बंधित व्यय के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Expenses A/c

10. **अवक्रय व्यापार पर हुये लाभ के अन्तरण के लिये**
Profit & Loss A/c Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c
In case of loss, the entry can be reversed

11. **अवक्रय पर बेचे गये माल के खाते को बंद करने के लिये**
Goods Sold on H.P. A/c Dr.
To Trading (Stock at shop) A/c

उदाहरण 8 तथा 9 देखिये और अध्ययन कीजिए कि स्टाक एवं देनदार विधि के अन्तर्गत विभिन्न नियंत्रण खाते बना कर अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि कैसे ज्ञात की जाती है।

उदाहरण 8

एस.एस.के. एंड कं. ने लागत मूल्य पर 25% की दर से लाभ पर अपना माल बेचा। इस संबंध में निम्नलिखित सूचना के आधार पर उनकी पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए। स्टॉक एवं देनदार विधि अपनाइए।

दुकान में स्टॉक	रु.
1.4.18 को	15,000
31.3.19 को	12,500
1.4.18 को अवक्रय पर ग्राहकों के पास माल	18,000
दुकान के स्टॉक के लिए क्रय	32,300
18–19 वर्ष में अवक्रय पर बेचा गया माल	43,500
प्राप्त किश्तें	30,000

बाकी किश्तें

1.4.18 को	1,000
31.3.19 को	1,500

हलः

Hire Purchase Stock Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	18,000	By Hire Purchase Debtors A/c (1)	30,500
To Goods Sold on Hire Purchase A/c	43,500	By Balance c/d	31,000
	61,500		61,500
To Balance b/d	31,000		

Hire Purchase Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,000	By Bank A/c	30,000
To Hire Purchase Stock A/c (1) (amount of instalments due-balancing figure)	30,500	By Balance c/d	1,500
	31,500		31,500
To Balance b/d	1,500		

Goods Sold on Hire Purchase Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Hire Purchase Adjustment A/c	8,700	By Hire Purchase Stock A/c	43,500
To Shop Stock	34,800		
	43,500		43,500

Hire Purchase Adjustment Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Stock Reserve A/c (loading on closing H.P. Stock)	6,200	By Stock Reserve A/c (loading on opening H.P.stock)	3,600
To Profit & Loss A/c (balancing figure)	6,100	By Goods Sold on H.P. A/c (loading)	8,700
	12,300		12,300

i) On goods sold on H.P. = 43,500 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 8,700

ii) On opening H.P. stock = 18,000 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 3,600

iii) On closing H.P. stock = 31,000 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 6,200

उदाहरण 9

उदाहरण 6 से सूचना लेकर स्टॉक एवं देनदार विधि अपनाते हुए अवक्रय व्यापार से होने वाले लाभ को ज्ञात कीजिए।

Hire Purchase Stock Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (at hire purchase price)	18,000	By Hire Purchase Debtors A/c (balancing figure)	1,28,000
To Goods Sold on Hire Purchase A/c (at hire purchase price)	1,74,000	By Goods Repossessed A/c	6,000
		By Balance c/d (at hire purchase price)	60,000
	1,92,000		1,92,000
To Balance b/d	60,000		

Hire Purchase Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	10,000	By Cash A/c	1,20,000
To Hire Purchase Stock A/c. (total instalment due— balancing figure)	1,26,000	By Balance c/d	16,000
	1,36,000		1,36,000
To Balance b/d	16,000		

Goods Repossessed Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To H.P. Stock A/c	6,000	By H.P. Adjustment A/c (loss being the diff. between instalments unpaid and its market value)	3,000
		By Balance c/d	3,000
	6,000		6,000
To Balance b/d	3,000		

Hire Purchase Adjustment Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Stock Reserve A/c (loading on closing H.P. stock)	20,000	By Stock Reserve A/c (loading on opening H.P. Stock)	6,000
To Loss on Goods Repossessed (diff. between instalment due and market price)	3,000	By Goods Sold on Hire Purchase A/c (loading)	58,000
To Expenses A/c	19,000		
To Profit & Loss A/c (Profit)	22,000		
	64,000		64,000

बोध प्रश्न ग

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) अवक्रय समायोजन खाता आरंभिक और अन्तिम स्टॉक पर और अवक्रय पर बेचे गये माल पर ..... दर्शाता है।

   ii) अवक्रय देनदार खाते को अन्तिम शेश और ..... से क्रेडिट किया जाता है।

   iii) अवक्रय पर बेचा गया माल दुकान पर स्टॉक खाते में ..... पर दिखाया जाता है।

   iv) पुनर्ग्रहण किये गये माल पर हानि ..... खाते के डेबिट की ओर दिखायी जाती है।

   v) .....खाते का शेष ग्राहकों के पास स्टॉक के मूल्य को ..... मूल्य पर दर्शाता है।

2. स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि निकालने के लिये जो खाते खोले जाते हैं उनकी सूची बनाइये।

   .....

   .....

   .....

   .....

12.9 सारांश

अवक्रय करार के अन्तर्गत विक्रेता अवक्रेता को माल का स्वामित्व (कब्जा) नहीं देता है। स्वामित्व अन्तिम किश्त का भुगतान होने पर ही अवक्रेता को प्राप्त होता है, तथा यदि अवक्रेता चूक करता है, तो विक्रेता को माल के पुनर्ग्रहण का अधिकार होता है। किन्तु वह अवक्रेता से समझौता कर सकता है, तथा माल के एक अंश का पुनर्ग्रहण कर सकता है।

जब अवक्रेता की चूक होने पर विक्रेता माल का केवल एक अंश ही पुनर्ग्रहण करता है, तब वह इसके मूल्य का पुनर्निर्धारण करता है तथा इसका समायोजन अवक्रेता द्वारा देय राशि में कर देता है।

अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली में प्रमुख अन्तर उस समय से सम्बन्धित है जबकि माल का स्वामित्व विक्रेता क्रेता को हस्तांतरित होता है। अवक्रय प्रणाली में माल का स्वामित्व अन्तिम किश्त के भुगतान के समय हस्तांतरित होता है, जबकि किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत स्वामित्व अनुबंध पर हस्ताक्षर के समय ही हस्तांतरित हो जाता है। दोनों प्रणालियों के अन्तर्गत लेखाविधि लगभग समान है। अन्तर केवल ब्याज के निरूपण से सम्बन्धित है। अवक्रय प्रणाली की स्थिति में जैसे ही किश्तें देय होती हैं, तभी अवक्रेता को ब्याज की वास्तविक राशि से डेबिट कर दिया जाता है। किन्तु किश्तों में भुगतान प्रणाली की स्थिति में क्रेता को बिक्री के समय ही ब्याज की पूरी राशि से डेबिट कर दिया जाता है, तथा इसे ब्याज निलम्बित खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। जब–जब किश्तें देय होती हैं, तब–तब ब्याज निलम्बित खाते को ब्याज की वास्तविक राशि से डेबिट कर दिया जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता को कुल ब्याज सहित पूरी राशि के लिए देनदार माना जाता है। किन्तु व्यवहार में इसके बिना भी काम चलाया जा सकता है।

जब कम मूल्य के माल अवक्रय पर बेचे जाते हैं तो लेखाकरण की एक विशेष विधि की आव यकता होती है। ऐसे माल का लेखाकरण केवल विक्रेता द्वारा ही किया जाता है। वह एक अवक्रय–विक्रय रजिस्टर बनाता है जिसमें उपयुक्त कॉलम होते हैं इन कॉलमों के योगों की खतौनी विभिन्न नियंत्रण खातों में समय–समय पर की जाती है पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करने की दो विधियाँ हैं (i) देनदार विधि – जिसके अन्तर्गत अवक्रय व्यापार खाता बनाया जाता है और (ii) स्टॉक और देनदार विधि।

अवक्रय व्यापार खाता परेशण खाते (Consignment Account) की भांति होता है। इसका पहला भाग आरंभिक अवक्रय स्टॉक, आरंभिक अवक्रय देनदार और अवक्रय पर बेचे गये माल को डेबिट की ओर दिखाता है तथा नकद प्राप्त राशि, पुनर्ग्रहण किये गये माल, अन्तिम अवक्रय स्टॉक और अन्तिम अवक्रय देनदार को क्रेडिट की ओर दिखाता है। इसके दोनों ओर के योग बराबर होने चाहिये। इसका दूसरा भाग मुख्यतः अवक्रय पर बेचे गये माल पर भार (loading), आरंभिक स्टॉक और अन्तिम स्टॉक पर भार और पुनर्ग्रहण किए गये माल पर हानि और अवक्रय व्यापार पर हुए खर्च को दर्शाता है। दोनों ओर का अन्तर अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि दर्शाता है जिसे लाभ या हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है। अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिए जिन मदों की आवश्यकता होती है कभी–कभी उनमें से कुछ का पता नहीं होता। इन्हें तीन मेमोरेंडम खाते बनाकर ज्ञात किया जात सकता हैः (i) दुकान पर स्टॉक खाता, (ii) अवक्रय स्टॉक खाता और (iii) अवक्रय देनदार खाता। यदि एक मद पता नहीं है तो इसे प्रत्यक्ष रूप से अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग से ही ज्ञात किया जा सकता है।

स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत, अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये जो खाते बनाये जाते हैं वे हैं : (i) अवक्रय पर बेचा गया माल खाता (Goods sold on Hire Purchase Account), (ii) अवक्रय स्टॉक खाता (Hire Purchase Stock Account), (iii) अवक्रय देनदार खाता (Hire Purchase Debtors Account), (iv) पुनर्ग्रहण किया गया माल खाता (Goods Repossessed Account), और अवक्रय समायोजन खाता (Hire Purchase Adjustment Account)। अवक्रय समायोजन खाता अवक्रय व्यापार खाते के दूसरे भाग जैसा ही है जो अवक्रय–विक्रय पर लाभ या हानि दर्शाता है। यह ब्रांच खातों में बनाये जाने वाले ब्रांच समायोजन खाते जैसा ही है।

12.10 शब्दावली

चूक (Default): भुगतान करने में अवक्रेता की असफलता।

किश्तों में बिक्री (Instalment Sale): बिक्री का एक सामान्य सौदा जिसमें भुगतान आस्थगित आधार पर किया जाता है, किन्तु क्रेता सौदा पूरा होते ही माल का स्वामी बन जाता है।

स्वामित्वाधिकार का अंतरण (Passing of Title): स्वामित्व का हस्तांतरण।

अभिग्रहण (Seizure): कानून के प्रावधान के अन्तर्गत माल का पुनर्ग्रहण। अवक्रय करार, विक्रेता को यह अधिकार दे सकता है कि यदि अवक्रेता किश्तों में भुगतान में चूक करता है, तो वह बेचे हुए माल का अभिग्रहण कर ले।

नियंत्रण खाते (Control Accounts): अवक्रय स्टॉक, अवक्रय देनदार आदि खाते जाँचने के लिये समग्र राशियों (aggregate figure) से बनाये जाने वाले खाते।

अवक्रय देनदार (Hire Purchase Debtors): देय किश्तों की राशि जिनका अभी भुगतान नहीं किया गया है।

अवक्रय स्टॉक (Hire Purchase Stock): किश्तें जो अभी देय नहीं हुई हैं।

अवक्रय व्यापार खाता (Hire Purchase Trading Account): अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये बनाया जाने वाला खाता।

स्टॉक रिजर्व (Stock Reserve): अवक्रय स्टॉक में भार (loading) की राशि।

दुकान पर स्टॉक (Stock at Shop): स्टोर में पड़ा अनबिका माल।

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 1. i) असफलता, ii) भौतिक कब्जा, iii) कब्जे, पुनः प्राप्ति, iv) समाप्त किया जाता है, अभिग्रहण, v) हरजाना प्राप्त करने, vi) प्रथम भुगतान, स्वामित्वाधिकार

2. i) गलत, ii) सही, iii) गलत, iv) सही, v) गलत ।

ख 1. i) विक्रेता, ii) अवक्रय विक्रय, iii) अवक्रय व्यापार, iv) डेबिट v) अदत्त किश्त, vi) ग्राहकों के पास स्टॉक।

ग 1. i) भार, ii) नकद प्राप्त राशि, iii) लागत, iv) अवक्रय समायोजन, v) अवक्रय स्टॉक, अवक्रय।

12.12 स्व–परख पश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. 'अवक्रय' तथा 'किश्तों में बिक्री' दोनों के सम्बन्ध में 'चूक तथा पुनर्ग्रहण' शब्दों की व्याख्या कीजिये।

2. अवक्रय अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत चूक होने की स्थिति में अवक्रय विक्रेता के क्या–क्या अधिकार हैं?

3. अवक्रय अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत माल का अभिग्रहण तथा पुनर्ग्रहण होने की स्थिति में अवक्रेता के अधिकार क्या हैं?

4. अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत लेखा विधि के बीच के अन्तर का विवेचन कीजिये।

5. अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली की समानताओं और विषमताओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

6. व्यक्तिगत लेन–देन का रिकार्ड सहायक पुस्तक में किस प्रकार रखा जाता है ?

7. अवक्रय व्यापार में प्रयोग की जाने वाली स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत विभिन्न खाते खोलने के लिये की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियाँ बनाइये।

8. अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करे के लिए अपनायी जाने वाली 'स्टॉक और देनदार विधि' और 'अवक्रय व्यापार खाता' विधि में अन्तर स्पश्ट कीजिए।

अभ्यास

1. पी क्यू आर लि. ने 1.1.15 को एक संयंत्र आर एस टी लि. को अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत बेचा। भुगतान प्रत्येक वर्ष के अन्त में 4,230 रु. प्रत्येक किश्त के हिसाब से चार वार्षिक किश्तों में किया जाना था। ब्याज की दर 5% की दर से लिया जाना था। आर एस टी लि. ने तीसरी किश्त के भुगतान के समय चूक कर दी तथा पी क्यू आर लि. ने संयंत्र पुनर्ग्रहण किया। आर एस टी लि. ने ह्रासित मूल्य विधि (W.D.V. method) के अनुसार मूल्यह्रास 10% वार्षिक दर से चार्ज किया। आर एस टी लि. की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये।

   (**Answer :** Cash Price Rs, 15,000, Total Interest Rs. 1920, Loss on repossession Rs. 2,676).

2. करीम लि. ने सोलोमन लि. से 1.1.17 को 60,000 रु. नकद मूल्य का कुछ फर्नीचर अवक्रय प्रणाली के आधार पर खरीदा। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 15,480 रु. तत्काल नकद, तथा शेष राशि 10,000 रु. प्रत्येक की 5 वार्षिक किश्तों में ब्याज 4% वार्षिक की दर से चार्ज किया गया। करीम लि. केवल पहली किश्त का भुगतान कर सका। तथा चूक होने पर सोलोमन लि. ने माल का जिसका मूल्यांकन स्थायी किश्त पद्धति के अनुसार 15% वार्षिक की दर से मूल्यह्रास चार्ज करके किया गया, पुनर्ग्रहण कर लिया। 1.3. 2019 को सोलोमन लि. ने माल की मरम्मत पर 1500 रु. खर्च किया तथा उसे 45,000 रु. में बेच दिया। सोलोमन लि. की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

   (**Answer:** Amount due from Karim Ltd. on 31.12.2018 Rs. 37,753; Profit taken to P & L A/c in 2018 Rs. 4,247 : Profit on resale in 2019 Rs. 1,500.)

3. फेयर लि. ने 1.1.16 को अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत 1200 रु. मूल्य की मशीनरी अनफेयर लि. से खरीदी, जिसका भुगतान चार–चार हजार रुपये की तीन वार्षिक किश्तों में किया जाना था। ब्याज 6% वार्षिक की दर से चार्ज किया जाना था तथा किश्तों के साथ दिया जाना था। फेयर लि. दूसरी किश्त का भुगतान नहीं कर सका

तथा यह सहमति हुई कि यदि फेयर लि. उस तिथि तक के ब्याज का बकाया का भुगतान कर दे, तो अनफेयर लि. 8,000 रु. लागत वाली मशीनरी का 4,500 रु. के मूल्य पर आंशिक पुनर्ग्रहण कर लेगा। यह मानते हुए कि मूल्यह्रास ह्रासित मूल्य विधि के आधार पर 10% प्रति वर्ष की दर से लगाया जाना है, फेयर लि. की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Loss on partial repossession Rs. 1,980, value of the machinery carried forward Rs. 3,240. Total amount of interest paid Rs. 1,200).

4. अजय ने 1 जुलाई 2016 को पांच ट्रक अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत खरीदे। प्रत्येक ट्रक का नकद मूल्य 1,00,000 रु. था। उसे नकद मूल्य का 25% सुपुर्दगी के समय तत्काल नकद के रूप में, तथा शेष 5% वार्षिक ब्याज के साथ पांच वार्षिक किश्तों में चुकाना था। अजय 30 जून 2019 को देय तीसरी किश्त का भुगतान करने में असफल रहा। यह सहमति हुई कि दो ट्रक विक्रेता को वापिस कर दिये जाएंगे तथा इन दो ट्रकों का मूल्य देय राशि के प्रति समायोजित कर लिया जाएगा। वापिस किये जाने वाले ट्रकों का मूल्यांकन ह्रासित मूल्य विधि के अनुसार 25% वार्षिक मूल्यह्रास लगाकर किया जाएगा। पुनर्ग्रहीत ट्रक 4,000 रु. की लागत पर मरम्मत किये गये, तथा 90,000 रु. में बेच दिये गये। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये। खाते प्रति वर्ष 30 जून को बन्द किये जाते हैं, तथा मूल्यह्रास 20% वार्षिक की दर से चार्ज किया जाता है। ।

(**Answer:** Goods Repossessed Rs. 84,375. Loss on Goods repossessed Rs. 18,025. Balance due to Hire Vendor Rs. 1,88,297)

5. हरीश ने 1.1.2017 को रमेश से कुछ मोटर पम्प किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत खरीदे। इनका नकद मूल्य 74,466 रु. था जिसका भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 20,000 रु. तत्काल भुगतान के रूप में तथा शेष 5% वार्षिक ब्याज सहित बीस–बीस हजार रु. की तीन समान वार्षिक किश्तों में – मूल्यह्रास सरल रेखा विधि के अनुसार 10% वार्षिक मानते हुए हरीश और रमेश की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Total Interest for Interest Suspense A/c Rs. 5,534 adjusted Rs. 2,723 in 2017,Rs. 1,859 in 2018 and Rs. 952 in 2019).

6. 1.1.17 को लोकेश ने सुरेश से किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत कुछ मशीनरी खरीदी। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 6,000 रु. तत्काल नकद, तथा शेष 5% ब्याज पर तीन समान वार्षिक किश्तों में। लागत मूल्य 22,350 रु. था। मूल्यह्रास ह्रासित विधि के अनुसार 10% की दर से चार्ज किया गया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Total interest for Interest Suspense A/c Rs. 1,650 adjusted as Rs. 818 in 2017, Rs. 558 in 2018 and Rs. 274 in 2019)

7. प्रीमियर ट्रेडर कं. नामक एक विक्रेता ने 31.12.2018 को समाप्त हाने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित सूचना दी है।

	रु.
1.1.2018 को अवक्रय ग्राहकों के पास माल (अवक्रय मूल्य पर)	32,000

वर्ष के अंतर्गत अवक्रय पर बेचा गया माल (क्रय मूल्य पर)	1,60,000
वर्ष के प्राप्त रोकड़	1,12,000
बाज़ार मूल्य पर वापस प्राप्त माल (अदत्त किश्तें, 4,000 रु.)	600
31.12.2018 को अवक्रय ग्राहकों के पास माल (अवक्रय मूल्य पर)	72,000

प्रीमियर ट्रेडर कं. की पुस्तकों में अवक्रय व्यापार खाता बनाइये जिसने लागत में 60% जोड़ कर अवक्रय पर माल बेचा।

(Answer: Profit Rs. 41 ,600; Missing figure : H.P. Debtors at the end Rs. 4,000)

8. ली लिमिटेड नामक विक्रेता के निम्नलिखित लेन–देनों से 31.12.18 को समाप्त हाने वाले वर्श के लिए देनदार विधि के अन्तर्गत पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए। माल को लागत में $33\frac{1}{3}\%$ जोड़कर बेचा जाता है।

		रु.
1 जनवरी, 2018	दुकान में स्टाक	2,000
	देय किश्तें	1,200
	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास स्टॉक	16,000
31 दिसंबर, 2018	दुकान मे स्टॉक	2,800
	देय और अदत्त किश्तें	2,000
	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास स्टॉक	18,400
	वर्ष में प्राप्त रोकड़	32,000
	अवक्रय व्यापार पर व्यय	3,000
	क्रय	27,200

(Answer: Goods sold on Hire Purchase at H.P. price Rs. 35,000; Profit Rs. 5,200)

9. एच. सी. सेल्स नामक एक विक्रेता अवक्रय व्यापार करता है। उसके व्यापार के संबंध में 31.12. 2018 को समाप्त होने वाले वर्श के लिए निम्नलिखित सूचनाएं प्राप्त हुई हैं।

		रु.
1 जनवरी, 2018	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास माल	4,500
	देय किश्त	2,500
31 दिसंबर, 2018	ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	30,000

	बाजार मूल्य पर पुनर्ग्रहण किया गया माल	
	(देय किश्तें 1,000 रु.)	650
	देय किश्तें	4,500
	अवक्रय पर बेचा गया माल	43,500

(**Answer:** Net profit Rs. 10,650; missing figure H.P. Stock at end Rs. 15,000)

10. 30 जून, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ऑटो डिलर्स लि. के संबंध में निम्नलिखित सूचना प्राप्त हुई, जो अवक्रय व्यापार करता है। स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत लाभ की राशि की गणना कीजिए।

		रु.
1 जुलाई, 2017	देय किश्तें	4,000
	दुकान में स्टॉक	12,000
	ग्राहक के पास स्टॉक (अवक्रय मूल्य पर)	25,000
	वर्ष में प्राप्त रोकड़	2,00,000
	क्रय	1,67,000
	पुनर्ग्रहण किए गए माल का मूल्यांकन (देय किश्तें 3,000 रु.)	5,00
30 जून 2018	देय किश्तें	6,000
	दुकान में स्टॉक	11,000
	ग्राहकों में पास स्टॉक (अवक्रय मूल्य पर)	30,000

अवक्रय मूल्य पर 20% पर क्रय पर माल बेचा गया।

(Answer : Profit Rs. 38,500)

11. गिरधारी अवक्रय पर भी माल बेचता है। लागत में 50% जोड़कर अवक्रय मूल्य निश्चित किया जाता है। 2018 वर्ष के लिए अवक्रय व्यापार के संबंध में निम्नलिखित सूचनाएं दी गई हैं।

	रु.
1 जनवरी, 2018 को अवक्रय स्टॉक	36,000
1.1. 2018 को अवक्रय देनदार	900
अवक्रय मूल्य पर बेचा गया माल	2,71,800
वर्ष में प्राप्त रोकड़	2,77,200
2018 में देय हुई किश्तों की कुल राशि	2,78,100

जिस ग्राहक को 3,600 रु. का माल बेचा गया था उसने प्रत्येक 300 रु. की तीन किश्तों का भुगतान किया। 1 दिसंबर, 2018 को उसे चौथी किश्त देनी थी लेकिन वह उसका भुगतान न कर सका। इसके फलस्वरूप कानूनी नोटिस देने के बाद 27 दिसंबर को माल का पुनर्ग्रहण कर लिया गया।

31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वर्ष के लिए स्टॉक और देनदार विधि के अंतर्गत आवश्यक खाते बनाइये।

(**Answer:** Profit Rs. 92,600; Missing figures; H.P. Stock at the end Rs. 27,300 and H.P. Debtors at the end Rs. 1,500 after crediting Rs. 2,400 and Rs. 300 for goods repossessed.)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ताः एडवांस्ड एकाउंटिग, (2018), सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

के. एल. मॉटाः एडवांस्ड एकाउंटेसी (2018) जीं लाल एंड कंपनी, नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी :एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018), जी. लाल एडं कंपनी., नई दिल्ली

एम. सी शुक्ला, टी. एस. ग्रेवाल एवं एस. सी. गुप्ताः एडवांस्ड एकाउंटेंसी, (2018) एस. चांद एण्ड कंपनी,. नई दिल्ली)

इकाई 13 ब्रांच लेखा-I

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 ब्रांच लेखा की आवश्यकता

13.3 ब्रांचों की श्रेणियां

13.4 आश्रित ब्रांचों का लेखा

13.5 देनदार प्रणाली

13.5.1 लागत मूल्य विधि

13.5.2 बीजक मूल्य विधि

13.6 अन्तिम लेखा प्रणाली

13.7 स्टॉक एवं देनदार प्रणाली

13.8 सारांश

13.9 शब्दावली

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- ब्रांच लेखा की आवश्यकता बता सकें;
- लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों की विभिन्न श्रेणियां बता सकें;
- किसी आश्रित ब्रांच का लेखा रखने की तीन प्रणालियों का वर्णन कर सकें;
- लागत मूल्य और बीजक मूल्य पर आधारित देनदार प्रणाली के अर्न्तगत ब्रांच खाता बना सकें; और
- अन्तिम लेखा प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता बना सकें;
- स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत आवश्यक खाते बना सकें।

13.1 प्रस्तावना

किसी व्यवसाय को कई भागों में बांटा जा सकता है। यदि व्यवसाय के विभिन्न भाग एक ही भवन में हैं तो उन्हें विभाग (departments) कहा जाता है और यदि ये उसी शहर में विभिन्न स्थानों पर अथवा देश या विदेश में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं तो इन्हें ब्रांच कहा जाता है। उदाहरण के लिए कॉटेज एम्पोरियम के विभिन्न भाग हैं जैसे – वस्त्र, फर्नीचर, उपहार वस्तुए, गहने आदि। ये सभी एक ही भवन में स्थित हैं। इसलिए ये विभाग कहलाते

हैं। स्नोवाइट के शोरूम कनॉट प्लेस, नेहरू प्लेस, करोल बाग, साउथ एक्सटेंशन और कमला नगर में स्थित हैं। ये सभी स्नोवाइट की ब्रांचे हैं। इसी प्रकार बाटा की ब्रांचे सारे देश में है और लेवेन्टीज की ब्रांचें पूरे विश्व में है। प्रत्येक ब्रांचे को एक पृथक लाभ केन्द्र (profit centre) की तरह माना जाता है और इसलिए प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि अलग से निकालना होता है। इसके अतिरिक्त, फर्म को प्रत्येक ब्रांच की विभिन्न गतिविधियों पर नियंत्रण रखना होता है और यह सुनिश्चित करना होता है कि इनका कार्य सुचारू रूप से चले। इसलिए, लेखाकारों ने ब्रांच स्तर पर लेने–देनों को रिकार्ड करने के लिए और फर्म की पुस्तकों में ब्रांचों के लेन–देनों के निवल प्रभाव (net effect) को समाविष्ट (incorporate) करने के लिए कुछ विशिष्ट लेखा विधियाँ बनाई हैं।

लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है : (i) आश्रित ब्रांचे (dependent branches), : (ii) स्वतंत्र ब्रांचे (independent branches) और (iii) विदेशी ब्रांचे (foreign branches) इस इकाई में आप यह अध्ययन करेंगे कि आश्रित ब्रांचों के खाते कैसे बनाये जाते हैं और इनके लाभ या हानि कैसे निकाले जाते हैं।

13.2 ब्रांच लेखा की आवश्यकता

जैसा पहले बताया जा चुका है प्रत्येक ब्रांच को एक पृथक् लाभ केन्द्र की भांति माना जाता है। अतः इसके विभिन्न लेन–देनों को इस प्रकार रिकार्ड करना चाहिए कि इसका लाभ या हानि अलग से निकाला जा सके और उसे लेखा वर्ष के अन्त में फर्म के कुल लाभ–हानि में समाविष्ट किया जा सके। इसके अतिरिक्त, ब्रांचे अपनी सभी गतिविधियों का संचालन मुख्य कार्यालय (head office) के नियंत्रण और निर्देशन के अन्तर्गत करती हैं और मुख्य कार्यालय को समय–समय पर प्रत्येक ब्रांच की कार्य प्रणाली के बारे में कई तरह की सूचनाओं की आवश्यकता पड़ सकती है। ये सूचनाएं प्रदान करना तभी संभव होगा जब ब्रांचे उचित लेखा पुस्तकें रखें। इस प्रकार ब्रांच लेखे रखने के मुख्य कारणों को संक्षेप में यों कहा जा सकता है:

i) लेखा अवधि के लिए प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करना;

ii) लेखा वर्ष के अन्त में प्रत्येक ब्रांच की वित्तीय स्थिति का पता लगाना;

iii) ब्रांचों के लेन–देनों के शुद्ध प्रभाव को और उनकी परिसम्पत्तियों और देयताओं को फर्म के अन्तिम लेखा में समाविष्ट करना;

iv) प्रत्येक ब्रांच के लिए स्टॉक और नकद राशि की आवश्यकता का अनुमान लगाना;

v) प्रत्येक ब्रांच के कार्य और उसकी प्रगति का मूल्यांकन करना;

vi) यदि मैनेजरों को दिया जाने वाला कमीशन ब्रांच के लाभ पर आधारित है तो उसका परिकलन करना;

vii) प्रत्येक ब्रांच में व्यापार के विस्तार की सम्भावनाओं का पता लगाना; और

viii) अंकेक्षण (audit) संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना।

13.3 ब्रांचों की श्रेणियां

लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

1. ऐसी ब्रांचे जो पूरे खाते स्वयं नहीं रखती
2. ऐसी ब्रांचें जो पूरे खाते स्वयं रखती हैं, और
3. विदेशी ब्रांचे

आइए, इन विभिन्न प्रकार की ब्रांचों की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करें।

ऐसी ब्रांचे जो पूरे खाते स्वयं नहीं रखती हैं: जो ब्रांचे पूरे खाते नहीं रखती हैं उन्हें **आश्रित ब्रांचे** भी कहा जाता है। ऐसी ब्रांचों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

i) ये केवल मुख्य कार्यालय से प्राप्त किये गये माल को बेचती हैं और वे प्रायः मुख्य कार्यालय की इजाजत के बिना बाजार से माल नहीं खरीद सकती।

ii) मुख्य कार्यालय द्वारा ऐसी ब्रांचों को माल लागत मूल्य पर या बीजक मूल्य पर सप्लाई किया जाता है।

iii) ब्रांच के सभी प्रमुख खर्चों का भुगतान मुख्य कार्यालय द्वारा किया जाता है। ब्रांच के मैनेजर को केवल छोटे–छोटे खर्चे जैसे ढुलाई, डाक–व्यय आदि करने की अनुमति होती है। वह ये खर्चे उसे प्रदान की गई खुदरा रोकड़ (petty cash) में से करता है और इनके लिए उसे एक साधारण खुदरा रोकड़ बही (Petty Cash Book) रखनी होती है।

iv) नकद बिक्री और देनदारों से प्राप्त राशि या तो प्रतिदिन मुख्य कार्यालय को भेज दी जाती है या किसी स्थानीय बैंक में मुख्य कार्यालय के खाते में जमा कर दी जाती है।

v) ब्रांच मैनेजर से सामान्यतया माल नकद बेचने की अपेक्षा की जाती है लेकिन कुछ स्थितियों में उसे माल उधार बेचने का भी अधिकार दिया जा सकता है।

vi) ऐसी ब्रांचे पूर्ण लेखा पुस्तकें नहीं रखती। ये केवल बिक्री के रिकार्ड रखती हैं और यदि आवश्यक हो तो देनदारों के खाते बनाती हैं। इन्हें स्टॉक रजिस्टर भी रखना होता है और मुख्य कार्यालय को स्टॉक की स्थिति और माल के आने–जाने के बारे में पूर्ण जानकारी भी साप्ताहिक या मासिक विवरणों के रूप में प्रस्तुत करना होता है। इससे मुख्य कार्यालय ब्रांच के स्टॉक पर उचित नियंत्रण रख सकता है।

ऐसी ब्रांचे जो सम्पूर्ण लेखे रखती हैं: जो ब्रांच सम्पूर्ण लेखे रखती हैं उन्हें **स्वतंत्र ब्रांच** कहते हैं। इन्हें बाजार से माल खरीदने की भी अनुमति दी जाती है और यदि आवश्यक हो तो ये मुख्य कार्यालय को भी माल सप्लाई कर सकती हैं। ये प्राप्त की गई नकद राशि में से खर्च कर सकती हैं और अपने नाम से बैंक में खाता रख सकती हैं। अतः व्यावहारिक दृष्टि से ये स्वतंत्र इकाइयों की भांति कार्य करती हैं। मुख्य कार्यालय से इनका एकमात्र संबंध यह होता है कि मुख्य कार्यालय इनका स्वामी होता है और जो भी लाभ ये कमाती हैं या जो भी हानि इन्हें होती है, अंततः वे मुख्य कार्यालय के होते हैं।

ऐसी ब्रांचे अपनी सारी पुस्तकें दोहरी प्रविष्टि प्रणाली (double entry System) के आधार पर रखती हैं और अपना तलपट (Trial Balance), व्यापार तथा लाभ–हानि खाता, और बैलेन्स शीट बनाती हैं। ये अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय का खाता खोलती हैं और इस खाते में मुख्य कार्यालय से होने वाले सभी लेन–देनों को दर्ज करती हैं।

विदेशी ब्रांचे: जब कोई ब्रांच विदेश में स्थित होती है तो उसे विदेशी ब्रांच कहते हैं। ये ब्रांचे अपनी लेखा पुस्तकें विदेशी मुद्रा में रखती हैं। इनकी अन्य प्रकार की ब्रांचों से भिन्न

एक विशेषता यह है कि इनसे प्राप्त वित्तीय सूचनाएं विदेशी मुद्रा में होती हैं और इसे मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट करने से पहले मुख्य कार्यालय के देश की मुद्रा में परिवर्तित करना होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी भारतीय कम्पनी की एक ब्रांच नैरोबी में है तो ब्रांच का तलपट कीनिया की शिलिंग में होगा। मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट करने से पहले इसे रुपये में परिवर्तित करना होगा। व्यावहारिक रूप में विदेशी ब्रांचों को स्वतंत्र ब्रांचों की भांति माना जाता है।

ब्रांचों का सम्पूर्ण वर्गीकरण चित्र 13.1 में दिखाया गया है:

चित्र 13.1

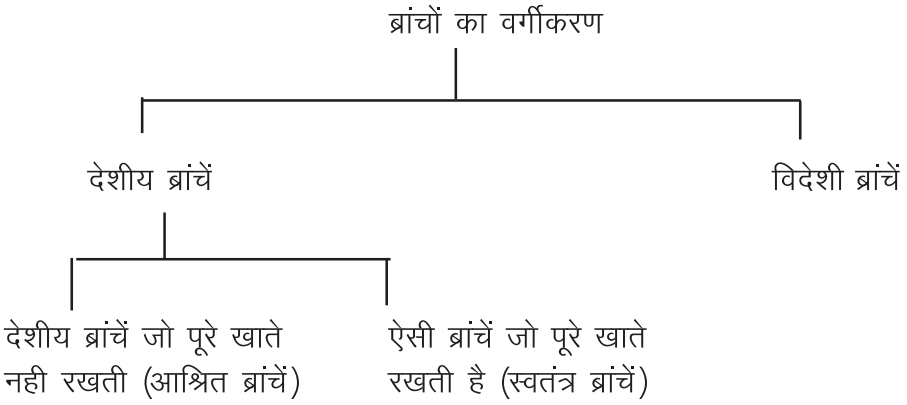

13.4 आश्रित ब्रांचों का लेखा

आप जानते हैं कि आश्रित ब्रांचे पूरी लेखा पुस्तकें नहीं रखतीं। उनके अधिकांश लेन–देन मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में रिकार्ड किये जाते हैं। मुख्य कार्यालय किसी ब्रांच के लिए कैसी लेखा प्रणाली अपनाए, यह ब्रांच के आकार और मुख्य कार्यालय द्वारा उस पर रखे जाने वाले नियंत्रण की मात्रा पर निर्भर करता है। वे विभिन्न विधियाँ जिनके द्वारा मुख्य कार्यालय प्रायः अपनी पुस्तकों में ब्रांच के खाते रखता है निम्नलिखित हैं :

i) **देनदार प्रणाली (Debtors System)**: यह प्रणाली सामान्यतः उन ब्रांचों के लिए अपनायी जाती है जिनका आकार छोटा होता है। इसके अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिए केवल एक ब्रांच खाता (Branch Account) खोलता है जिसमें वह ब्रांच से संबंधित सारे लेनदेनों को रिकार्ड करता है। ब्रांच खाता ऐसे तरीके से बनाया जाता है जिससे कि ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायता मिले।

ii) **अन्तिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System)**: इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि मालूम करने के लिए एक व्यापार एवं लाभ और हानि खाता (Trading and Profit and Loss Account) बनाता है और उस ब्रांच को देय राशि तथा उसके द्वारा देय राशि ज्ञात करने के लिए एक ब्रांच खाता बनाता है। यह ब्रांच खाता केवल एक व्यक्तिगत खाते का काम करता है।

iii) **स्टॉक और देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System)**: इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय कोई ब्रांच खाता नहीं खोलता। प्रत्येक ब्रांच के लाभ या हानि को ज्ञात करने के लिए यह ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account), ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account) और ब्रांच को भेजे गए माल का खाता (Goods Sent to Branch Account) बनाता है।

13.5 देनदार प्रणाली (Debtors System)

जैसा पहले बताया गया है देनदार प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिए एक ब्रांच खाता खोलता है जिसमें वह ब्रांच से संबंधित सभी लेन–देनों को रिकार्ड करता है। ब्रांच खाता, ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायक होता है। ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य पर या विक्रय मूल्य (जिसे बीजक मूल्य भी कहते हैं) पर बनाया जा सकता है। अतः ब्रांच खाता बनाने की दो विधियां हैं : (i) लागत मूल्य विधि और (ii) बीजक मूल्य विधि। आइये अब यह अध्ययन करें कि इन दोनों विधियों के अंतर्गत ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

13.5.1 लागत मूल्य विधि (Cost Price Method)

जब माल का बीजक लागत मूल्य पर बनाया जाता है तो ब्रांच से संबंधित विभिन्न लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं :

1) **For Goods sent to Branch**
Branch A/c Dr.
To Goods Sent to Branch A/c
(Being goods sent to branch)

2) **For return of goods to head office**
Goods Sent to Branch A/c Dr
To Branch A/c
(Being goods returned by the branch)

3) **For amount sent to branch for expenses**
Branch A/c Dr.
To Bank A/c
(Being cheque sent to branch for expenses)

4) **For amount received from branch**
Bank A/c Dr.
To Branch A/c
(Being cash or cheque received from branch)

5) **For closing goods sent to branch account**
Goods Sent to Branch A/c Dr.
To Purchases/Trading A/c
(Being balance transferred to Trading Account)

6) **For closing balances of assets at the branch**
Branch Assets A/c (Individually) Dr.
To Branch A/c
(Being closing balances of assets brought into account)

7) **For closing balances of liabilities at the branch**
Branch A/c Dr.
To Branch Liabilities A/c (Individually)
(Being closing balances of liabilities brought into account)

8) **For transferring profit or loss to the General Profit and Loss Account**

i) If profit

Branch A/c Dr.
To General Profit and Loss A/c
(Being branch profit transferred to General P & L A/c)

ii) If loss

General Profit and Loss A/c Dr.
To Branch A/c
(Being branch loss transferred to General P & L A/c)

ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं के अन्तिम शेष मुख्य कार्यालय की बैलेन्स शीट में दिखाये जाते हैं। अगले वर्ष के प्रारंभ में ब्रांच खाते में प्रारंभिक शेष दिखाने के लिए ऊपर दी गयी 6 और 7 प्रविष्टियों की उल्टी प्रविष्टियां की जाती हैं।

ब्रांच खाते का प्रारूप चित्र 13.2 में दिखाया गया है।

Figure 13.2: Proforma of Branch Account

Branch Account

Dr.			**Cr.**
To Opening Balances		**By Opening Balances**	
Stock		Creditors	
Debtors		Outstanding expenses	
Petty Cash		**By Bank**	
Furniture		Cash Sales	
Prepaid expenses		Collections from Debtors	
To Goods Sent to Branch A/c		(for remittances)	
To Bank A/c (for expenses of		By Goods Sent to Branch A/c	
any payment made by the H.O.		(goods returned by the	
on behalf of the Branch)		branch to head office)	
To Closing Balances		**By Closing Balance**	
Outstanding expenses		Petty Cash	
Creditors		Stock	
To Profit, if any		Debtors	
(Transferred to General		Furniture (at depreciated value)	
Profit & Loss A/c)		Prepaid Expenses	
		By Loss, if any	
		(Transferred to General	
		Profit & Loss A/c)	

उदाहरण 1 तथा 2 का अध्ययन कीजिए और समझने का प्रयत्न कीजिए कि दी हुई सूचनाओं के आधार पर ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 1

दिल्ली ब्रांच से संबंधित 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइए।

ब्रांच को भेजे गए चैक

ब्रांच में स्टॉक 1.1. 2018 को	रु.15,000	वेतन के लिए	9,000	
		किराया और कर के लिए	1,500	
		खुदरा रोकड़ के लिए	1,100	11,600

ब्रांच में देनदार 1.1. 2018 को	30,000	ब्रांच द्वारा वापस किया गया माल	2,000
ब्रांच में खुदरा रोकड़ 1.1. 2018	300	31.12. 2018 को ब्रांच में स्टॉक	25,000
ब्रांच को भेजा गया माल	2,52,000		
		31.12. 2018 को ब्रांच में खुदरा रोकड़	200
नकद विक्रय	60,000	31.12. 2018 को ब्रांच में देनदार	48,000
देनदारों से प्राप्ति	2,10,000		
उधार विक्रय	2,28,000		

हल :

Head Office Ledger
Delhi Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.			Rs.
To Balance b/d			By Cash:		
Branch Stock		15,000	Cash Sales	60,000	
Branch Debtors		30,000	Received from		
Branch Petty Cash		300	Debtors	2,10,000	2,70,000
To Goods sent to Branch A/c		2,52,000			
To Bank A/c			By Goods sent to Branch A/c		2,000
Salaries	9,000				
Rent & Taxes	1,500				
Petty Cash	1,100	11,600	By Balance c/d		
To Profit (transferred to General P & L A/c)		36,300	Branch Stock		25,000
			Branch Debtors		48,000
			Branch Petty Cash		200
		3,45,200			3,45,200

उदाहरण 2

संकट मोचन लि. वाराणसी ने 1 जनवरी, 2018 को मद्रास में अपनी एक ब्रांच खोली। 2018 वर्ष के लिए ब्रांच से संबंधित विवरण उपलब्ध हैं।

	Rs.		Rs.
ब्रांच को भेजा गया माल	75,000	खुदरा रोकड़ के लिए ब्रांच को भेजा गया रोकड़	6,000
ब्रांच में नकद विक्रय	50,000	31.12.2018 को ब्रांच में खुदरा रोकड़	500
ब्रांच में उधार विक्रय	60,000	31.12.2018 को ब्रांच में देनदार	5,000
मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किया गया ब्रांच के कर्मचारियों का वेतन	15,000	31.12. 2018 को ब्रांच में स्टॉक	27,000
मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किया गया ब्रांच का कार्यालय व्यय	12,000		

Prepare Branch Account to show the profit/loss from the branch for the year 2018.

Books of Sankat Mochan Ltd. Madras Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.			Rs.
To Goods sent to Branch A/c		75,000	By Bank A/c		
To Bank A/c			Cash Sales	50,000	
Salaries	15,000		Received from Debtors	55,000	1,05,000
Office expenses	12,000	27,000			
To Bank A/c (for petty expenses)		6,000	By Balance c/d:		
To Profit (Transferred to General			Branch Petty Cash		500
P & L A/c)		29,500	Branch Debtors		5,000
			Branch Stock		27,000
		1,37,500			1,37,500

नोट: देनदार से प्राप्त नकद राशि नहीं दी गई है।

Memorandum Madras Branch Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Credit Sales	60,000	By Cash Received (balancing figure)	55,000
		By Balance c/d	5,000
	60,000		60,000

कुछ विशिष्ट मदें (Some Peculiar Items)

खुदरा रोकड़ व्यय (Petty Cash Expenses): ब्रांच द्वारा जो खर्चे अपने खुदरा रोकड़ में से किये जाते हैं उनकी ब्रांच खाते में कोई प्रविष्टि नहीं की जाती। प्रथा के अनुसार ब्रांच खाते को खुदरा रोकड़ के प्रारम्भिक शेष (opening balance of petty cash) और मुख्य कार्यालय द्वारा भेजी गयी खुदरा रोकड़ की रकम (amount sent for petty cash) से डेबिट कर दिया जाता है तथा इसे खुदरा रोकड़ के अन्तिम शेष (closing balance of petty cash) से क्रेडिट कर दिया जाता है। ब्रांच खाते में इन तीन प्रविष्टियों का नेट डेबिट ब्रांच के खुदरा व्यय की राशि के बराबर होता है। उदाहरण के लिये, एक ब्रांच में खुदरा रोकड़ बही का प्रारंभिक शेष 200 रु. था। मुख्य कार्यालय ने ब्रांच को 300 रु. खुदरा व्यय के लिये भेजे। पूरे साल में ब्रांच ने 400 रु. के खुदरा व्यय किये। जब हम ब्रांच खाते को खुदरा रोकड़ के प्रारंभिक शेष 200 रु. और मुख्य कार्यालय द्वारा खुदरा व्यय के लिये भेजे गये 300 रु. की राशियों से डेबिट करेंगे तथा उसे खुदरा रोकड़ के अन्तिम शेष के 100 रु. की राशि से क्रेडिट करेंगे तो ब्रांच खाते में वास्तविक नेट डेबिट 400 रु. (200 + 300 – 100) का होगा जो ब्रांच द्वारा किये गये खुदरा व्यय की राशि (400 रु.) के बराबर है।

उधार विक्रय (credit sales), विक्रय वापसी (sales returns), अशोध्य ऋण (bad debts), देनदारों को छूट (discount allowed), आदि: ये सभी मदें ब्रांच के देनदारों से संबंधित हैं। इन सभी मदों को ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जायेगा। इसका कारण भी वही है जो खुदरा व्ययों पर लागू होता है। वास्तव में जब ब्रांच खाते को ब्रांच देनदारों के प्रारंभिक शेष (opening balance of debtors) से डेबिट तथा देनदारों से प्राप्त राशि (cash

received from debtors) और ब्रांच देनदारों के अन्तिम शेष (closing balance of debtors) से क्रेडिट किया जाता है तो उधार बिक्री आदि की राशियों का लेखाकरण अपने आप ही हो जाता है।

स्टॉक की कमी या आधिक्य (Shortage or surplus of stock): यह संभव है कि ब्रांच के स्टॉक की जाँच के समय स्टॉक कम या अधिक पाया जाए। इस कमी या आधिक्य को ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जाता क्योंकि ब्रांच खाते में जो अन्तिम स्टॉक (Closing Stock) क्रेडिट किया जाता है वह वास्तविक स्टॉक होता है और इस प्रकार स्टॉक की कमी या आधिक्य का लेखाकरण अपने आप ही हो जाता है।

स्थायी परिसम्पत्तियों का मूल्यह्रास (Depreciation of fixed asset): यह भी ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जाता क्योंकि स्थायी परिसम्पत्तियों के अन्तिम शेष को मूल्यह्रास की राशि घटाकर ही ब्रांच खाते के क्रेडिट की ओर दिखाने की प्रथा है।

आप यह ध्यान रखिये कि आश्रित ब्रांचों का ब्रांच खाता बनाते समय निम्नलिखित मदों को छोड़ दिया जाता है।

1. खुदरा नकद खर्चे
2. उधार विक्रय
3. विक्रय वापसी
4. अशोध्य ऋण
5. देनदारों को दी गई छूट
6. स्टॉक में कमी या आधिक्य,
7. मूल्यह्रास

उदाहरण 3 देखिये और अध्ययन कीजिये कि ऊपर दी गयी मदों को दिखाये बिना ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 3

प्रताप ट्रैक्टर लि. इलाहाबाद की हिसार में एक ब्रांच है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इस ब्रांच के निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइए।

ब्रांच में स्टॉक 1.1. 2018	10,000	देनदारों को दी गई छूट	100
ब्रांच में देनदार 1.1. 2018	4,000	**ब्रांच को भेजा गया रोकड़**	
ब्रांच में खुदरा रोकड़ (1.1. 2018)	500	किराया	2,000
फर्नीचर 1.1 .2018	2,000	वेतन	2,400
पूर्वदत्त बीमा 1.1. 2018	150	खुदरा रोकड़	1,000
अदत्त वेतन 1.1.2018	1,00,000	बीमा (31.3. 2019)	600
ब्रांच को भेजा गया माल	80,000	ब्रांच द्वारा वापस किया गया माल	1,000
नकद विक्रय	30,000	देनदार द्वारा वापस किया गया माल	2,000
उधार विक्रय	40,000	ब्रांच में स्टॉक 31.12. 2018	5,000
देनदारों से प्राप्त राशि (सीधे मुख्य कार्यालय को)	35,000	ब्रांच द्वारा खुदरा व्ययों का भुगतान	850
देनदारों द्वारा नकद भुगतान	2,000		

फर्नीचर पर प्रतिवर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान कीजिए।

Hisar Branch Account

Dr.					**Cr.**
		Rs.			Rs.
To Balance b/d			By Balance b/d		
Branch Stock		10,000	Branch Outstanding Salaries		1,00,000
Branch Debtors		4,000			
Branch Petty Cash		500	By Cash:		
Branch Furniture		2,000	Cash Sales	30,000	
Branch Prepaid Insurance		150	Cash Received from Debtors	37,000	67,000
To Goods Sent to Branch	80,000		By Balance c/d		
Less : Return from Branch	1,000	79,000	Branch Stock		5,000
To Bank			Branch Petty Cash		650
Rent	2,000		Branch Debtors		4,900
Salaries	2,400		Branch Furniture		1,800
Petty Cash	1,000		Branch Prepaid Insurance		150
Insurance	600				
		6,000			
To Profit (Transferred to General P & L A/c)		77,850			
		1,79,500			1,79,500

नोट: 1. देनदारों से प्राप्त राशि में 2,000 रु. शामिल हैं जिसे देनदारों ने सीधे मुख्य कार्यालयों को दिया।

2. ब्रांच का अंतिम खुदरा रोकड़ शेष नहीं दिया गया है। इसे निम्नलिखित प्रकार से निकाला गया है:

प्रारंभ में खुदरा रोकड़	500
जमा: मुख्य कार्यालय द्वारा भेजी गई राशि	1,000
	1,500
घटा: खुदरा रोकड़ व्यय	850
	650

3. मूल्यह्रास के लिए 200 रु. घटाने के बाद अंत में फर्नीचर को दिखाया गया है।

4. 31.12. 2018 को पूर्वदत्त बीमा 600 रु. का चौथाई भाग है।

5. ब्रांच देनदारों का अंतिम शेष नहीं दिया गया है। निम्नलिखित प्रकार से मेमोरेंडम ब्रांच देनदार खाता बनाकर इसे निकाला गया है:

Memorandum Branch Debtors Account

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	4,000	By Cash Received from Debtors	37,000
To Sales (Credit)	40,000	By Sales Returns	2,000
		By Discount Allowed	100
		By Balance c/d (balancing figure)	4,900
	44,000		44,000

13.5.2 बीजक मूल्य विधि (Invoice Price Method)

जैसा कि परेषण (consignment) के संबंध में किया जाता है जिसके बारे में आप आगे की इकाई में पढेंगे। ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य से अधिक मूल्य पर बनाया जा सकता है इसे बीजक मूल्य कहते हैं, ऐसा मुख्यतया ब्रांचों के स्टॉक पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण रखने और लाभ की दर को ब्रांच मैनेजर से गोपनीय रखने के लिये किया जाता है। ऐसी स्थिति में ब्रांच खाते में माल संबंधी सभी प्रविष्टियां बीजक मूल्य पर की जाती हैं और भार (loading) [बीजक मूल्य और लागत मूल्य का अन्तर] के लिये आवश्यक समायोजनों को अन्त में निम्नलिखित अतिरिक्त जर्नल प्रविष्टियां करके रिकार्ड किया जाता है:

1) **For adjustment of loading in opening stock at branch**
Stock Reserve A/c Dr.
To Branch A/c

2) **For adjustment of loading in goods sent to branch less returns**
Branch A/c Dr.
To Goods Sent to Branch A/c

3) **For adjustment of loading in closing stock at branch**
Branch A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

उदाहरण 4 देखिये और अध्ययन कीजिये कि जब ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य से अधिक मूल्य पर बनाया जाता है तो ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 4

मुकुन्द गैस कं. वाराणसी का गाजियाबाद में एक बिक्री ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक लागत मूल्य जमा $33\frac{1}{3}$ पर बनाया जाता है। व्यवस्था की गई है कि ब्रांच द्वारा प्राप्त सभी नकद राशि को प्रतिदिन बनारस स्टेट बैंक लि. में मुख्य कार्यालय खाते में जमा कर दिया जाए और इस संबंध में आवश्यक सूचना मुख्य कार्यालय को दे दी जाए। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ब्रांच को हुए वास्तविक लाभ या हानि को दिखाते हुए मुख्य कार्यालय के लेजर में ब्रांच खाता और ब्रांच को भेजा गया माल खाता बनाइए।

	रु.		रु.
1.1.2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	12,000	किराया, रेट और कर	3,200
ब्रांच को भेजा गया माल (बीजक मूल्य पर)	96,000	वेतन और मजदूरी	4,800
1.1.2018 को देनदार	1,500	31.12. 2018 को देनदार	1,600
मूख्य कार्यालय को भेजा गया रोकड़	77,100	मुख्य कार्यालय को वापस किया गया (बीजक मूल्य पर)	16,000
विक्रय	77,000	स्टॉक में कमी (बीजक मूल्य पर)	200

हल

Books of Mukund Gas. Co., Varanasi
Ghaziabad Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.		Rs.
To Balance b/d				
Branch Stock		12,000	By Cash Received	77,100
Branch Debtors		1,500	By Goods Returned by Branch A/c	16,000
To Goods Sent to Branch		96,000	By Stock Reserve A/c (loading in op. stock)	3,000
To Bank A/c			By Goods Sent to Branch A/c (loading in goods sent less returns)	20,000
Rent, Rates & Taxes	3,200		By Balance c/d	
Salaries & Wages	4,800	8,000	Branch Stock	14,800
To Stock Reserve A/c (loading in Cl. Stock)		3,700	Branch Debtors	1,600
To Profit (Transferred to General P & L A/c)		11,300		
		1,32,500		1,32,500

Goods Sent to Branch Account

	Rs.		Rs.
To Ghaziabad Branch A/c	16,000	By Ghaziabad Branch A/c	96,000
To Ghaziabad Branch A/c (loading on Rs. 80,000)	20,000		
To Trading A/c (transfer)	60,000		
	96,000		96,000

नोटः 1.) ब्रांच का अंतिम स्टॉक नहीं दिया गया है। निम्नलिखित प्रकार से मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक खाता बनाकर इसे ज्ञात किया गया है।

2) भार बीजक मूल्य का 25% है।

Memorandum Branch Stock Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	12,000	By Goods returned to Head Office	16,000
To Goods received form Head Office	96,000	By Sales	77,000
To Goods returned to Customers	...	By Shortage of stock	200
		By Balance c/d	14,800
	1,08,000		1,08,000

ध्यान दें कि मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक खाते में सभी राशियों को बीजक मूल्य पर लिखा गया है।

बोध प्रश्न क

1. आश्रित ब्रांच किसे कहते हैं ?

   .....

   .....

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किये गये ब्रांच के खर्चे को ब्रांच खाते में …..... किया जाता है।

   ii) ब्रांच खाते को भेजे गए माल खाते (Goods sent to Branch Account) का शेष …..... खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

   iii) यदि लागत मूल्य 100 रु. है और बीजक मूल्य लागत मूल्य जमा बीजक मूल्य का 20% के बराबर है तो बीजक मूल्य …..... रु. है।

   iv) भार (loading) बीजक मूल्य और लागत मूल्य …..... होता है।

   v) यदि प्रारंभिक और अन्तिम स्टॉक नहीं दिया हो तो उन्हें …..... मूल्य पर …..... खाता बनाकर निकाला जा सकता है।

3. देनदार विधि के अन्तर्गत जो मदें ब्रांच खाते में नहीं दिखायी जाती उनकी सूची बनाइये।

   .....

   .....

   .....

   .....

13.6 अन्तिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System)

किसी आश्रित ब्रांच का लाभ या हानि ब्रांच का मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ–हानि खाता (Menorandum Branch Trading and Profit and Loss Account) बनाकर भी निकाला जा सकता है। यह खाता ब्रांच को भेजे गये माल के लागत के आधार पर बनाया जाता है (बीजक मूल्य पर नहीं)। ब्रांच के व्यापार एवं लाभ और हानि खाते के अतिरिक्त मुख्य कार्यालय ब्रांच खाता भी रखता है लेकिन इस प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता एक व्यक्तिगत खाता (personal account) ही होता है जो मुख्य कार्यालय और ब्रांच के केवल आपसी लेन–देनों को दर्शाता है। अतः ब्रांच खाते का शेष ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियों (net assets) को दर्शाता है।

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि लाभ या हानि कैसे निकाला जाता है और अन्तिम लेखा प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 5

ए वन लि. भोपाल की मद्रास में एक ब्रांच है जिसे लागत जमा 25% पर माल भेजा जाता है। मद्रास ब्रांच अपना विक्रय लेजर रखता है और उसे जो भी नकद राशि प्राप्त होती है उसे वह प्रति दिन मुख्य कार्यालय को भेज देता है। सभी व्ययों का भुगतान मुख्य कार्यालय करता है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में मद्रास ब्रांच के लेन–देनों का विवरण निम्नलिखित था।

	रु.		रु.
स्टॉक (1.1. 2018)	11,000	Return Inward आवक वापसी	500
देनदार (1.1. 2018)	100	ब्रांच को भेजे गए चैकः	
खुदरा रोकड़	100	किराया	600
नकद विक्रय	2,650	मजदूरी	200
उधार विक्रय	23,950	वेतन और अन्य व्यय	900
ब्रांच को भेजा गया माल	20,000	स्टॉक (31.12. 2018)	13,000
लेजर खाते पर वसूली	21,000	देनदार (31.12. 2018)	2,000
मुख्य कार्यालय को वापस किया गया माल	300	खुदरा रोकड़ (31.12. 2018) (जिसमें 25 रु. की विविध आय को शामिल नही किया गया है)	125
अशोध्य ऋण	300		
ग्राहकों को छूट	250		

31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए मेमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा मद्रास ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Memorandum Branch Trading and Profit & Lass Account for the year ending 31.12.2018

Dr.				**Cr.**
	Rs.			Rs.
To Opening Stock (11,000 – 2,200) (1/5 loading)	8,800	By Sales		
		Cash	2,650	
To Goods sent to Branch (20,000 – 4,000) (1/5 loading)	16,000	Credit	23,950	
			26,600	
To Wages	200	Less Returns	500	26100
To Gross Profit c/d	11,740	By Goods sent to HO. (300-60) 1/5 loading		240
		By Closing Stock (13,000 – 2,600) (1/5 loading)		10,400
	36,740			36,740
To Bad Debts	300	By Gross Profit b/d		11,740
To Allowances	250	By Misc. Income		25
To Rent	600			
To Salaries and other expenses	900			
To Profit transferred to General Profit & Loss A/c	9,715			
	11,765			11,765

Madras Branch Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Bank A/c	
Stock	8,800	Cash Received from	
Debtors	100	Debtors	21,000
Petty Cash	100	Cash Sales	2,650
To Goods sent to Branch A/c	16,000	By Goods Sent to Branch (returns to H.O.)	240
To Bank A/c		By Balance c/d	
Rent	600	Stock	10,400
Wages	200	Debtors	2,000
Salaries and other expenses	900	Petty Cash	125
To Profit as per Branch Trading and P & L A/c	9,715		
	36,415		36,415

13.7 स्टॉक एवं देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System)

इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाता नहीं बनाता। यह ब्रांच के विभिन्न लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिये कुछ नियंत्रण खाते (control accounts) बनाता है। ये खाते प्रायः (i) ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account), (ii) ब्रांच देनदार खाता (Branch Debtors Account), (iii) ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), (iv) ब्रांच रोकड़ खाता (Branch Cash Account), (v) ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account), और (vi) ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account) होते हैं। लेखा वर्ष के अन्त में (Branch Profit & Loss Account) बनता है। **यह प्रणाली केवल तब अपनाई जाती है जब माल का विक्रय बीजक मूल्य पर होता है जिसे ब्रांच घटा–बढ़ा नहीं सकता।**

आईये अब यह अध्ययन करें कि इस प्रणाली के अपनाने पर मुख्य कार्यालय द्वारा रखे गये ये खाते किस प्रकार बनाये जाते हैं।

ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account): यह सबसे महत्वपूर्ण खाता है जो मुख्य कार्यालय को ब्रांच के स्टॉक पर नियंत्रण रखने में सहायता प्रदान करता है। यह ब्रांच के माल संबंधी सभी लेन–देनों को दर्शाता है। ब्रांच को भेजे गये माल और विक्रय वापसी इसके डेबिट की ओर दिखाये जाते हैं और बिक्री (नकद और उधार दोनों) एवं मुख्य कार्यालय को वापस भेजे गए माल इसके क्रेडिट की ओर दिखाये जाते हैं। ये सभी मदें बीजक मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं। अतः यदि इन मदों में से किसी मद की राशि लागत पर दी हुई है तो उसे ब्रांच स्टॉक खाते में रिकार्ड करने से पहले बीजक मूल्य में परिवर्तित करना चाहिये। इस खाते का शेष ब्रांच के पास बिना बिके माल (स्टॉक) को दर्शायेगा। यदि ब्रांच का वास्तविक स्टॉक ब्रांच स्टॉक खाते द्वारा दिखाये जाने वाले शेष से कम पाया जाता है तो इसका अर्थ है कि ब्रांच के स्टॉक में कमी (shortage) है। इसी प्रकार, यदि ब्रांच में वास्तविक स्टॉक ब्रांच स्टॉक खाते के शेष से अधिक है तो यह ब्रांच के स्टॉक में आधिक्य (surplus) को दर्शाता है। दोनों ही स्थितियों में जांच करना उचित है। लेकिन जहां तक इन अन्तरों को रिकार्ड करने का संबंध है, 'कमी' को ब्रांच स्टॉक खाते के क्रेडिट की ओर दिखाया जाएगा और 'आधिक्य' को डेबिट की ओर। तब ब्रांच स्टॉक खाते का शेष ब्रांच के वास्तविक स्टॉक की सही राशि होगा। दूसरे शब्दों में, ब्रांच स्टॉक खाता बनाते समय आप इस खाते में ब्रांच का वास्तविक स्टॉक शेष के रूप में दिखायेंगे और तब यदि दोनों ओर का योग बराबर नहीं आता तो आप अन्तर को कमी या आधिक्य, जैसी भी स्थिति आये, के रूप में दिखायेंगे।

ब्रांच देनदार खाता (Branch Debtors Account): यह खाता ब्रांच के देनदारों से संबंधित सभी लेन–देनों को दिखाता है। उधार बिक्री इसके डेबिट की ओर दिखायी जाती है और देनदारों से प्राप्त नकद राशि, विक्रय वापसी, अशोध्य ऋण तथा दी गई छूट आदि इसके क्रेडिट की ओर दिखाये जाते हैं। इस खाते का शेष ब्रांच के अंतिम देनदारों (closing debtors) को दर्शाता है।

ब्रांच व्यय खाता (Branch ExpensesAccount): यह खाता ब्रांच द्वारा किये गये सभी खर्च दिखाता है। इसके अतिरिक्त, अशोध्य ऋण, दी गई छूट, ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास आदि मदें भी इस खाते में डेबिट की जाती हैं। इस खाते के शेष को ब्रांच समायोजन खाते में अंतरित करके इस खाते को बन्द कर दिया जाता है।

ब्रांच रोकड़ खाता (Branch Cash Account): यह खाता ब्रांच के सभी लेन–देनों को उस स्थिति में दर्शाता है जब ब्रांच को अपनी नकद प्राप्तियों को तुरन्त मुख्य कार्यालय

को समय–समय पर भेजती है। यह खाता मुख्य कार्यालय द्वारा ब्रांच के रोकड़ पर नियंत्रण रखने में सहायता करता है। सामान्यतया आश्रित ब्रांच नकद प्राप्तियों को अपने पास नहीं रख सकती। अतः इस खाते को बनाना जरूरी नहीं होता।

ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account): मुख्य कार्यालय ब्रांच की प्रत्येक प्रकार की परिसम्पत्ति जैसे फर्नीचर, मशीन, भवन आदि का अलग खाता रखता है। ये खाते सामान्य तरीके से बनाये जाते हैं। परंतु ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास ब्रांच व्यय खाते में डेबिट कर दिया जाता है और संबंधित खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है।

ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account): यह खाता उसी तरह बनाया जाता है जैसे कि ब्रांचों को माल बीजक मूल्य पर भेजे जाने कि स्थिति में बनाया जाता है।

ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account): यह खाता ब्रांच के व्यापार खाते जैसा होता है। यह विभिन्न मदों पर भार (loading) बीजक मूल्य और लागत का अन्तर को रिकार्ड करके ब्रांच के सकल लाभ या सकल हानि (gross profit or gross loss) ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। इसके डेबिट की ओर ब्रांच के प्रारंभिक स्टॉक पर भार, ब्रांच को भेजे गये माल वापसी घटाकर) और स्टॉक के आधिक्य को दिखाया जाता है। इस खाते का शेष सकल लाभ या सकल हानि दर्शाता है जिसे ब्रांच के लाभ–हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

ब्रांच का लाभ–हानि खाता (Branch Profit and Loss Account): यह खाता ब्रांच में हुए निवल लाम या निवल हानि को ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। जैसा कि पहले बताया गया है ब्रांच समायोजन खाते से ज्ञात किये गये सकल लाभ या सकल हानि को इस खाते में अंतरित कर दिया जाता है। इसे ब्रांच व्यय खाते द्वारा दिखाये गये ब्रांच व्यय और स्टॉक में कमी के कारण हुई हानि, जो ऐसी कमी के लागत मूल्य के बराबर होती है, से डेबिट किया जाता है। यदि ब्रांच स्टॉक खाता कुछ आधिक्य दर्शाता है तो इस आधिक्य की लागत की बराबर राशि ब्रांच के लाभ–हानि खाते के क्रेडिट की ओर दिखायी जाती है। ब्रांच के लाभ और हानि खाते का शेष निवल लाभ या निवल हानि को दर्शाता है जिसे सामान्य लाभ–हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

ब्रांच के विभिन्न लेन–देनों से संबंधित ऊपर बताये गये खाते खोलने के लिये मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1) **When goods are sent to the branch (at invoice price)**

Branch Stock Ale	Dr.	
To Goods Sent to Branch A/c		

2) **When goods are returned by the branch to the H.O. (at invoice price)**

Goods Sent to Branch A/c	Dr.	
To Branch Stock A/c		

3) **When sales are made by the branch**

i) **For Cash Sales**

Cash A/c	Dr.	
To Branch Stock A/c		

ii) **For Credit Sales**

Branch Debtors A/c Dr.
To Branch Stock A/c

4) **When cash is received from debtors**

Cash A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

5) **For sales returns**

Branch Stock A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

6) **For discount allowed, bad debts, etc.**

Branch Expenses A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

7) **For shortage of stock**

Branch Adjustment A/c Dr.
(with amount of loading)

Branch P & L A/c Dr.
(with cost of shortage)
To Branch Stock A/c

For surplus at branch, the reverse entry will be passed.

8) **For Branch expenses paid in Cash**

Branch Expenses A/c Dr.
To Cash A/c

9) **For closing branch expenses account**

Branch P & L A/c Dr.
To Branch Expenses A/c

10) **For adjustment of loading on the opening stock**

Stock Reserve A/c Dr.
To Branch Adjustment A/c

11) **For adjustment of loading on the closing stock**

Branch Adjustment A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

12) **For adjustment of loading on net goods sent to branch**

Goods Sent to Branch A/c Dr.
To Branch Adjustment A/c

13) **For transfer of gross profit**

Branch Adjustment A/c Dr.
To Branch P & L A/c

14) **For transfer of net profit to General Profit & Loss Account**

Branch Adjustment A/c Dr
To General P & L A/c

The entry will be reversed if there is net loss.

15) **For closing the Goods Sent to Branch Account**
Goods Sent to Branch A/c
To Trading A/c

उदाहरण 6 देखिये और अध्ययन कीजिए की स्टॉक एवं देनदार विधि के अंतर्गत ब्रांच के लेन देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 6

इंडियाना ट्रेडर्स जयपुर ने 1.7. 2018 को जोधपुर में एक ब्रांच खोली। मुख्य कार्यालय द्वारा ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक ब्रांच के बिक्री मूल्य पर बनाया गया जो मुख्य कार्यालय के लागत मूल्य का 125% था।

जोधपुर ब्रांच की लेन देनों से संबंधित विवरण निम्नलिखित है:

	रु.		रु.	रु.
ब्रांच को भेजा गया माल (मुख्य कार्यालय की लागत पर)	2,80,000	**ब्रांच को भेजा गया** रोकड़		
नकद विक्रय	1,25,000	मजदूरी के लिए	3,000	
उधार विक्रय	1,75,000	मालभाड़ा के लिए	11,000	
Cash collected from debtors	1,55,000	गोदाम के किराए सहित अन्य व्ययों के लिए	6,000	20,000
दी गई छूट	4,000	30 जून 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)		55,500
गठ्ठरों में रखे हुए खराब हो गए कपड़ों को बीजक मूल्य पर अपलिखित किया गया	500			

स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत खाते बनाकर 30 जून, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए जोधपुर ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात कीजिए।

हल:

Branch Stock Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Goods Sent to Branch A/c	3,50,000	By Cash A/c (cash sales)	1,25,000
To Branch Debtors A/c (sales returns being balancing figure)	6,000	By Branch Debtors A/c (credit sales)	1,75,000
		By Branch Adjustment A/c (spoilage-loading)	100
		By Branch P & L A/ (spoilage-cost)	400
		By Balance c/d	55,500
	3,56,000		3,56,000

नोट: ब्रांच स्टॉक खाते के क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष से 6,000 से अधिक है। इसका कारण ग्राहकों द्वारा वापस किये गये माल को माना गया है।

Goods Sent to Branch Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Branch Adjustment A/c (loading)	70,000	By Branch Stock A/c	3,50,000
To Trading A/c	2,80,000		
	3,50,000		3,50,000

Branch Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Branch Stock A/c	1,75,000	By Cash A/c	1,55,000
		By Branch Stock A/c (returns)	6,000
		By Branch Expenses A/c (discount allowed)	4,000
		By Balance c/d	10,000
	1,75,000		1,75,000

Branch Expenses Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Cash A/c			
Wages	3,000	By Branch Profit & Loss A/c	24,000
Freight	11,000		
Other Expenses	6,000		
To Branch Debtors A/c (discount)	4,000		
	24,000		24,000

Branch Adjustment Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Branch Stock A/c (loading on spoilage)	100	By Goods Sent to Branch A/c (loading)	70,000
To Stock Reserve A/c (loading on closing stock)	11,100		
To Branch Profit & Loss A/c	58,800		
	70,000		70,000

Branch Profit & Loss Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Branch Expenses A/c	24,000	By Branch Adjustment A/c	58,800
To Branch Stock A/c (spoilage-cost)	400		
To Net Profit transferred to General P & L A/c	34,400		
	58,800		58,800

यह ध्यान रखिये कि यदि ब्रांच में माल की चोरी हो जाए या माल खराब हो जाए या रास्ते में कुछ माल खो जाए तो इसका लेखाकरण उसी प्रकार किया जाएगा जैसे माल में कमी हो जाने की स्थिति में किया जाता है। परंतु यदि स्टॉक की ऐसी असामान्य हानि के लिए बीमा कम्पनी से कुछ राशि प्राप्त होती है तो उसे ब्रांच के लाभ हानि खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है।

बोध प्रश्न ख

1. अन्तिम खाते प्रणाली के अन्तर्गत बनाये गये ब्रांच खाते से देनदार प्रणाली के अन्तर्गत बनाया गया ब्रांच खाता किस प्रकार भिन्न होता है।

   .....

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों को भरियें:

   i) अन्तिम खाते प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाते का अन्तिम शेष ब्रांच की ..... को दर्शाता है।

   ii) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच व्यय खाता ..... खाते में अंतरित करके बंद कर दिया जाता है।

   iii) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच स्टॉक खाते में सभी राशियों ..... मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं।

   iv) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत जब ब्रांच मुख्य कार्यालय को माल वापस करती है तो ..... खाते को क्रेडिट किया जाता है।

   v) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत, अशोध्य ऋण ब्रांच देनदार खाते में क्रेडिट किये जाते हैं और ..... खाते में डेबिट किये जाते हैं।

   vi) यदि ब्रांच स्टॉक खाते का शेष ब्रांच के वास्तविक स्टॉक से भिन्न हो तो अन्तर ..... को दर्शाता है।

13.8 सारांश

लेखाकरण की दृष्टि से प्रत्येक ब्रांच को एक पृथक् लाभ केन्द्र माना जाता है। अतः ब्रांच के लेनदेन का लेखा इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक ब्रांच में हुए लाभ या हानि को सही–सही मालूम किया जा सके और उनकी वित्तीय क्रियाओं पर नियंत्रण रखा जा सके। इस उद्देश्य से ब्रांचों को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है : (i) ब्रांच जो पूर्ण लेखे नहीं रखती (आश्रित ब्रांचे), (ii) ब्रांचे जो पूर्ण लेखे रखती हैं (स्वतंत्र ब्रांचे), और (iii) विदेशी ब्रांचें।

जहाँ ब्रांचे पूर्ण लेखे नहीं रखती, वहाँ मुख्य कार्यालय को ब्रांच के लेन–देन का उचित रिकार्ड रखना होता है। इसके लिये तीन विधियाँ हैं : (i) देनदार प्रणाली, (ii) अंतिम लेखा प्रणाली, और (iii) स्टॉक एवं देनदार प्रणाली।

देनदार प्रणाली प्रायः छोटी ब्रांचों के लिये अपनायी जाती है जो केवल विक्रय डिपो (sales depots) की तरह कार्य करती है। इस प्रणाली के अंतर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिये केवल एक ब्रांच खाता खोलता है जिसमे उससे संबंधित सभी लेन–देन रिकार्ड किये जाते हैं। ब्रांच खाता एक परेषण खाते की भांति बनाया जाता है जो ब्रांच द्वारा अर्जित लाभ या हानि ज्ञात करने में भी यह सहायता करता है।

अंतिम लेखा प्रणाली के अंतर्गत, मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिये मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ–हानि खाता (Memorandum Trading and Profit Loss Account) ब्रांच द्वारा प्रदान किये गये आँकड़ों से बनाता है और लेखा अवधि के लिये उसका लाभ या हानि ज्ञात करता है। यह ब्रांच और मुख्य कार्यालय के आपसी लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिये ब्रांच खाता भी बनाता है जो अन्त में ब्रांच को देय और ब्रांच द्वारा देय राशियाँ दर्शाता है। वास्तव में, इस खाते का शेष ब्रांच की निवल, परिसम्पत्तियों के बराबर होगा।

स्टॉक और देनदार प्रणाली वहाँ अपनायी जाती है जहाँ ब्रांच को माल विक्रय मूल्य पर भेजा जाता है। इस प्रणाली के अंतर्गत कोई ब्रांच खाता नहीं खोला जाता। मुख्य कार्यालय (i) ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account) (ii) ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), (iii) ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account), और ब्रांच स्थायी परिसंपत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account) रखता है। लेखा अवधि के अन्त में, मुख्य कार्यालय ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account) और ब्रांच लाभ–हानि खाता (Branch Profit & Loss Account) तैयार करता है, जिनसे क्रमशः ब्रांच के सकल लाभ/सकल हानि और निवल लाभ/निवल हानि के संबंध में जानकारी हो सके। इस प्रणाली से मुख्य कार्यालय को ब्रांच स्टॉक पर प्रभावी नियंत्रण रखने में भी सहायता मिलती है।

13.9 शब्दावली

ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account): ब्रांच का सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिये स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत बनाया गया एक खाता।

देनदार प्रणाली (Debtors System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसमें ब्रांच खाता खोला जाता है जो लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायता करता है।

आश्रित ब्रांच (Dependent Branch): एक छोटी ब्रांच जो पूर्ण लेखे नहीं रखती।

अंतिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसके अंतर्गत ब्रांच मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ और हानि खाता

(Memorandum Branch Trading and Profit & Loss Account) बनाकर ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात किया जाता है।

सामान्य लाभ–हानि खाता (General Profit & Loss Account): मुख्य कार्यालय का लाभ और हानि खाता जो पूरी व्यवसाय इकाई का लाभ या हानि दर्शाता है।

स्वतंत्र ब्रांच (Independent Branch): वह ब्रांच जो पूर्ण खाते रखती है।

भार (Loading): बीजक मूल्य और लागत मूल्य का अंतर

स्टॉक और देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसमें ब्रांच खाता नहीं खोला जाता। इस प्रणाली के अंतर्गत ब्रांच का लाभ या हानि ब्रांच समायोजन खाते (Branch Adjustment Account) से ज्ञात किया जाता है।

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 2. i) डेबिट ii) व्यापार iii) 125 iv) का अंतर v) बीजक मूल्य, मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक

ख) 2. i) निवल परिसम्पत्तियों ii) ब्रांच समायोजन iii) बीजक
iv) ब्रांच स्टॉक v) ब्रांच व्यय vi) कमी या आधिक्य

13.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. ब्रांच लेखे बनाने के क्या उद्देश्य हैं ?
2. आश्रित ब्रांच के लेखे रखने की तीन प्रणालियों के नाम बताइये और यह भी बताइये कि प्रत्येक प्रणाली के अंतर्गत लाभ कैसे ज्ञात किया जाता है।
3. यह समझाइये कि ब्रांच स्टॉक खाता किस प्रकार ब्रांच स्टॉक पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण रखने में सहायक होता है।

अभ्यास

1 मुरादाबाद की कबीर एंड कपंनी की कानपुर में एक ब्रांच है। 31 दिसबंर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इस ब्रांच से संबंधित लेनदेनों का विवरण निम्नलिखित है।

		रु.
1 जनवरी, 2018 को प्रारंभिक स्टॉक		20,000
ब्रांच को भेजे गए माल		50,000
ब्रांच को भेजा गया रोकड़		
किराया के लिए	200	
अन्य व्ययों के लिए	100	300
वर्ष में ब्रांच से प्राप्त रोकड़		60,000
31 दिसंबर को अंतिम स्टॉक		15,000
31 दिसंबर को खुदरा रोकड़ का अंतिम शेष		10

उपर्युक्त सूचना के आधार पर जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता तथा अन्य आवश्यक खाते बनाइए।

(Answer : Branch Net Profit Rs. 4,710)

2. मेरठ की एक कंपनी का कोटा में एक रिटेल ब्रांच है जिसके पास सभी सामान मेरठ से भेजा जाता है। यह ब्रांच अपना बिक्री लेजर रखती है, देनदारों से रोकड़ प्राप्त करती है ओर प्राप्त रोकड़ की पूरी राशि प्रति दिन मुख्य कार्यालय को भेज देती है। मजदूरी और ब्रांच व्ययों के लिए आवश्यक रकम प्रति सप्ताह अग्रदाय पद्धति के अनुसार मुख्य कार्यालय से चैक से निकाली जाती है। ब्रांच मैनेजर द्वारा दी गई निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइये।

	रु.		रु.
छह मास की उधार बिक्री	2,387	31 दिसबंर, 2018 को स्टॉक	1,121
आवक वापसी	20	1 जुलाई, 2018 को देनदार	1,227
देनदार से प्राप्त रोकड़	2,384	मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल	2,178
नकद बिक्री	1,214	किराया, करों आदि का भुगतान	375
1 जुलाई, 2018 को स्टॉक	720	विविध व्यय	396
अयाोध्य ऋण	100		

(Answer : Net Profit 933; Missing figure – Closing Debtors Rs. 1,110)

3. कानपुर के रॉयल स्टोर ने 1 जुलाई, 2018 को मद्रास में एक विक्रय ब्रांच खोली। मुख्य कार्यालय से ब्रांच को माल लागत जमा 25% पर भेजा जाता है। ब्रांच को कहा गया है कि वह प्रति दिन रोकड़ बैंक में मुख्य कार्यालय के खातें में जमा कर दे। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में 31 दिसम्बर 2018 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए ब्रांच खाता बनाइए। ब्रांच में खुदरा रोकड़ को अग्रदाय पद्वति (imprest system) के अनुसार रखा जाता है।

	Rs.		Rs.
खुदरा व्ययों के लिए ब्रांच को भेजा गया रोकड़	1,500	31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक petty expenses	80,000
ब्रांच के लिए खरीदा गया फर्नीचर	12,000	6 मास में उधार विक्रय	30,000
बीजक मूल्य पर ब्रांच को भेजा गया माल	1,60,000	देनदारों से प्राप्त रोकड़	22,000
		देनदारों को दी गई छूट	400
मुख्य कार्यालय द्वारा किए गए भुगतान		देनदारों द्वारा वापस माल (बीजक मूल्य पर)	800
किराया	2,200	अपलिखित अशोध्य ऋण	100
विज्ञापन	800	ब्रांच द्वारा खुदरा व्ययों का भुगतान	1,000
वेतन	4,600		
बीमा (30 जून, 2019 तक)	400	31 दिसम्बर को बीजक मूल्य पर स्टॉक (देनदारों से प्राप्त स्टॉक को छोड़कर)	40,000

फर्नीचर पर प्रति वर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान कीजिए।

(**Answer:** Profit Rs. 3,940; Debtors at the end Rs. 6,700)

4. मुम्बई के एक्स लि. की दिल्ली में एक ब्रांच है। मुख्य कार्यालय ब्रांच को लागत जमा 50% पर माल भेजता है निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में स्टॉक ओर देनदार प्रणाली के अंतर्गत आवश्यक खाते बनाइए।

	रु.		रु.
मुख्य कार्यालय से भेजा गया माल	50,000	उधार विक्रय	8,000
मुख्य कार्यालय को लौटाया गया	1,000	प्रारंभिक स्टॉक	10,000
नकद विक्रय	35,500	अंतिम स्टॉक	11,000

(**Answer:** Profit Rs. 11,500; Shortage of Goods Rs. 4,500)

5. दिल्ली के श्याम ब्रदर्स की हैदराबाद में एक ब्रांच है। स्टॉक पर कड़ा नियंत्रण रखने के लिए ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक विक्रय मूल्य पर बनाया जाता है जिसमें विक्रय मूल्य पर 25% की दर से लाभ भी शामिल होता है। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर ब्रांच स्टॉक खाता, ब्रांच देनदार खाता, ब्रांच को भेजा गया माल खाता, ब्रांच समायोजन खाता तथा ब्रांच लाभ–हानि खाता बनाइए।

	रु
1 जनवरी, 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	30,000
1 जनवरी, 2018 को देनदार	22,800
ब्रांच को भेजे गए माल को बीजक मूल्य पर बनाया गया	1,34,000
ब्रांच में विक्रय	
नकद	62,000
उधार	74,800
देनदारों से प्राप्त रोकड़	80,000
अपलिखित अशोध्य ऋण	500
ग्राहकों को दी गई छूट	600
ब्रांच में व्यय	13,400
31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	26,800

(Answer: Gross Profit Rs. 34,200; Net Profit Rs. 19,400)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 14 ब्रांच लेखा-II

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली

14.3 कुछ विशेष मदें

14.3.1 मार्गस्थ माल

14.3.2 मार्गस्थ रोकड़

14.3.3 मुख्य कार्यालय के ऐसे व्यय जो ब्रांच के नाम डाले जाते हैं।

14.3.4 ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं

14.3.5 ब्रांचों के आपसी लेन–देन

14.4 मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के तलपट का समावेशन

14.4.1 विस्तृत समावेशन

14.4.2 संक्षिप्त समावेशन

14.5 ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ

14.6 एक समग्र उदाहरण

14.7 सारांश

14.8 शब्दावली

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- किसी स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली की विशेषताओं का वर्णन कर सकें;
- स्वतंत्र ब्रांचों से संबंधित कुछ विशेष मदों की समायोजन प्रविष्टियाँ मुख्य कार्यालय और ब्रांच दोनों की पुस्तकों में कर सकें;
- ब्रांच के शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेश करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कर सके;
- ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ कर सकें;
- व्यापार की समेकित बैलेन्स शीट बना सकें।

14.1 प्रस्तावना

इकाई 13 में आपने एक आश्रित ब्रांच की लेखा प्रणाली के बारे में अध्ययन किया था। आश्रित ब्रांच प्रायः एक छोटी ब्रांच होती है जो केवल एक विक्रय डिपो के रूप में कार्य

करती है। यह पूर्ण लेखे नहीं रखती। ऐसी ब्रांचों के मुख्य रिकार्ड कार्यालय में रखे जाते हैं लेकिन जब ब्रांच एक स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य करती है और उसके पास काम करने की कुछ स्वायत्तता (operational autonomy) होती है तो वह पूर्ण लेखे रखती है। ऐसी ब्रांचों को स्वतंत्र ब्रांच (independent branch) कहते हैं और ये दोहरी प्रविष्टि (double entry system) के आधार पर पूर्ण लेखा पुस्तकें रखती हैं। ये अपना तलपट, लाभ-हानि खाता और बैलेन्स शीट स्वयं बनाती हैं। लेखा वर्ष के अंत में इनकी संक्षिप्त उपलब्धियों (summarised result) और परिसम्पत्तियों एवं देयताओं का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेश किया जाता है। इस इकाई में आप अध्ययन करेंगे कि मुख्य कार्यालय ब्रांचों के सभी शेषों का अपनी पुस्तकों में समावेश कैसे करता है और ब्रांच एवं मुख्य कार्यालय के आपसी लेन-देनों के लिये किस प्रकार के रिकार्ड रखे जाते हैं।

14.2 स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली

आप जानते हैं कि एक स्वतंत्र ब्रांच के पास काम करने की कुछ स्वायत्तता होती है। मुख्य कार्यालय से माल प्राप्त करने के अतिरिक्त यह बाहर से भी माल खरीद सकती है। यह अपना बैंक खाता रखती है और मुख्य कार्यालय के आदेशों के अनुसार समय-समय पर उसे पैसा भेजती है। इसे एक पृथक् लेखा इकाई की तरह माना जाता है। ऐसी ब्रांचों की लेखा प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. यह ब्रांच दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर पूर्ण लेखा पुस्तकें रखती है।

2. यह अपनी पुस्तकों में एक मुख्य कार्यालय खाता (Head Office Account) खोलती है। यह एक व्यक्तिगत खाता होता है जिसमें ब्रांच और मुख्य कार्यालय के बीच सभी लेन-देन ब्रांच स्तर पर रिकार्ड किये जाते हैं। इस खाते को मुख्य कार्यालय को भेजे गए रोकड़ और उसे वापस भेजे गये या सप्लाई किये गये माल की राशि से डेबिट कर दिया जाता है तथा मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल की राशि और केन्द्रित सेवाओं (centralized services) के लिये ब्रांच के नाम डाले गये मुख्य कार्यालय के व्यय से क्रेडिट कर दिया जाता है।

3. मुख्य कार्यालय भी किसी विशेष ब्रांच के साथ किये गये सभी लेन-देनों के लिये अपनी पुस्तकों में एक ब्रांच खाता (Branch Account) रखता है। यह भी एक वैयक्तिगत खाता होता है जो वही प्रविष्टियाँ दिखाता है जो ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता दिखाता है लेकिन यहाँ ये प्रविष्टियाँ उल्टी ओर होती हैं यानि डेबिट की ओर होने वाली प्रविष्टियाँ क्रेडिट की ओर होती हैं और क्रेडिट की ओर होने वाली प्रविष्टियाँ डेबिट की ओर होती हैं।

4. लेखा अवधि के अंत में ब्रांच अपना तलपट (Trial Balance) और अंतिम लेखे (Final Accounts) बनाती है और उनकी प्रतिलिपियाँ मुख्य कार्यालय को भेजती है।

5. जैसे की मुख्य कार्यालय ब्रांच से तलपट प्राप्त करता है वह उसमें दिखाये गये मुख्य कार्यालय खाते के शेष की तुलना अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाते द्वारा दिखाये गये शेष से करता है। यदि इन दोनों में कोई अतंर होता है तो उसकी जाँच की जाती है और इस अतंर के कारण जान लेने के बाद आवश्यक समायोजन प्रविष्टियाँ (adjustment entries) कर दी जाती हैं।

6. मुख्य कार्यालय खाते के शेष का ब्रांच खाते के शेष से मिलान के बाद मुख्य कार्यालय विभिन्न ब्रांच शेषों को अपनी पुस्तकों में समावेश करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ करता है।

14.3 कुछ विशेष मदें (Some Peculiar Items)

स्वतंत्र ब्रांचों के संबंध में कुछ ऐसी मदें होती हैं जिनका लेखाकरण विशेष प्रकार से करना होता है। ये मदें निम्नलिखित हैं:

i) मार्गस्थ माल

ii) मार्गस्थ रोकड़

iii) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे

iv) ब्रांच की उन अचल परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनकें खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं।

v) ब्रांचों के आपसी लेन-देन

अब हम इन मदों पर एक-एक करके विचार करेंगे।

14.3.1 मार्गस्थ माल (Goods in Transit)

मुख्य कार्यालय और ब्रांच एक दूसरे को अक्सर ही माल भेजते रहते हैं। जब माल मुख्य कार्यालय से ब्रांच को भेजा जाता है तो मुख्य कार्यालय तुरन्त अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाते को डेबिट कर देता है। लेकिन ब्रांच अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को केवल तभी क्रेडिट करती है जब वह माल प्राप्त कर ले। इसी प्रकार जब ब्रांच मुख्य कार्यालय को माल भेजती है या माल वापिस करती है तो वह अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को तुरन्त डेबिट कर देती है। लेकिन मुख्य कार्यालय ब्रांच खाते को तभी क्रेडिट करेगा जब उसे माल प्राप्त हो जाए। यह संभव है कि लेखा वर्ष की समाप्ति से कुछ समय पहले भेजा गया माल मुख्य कार्यालय या ब्रांच को लेखा वर्ष की अन्तिम तिथि तक न मिला हो। ऐसे माल को 'मार्गस्थ माल' कहते हैं ओर जिसे माल प्राप्त करना है उसकी पुस्तकों में खाते बन्द करने के समय इस माल की कोई प्रविष्टि नहीं होगी। अतः ब्रांच पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते का शेष और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते का शेष बराबर नहीं होंगे। इसके लिये एक समायोजन प्रविष्टि (adjustment entry) की आवश्यकता होती है जो या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की जाती है या ब्रांच की पुस्तकों में की जाती है, **लेकिन दोनों की पुस्तकों में नहीं की जाती।**

यदि मुख्य कार्यालय समायोजन प्रविष्टि करता है तो यह इस प्रकार होगी:

Goods in Transit A/c	Dr.	
To Branch A/c		

यदि समायोजन ब्रांच की पुस्तकों में किया जाता है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

Goods in Transit A/c	Dr.	
To Head Office A/c		

यह ध्यान रखिये की मार्गस्थ माल के लिए समायोजन प्रविष्टि केवल एक ही पुस्तक में होगी या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तक में या ब्रांच की पुस्तक में। प्रायः ऐसी प्रविष्टि मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ही की जाती है।

14.3.2 मार्गस्थ रोकड़ (Cash in Transit)

माल की भांति रोकड़ भी मुख्य कार्यालय और ब्रांच एक दूसरे को नियमित रूप से भेजते रहते हैं। इसके लिये दोनों की पुस्तकों में प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं जैसे कि माल

के लिये की जाती हैं। यहाँ भी यह संभव है कि लेखा वर्ष के लिये लेखा पुस्तकें बन्द करने के समय कुछ भेजा गया रोकड़ रास्ते में हो। इससे फिर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते के शेष और ब्रांच पुस्तकों के मुख्य कार्यालय खाते के शेष में अन्तर आ जाएगा। अतः इसका समाधान करने के लिये समायोजन प्रविष्टि करनी पड़ेगी। यह प्रविष्टि या तो मुख्य कार्यालय द्वारा की जा सकती है या ब्रांच द्वारा लेकिन दोनों के द्वारा नहीं।

यदि मुख्य कार्यालय यह समायोजन प्रविष्टि करता है तो इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c Dr.
To Branch A/c

लेकिन यदि समायोजन ब्रांच की पुस्तकों में किया जाता है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c Dr.
To Head Office A/c

यह ध्यान रखिये कि मार्गस्थ रोकड़ के लिये भी प्रविष्टि केवल एक ही पुस्तक में की जाएगी, या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तक में या ब्रांच की पुस्तक में। यह प्रविष्टि भी प्रायः मुख्य कार्यालय स्तर पर की जाती है। यह प्रविष्टि मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में करने का कारण यह है कि ब्रांच का तलपट प्राप्त करते समय वे सभी मदें जो रास्ते में हैं मुख्य कार्यालय को मालूम हो जाती हैं और इस समय ब्रांच की पुस्तकों में दिखाये गये शेषों को बदलना वांछनीय नहीं समझा जाता।

उदाहरण 1 देखिये और अध्ययन कीजिये की मार्गस्थ माल और मार्गस्थ रोकड़ की राशि कैसे ज्ञात की जाती है और ब्रांच खाते के शेष एवं मुख्य कार्यालय खाते के शेष के अंतर का समाधान करने के लिये समायोजन प्रविष्टियाँ किस प्रकार की जाती हैं।

उदाहरण 1

एक मुख्य कार्यालय और उसकी ब्रांच के तलपट निम्नलिखित है। मुख्य कार्यालय खाता और ब्रांच खाते के शेषों के समायोजन के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Trial Balance

Particulars	**Head Office**		**Branch Office**	
	Dr.	**Cr.**	**Dr.**	**Cr**
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Current Accounts	1,00,000			90,000
Goods sent/received by Branch		1,50,000	1,45 ,000	

हलः

चालू खाता मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते को और ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को दिखाता है। उपर्युक्त तलपट के अनुसार इन दो चालू खातों के शेष में 10,000 रु. का अंतर है। हम देखते है कि ब्रांच को भेजे गए और ब्रांच द्वारा प्राप्त किए गए माल मे 5,000 रु. का अंतर है। ऐसा मार्गस्थ माल के कारण हो सकता है। शेष 5,000 रु. का अंतर मार्गस्थ रोकड़ के कारण हो सकता है। मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में आवश्यक समायोजन प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से की जाएंगीः

Cash in Transit A/c	Dr.	5,000	
Goods in Transit A/c	Dr.	5,000	
To Branch A/c			10,000

(Being cash in transit and goods in transit adjusted)

किन्तु यदि यह प्रविष्टि मुख्य कार्यालय के बजाय ब्रांच की पुस्तकों की जाती है तो यह इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c	Dr.	5,000	
Goods in Transit A/c	Dr.	5,000	
To Head Office A/c			10,000

(Being cash in transit and goods in transit adjusted)

14.3.3 मुख्य कार्यालय के ऐसे व्यय जो ब्रांच के नाम डाले जाते हैं (Head Office Expenses Chargeable to Branch)

मुख्य कार्यालय स्तर पर प्रदान की गयी केन्द्रित सेवाओं (centralized services) के लिए मुख्य कार्यालय अपने खर्चों का कुछ भाग ब्रांचों के नाम डालने का इच्छुक हो सकता है। वास्तव में मुख्य कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों का काफी समय ब्रांचों का कार्य करने में लग जाता है। अतः मुख्य कार्यालय यह निर्णय ले सकता है कि इन कर्मचारियों के वेतन पर किये गये व्यय का एक भाग ब्रांचों के नाम डाला जाए। खर्चों की कुछ अन्य मदों के संबंध में भी यही स्थिति हो सकती है। यदि मुख्य कार्यालय कुछ खर्चे ब्रांच के नाम डालने का निर्णय लेता है तो मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की गई जर्नल प्रविष्टि इस प्रकार होगीः

Branch A/c	Dr.	
To Expenses (Salaries A/c)		
(Being Head Office expenses chargeable to branch)		

इसके अनुरूप ब्रांच भी अपनी पुस्तकों में एक प्रविष्टि करेगी जो इस प्रकार होगीः

Head Office Expenses A/c	Dr.	
To Head Office		
(Being Head Office expenses chargeable to branch)		

अन्य व्यय खातों की भांति मुख्य कार्यालय व्यय खाता (Head Office) भी इसके शेष को लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच के लाभ-हानि खाते में अतंरित करके बंद कर दिया जाएगा।

14.3.4 ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं

कभी-कभी स्वतंत्र ब्रांचों की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में, जब भी ब्रांच के लिये कोई स्थायी परिसम्पत्ति खरीदी जाती है। तो मुख्य कार्यालय ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते (Branch Fixed Assets Account) को डेबिट कर देता है और रोकड़ खाते (Cash Account) को क्रेडिट कर देता है जब तक इस परिसम्पत्ति के क्रय के लिये ब्रांच खाते द्वारा भुगतान नहीं किया जाता, तब तक इसके लिये ब्रांच द्वारा कोई प्रविष्टि नहीं की जाती। यदि ऐसी परिसम्पत्ति के क्रय के लिये भुगतान ब्रांच द्वारा किया गया है तब भी ब्रांच अपनी पुस्तकों में स्थायी परिसम्पत्ति खाते को डेबिट नही करेगी। वास्तव में ऐसे भुगतान को मुख्य कार्यालय को भेजी गयी रोकड़ की भांति माना जाता है और इसलिये इसे मुख्य कार्यालय के खाते में डेबिट कर दिया जाता है।

लेकिन जहां तक ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास का प्रश्न है, ब्रांच को अपनी पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टि करनी होती है क्योंकि परिसम्पत्तियों का उपयोग ब्रांच ने किया है, मुख्य कार्यालय ने नहीं। सामान्यतया, स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिए प्रविष्टि मूल्यह्रास खाते को डेबिट करके और स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट करके की जाती है लेकिन इस स्थिति में ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट नहीं कर सकती क्योंकि इसकी स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। अतः ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिये की गयी प्रविष्टि मूल्यह्रास के लिये की जाने वाली सामान्य प्रविष्टि से भिन्न होती है। यह इस प्रकार की जाती हैः

Depreciation A/c Dr.
To Head Office A/c
(Being depreciation on fixed assets)

क्योंकि ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में रखे जाते हैं अतः मुख्य कार्यालय को ब्रांच स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते के शेष को उनके मूल्यह्रास की राशि से घटाना होगा। लेकिन यह मूल्यह्रास खाते को डेबिट नहीं कर सकता क्योंकि यह हानि ब्रांच से संबंधित है। अतः जब ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं तो उनके मूल्यह्रास के लिये मुख्य कार्यालय निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि करता हैः

Branch A/c Dr.
To Branch Fixed Assets A/c
(Being depreciation on branch fixed assets)

यह ध्यान रखिये कि ऊपर दी गयी प्रविष्टियाँ ब्रांच की केवल ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों के लिये की जाती हैं जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। ब्रांच की किसी भी ऐसी स्थायी परिस्म्पत्तियों, जिसका खाता वह स्वयं रखती है, उसके मूल्यह्रास के लिये ब्रांच सामान्य प्रविष्टि करेगी। ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास की राशि के लिये मुख्य कार्यालय को अपनी पुस्तकों में कोई प्रविष्टि करने की आव यकता नहीं होती।

14.3.5 ब्रांचों के आपसी लेन–देन (Inter Branch Transactions)

जब किसी संगठन की एक से अधिक ब्रांचे होती हैं तो यह सम्भव कि ब्रांचों के बीच भी कुछ लेन-देन हो। ऐसा प्रायः मुख्य कार्यालय के आदेश के अर्न्तगत होता है। उदाहरण के लिये एक ब्रांच को अपने अतिरिक्त स्टॉक को किसी अन्य ब्रांच को जिसे उसकी आव यकता हो, के हवाले करने को कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति में, स्टॉक भेजने वाली ब्रांच के लिये इसे मुख्य कार्यालय को वापस भेजे गये माल की तरह माना जाता है। इसी प्रकार, स्टॉक प्राप्त करने वाली ब्रांच इसे मुख्य कार्यालय से प्राप्त किए गए माल की तरह मानेगी। इसी आधार पर ब्राचों और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ की जाती हैं। ये प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैंः-

In the books of the Head Office

Receiving Branch A/c Dr.
To Sending Branch A/c
(Being goods transferred from ..... branch to ..... branch)

In the books of the sending branch

Head Office A/c Dr.
To Goods Sent to H.O. A/c
(Being goods sent to ..... branch under instructions from H. O.)

In the books of the receiving branch

Goods from H.O. A/c Dr.
To Head Office A/c
(Being goods received from ..... branch under instruction from H.O.)

उदाहरण 2 में देखिए कि मुख्य कार्यालय की और ब्रांचों की लेखा पुस्तकों में उपर्युक्त विशेष मदों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 2

निम्नलिखित लेन-देनों का लेखा करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

i) मुख्य कार्यालय के निर्देश पर 1,000 रु. का माल मद्रास ब्रांच से बम्बई ब्रांच को भेजा गया।

ii) मुख्य कार्यालय द्वारा रखे गए ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते पर मूल्यह्रास बम्बई 4,000 रु. और मद्रास 6,000 रु.।

iii) बम्बई ब्रांच ने मुख्य कार्यालय को 6,000 रु. 27 दिसंबर, 2018 को भेजे, जिसे मुख्य कार्यालय ने 7 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

iv) मुख्य कार्यालय ने 25 दिसंबर, 2018 को मद्रास ब्रांच को 10,000 रु. का सामान भेजा जिसे मद्रास ब्रांच ने 15 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

v) मुख्य कार्यालय द्वारा दी गई प्रशासनिक सेवाओं के लिए मद्रास ब्रांच के नाम 10,000 रु. की राशि को डालना है।

हलः

Head Office Books
Journal

			Rs.	Rs.
i)	Bombay Branch A/c	Dr.	1,000	
	To Madras Branch A/c			1,000
	(Being goods transferred from Madras branch to Bombay branch)			
ii)	Bombay Branch A/c	Dr.	4,000	
	To Branch Fixed Assets A/c			4,000
	(Being depreciation)			
iii)	Madras Branch A/c	Dr.	6,000	
	To Branch Fixed Assets A/c			6,000
	(Being depreciation)			
iv)	Goods in Transit A/c	Dr	6,000	
	To Bombay Branch A/c			6,000
	(Being Goods in transit adjusted)			
v)	Goods in Transit A/c	Dr	10,000	
	To Madras Branch A/c			10,000
	(Being Goods in transit adjusted)			
vi)	Madras Branch A/c	Dr.	10,000	
	To Gen. P & L A/c			10,000
	(Being Administrative expenses charged to Madras branch)			

बोध प्रश्न क

1. 'मार्गस्थ रोकड़' का अर्थ समझाइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2. मुख्य कार्यालय अपने खर्चों का एक भाग ब्रांचों के नाम क्यों डाल देता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3. सही उत्तर के सामने सही का निशान (√) लगाइये।

i) एक स्वतंत्र ब्रांचः

क) मुख्य कार्यालय से माल प्राप्त करती है।

ख) बाहर से माल खरीदती है।

ग) क और ख दोनों स्रोतों से माल प्राप्त करती है।

ii) ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते कोः

क) मुख्य कार्यालय को भेजे गये रोकड़ और उसे वापस किये गये माल से डेबिट किया जाता है।

ख) मुख्य कार्यालय से प्राप्त किये गये रोकड़ एवं माल और मुख्य कार्यालय द्वारा अपने खर्चों के उस भाग से डबिट किया जाता है जो ब्रांच के नाम डाले गये हैं।

ग) ऊपर (क) और (ख) में दी गई मदों में से किसी से भी डेबिट नहीं किया जाता ।

iii) मार्गस्थ माल के लिये समायोजन प्रविष्टि (adjustment entry)

क) ब्रांच की पुस्तकों में या मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की जाती है।

ख) ब्रांच और मुख्य कार्यालय दोनों की पुस्तकों में की जाती है।

ग) दोनों में से किसी की पुस्तकों में नही की जाती।

iv) उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिये जिनके खाते मुख्य कार्यालय रखता है, मुख्य कार्यालयः

क) स्थायी परिसम्पत्ति खाते को डेबिट करता है और ब्रांच खाते को क्रेडिट करता है।

ख) ब्रांच खाते को डेबिट करता है और उसके स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट करता है।

ग) ऊपर दी गयी प्रविष्टियों में से कोई भी नहीं करता।

v) ब्रांचों के आपसी लेन-देनों की स्थिति में, प्रत्येक ब्रांचः

क) अन्य ब्रांचों के लिये पृथक् खाते खोलती है।

ख) कोई प्रविष्टि नहीं करती।

vi) ब्रांच द्वारा रखा गया मुख्य कार्यालय खाताः

क) वास्तविक खाता होता है

ख) वैयक्तिगत खाता होता है

ग) आय-व्यय खाता होता है

14.4 मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के तलपट का समावेशन

एक स्वंतत्र ब्रांच पूर्ण लेखे स्वयं रखती है और अपने अंतिम लेखे भी बनाती है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वर्ष के अंत में इसकी उपलब्धियाँ मुख्य कार्यालय के अंतिम लेखा में समाविष्टि नहीं की जाएंगी। वास्तव में किसी आश्रित ब्रांच की ही भांति, स्वतंत्र ब्रांच द्वारा आर्जित लाभ या हानि भी सामान्य लाभ-हानि (General Profit and Loss Account) में शामिल किया जायेगा। यह खाता पूरी कंपनी के लाभ या हानि को दर्शाता है। इसी प्रकार स्वतंत्र ब्रांच की परिसम्पत्तियाँ और देयताएँ (assets and liabilities) भी कंपनी की परिसम्पत्तियों और देयताओं के एक भाग के रूप में दिखाई जाएंगी। ऐसा करने के लिये मुख्य कार्यालय और उसकी ब्रांच की एक सयुंक्त (combined) या समेकित (consolidated) बैलेन्स शीट बनाई जाती है। अतः मुख्य कार्यालय के लिये लेखा अवधि के अंत में उपयुक्त जर्नल प्रविष्टियों के द्वारा ब्राचों के शेषों का अपनी पुस्तको में समावेश करना आवश्यक हो जाता है।

ब्रांच के शेषों का समावेशन करने के लिये दो कार्य करने होते हैं।

i) ब्रांच के लाभ या हानि का समावेशन, और

ii) ब्रांच की परिसम्पत्तियों और दायित्वों का समावेशन

ब्रांच के लाभ या हानि का समावेश करने के उद्देश्य से मुख्य कार्यालय या तो सभी आयगत मदों (revenue items) को शामिल करने के लिये विभिन्न प्रविष्टियाँ करे और ब्रांच का एक उचित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाए या फिर एक मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाते (Memorandum Branch Trading and Profit and Loss Account) की सहायता से ब्रांच द्वारा अर्जित और लाभ-हानि ज्ञात करने के बाद उसकी केवल एक

प्रविष्टि करे। पहली विधि को 'विस्तृत समावेशन' (detailed incorporation) कहते हैं और दूसरी विधि को 'संक्षिप्त समावेशन' (abridged incorporation) कहते हैं (या केवल सरल विधि)। ब्रांच के लाभ-हानि के समावेश के लिये जो भी विधि अपनायी जाए ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं का समावेश करने के लिये की जाने वाली प्रविष्टियाँ वही रहती हैं।

14.4.1 विस्तृत समावेशन (Detailed Incorporation)

जैसा की पहले बताया जा चुका है, इस विधि के अंतर्गत, मुख्य कार्यालय एक उचित ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Branch Trading and Profit & Loss Account) बनाता है और अपनी पुस्तकों में ब्रांच परिसम्पत्तियों और देयताओं का समावेश करने से पहले सभी आयगत मदों के लिये प्रविष्टियाँ करता है। इस विधि के अंतर्गत की जाने वाली प्रविष्टियाँ निम्नलिखित हैं।

1) **For items on the debit side of the Trading Account**
Branch Trading A/c Dr.
To Branch A/c
(This entry is passed for the total amount of items like opening stock, net purchases, wages, goods received from HO., carriage inwards, etc.)

2) **For items on the credit side of the Trading Account**
Branch A/c Dr.
To Branch Trading A/c
(This entry is passed for the total amount of items like net sales, closing stock, etc.)

3) **For branch gross profit**
Branch Trading A/c Dr.
To Branch Profit & Loss A/c
(In case of gross loss, the above entry will be reserved)

4) **For items on the debit side of the Profit and Loss Account**
Branch Profit & Loss A/c Dr.
To Branch A/c
(This entry is passed for the total amount of items like salaries, rent, bad debts, repairs, depreciation, etc.).

5) **For items on the credit side of the Profit & Loss Account**
Branch A/c Dr.
To Branch Profit & Loss A/c
(This entry is passed for total amount of items like interest received, discount received, commission received, etc.)

6) **For branch net profit**
Branch Profit & Loss A/c Dr.
To General Profit & Loss A/c
(If there is net loss, the above entry will be reversed)

7) **For branch assets**
Branch Assets A/c Dr.
To Branch A/c
(Each asset should be debited individually)

8) **For Branch liabilities**

Branch A/c Dr.

To Branch Liabilities A/c

(Each liability credited individually. This should not include H.O. A/c balance)

ऊपर दी गयी प्रविष्टियों 7 एवं 8 के फलस्वरूप मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बंद हो जायेगा क्योंकि जब शाखा के निवल लाभ या निवल हानि का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट कर लिया जाता है तो शाखा की निवल सम्पत्ति (परिसम्पतियाँ घटा देयताऐं) ब्रांच खाते के शेष के बराबर रह जाती हैं। अगले वर्ष की पुस्तकों में ब्रांच खाता खोलने के लिये और उसमें ब्रांच से प्राप्य राशि दिखाने के लिये अगले वर्ष के शुरू में मुख्य कार्यालय को इन दोनों प्रविष्टियों की उल्टी प्रविष्टियां करनी होती हैं।

उदाहरण 3 देखिये और अध्ययन कीजिये कि विस्तृत समावेशन के अंतर्गत ब्रांच शेष मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में किस प्रकार समाविष्ट किये जाते हैं।

उदाहरण 3

31 दिसंबर 2018 को कानपुर ब्रांच का तलपट निम्नलिखित थाः

Trial Balance

	Dr.	Cr.
	Rs.	Rs.
Stock on January 1, 2018	12,000	
Furniture	4,800	
Debtors	11,200	
Goods received from H.O.	32,000	
Salaries, rent and expenses	4,400	
Cash in hand	3,600	
Head Office Account		22,000
Sales		45,600
Sundry creditors		400
	68,000	68,000

31 दिसबंर, 2018 को स्टॉक 9,200 रु. था।

मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच का समावेश करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Head Office Books

JOURNAL

			Rs.	Rs
2018				
Dec.31	Kanpur Branch Trading A/c	Dr	44,000	
	To Kanpur Branch A/c			44,000
	(Being incorporation of opening stock and goods received from HO.)			

" 31	Kanpur Branch A/c Dr. To Kanpur Branch Trading A/c (Being incorporation of branch sales and closing stock)	54,800	54,800
" 31	Kanpur Branch Trading A/c Dr. To Kanpur Branch P&L A/c (Being gross profit transferred to Branch P & L A/c)	10,800	10,800
" 31	Kanpur Branch P & LA/c Dr. To Kanpur Branch A/c (Being incorporation of branch expenses)	4,400	4,400
" 31	Kanpur Branch P & LA/c Dr. To General Profit & Loss A/c (Being incorporation of branch expenses)	6,400	6,400
" 31	Branch Closing Stock A/c Dr. Branch Furniture A/c Dr. Branch Debtors A/c Dr Branch Cash **A/c** Dr. To Kanpur Branch A/c (Being incorporation of branch assets)	9,200 4,800 11,200 3,600	 28,800
" 31	Kanpur Branch A/c Dr. To Branch Creditors A/c (Being incorporation of branch liabilities)	400	400

Kanpur Branch Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Branch Trading A/c	44,000
To Branch Trading A/c	54,800	By Branch P & L A/c	4.400
To Creditors	400	By Closing Stock	9,200
		By Furniture	4,800
		By Debtors	11,200
		By Cash	3,600
	77,200		77,200

14.4.2 संक्षिप्त समावेशन (Abridged Incorporation)

मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में शाखा शेषों (branch balances) का समावेश एक सरल विधि द्वारा भी किया जा सकता है जिसे 'सक्षिप्त समावेशन' कहते हैं। इस विधि के अंतर्गत हम एक मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Memorandum Branch Trading and Profit and Loss A/c) बनाते हैं और केवल निवल लाभ या निवल हानि की एक जर्नल प्रविष्टि करते हैं। इस प्रकार विस्तृत समावेशन विधि के अन्तर्गत छः प्रविष्टियाँ करने के स्थान पर केवल एक प्रविष्टि की जाती है जो निम्नलिखित रूप में होती है:

Branch Account Dr.
To General Profit & Loss A/c
Being branch net profit incorporated) d)

निवल हानि की स्थिति में ऊपर दी गयी प्रविष्टि की उलट प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण 4 देखिये और अध्ययन कीजिये की सरल विधि द्वारा ब्रांच शेषों को मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कैसे समाविष्ट किया जाता है।

उदाहरण 4

उदाहरण 3 में दिए गए विवरणों के आधार पर मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाइए, कानपुर ब्रांच को समावेश करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Books of Head Office

Memorandum Kanpur Branch Trading and Profit & Loss Account for the year ended December 31, 2018

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Opening Stock	12,000	By Sales	45,600
To Goods Received from H.O.	32,000	By Closing Stock	9,200
To Gross Profit c/d	10,800		
	54,800		54,800
To Salaries, Rent and Expenses	4,400	By Gross Profit b/d	10,800
To Net Profit	6,400		
	10,800		10,800

Solution

Journal

			Rs.	Rs.
2018				
Dec. 31	Kanpur Branch A/c	Dr.	6,400	
	To General Profit & Loss A/c			6,400
	(Being branch net profit incorporated)			
" 31	Kanpur Branch Closing Stock A/c	Dr.	9,200	
	Kanpur Branch Furniture A/c	Dr.	4,800	
	Kanpur Branch Debtors A/c	Dr.	11,200	
	Kanpur Branch Cash A/c	Dr.	3,600	
	To Kanpur Branch A/c			28,800
	(Being branch assets incorporated)			
" 31	Kanpur Branch A/c	Dr.	400	
	To Kanpur Branch Creditors A/c			400
	(Being branch liabilities incorporated)			

Kanpur Branch Account

Dr. Cr.

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Closing Stock	9,200
To General Profit & Loss A/c	6,400	By Furniture	4,800
		By Debtors	11,200
To Creditors	400	By Cash	3,600
	28,800		28,800

14.5 ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ (Closing Entries in Branch Books)

लेखा अवधि के अंत में ब्रांच पुस्तकों को भी बंद करना होता है। इस उद्देश्य से ब्रांच सभी आगम मदों को अपने व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में अंतरित करने के लिये सामान्य अंतिम प्रविष्टियाँ कर सकती है और अपना निवल लाभ या निवल हानि ज्ञात कर सकती है। निवल लाभ या निवल हानि को निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि द्वारा मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित किया जायेगाः

निवल लाभ की स्थिति में

Profit and Loss A/c Dr.
To Head Office A/c

निवल हानि की स्थिति में

Head Office A/c Dr.
To Profit and Loss A/c

निवल लाभ या निवल हानि को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करने के बाद मुख्य कार्यालय खाते का शेष ब्रांच की निवल संपत्ति (net assets) के बराबर होगा। इसके बाद ब्रांच अपनी बैलेन्स शीट बना सकती है। इसमें मुख्य कार्यालय खाते का शेष देयता के अंतर्गत दिखाया जायेगा क्योंकि मुख्य कार्यालय खाता सामान्यतया क्रेडिट शेष दर्शाता है। लेकिन यदि मुख्य कार्यालय खाते का शेष डेबिट है तो इसे बैलेन्स शीट में परिसम्पत्तियों के अंतर्गत दिखाया जायेगा। यदि आवश्यक समझें तो परिसम्पत्तियों तथा देयताओं के खाते भी उनके शेषों को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करके बंद किये जा सकते हैं। इसके लिए ब्रांच की पुस्तकों में निम्नलिखित दो प्रविष्टियाँ करनी होंगी।

1) **For transfers of assets**
Head Office A/c Dr.
To Assets A/c
The assets should be credited individually

2) **For transfer of liabilities**
Liabilities A/c Dr.
To Head Office A/c
(The liabilities should be debited individually)

इन दो प्रविष्टियों के फलस्वरूप मुख्य कार्यालय खाता भी बंद हो जायेगा क्योंकि अब इसमें कोई शेष नहीं होगा।

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि ब्रांच अपनी पुस्तकें किस प्रकार बंद करती है।

उदाहरण 5

दिल्ली के एक व्यापारी की पटना में एक स्वतंत्र ब्रांच है। 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इसका तलपट निम्नलिखित है। पटना ब्रांच की पुस्तकों को बंद करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय खाता बनाइए।

Trial Balance

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
Purchases	25,600	Creditors	5,400
Stock on 1.1.18	16,400	Sales	69,900
Wages	13,100	Head Office	28,000
Factory Expenses	6,800	Discount	300
Salaries	8,000	Purchase Returns	600
Rent	3,400		
Sundry Expenses	4,000		
Goods Received from HO.	14,400		
Debtors	11,000		
Cash	1,500		
	1,04,200		1,04,200

अतिरिक्त सूचना

1. ब्रांच स्थायी परिसंपत्ति के खाते मुख्य कार्यालय में रखे गये हैं जिसमें 50,000 रु. की मशीनरी और 2,000 रु. का फर्नीचर दिखाया गया है।
2. मशीनरी पर 10% और फर्नीचर पर 15% की दर से मूल्यह्रास लगाना है।
3. वेतन के लिए 300 रूपये देय हैं।
4. 31 दिसंबर, 2018 को ब्रांच ने 8,000 रु. भेजे जिसे मुख्य कार्यालय ने 3 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।
5. ब्रांच में अंतिम स्टॉक 28,700 रु. था।

हल:

Books of Patna Branch
Journal

2017			Rs.	Rs.
Dec.31	Depreciation A/c	Dr.	5,300	
	To Head Office A/c			5,300
	(Being depreciation on fixed assets accounts maintained by Head Office)			
" 31	Cash in Transit A/c	Dr.	8,000	
	To Head Office A/c			8,000
	(Being outstanding salaries)			
" 31	Salaries A/c	Dr.	300	
	To Salaries Outstanding A/c			300
	(Being outstanding salaries)			
" 31	Profit & Loss A/c	Dr.	2,200	
	To Head Office A/c			2,200
	(Being net profit transferred)			
" 31	Head Office A/c	Dr.	49,200	
	To Debtors			
	To Cash A/c			11,000
	To Cash in Transit A/c			1,500
	To Closing Stock A/c			8,000
	(Being assets account balance transferred)			28,700
" 31	Creditors A/c	Dr.	5,400	
	Salaries Outstanding A/c	Dr.	300	
	To Head Office A/c			5,700
	(Being liabilities account balances transferred)			

Head Office Account

Dr.				**Cr.**
	Rs.			Rs.
To Balance c/d	43,500	By Balance b/d		28,000
		By Depreciation A/c		5,300
		By Cash in Transit A/c		8,000
		By Profit & Loss A/c		2,200
	43,500			43,500
To Debtors	11,000	By Balance b/d		43,500
To Cash A/c	1,500	By Creditors		5,400
To Cash in Transit A/c	8,000	By Salaries outstanding A/c		300
To Closing Stock A/c	28,700			
	49,200			49,200

Working Notes:

Trading and Profit & Loss Account

Dr. Cr.

		Rs.		Rs.
To Opening Stock A/c		16,400	By Sales	69,900
To Purchases	25,600		By Closing Stock	28,700
Less Return	600	25,000		
To Goods from H.O.		14,400		
To Wages		13,100		
To Factory Expense		6,800		
To Gross Profit c/d		22,900		
		98,600		98,600
To Salaries	8,000		By Gross Profit b/d	22,900
Add O/s	300	8,300	By Discount	300
To Rent		3,400		
To Depreciation		5,300		
To Sundry Expenses		4,000		
To Net Profit		2,200		
		23,200		23,200

नोट :

1. आगम मदों के अंतरण के लिए अंतिम प्रविष्टियों को छोड़ दिया गया है।

2. समायोजन प्रविष्टियां और निवल लाभ के अंतरण के बाद मुख्य कार्यालय खाते में शेष 43,500 रु. है। यह पटना की निवल परिसम्पत्तियों के बराबर है जैसा कि नीचे दिखाया गया है

		रु.	रु.
परिसंपत्तियां			
	देनदार	11,000	
	रोकड़	1,500	
	मार्गस्थ रोकड़	8,000	
	अंतिम स्टॉक	28,700	
देयताएं			49,200
	लेनदार	5,400	
	अदत्त वेतन	300	5,700
	निवल परिसम्पत्तियां		43,500

3. मुख्य कार्यालय की परिसंपत्तियाँ और देयताओं के अंतरण के बाद यह बंद हो जाता है।

बोध प्रश्न ख

1. मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच शेषों को समाविष्ट करना क्यों आवश्यक है?

.....

.....

2. मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच शेषों को समाविष्ट करने की दो विधियाँ बताइये।

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों को भरियेः

i) शाखा शेषों को समाविष्ट करने की सरल विधि को ..... कहते हैं।

ii) ..... खाते को डेबिट करके और ..... खाते को क्रेडिट करके ब्रांच के निवल लाभ को मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट किया जा सकता है।

iii) मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के निवल लाभ या निवल हानि की प्रविष्टियाँ करने के बाद ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियाँ ब्रांच खाते के ..... बराबर होंगी।

iv) निवल लाभ या निवल हानि मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करने के बाद ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते का शेष ब्रांच की ..... को दर्शाता हैं।

14.6 एक समग्र उदाहरण (A Comprehensive Illustration)

जैसा पहले बताया जा चुका है, कोई भी ऐसी संस्था जिसकी कुछ ब्रांचें होती हैं, पूरे संस्थान के लिये एक ही अंतिम लेखा प्रस्तुत करती हैं। वह मुख्य कार्यालय और विभिन्न ब्रांचों के लिये अलग-अलग अंतिम लेखे प्रस्तुत नहीं करती। अतः यह एक सामान्य लाभ-हानि खाता (General Profit and Loss Account) बनाती है जिसमें सभी ब्रांचों के लाभ-हानि शामिल होते हैं। इसी प्रकार मुख्य कार्यालय और ब्राचों दोनों की परिसम्पत्तियों तथा देयताओं को मिलाकर एक समेकित बैलेन्स शीट (Consolidated Balance Sheet) बनायी जाती है। उदाहरण 6 समेकित बैलेन्स शीट बनाने की विधि को समझने में सहायक होगा।

उदाहरण 6

31 दिसंबर 2018 को निम्नलिखित मुख्य कार्यालय और उसका ब्रांच का तलपट है।

Particulars	**Head Office**		**Branch Office**	
	Dr.	**Cr.**	**Dr.**	**Cr**
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Capital		1,50,000		
Fixed Assets	86,000		26,000	
Stock	34,700		20,700	
Debtors and Creditors	17,820	13,900	14,800	23,000
Cash	10,740		1,500	
Profit & Loss		14,720		13,100
Branch Office	29,360			
Head Office A/c				26,900
	1,78,620	1,78,620	63,000	63,000

31 दिसंबर, 2018 को व्यवसाय की बैलेन्स शीट बनाइए तथा निम्नलिखित के समायोजन के लिए लेखा पुस्तकों के दोनों सेटों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

क) ब्रांच ने 28 दिसंबर को मुख्य कार्यालय को 1,600 रु. का एक चैक भेजा परन्तु अभी तक वह मुख्य कार्यालय में प्राप्त नहीं हुआ है।

ख) मुख्य कार्यालय ने ब्रांच को 560 रु. का माल और उसका बीजक 30 दिसंबर को भेजा लेकिन यह अभी तक ब्रांच को प्राप्त नहीं हुआ।

ग) यह निर्णय हुआ कि वर्ष के दौरान मुख्य कार्यालय द्वारा प्रदान की गई प्रशासनिक सेवाओं के लिए ब्रांच के नाम 400 रु. डाला जाएगा।

घ) ब्रांच की परिसम्पत्तियों, जिसका लेखा मुख्य कार्यालय में रखा जाता है, पर मूल्यह्रास के लिए 1,250 रु. का प्रावधान करना है।

ड़) ब्रांच द्वारा दिखाए गए लाभ के शेष का अंतरण मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में करना है।

हलः

Head Office Journal

2018		Rs.	Rs.
1	Cash in Transit A/c Dr. To Branch A/c (Being cash sent by branch but not received by H.O. till December 31)	1,600	1,600
2	Goods in Transit A/c Dr. To Branch A/c (Being goods invoiced on December 31 not yet received by the branch)	460	460
3	Branch A/c Dr. To Gen. Profit & Loss A/c (Being administrative expenses charged by H.O. to the Branch)	400	400
4	Branch A/c Dr. To Branch Fixed Assets A/c (Being depreciation on branch fixed assets accounts maintained by H.O.)	1,250	1,250
5	Branch A/c Dr. To General P & L A/c (Being profit of branch transferred to General P & L A/c)	11,450	11,450

Branch Journal

2018		Rs.	Rs.
1	Profit & Loss A/c Dr To Head Office A/c (Being administrative expenses charged by H.O.)	400	400

2	Depreciation A/c Dr. To Head Office A/c (Being depreciation on Branch fixed assets accounts which are maintained by H.O.)	1,250	 1,250
3	Profit & Loss A/c Dr. To Head Office A/c (Being transfer of profit credited to Head Office A/c)	11,450	 11,450

Balance Sheet as on December 31, 2018

Liabilities		Rs.	Assets			Rs.
Capital		1,50,000	**Fixed Assets**			
Creditors			H.O.		86,000	
H.O.	13,900		Branch	26,000		
Branch	23,000	36,900	Less Dep.	1,250	24,750	1,10,750
Profit & Loss A/c			**Stock**			
H.O.	15,120		H.O.		34,700	
Branch	11,450	26,570	Branch		20,700	
			Goods in Transit		460	55,860
			Debtors			
			H.O.		17,820	
			Branch		14,800	32,620
			Cash			
			H.O.		10,740	
			Branch		1,500	
			Cash in Transit		1,600	
			Cash for Exp.		400	14,240
		2,13,470				2,13,470

कार्यकारी नोटः

1. ब्रांच और मुख्य कार्यालय में हुए लाभ को मुख्य कार्यालय और ब्रांच का लाभ-हानि खाता बनाकर ज्ञात किया गया है।

Branch Profit and Loss Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Head Office Exp.	400	By Profit (as given)	13,100
To Depreciation	1,250		
To Profit taken to General P & L A/c	11,450		
	13,100		13,100

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Profit c/d	15,120	By Profit (as given)	14,720
		By Branch A/c	400
	15,120		15,120
To Net Profit			
(taken to Balance Sheet)	26,570	By Profit b/d	15,120
		By Branch A/c (profit made by branch)	11,450
	26,570		26,570

2. ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता ऐसे होगा।

Branch Books
Head Office Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	40,000	By Balance b/d	26,900
		By H.O. Exp. A/c	400
		By Depreciation	1,250
		By P & L A/c	11,450
	40,000		40,000

Head Office Books
Branch Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	29,360	By Goods in Transit	460
To Branch Assets A/c	1,250	By Cash in Transit	1,600
To General P & L A/c	11,450	By Balance c/d	40,000
	42,060		42,060

3. मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में ब्रांच खाते के शेष तथा ब्रांच की लेखा पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते के शेष की राशि एक ही है, अर्थात् 40,000 रु. है लेकिन ब्रांच खाता शेष डेबिट शेष है जबकि मुख्य कार्यालय खाता शेष क्रेडिट शेष है। मुख्य कार्यालय खाते के साथ ब्रांच खाते को मिला देने के बाद इन दोनों के शेष एक-दूसरे को रद्द कर देते हैं, अतः इन्हे समेकित बैलेन्स शीट में नहीं दिखाया जाता है।

14.7 सारांश

स्वतंत्र ब्रांचें वे ब्रांचें है जो पूर्ण लेखा प्रणाली रखती हैं और जिन्हें कार्य करने की कुछ स्वायत्तता होती है। ये दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर पूर्ण रिकार्ड रखती हैं और

अपने तलपट स्वयं बनाती हैं। मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच का केवल एक वैयक्तिगत खाता है जो ब्रांच और मुख्य कार्यालय के बीच के सभी लेन-देनों को दर्शाता है। इसी प्रकार इसके अनुरूप प्रविष्टियाँ दिखाने के लिये प्रत्येक ब्रांच एक मुख्य कार्यालय खाता (Head Office Account) रखती है।

कुछ विशेष लेन-देन होते हैं जिनका मुख्य कार्यालय और ब्रांच दोनों की पुस्तकों में विशेष तरीके से लेखाकरण किया जाता है। ये हैं: (i) मार्गस्थ माल (ii) मार्गस्थ रोकड़ (iii) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे (iv) उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं और (v) ब्रांचों के आपसी लेन-देन।

लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच अपना तलपट मुख्य कार्यालय को भेजती है। इससे मुख्य कार्यालय ब्रांच के सभी शेषों को अपनी पुस्तकों में समाविष्ट कर सकता है जिससे कि उन्हें सगठन के अंतिम लेखा में शामिल किया जा सके। ब्रांच के तलपट में दी गई सभी मदों के लिये समावेशन प्रविष्टियां (incorporation entries) की जा सकती हैं (इसे विस्तृत समावेशन कहते हैं) या केवल ब्रांच के लाभ-हानि (मेमोरेंडम ब्रांच लाभ ओर हानि खाते के आधार पर) और ब्रांच परिसम्पत्तियों एवं देयताओं के लिये समावेशन प्रविष्टियां करने के बाद ब्रांच खाते बंद हो जाते हैं। अगले वर्ष के प्रारंभ में ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं के लिये समावेशन प्रविष्टियाँ की जा सकती हैं जो ब्रांच खाते के शेष को पुनः स्थापित करती हैं। ब्रांच अपने लाभ या हानि को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करके अपनी पुस्तकें बंद कर देती है और इसके बाद मुख्य कार्यालय खाता जो भी क्रेडिट शेष दर्शाता है वह ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियों के बराबर होता है।

14.8 शब्दावली

संक्षिप्त समावेशन (Abridged Incorporation): ब्रांच के विभिन्न शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेशन की संक्षिप्त विधि।

मार्गस्थ रोकड़ (Cash in Transit): ब्रांच द्वारा भेजी गई राशि जो मुख्य कार्यालय द्वारा लेखा वर्ष के अंत तक प्राप्त न की गई हो, अथवा इसका उल्टा।

समेकित बैलेन्स शीट (Consolidated Balance Sheet): मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच की परिसम्पत्तियाँ और देयताओं की संयुक्त बैलेन्स शीट।

मार्गस्थ माल (Goods in Transit): मुख्य कार्यालय द्वारा भेजा गया माल जो ब्रांच को लेखा वर्ष के अंत तक प्राप्त नहीं हुआ, अथवा इसका उल्टा।

ब्रांचों के परस्पर लेन-देन (Inter Branch Transaction): दो या दो से अधिक ऐसी ब्रांचों के आपसी लेन-देन जो एक ही मुख्य कार्यालय के अंतर्गत आती हैं।

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 3. i) ग ii) क iii) क iv) ख v) ग vi) ख

ख) 3. i) संक्षिप्त समावेशन

ii) ब्रांच सामान्य लाभ हानि

iii) शेष

iv) निवल परिसम्पत्तियाँ

14.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में किस प्रकार समावेशन किया जाता है ?

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये और बताइये कि इनका लेखा किस प्रकार किया जाता है:

   क) मार्गस्थ रोकड़

   ख) मार्गस्थ माल

   ग) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे

   घ) ब्राचों के आपसी लेन-देन

3. ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों के क्रय और मूल्यह्रास का लेखाकरण किस प्रकार करते हैं जिनके परिसंपत्ति खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं?

अभ्यास

1. दिखाइए कि अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित लेन-देनों को रिकार्ड करने के लिए मुख्य कार्यालय द्वारा क्या जर्नल प्रविष्टियां की जाएंगी।

   क) मुख्य कार्यालय के आदेश पर 1,000 रु. का माल वाराणसी ब्रांच से इलाहाबाद ब्रांच को भेजा गया।

   ख) ब्रांच स्थायी परिसंपत्तियों पर 2,000 रु. का मूल्यह्रास जब इस प्रकार के परिसम्पत्ति खाते मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में खोले जाते हैं।

   ग) कलकत्ता ब्रांच ने 25 दिसंबर, 2019 को मुख्य कार्यालय को 3,000 रु. भेजे जिसे मुख्य कार्यालय ने 4 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

   घ) मुख्य कार्यालय ने 27 दिसंबर, 2018 को कलकत्ता ब्रांच को 10,000 रु. का माल भेजा जिसे उस ब्रांच ने 10 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

   ड़) इलाहाबाद ब्रांच ने मुख्य कार्यालय के इलाहाबाद स्थित ग्राहकों से 4,000 रु. वसूल किये।

   च) वाराणसी ब्रांच ने मुख्य कार्यालय द्वारा वाराणसी में खरीदी गई मशीनरी के लिए 25,000 रु. का भुगतान किया।

2. दिखाइए कि निम्नलिखित लेन-देनों को अपनी पुस्तकों में रिकार्ड करने के लिए सूरत ब्रांच द्वारा क्या जर्नल प्रविष्टियाँ की जाएंगी।

   क) कलकत्ता के मुख्य कार्यालय के आदेश पर 6,000 रु. का माल सूरत से लखनऊ ब्रांच को भेजा गया। इस संबंध में यह मान्यता है कि ब्रांचों के आपसी लेन-देन पर मुख्य कार्यालय नियंत्रण रखता है।

ख) लखनऊ ब्रांच की मशीनरी पर 4,000 रु. का मूल्यह्रास तथा सूरत ब्रांच की मशीनरी पर 3,000 रु. का मूल्यह्रास जब ब्रांच मशीनरी खाता मुख्य कार्यालय को पुस्तकों में रखा जाता है।

ग) सूरत ब्रांच ने मुख्य कार्यालय को 28 दिसंबर, 2018 को 10,000 रु. भेजे, लेकिन मुख्य कार्यालय ने इसे 4 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

घ) मुख्य कार्यालय ने 26 दिसंबर, 2018 को सूरत ब्रांच को 15,000 रु. का माल भेजा लेकिन सूरत ब्रांच ने इसे 2 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

3. 31 दिसंबर, 2018 को वाराणसी ब्रांच का तलपट (Trial Balance) निम्नलिखित था:

Particulars	Debit Rs.	Credit Rs.
Stock on January 1, 2018	12,000	
Furniture	4,800	
Debtors	11,200	
Goods Received from Delhi HO.	32,000	
Salaries, Rent and Expenses	4,400	
Cash in Hand	3,600	
Delhi Office Account		22,000
Sales		45,600
Sundry Creditors		400
Total Rs.	68,000	68,000

31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक 9,200 रु. था। (1) वाराणसी ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता, बैलेन्स शीट तथा कार्यालय खाता बनाइए। (2) वाराणसी ब्रांच के तलपट को शामिल करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और वाराणसी ब्रांच खाता दिखाइए।

(**Answer:** Branch Profit Rs. 6,400; Balance Sheet Total Rs. 28,800; Head Office A/c Balance Rs. 28,400 and Total of Varanasi Branch A/c Rs. 77,200)

4. वाही बदर्स के कानपुर ब्रांच ने 31 दिसंबर, 2018 को निम्नलिखित तलपट (Trial Balance) मुख्य कार्यालय को भेजा।

	Rs.		Rs.
Sundry Debtors	12,000	Sundry Creditor	8,600
Cash in hand	6,250	Goods returned to H.O.	2,250
Furniture	1,900	Sales	1,12,500
Stock on 1-1-88	2,250	Head Office A/c	10,250
Goods from H.O.	34,000		
Purchases	66,450		
Wages & Salaries	5,500		
Trade Expenses	5,250		
1,33,600		1,33,600	

31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक 5,200 रु. था। उपर्युक्त राशियों को शामिल करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच

खाता दिखाइए तथा ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता एवं बैलेन्स शीट दिखाइए।

(**Answer:** Branch profit Rs. 6,500; Balance Sheet Total Rs. 25,350; Total of Branch A/c Rs. 1,38,800.)

5. वाराणसी मुख्य कार्यालय के कानपुर ब्रांच का तलपट (Trial Balance) नीचे दिया गया है। ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता और बैलेन्स शीट बनाइए। ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता भी दिखाइए।

Trial Balance

Rs.		Rs.	
Furniture & Fixtures	1,500	Cash in Bank	3,000
Purchases	20,000	Carriage etc.	150
Goods from H.O.	40,000	Bad Debts	100
Sales	80,000	Allowances to Customers	200
Sundry Debtor	10,000	Bills Receivable	4,000
Sundry Creditors	12,000	Stock on 1-1-2018	10,000
Head Office A/c Salaries	6,400	Returns Inwards	1,000
General Exp.	600	Returns to H.O.	400
Rent & Taxes	600		

Closing Stock on December 31, 2018 Rs. 9,000

(**Answer:** Branch Net Profit Rs. 10,350; Balance Sheet Total Rs. 27,500; H.O. A/c Balance including net profit Rs. 15,500.)

6. निम्नलिखित शेषों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच चालू खाता और ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय चालू खाता बनाइए।

Particulars	**Head Office**		**Branch**	
	Dr. Rs.	**Cr. Rs.**	**Dr. Rs.**	**Cr. Rs.**
Branch Current A/c	5,000	-	-	-
Goods sent to Branch	-	7,800	-	-
Goods received from H,O.	-	-	7,000	-
Head Office Current A/c	-	-	-	1,400

(**Answer:** Goods in Transit Rs. 800: Cash in Transit Rs. 2,800.)

7. एक लिमिटेड कंपनी का मुख्य कार्यालय दिल्ली में है तथा कोटा में उसकी एक ब्रांच है। ब्रांच मुख्य कार्यालय से तो माल प्राप्त करती ही है पर उसके साथ ही साथ बाहर के सप्लायरों से भी ब्रांच को माल आता है। ब्रांच लेखा पुस्तकों के अलग सैट रखती है। 30 जून, 2018 को मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच के तलपट निम्नलिखित थेः

Particulars	Head Office		Branch	
	Dr. Rs.	Cr. Rs.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Share Capital	–	30,000	–	–
P & L Account balance on 1-7-18	–	4,000	–	–
Fixed Assets	16,000	–	8,000	–
Opening Stock	14,000	–	1,900	–
Debtors and Creditors	17,000	10,000	1,500	2,050
Cash	3,000	–	1,000	–
Purchases and Sales	1,20,000	1,40,000	6,750	20,500
Sundry Expenses	15,000	–	2,250	–
Goods from HO. to Branch	–	12,000	11,500	–
Current Accounts on 30-6-19	11,000	–	–	10,350
	1,96,000	1,96,000	32,900	32,900

मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच चालू खातों के शेषों में अंतर का कारण यह था कि वर्ष के अंत में माल तथा रोकड़ मार्गस्थ (goods and cash being in transit) थे। स्थायी परिसंपत्तियों का मूल्यह्रास 10: की दर से करना है। 30 जून, 2019 को स्टाक था: मुख्य कार्यालय 10,000 रु.और ब्रांच 2,100 रु.।

कंपनी की समेकित (consolidated) बैलेन्स शीट बनाइए। ब्रांच तलपट के समायोजनों और समावेशन के लिए जर्नल प्रविष्टियां भी दिखाइए।

(**Answer:** Balance Sheet Total Rs. 56,850.)

Hints: Goods in Transit Rs. 500; Cash in Transit Rs. 150; Branch Net Loss Rs. 600; H.O. Net Profit (excluding branch net loss) Rs. 11,400.

नोट: ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

NOTES

NOTES

MPDD/IGNOU/P.O. 8 K/ August, 2019

ISBN: 978-93-89499-43-8

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

खंड

4

अवक्रय लेखा तथा अंतर्देशीय शाखाएँ

इकाई 11
अवक्रय लेखा-I 5

इकाई 12
अवक्रय लेखा-II 30

इकाई 13
ब्रांच लेखा-I 68

इकाई 14
ब्रांच लेखा-II 93

कार्यक्रम डिजाइन समिति – बी.कॉम (सी.बी.सी.एस.)

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. आर.पी. हुडा
पूर्व कुलपति, एम.डी. विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रो. बी.आर. अनंथन
रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेलगाँव, कर्नाटक

प्रो. आई. वी. त्रिवेदी
पूर्व कुलपति, एम.एल. सुखादिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. पुरुषोत्तम राव (सेवानिवृत्त)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. डी.पी.एस. वर्मा (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के.वी. भानुमूर्ति (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. कविता शर्मा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. खुर्शीद अहमद बट
डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

प्रो. डेवब्रत्ता मित्रा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय,डार्जिलिंग

प्रो. आर.के. (सेवानि.)
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम डिजाइन समिति

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. ए.ए. अंसारी, जामिया मिलिया ईस्लामिया, दिल्ली

सुश्री सुरभि गुप्ता
विवेकानंदा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम निर्माण दल

लेखाविधि-II : **ई.सी.ओ.-14**

प्रो. सुनील कुमार द्वारा संशोधित इकाइयाँ 1, 2, 4, 5 व 6)
प्रो. एस. एन. महरोत्रा, बी.एच.यू., बनारस
प्रो. टी. पी. मैतीन, पटना विश्वविद्यालय, पटना
प्रो. आर. के. ग्रोवर, (सेवानिवृत्त), एस.ओ.एम.एस., इग्नू
श्री अभिताभ के. नाग, चार्टर्ड एकाउंटेंट, कोलकता

प्रो. एम.एस.एस. राजू (पाठ्यक्रम समन्वयक)
प्रो. सुनील कुमार (संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)
प्रो. एन.वी. नरसिम्हम (संपादक)

अनुवाद

श्री एस. एन. शर्मा, सत्यवती कालेज, दिल्ली
श्री के. के. खन्ना, जाकिर हुसैन कालेज, दिल्ली
प्रो. आर.के. ग्रोवर, (सेवानिवृत्त), एस.ओ.एम.एस., इग्नू
श्री रामतप पांडेय

सामग्री निर्माण

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2019
©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019
ISBN : 978-93-89499-43-8
सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059
मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 4 अवक्रय लेखा तथा अंतर्देशीय शाखाएँ (Hire Purchase and Inland Branches)

किश्तों में भुगतान के आधार पर वस्तुओं को बेचना आजकल आम बात हो गई है। इसके दो रूप हो सकते हैं : (i) अवक्रय प्रणाली या (ii) किश्तों में भुगतान प्रणाली। इन दोनों ही स्थितियों में विक्रेता द्वारा ली जाने वाली कीमत संबंधित वस्तु की नकद कीमत से अधिक होती है क्योंकि इसके अंतर्गत ब्याज की वह राशि भी शामिल होती है जो भुगतान के स्थगन के लिए दी जाती है। इसलिए लेखा पुस्तकों में ऐसे लेन–देनों का रिकार्ड करते समय ब्याज की राशि को ध्यान में रखना होता है। ऐसे क्रय–विक्रय से संबंधित सभी लेन–देनों का रिकार्ड करने के लिए लेखाकारों ने समुचित प्रणालियां विकसित की हैं। इस खंड में चार इकाइयां हैं जिनमें आप उन लेखा प्रणालियों के संबंध में पढ़ेंगे जिनके अंतर्गत क्रेताओं और विक्रेताओं की पुस्तकों में इन लेन–देनों को रिकार्ड किया जाता है।

इकाई 11 में अवक्रय प्रणाली के स्वरूप, उसकी विधिक स्थिति तथा क्रेता और विक्रेता की पुस्तकों में ऐसे अवक्रय लेन–देनों का लेखाकरण जिनका संबंध उन बेची गई वस्तुओं के विक्रय से है जिनका मूल्य बहुत अधिक होता है।

इकाई 12 में अवक्रय करार के अंतर्गत क्रेता द्वारा भुगतान में चूक और विक्रेता द्वारा वस्तुओं के पुनर्ग्रहण के लेखाकरण के संबंध में बताया गया है। इसमें किश्त भुगतान प्रणाली के अंतर्गत खरीदी गई वस्तुओं से संबंधित लेन–देनों के लेखाकरण का विवेचन किया गया है। इसमें अवक्रय पर बेची गई कम मूल्य वाली वस्तुओं के लेन–देन से संबंधित मूल रिकार्ड को रखने की प्रणाली का स्पष्टीकरण किया गया है। इसमें उस प्रणाली का भी विवेचन किया गया है जो ऐसे व्यवसाय में लाभ या हानि का पता लगाने के लिए काम में लाई जाती है।

इकाई 13 में आश्रित ब्रांचों, जो पूर्ण रूप से अलग हिसाब–किताब नहीं रखती हैं, की लेखा विधि के संबंध में चर्चा की गयी है।

इकाई 14 में स्वतंत्र ब्रांचों, जो अलग से पूरा हिसाब–किताब रखती हैं, की लेखा विधियों को स्पष्ट किया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 अवक्रय लेखा-I

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अवक्रय करार की प्रकृति

11.3 विधिक स्थिति

11.3.1 परिभाषा

11.3.2 अवक्रय करार की विशेषताएं

11.3.3 अवक्रेता के अधिकार

11.4 ब्याज/नकद मूल्य ज्ञात करना

11.4.1 ब्याज की राशि ज्ञात करना

11.4.2 कुल नकद मूल्य ज्ञात करना

11.5 अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा

11.5.1 जब परिसम्पत्ति कुल नकद मूल्य पर रिकॉर्ड की जाती है

11.5.2 जब परिसम्पत्ति के नकद मूल्य के भुगतान किए गये भाग पर रिकॉर्ड की जाती है

11.6 विक्रेता की पुस्तकों में लेखा

11.7 सारांश

11.8 शब्दावली

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.10 स्व–परख प्रश्न/अभ्यास

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- अवक्रय्र करार की परिभाशा कर सकें;
- अवक्रय करार की कानूनी स्थिति का वर्णन कर सकें;
- अवक्रय करार के संबंघ में ब्याज तथा नकद माल का परिकलन कर सकें; और
- अवक्रेता तथा विक्रेता दोनों की पुस्तकों में मूल लेखा प्रविष्टियां कर सकें।

11.1 प्रस्तावना

जब माल बेचा जाता है तब क्रेता या तो मूल्य का पूरा भुगतान तुरन्त कर सकता है अथवा उसे स्थगित कर सकता है। जब भुगतान स्थगित किया जाता है तो मूल्य का भुगतान मासिक, त्रैमासिक अथवा वार्षिक किश्तों में किया जा सकता है। जब वस्तु का मूल्य किश्तों में दिया जाता है तो दी गई कुल राशि नकद मूल्य वाली राशि से अधिक होती

है। राशि का यह आधिक्य ब्याज तथा जोखिम के लिए मुआवजा होता है। भुगतान को किश्तों में देने की यह व्यवस्था विक्रेता और क्रेता दोनों के लिये लाभप्रद है। इसके द्वारा विक्रेता अपने माल की बिक्री बढ़ा सकता है और क्रेता अपने सीमित साधनों से महंगी वस्तुएं भी खरीद सकता है। आस्थगित भुगतान की दो पद्धतियां हैं: (i) अवक्रय पद्धति (Hire Purchase System), तथा (ii) किश्तों में भुगतान की पद्धति (Instalment Payment System)। इस इकाई में आप अवक्रय पद्धति के बारे में विस्तार से अध्ययन करेंगे तथा उससे संबंधित लेखा प्रविष्टियां करना सीखेंगे।

11.2 अवक्रय करार की प्रकृत्ति

अवक्रय करार एक ऐसा करार है जिसके अंतर्गत क्रेता माल की सुपुर्दगी उसके मूल्य को निश्चित किश्तों में भुगतान करने का वचन देकर लेता है तथा प्रत्येक किश्त को माल के प्रयोग के लिये किराये की तरह मानता है। वास्तव में अवक्रय करार में निम्नलिखित शर्तें होती हैं:

1. माल के स्वामी द्वारा अवक्रेता को माल की सुपुर्दगी दी जायेगी;
2. मूल्य का भुगतान किश्तों में किया जायेगा;
3. प्रत्येक किश्त किराये की तरह मानी जायेगी ताकि अगर आखिरी किश्त तक के भुगतान में भी चूक हो जाये तो विक्रेता, अवक्रेता की किसी भी रूप में क्षतिपूर्ति किये बिना, माल को वापस लेने का अधिकारी हो सके; और
4. यदि सारी किश्तों का भुगतान कर दिया जाता है और अन्य शर्तें पूरी हो जाती हैं तो माल का स्वामित्व क्रेता को हस्तांतरित हो जायेगा।

इस प्रकार अवक्रय की स्थिति में, विक्रेता माल की केवल सुपुर्दगी देता है, वह माल का स्वामित्व तब तक अपने पास रखता है जब तक अन्तिम किश्त का भुगतान न कर दिया जाये। दूसरे शब्दों में, अवक्रेता माल का स्वामी नहीं होता, वह तो केवल माल का प्रयोग करने वाला है। यदि वह किसी भी किश्त का भुगतान करने में असफल रहता है तो विक्रेता अपना माल वापस ले लेगा। उसके अलावा, विक्रेता अवक्रेता (hire purchaser or hirer) से प्राप्त हुई राशि वापस नहीं करेगा। ऐसी राशि को माल का किराया मान लिया जायेगा। इसलिये अवक्रेता के पास अंतिम किश्त का भुगतान करने तक विकल्प होता है कि वह उस विशेष वस्तु को खरीदे या न खरीदे।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, अवक्रय पद्धति के अंतर्गत अवक्रेता द्वारा चुकाया गया मूल्य, नकद मूल्य से हमेशा अधिक होता है। इसका कारण यह है कि अवक्रय मूल्य में नगद मूल्य के अलावा निम्नलिखित मदें भी शामिल होती हैं :

i) भुगतान स्थगित किए जाने के लिये ब्याज,

ii) विक्रेता द्वारा उठाये गये जोखिम के लिये भुगतान, और

iii) रजिस्ट्री, बीमा और माल की सुपुर्दगी देने आदि पर व्यय।

11.3 विधिक स्थिति

11.3.1 परिभाषा

अवक्रय अधिनियम 1972 की धारा 2(c) के अनुसार अवक्रय करार वह करार है जिसके अन्तर्गत माल किराये पर दिया जाता है और अवक्रेता के पास करार की शर्तों के अनुसार

माल को खरीदने का विकल्प होता है और इसमें एक करार शामिल होता है जिसके अन्तर्गत :

i) माल के स्वामी द्वारा माल का कब्जा किसी व्यक्ति को इस शर्त पर दिया जाता है कि वह व्यक्ति निश्चित राशि का भुगतान आवधिक किश्तों (periodical instalments) में करेगा;

ii) अन्तिम किश्त का भुगतान होने पर माल का स्वामित्व उस व्यक्ति के पास चला जाए; और

iii) वह व्यक्ति स्वामित्व के ऐसे हस्तांतरण से पहले, किसी भी समय उस करार को रद्द कर सकता है।

11.3.2 अवक्रय करार की विशेषताएँ

अवक्रय करार की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

1. यह लिखित होना चाहिए और इस पर इसके सभी पक्षकारों के हस्ताक्षर होने चाहिए (धारा 3)

2. अवक्रय अधिनियम 1972 की धारा 4 के अनुसार करार में निम्नलिखित विवरण दिया जाना चाहिए:

   क) उस माल का अवक्रय मूल्य (hire purchase price) जिसके बारे में करार है;

   ख) माल का नकद मूल्य (cash price) यानि वह मूल्य जिस पर अवक्रेता माल को नकद भुगतान पर खरीद सकता है;

   ग) वह तिथि जिस पर करार शुरू हुआ माना जाएगा;

   घ) किश्तों की संख्या जिनके द्वारा अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जाना है, इनमें से प्रत्येक किश्त की राशि और देय तिथि वह तिथि निर्धारित करने की विधि जिस पर यह देय है, वह व्यक्ति जिसे यह देय है, तथा वह स्थान जहां पर यह देय है; और

   ड़) जिस माल के संबंध में करार किया गया है उसका ऐसी रीति से वर्णन जिससे कि उसे पहचाना जा सके।

ऊपर दी गई शर्तों के अलावा करार में उस राशि का पूरा विवरण जिसका भुगतान नकद किया जाता है या यदि कोई भुगतान चैक द्वारा किया जाना है तो उसका पूरा विवरण दिया जाना चाहिये।

11.3.3 अवक्रेता के अधिकार

अवक्रय करार के अनुसार अवक्रेता का माल को विक्रेता को वापस करने का अधिकार होता है। इसके अलावा अवक्रय अधिनियम अवक्रेता को निम्नलिखित अधिकार प्रदान करता है।

1. माल का स्वामी किराये के भुगतान में चूक के लिये, या किसी अनाधिकृत कार्य के लिये अथवा अभिव्यक्त शर्तों के भंग किए जाने के कारण करार को समाप्त नहीं कर सकता जब तक कि अवक्रेता को इस बारे में लिखित रूप में नोटिस न दिया गया हो। नोटिस की अवधि (i) जहां किराया साप्ताहिक या उससे कम अन्तराल पर देय है, एक सप्ताह होती है, और (ii) अन्य स्थितियों में यह दो सप्ताह होती है।

2. निम्नलिखित परिस्थितियों में विक्रेता को माल पर पुनः कब्जा पाने का अधिकार नहीं होगा जब तक कि न्यायालय द्वारा इसकी मंजूरी न दी गई हो :

   i) जहां अवक्रय मूल्य 15,000 रु. से कम है और आधे अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जा चुका है।

   ii) जहां अवक्रय मूल्य इससे अधिक है और तीन चौथाई अवक्रय मूल्य का भुगतान किया जा चुका है।

   मोटर गाड़ियों की स्थिति में पुनः कब्जे का अधिकार समाप्त हो जायेगा यदि (i) अवक्रय मूल्य 5,000 रु. से कम है और आधी राशि का भुगतान किया जा चुका है, या (ii) अन्य स्थितियों में, (जहां अवक्रय मूल्य 5,000 रु. या उससे अधिक है) अवक्रय मूल्य के तीन चौथाई भाग का भुगतान किया जा चुका है। जहां अवक्रय मूल्य 15,000 रु. या उससे अधिक है वहां केन्द्रीय सरकार को इस सीमा को 9/10 तक बढ़ाने का अधिकार है।

3. खर्चे के लिए एक रुपये देकर अवक्रेता को माल के स्वामी से एक ऐसा विवरण प्राप्त करने का अधिकार होता है जिसमें अवक्रेता द्वारा (या उसकी ओर से) भुगतान की गयी राशि, वह राशि जो करार के अन्तर्गत देय हो गई है किन्तु अदत्त है (और उनकी सम्बद्ध तिथियाँ भी) तथा वह राशि जो करार के अन्तर्गत अभी देय नहीं हुई है (और उनकी तिथि तथा भुगतान की विधियां) दी हुई होती हैं।

4. यदि माल के पुनः कब्जे की तिथि एक अवक्रेता द्वारा भुगतान की गई राशि और पुनः कब्जे की तिथि पर माल का मूल्य, ये दोनों मिलाकर अवक्रय मूल्य से अधिक है तो यह अन्तर अवक्रेता को देय होता है। माल का मूल्य ज्ञात करने के लिये, माल के स्वामी या विक्रेता को माल के पुनः कब्जे के लिये, उसे स्टोर करने या उसकी मरम्मत कराने के लिये, उसके विक्रय के लिये और कर की बकाया राशि के भुगतान के लिये उचित खर्च घटाने का अधिकार होता है।

बोध प्रश्न क

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) माल के विक्रय के लिये अनुबन्ध या तो विक्रय हो सकता है या विक्रय करने का ..... हो सकता है।

   ii) अवक्रय विक्रय एक ..... करार है।

   iii) अवक्रय करार के अन्तर्गत माल का स्वामित्व कुछ ..... के पूरा होने पर ..... होता है।

   iv) अवक्रय करार के अन्तर्गत भुगतान ..... में किये जाते हैं।

   v) प्रत्येक किश्त का भुगतान ..... की तरह समझा जाता है।

   vi) यदि अवक्रेता अन्तिम किश्त देने में भी असफल होता है तो विक्रेता माल का ..... लेने का अधिकारी हो जायेगा।

   vii) विधिक दृष्टि से अवक्रेता करार ..... होना चाहिए।

   viii) अवक्रेता अन्तिम किश्त के भुगतान से पहले करार की गई राशि का विक्रेता को भुगतान करके करार को ..... करने का अधिकार होता है।

ix) एक अवक्रेता अवक्रय करार के अंतर्गत अपने .... तथा अपने हित का समनुदेशन (assignment) कर सकता है।

2. बताइये कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं अथवा **गलत** हैं।

i) अवक्रय करार एक विक्रय सौदा होता है।

ii) यदि अवक्रेता अन्तिम किश्त देने में असफल होता है तो पहले भुगतान की गई राशि को किराया माना जाता है।

iii) अवक्रय करार एक निष्पादित अनुबंध होता है और किश्त विक्रय एक निष्पादनीय अनुबंध होता है।

iv) यदि अवक्रेता देय तिथियों से पहले पूरा भुगतान करने का चयन करता है तो उसे छूट (rebate) मिलनी चाहिए।

v) यदि अवक्रेता केवल अन्तिम किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो विक्रेता माल का पुनः कब्जा नहीं ले सकता।

vi) अवक्रय अधिनियम 1972 आजकल लागू है।

11.4 ब्याज/नकद मूल्य ज्ञात करना

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, जब माल अवक्रय पर बेचा जाता है तो विक्रेता द्वारा लिया गया मूल्य नकद मूल्य से हमेशा अधिक होता है। वास्तव में, अवक्रय मूल्य में ब्याज और आस्थगित भुगतान के जोखिम के लिए मुआवजा शामिल होते हैं। परन्तु लेखाकरण में इन दोनों मूल्यों के अन्तर को ब्याज के रूप में ही रिकार्ड किया जाता है। इस प्रकार अवक्रय मूल्य में निम्नलिखित मदें शामिल होती हैं :

1. नकद मूल्य, जो परिसम्पत्ति के क्रय के लिये पूंजीगत व्यय है, और
2. ब्याज जो आयगत (revenue) प्रकृति की मद है।

क्योंकि नकद मूल्य पूंजीगत प्रकृति का है और ब्याज आयगत प्रकृति का अतः लेखा पुस्तकों में इन दोनों को विभिन्न रीतियों से रिकार्ड किया जाएगा। इसलिये अवक्रय मूल्य को नकद मूल्य और ब्याज में विभक्त करना आवश्यक है। यह ध्यान रखिये कि करार पर हस्ताक्षर करने के बाद तुरंत किये गये भुगतान (down payment) में ब्याज शामिल नहीं होगा। दूसरी ध्यान रखने वाली बात यह है कि प्रत्येक किश्त में ब्याज की राशि समान नहीं होती। प्रत्येक किश्त के साथ यह घटती जाती है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि ब्याज देय मूलधन की शेष राशि पर लिया जाता है, पूरी राशि पर नहीं । इसलिये उचित आवंटन के लिये नकद मूल्य, अवक्रय मूल्य और ब्याज की राशि जानना आवश्यक होता है।

11.4.1 ब्याज की राशि ज्ञात करना

ब्याज का परिकलन करते समय हमारे सामने निम्नलिखित दो स्थितियाँ आ सकती हैं :

अ) जब ब्याज की दर, कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों।

ब) जब कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों लेकिन ब्याज की दर नहीं दी गई हो।

ऊपर बतायी गई दोनों ही स्थितियों में ब्याज का परिकलन करना होता है। अब हम इन स्थितियों का एक–एक करके विचार करेंगे।

जब ब्याज की दर, कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों

इस स्थिति में प्रत्येक किश्त में शामिल ब्याज की राशि निकालने से पहले ब्याज की कुल राशि ज्ञात करना उपयोगी होगा। यह राशि अवक्रय मूल्य में से कुल नकद मल्य घटाने से ज्ञात हो जायेगी। इसके बाद प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए:

i) कुल नकद मूल्य में से तुरन्त भुगतान (down payment) की राशि घटाकर पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य निकालिये।

ii) पहली किश्त पर ब्याज निकालिये। यह पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य (outstanding cash price) पर दी हुई ब्याज की दर लगाकर ज्ञात किया जाता है। इस संबंध में किश्त की विधि ध्यान में रखना चाहिए अर्थात् किश्त वार्षिक है, अर्धवार्षिक या त्रैमासिक। प्रायः भारी उपकरणों की खरीद की स्थिति में किश्त वार्षिक होती है।

iii) पहली किश्त की राशि में से ऊपर (ii) में निकाली गई ब्याज की राशि घटाकर पहली किश्त में शामिल नकद मूल्य का भाग ज्ञात कीजिए।

iv) पहली किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य में से पहली किश्त में शामिल नकद मूल्य घटाकर दूसरी किश्त के समय अदत्त नकद मूल्य निकालिये यानि (i) – (iii)।

v) दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य पर ब्याज की दर लगाकर दूसरी किश्त पर ब्याज निकालिये।

बाद की किश्तों पर ब्याज की राशि इसी विधि से निकाली जा सकती है। यानि पहले देय किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य का परिकलन करके और इसके बाद इस राशि पर ब्याज की दर लगाकर। लेकिन अन्तिम किश्त पर ब्याज की राशि भिन्न तरीके से निकाली जाती है। **यह राशि अन्तिम किश्त की राशि में से अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य को घटाने से पता लग जाती है।** इसे अवक्रय मूल्य में शामिल की गई ब्याज की कुल राशि में से पिछली सभी किश्तों पर ब्याज की राशियों के योग को घटाकर भी मालूम किया जा सकता है। इस प्रकार निकाली गई ब्याज की राशि की जाँच अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य पर ब्याज की दर लगाकर भी की जा सकती है। इन दोनों में थोड़ा सा अन्तर होगा जो इस कारण हो सकता है कि अवक्रय मूल्य का निर्धारण ब्याज की सुनिश्चित राशि शामिल करके नहीं किया जाता। इसे प्रायः शून्यान्त अंकों (round figure) में निर्धारित किया जाता है। लेकिन यदि अन्तर की राशि बड़ी है तो आपको प्रत्येक किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य और ब्याज के सभी परिकलनों की जाँच करनी चाहिये। उदाहरण 1 ऊपर बतायी गई विधि से ब्याज का परिकलन करने में सहायक होगा।

उदाहरण 1

A Ltd. ने जनवरी 2016 को Z Ltd. से तुरन्त 8,000 रु. देकर एक मशीन अवक्रय खरीदी और आठ–आठ हजार रुपये की तीन वार्षिक किश्तें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को देने का करार किया। मशीन का नगद मूल्य 29,800 रु. है और विक्रेता 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लेता है। क्रेता द्वारा विक्रेता को प्रति वर्ष दी गई ब्याज की राशि का परिकलन कीजिये।

कुल ब्याज = अवक्रय मूल्य–नगद मूल्य

अवक्रय मूल्य = तुरन्त नगद भुगतान. + किश्तें

= 8,000 रु.. + 3(8,000) रु.

= 8,000 रु.. + 24,000 रु.

= 32,000 रु.

नगद मूल्य = 29,800 रु.

अतः कुल ब्याज = 32,000 रु. – 29,800 रु. = 2,200 रु.

अब हम प्रत्येक किश्त पर ब्याज का परिकलन निम्नलिखित रूप में कर सकते हैं।

i) **पहली किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

कुल नगद मूल्य – तुरंत भुगतान

= 29,000 रु. – 8,000 रु. = 21,000 रु.

ii) **पहली किश्त पर ब्याज**

अदत्त नगद मूल्य × ब्याज की दर

= 21,800 रु. × 5/100

= 1,090 रु.

iii) **पहली किश्त का नगद मूल्य**

किश्त – पहली किश्त पर ब्याज

= 8,000 रु. – 1,090 रु. = 6,910 रु.

iv) **दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

पहली किश्त के समय अदत्त मूल्य – पहली किश्त का नगद मूल्य

= 21,800 रु. – 6,910 रु.

= 14,890 रु.

v) **दूसरी किश्त पर ब्याज**

$$= \frac{14,890 \times 5}{100} = \text{Rs. } 745$$

vi) **दूसरी किश्त का नगद मूल्य**

= 8,000 रु. – 745 रु. = 7,255 रु.

vii) **तीसरी (अन्तिम) किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य**

= 14,890 रु. – 7,255 रु. = 7,635 रु.

viii) **अन्तिम किश्त पर ब्याज**

= किश्त – अन्तिम किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य

= 8,000 रु. – 7,635 रु.

= 365 रु.

विकल्पतः कुल ब्याज– सभी पिछले वर्षों के ब्याज का योग

= 2,200 रु. – (1,090 रु.. 745 रु.)

= 2,200 रु. – 1,835 रु.

= 365 रु.

जाँच

अन्तिम किश्त के साथ अदत्त नकद मूल्य $\times \frac{\text{ब्याज की दर}}{100}$

$= 7,635 \times \frac{5}{100}$

= Rs. 382

जैसा कि पहले बताया गया था, ऊपर परिकलित राशि वही नहीं है जो (viii) में परिकलित की गई थी। लेकिन अन्तर बहुत थोड़ा है यानि केवल 17 रु. (382 रु. – 365 रु.)।

(i) से (viii) तक के परिकलन में निम्नलिखित तालिका सहायक होगी।

	(1) कुल नकद मूल्य रु	(2) भुगतान की गयी किश्तें रु	(3) भुगतान किया गया ब्याज रु	(2-3) किश्तों का नगद मूल्य रु
कुल नकद मूल्य	29,800			
Less तुरन्त भुगतान	−8000	8000		8000
पहली किश्त के समय अदत्त राशि	21,800	8000	$(21,800 \times \frac{5}{100})$	(8,000-1,090)
Less Cash price of the Instalment	−6,910		1,090	6,910
दूसरी किश्त के समय अदत्त राशि	14890	8000	$(14,890 \times \frac{5}{100})$	(8,000-745)
Less Cash price of the Instalment	−7,255		745	7,255
तीसरी (अंतिम) किश्त के समय अदत्त राशि	7635	8,000	(8,000-7,635)	
	−7635		365	7,635

आपको ब्याज और नगद मूल्य का परिकलन ऊपर दी गई तालिका की सहायता से करना चाहिए। इससे आपका काम सरल हो जाता है।

जब कुल नगद मूल्य और किश्तें दी हुई हों लेकिन ब्याज की दर नही दी गई हो।

जब कुल नगद मूल्य, तुरन्त भुगतान की राशि और प्रत्येक किश्त की राशि दी हुई हो लेकिन ब्याज की दर नहीं दी गई हो तो ब्याज नीचे दी गई विधि द्वारा निकाला जायेगा।

i) अवक्रय मूल्य में से कुल नगद मूल्य घटाकर कुल ब्याज की राशि निकालिये।

ii) तुरन्त भुगतान की रकम घटाने के बाद प्रत्येक वर्ष के शुरू में अदत्त अवक्रय राशियों का परिकलन कीजिये।

iii) चरण (ii) में परिकलित अदत्त राशियों का अनुपात निकालिये। यदि प्रत्येक किश्त की राशि बराबर है तो अनुपात ज्ञात करना सरल होगा। उदाहरण के लिये, समान राशि की 4 किश्तें हैं तो अनुपात 4:3:2:1 होगा और यदि समान राशि की तीन किश्तें हैं तो अनुपात 3:2:1 होगा।

iv) इस अनुपात में कुल ब्याज को बांटिये और प्रत्येक किश्त पर ब्याज की रकम निकालिये। अब हम एक उदाहरण की सहायता से प्रत्येक किश्त में शामिल किए गए ब्याज के परिकलन की विधि को स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण 2

उदाहरण 1 से ब्याज की दर को छोड़कर अन्य संबद्ध आंकड़े लेकर, प्रत्येक किश्त में ब्याज की राशि का परिकलन निम्नलिखित रूप में करते हैं :

अवक्रय मूल्य 32,000 रु. [8,000 रु. + 3(8,000) रु.]

नकद मूल्य 29,800 रु

तुरन्त भुगतान 8,000 रु.

हल

कुल ब्याज = 32,000 रु. − 29,800 रु.

= 2,200 रु.

वर्ष के प्रारंभ में	अदत्त राशि (रु.)	अनुपात	ब्याज (रु.)
1	24,000(32,000 − 8000)	24(3)	$2,200 \times \frac{3}{6}$ = 1,100
2	16,000(24,000 − 8000)	16(2)	$2,200 \times \frac{2}{6}$ = 733
3	8,000(16,000 − 8000)	8(1)	$2,200 \times \frac{1}{6}$ = 367
	योग	48(6)	2,200

आप देखेंगे कि अनुपात की सहायता से प्रत्येक किश्त के लिये निकाली गई ब्याज की राशियाँ लगभग वही हैं जो आपने दी ब्याज की दर की सहायता से निकाली थी।

11.4.2 कुल नकद मूल्य ज्ञात करना

कभी–कभी कुल नकद मूल्य नहीं दिया होता। ऐसी स्थिति में हम अवक्रय लेन–देन का लेखाकरण नहीं कर सकते क्योंकि क्रेता की पुस्तकों में जिस राशि को पूंजी व्यय में परिणित करना है वह नगद मूल्य से अधिक नहीं हो सकती। नगद मूल्य के परिकलन की विभिन्न विधियां नीचे दी गई हैं:

अ) वार्षिकी तालिका की सहायता के बिना

ब) वार्षिकी तालिका की सहायता से

आइये अब इन दोनों विधियों पर विचार करें।

वार्षिकी तालिका की सहायता के बिना (Without the help of Annuity Table)

इस विधि के अन्तर्गत ब्याज का परिकलन अन्तिम किश्त से शुरू किया जाता है। मान लीजिये तीन किश्तें हैं। ब्याज पहले तीसरी किश्त पर निकाला जाएगा, फिर दूसरी किश्त पर और अन्त में पहली किश्त पर। तुरन्त भुगतान पर ब्याज नहीं निकाला जाता क्योंकि इसमें कोई ब्याज शामिल नहीं होता।

आपको पता है कि ब्याज नगद मूल्य की अदत्त राशि पर निकालना होता है। लेकिन क्योंकि यह ज्ञात नहीं है, इसलिये इसे अवक्रय मूल्य पर देय कुल राशि की सहायता से निकालना पड़ेगा। इसके लिये हमें पहले प्रत्येक किश्त में शामिल ब्याज की राशि निकालने के लिये निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करना होगा और फिर ब्याज की इस राशि को कुल देय राशि में से घटाना होगा ताकि नगद मूल्य की अदत्त राशि निकाली जा सके।

$$\text{ब्याज} = \text{किश्त के समय कुल देय राशि} \times \frac{\text{ब्याज की दर}}{1 + \text{ब्याज की दर}}$$

अब हम देखेंगे कि प्रत्येक किश्त के समय देय नगद मूल्य कैसे निकाला जाएगा, यह मानते हुए कि तीन वार्षिक किश्तें हैं।

क) तीसरे साल की किश्त पर ब्याज निकालिये। इस किश्त में से ब्याज घटाइये। जो राशि आई वह तीसरी (अन्तिम) किश्त के समस्त अदत्त नगद मूल्य है।

ख) ऊपर (क) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को दूसरे वर्ष की किश्त की राशि में जोड़ दीजिये। इस प्रकार प्राप्त राशि पर ब्याज निकालिये और दूसरी किश्त के समय अदत्त नगद मूल्य ज्ञात करने के लिये दूसरे वर्ष के अन्त में कुल देय राशि में से इसे घटा दीजिये।

ग) ऊपर (ख) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को पहले वर्ष की किश्त की राशि में जोड़ दीजिये और इस प्रकार प्राप्त राशि पर ब्याज निकालिये। ब्याज की इस राशि को पहले वर्ष के अन्त में देय राशि में से घटा दीजिये। इस प्रकार जो राशि आएगी वह पहली किश्त के समय देय नगद मूल्य है।

घ) ऊपर (ग) के अन्तर्गत निकाले गये नगद मूल्य को तुरन्त भुगतान, यदि कोई है, में जोड़ दें। इस प्रकार जो योग आएगा वह कुल नगद मूल्य होगा। उदाहरण 3 में नगद मूल्य का परिकलन को समझने में सहायता करेगा।

उदाहरण 3

रेनूका ने एक मशीन 1 जनवरी, 2018 को 5,000 रु. में अवक्रय पर खरीदी, राशि निम्न प्रकार से देय है:

	(रु.)
तुरन्त भुगतान	930
पहले वर्ष के अन्त में (पहली किश्त)	1,426
दूसरे वर्ष के अन्त में (दूसरी किश्त)	1,804
तीसरे वर्ष के अन्त में (तीसरी किश्त)	840

ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष

मशीन का नगद मूल्य और प्रत्येक किश्त के साथ दिया गया ब्याज निकालिये।

हल

	राशि (रु .)	ब्याज (रु .)
तीसरी किश्त पर देय कुल राशि	840	$840 \times \frac{5}{105} = 40$
–ब्याज	– 40	
तीसरी किश्त का अदत्त मूल्य	800	
+ दूसरी किश्त	1,804	
दूसरी किश्त पर देय कुल राशि	2,604	$2,604 \times \frac{5}{105} = 124$
–ब्याज	– 124	
	2,480	
+ पहली किश्त	+1,426	
पहली किश्त पर देय कुल राशि	3,906	$3,906 \times \frac{5}{105} = 186$
– ब्याज	– 186	
Outstanding Cash Price of Ist Instalment	3,720	
तुरंत भुगतान	930	
कुल नगद मूल्य	4650	350

अतः कुल नकद मूल्य 4,650 रु. है। और कुल ब्याज 350 रु. है।

टिप्पणीः इस परिकलन की जाँच प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालने की उस विधि द्वारा की जा सकती है जिसका प्रयोग तब किया जाता है, जब नगद मूल्य, किश्तें, भुगतान और ब्याज की दर दी हुई हो।

वार्षिकी तालिका की सहायता से (With the help of Annuity Table)

यदि वार्षिकी तालिका उपलब्ध हो तो प्रत्येक किश्त के अन्तर्गत ब्याज की राशि निकालना सरल हो जाता है। वार्षिकी तालिका में ब्याज की दर पंक्तियों में (rows) में दी हुई होती है और वर्ष कालमों (columns) में दिये हुए होते हैं। तालिका की सहायता से प्रत्येक किश्त का वर्तमान मूल्य निकाला जा सकता है। इस प्रकार निकाले गये वर्तमान मूल्यों का योग यदि तुरन्त नकद भुगतान में जोड़ दिया जाए तो नकद मूल्य निकल आयेगा।

क) दी हुई ब्याज की दर देखो और वर्ष कालम में और तालिका में ब्याज और वर्ष की तत्स्थानी (corresponding) संख्या ज्ञात करो।

ख) यह संख्या 1 रु. का वर्तमान मूल्य है।

ग) 1 रु. के इस वर्तमान मूल्य की किश्त की राशि से गुणा करो।

घ) इस प्रकार जो राशि आएगी वह किश्त का वर्तमान मूल्य है। यही नगद मूल्य की राशि है जो किश्त में शामिल है।

च) इसी तरीके से सारी किश्तों का वर्तमान मूल्य निकालो।

छ) सभी किश्तों के वर्तमान मूल्यों के योग को तुरन्त भुगतान, यदि कोई है, में जोड़ दो। इस प्रकार जो राशि आएगी वह कुल नकद मूल्य है।

उदाहरण 4 वार्षिकी तालिका की सहायता से कुल नकद मूल्य निकालने की विधि को समझने में सहायक होगा।

उदाहरण 4

X Ltd. ने एक मशीन अवक्रय पर खरीदी। भुगतान निम्नलिखित रूप में किया गयाः

	रु.
नकद भुगतान	232.50
पहली किश्त	356.50
दूसरी किश्त	451
तीसरी किश्त	210

भुगतान क्रमशः पहले, दूसरे और तीसरे वर्ष के अन्त में किया जाता है। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है। वार्षिक तालिका के अनुसार 1 रु. का वर्तमान मूल्य 1 वर्ष, 2 वर्ष 3 वर्ष के लिये क्रमशः .9524 .9070 और .8639 है। मशीन का नकद मूल्य परिकलित करो।

	(1) किश्त (रु.)	(2) 1 रु. का वर्तमान मूल्य	(1×2) किश्त का वर्तमान मूल्य
तुरन्त भुगतान	232.50	1	232.50
पहली किश्त	356.50	.9524	339.53
दूसरी किश्त	451.00	.9070	409.08
तीसरी किश्त	210.00	.8619	189.42
योग	1,250.00		1,162.53

अतः कुल नकद मूल्य 1,162.53 रु. है।

बोध प्रश्न ख

1. निम्नलिखित स्थितियों में कुल ब्याज और प्रत्येक किश्त पर ब्याज निकालिये।

   i) एक मशीन का नकद मूल्य 349 रु. है। तुरन्त भुगतान 100 है और इसके बाद तीन वार्षिक किश्तें देनी हैं। प्रत्येक किश्त 100 रु. की है। ब्याज की दर 10% प्रति वर्ष है।

   .....

   .....

   .....

   ii) मशीन का नकद मूल्य 1,900 रु हैं। भुगतान 3 किश्तों में करना है, प्रत्येक किश्त 800 रु. की है।

   .....

   .....

   .....

2. निम्नलिखित स्थितियों में नकद मूल्य निकालिये।

   i) एक मशीन के मूल्य का भुगतान 4 किश्तों मे करना है। प्रत्येक किश्त 5,000 रु. की है पहली किश्त प्रांरभिक भुगतान के रूप में हैं। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है और किश्त का भुगतान वार्षिक है।

   .....

   .....

   .....

   ii) एक मशीन के मूल्य का भुगतान दस–दस हजार रु. की 5 वार्षिक किश्तों में किया जाता है। ब्याज की दर 5% प्रति वर्ष है पहली किश्त का भुगतान पहले

वर्ष के अन्त में करना है। 5% ब्याज की दर पर 1 रु. का जो प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय है, 5 वर्ष के लिये वर्तमान मूल्य 4.3294 रु. है।

.....

.....

.....

11.5 अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा

अवक्रय करार के दो पक्षकार होते हैं, विक्रेता और अवक्रेता। दोनों पक्षकारों को लेखा पुस्तकें रखनी होती हैं, और उस विशेष अवक्रय से संबंधित सभी लेन–देनों की प्रविष्टियाँ करनी होती हैं। लेखाविधि समझने से पहले आईये, यह देखें कि लेखा पुस्तकों में अवक्रय संबंधी लेन–देन रिकार्ड करने के लिए किन सूचनाओं की आवश्यकता होती है। ये सूचनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. क्रय की तिथि तथा तुरन्त भुगतान की (down payment) राशि
2. वह तिथि जिन पर किश्तें देय होती हैं।
3. नकद मूल्य (cash price)
4. अवक्रय मूल्य (hire purchase price)
5. किश्तों की संख्या, प्रत्येक किश्त की राशि तथा भुगतान की विधि
6. ब्याज की दर
7. मूल्यह्रास की दर
8. मूल्यह्रास की विधि

आईये अब यह देखें कि अवक्रेता की पुस्तकों में लेखा किस प्रकार किया जाता है। अवक्रेता द्वारा अवक्रय संबंधी लेन–देनों को रिकार्ड करने की दो विधियाँ हैं : 1) जब परिसम्पत्ति पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है, तथा ii) जब परिसम्पत्ति भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है। आईये अब हम इन विधियों का विस्तार से अध्ययन करें।

11.5.1 जब परिसम्पत्ति कुल नकद मूल्य पर रिकॉर्ड की जाती है

इस विधि में यह माना जाता है कि अवक्रेता का सारी किश्तों का भुगतान करने का इरादा है। यह भी विश्वास किया जाता है कि अवक्रय अचल सम्पत्ति खरीदने के लिये वित्त जुटाने का एक

तरीका मात्र है। यदि अवक्रेता इस विधि के अन्तर्गत कोई प्लांट और मशीनरी खरीदता है तो प्लांट और मशीनरी खाते को (स्थायी परिसम्पत्ति) नकद मूल्य की कुल राशि से डेबिट किया जाता है। और विक्रेता के खाते (Hire Vendor's Account) को क्रेडिट किया जाता है। ब्याज का परिकलन और उसका लेखा किश्त के देय होने पर ब्याज खाते को डेबिट करके और विक्रेता के खाते को क्रेडिट करके किया जाता है। भुगतान करते समय (चाहे वह तुरन्त भुगतान की राशि हो या किश्त) विक्रेता के खाते को डेबिट और बैंक खाते को क्रेडिट किया जाता है। इस प्रकार अवक्रेता की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1. **जब परिसम्पति क्रय की जाती है।**

Asset A/c	Dr.
To Hire Vendor A/c	
(With the total cash price)	

2. **तत्काल भुगतान के लिये**

Hire Vendor A/c	Dr.
To Bank A/c	

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिये**

Interest A/c	Dr.
To Hire Vendor	

4. **किश्त के भुगतान के लिये**

Hire Vendor	Dr.
To Bank A/c	

5. **लेखावर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिये**

Depreciation A/c	Dr.

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अन्तरित करने के लिए**

Profit and Loss A/c	Dr.
(Individually)	
To Interest A/c	
To Depreciation A/c	

प्रविष्टि संख्या 3, 4, 5 और 6 प्रत्येक किश्त के देय होने पर की जायेगी। उपर्युक्त जर्नल प्रविष्टियों की सहायता से हम परिसम्पत्ति खाता और विक्रेता का खाता आसानी से तैयार कर सकते हैं। उदाहरण 5 का अध्ययन कीजिये और नोट कीजिये कि अवक्रेता की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ किस प्रकार की गई हैं और लेजर खाते कैसे बनाये जाते हैं।

उदाहरण 5

ABC Ltd. ने XYZ Ltd. से एक मशीन 1.1.2016 को भुगतान की अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत खरीदी। इसके अन्तर्गत 2,412 रु. की तीन वार्षिक किश्तें दी जाएंगी। कोई तुरन्त भुगतान नहीं किया गया और नकद मूल्य 6,000 रु. है। ब्याज की दर 10% प्रति वर्ष होगी। मूल्यह्रास (depreciation) सरल रेखा विधि (straight line method) के आधार पर 20% प्रतिवर्ष की दर से लगाया जाएगा ABC Ltd.की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और आवश्यक खाते बनाइये।

हल

पहले हम सभी आवश्यक सूचनाएँ ज्ञात करते हैं।

1) क्रय की तिथि – जनवरी 2016 कोई तुरन्त भुगतान नहीं।

2) किश्तों के देय बनने की तिथि – 31 दिसम्बर, 2016, 2017 और 2018

3) खाता बंद करने की तिथि 31 दिसम्बर

4) नकद मूल्य – 6,000 रु.

5) अवक्रय मूल्य–2,412 रु. ×3 = 7,236 रु.

6) किश्तों की संख्या, राशि और प्रत्येक किश्त के भुगतान की विधि–3 किश्तें, प्रत्येक 2,412 रु. की, प्रत्येक किश्त वार्षिक है।

7) ब्याज की दर –10% प्रति वर्ष

8) मूल्यह्रास की दर – 20% प्रति वर्ष

9) मूल्यह्रास की विधि – सरल रेखा

Journal Entries in the Books of ABC Ltd

Date	Particulars	Amount (Dr.)	Amount (Cr.)
2016		Rs.	Rs.
Jan. 1	Machinery A/c Dr. To XYZ Ltd. (Being a machine purchased on hire purchase)	6,000	6,000
Dec.31	Interest A/c Dr. To XYZ Ltd. (Being the charge of interest @ 10% on Rs. 6,000)	600	600
Dec.31	Depreciation A/c Dr. To Machinery A/c (Being the charge of depreciation)	1,200	1,200
Dec.31	XYZ Ltd. A/c Dr. To Bank A/c (Being the payment of annual instalment)	2,412	2,412
Dec.31	Profit & Loss A/c Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (Being the annual charges transferred to Profit & Loss A/c)	1,800	600 1,200
2017 Dec.31	Interest A/c Dr. To XYZ Ltd. (Being the charge of interest @ 10% on Rs. 4,188)	418	418
Dec.31	Depreciation A/c Dr. To Machinery A/c (Being the annual charge of depreciation)	1,200	1,200
Dec.31	XYZLtd. A/c Dr. To Bank A/c (Being the payment of annual instalment)	2,412	2,412

Dec.31	Profit & Loss A/c Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (Being the transfer of annual charges to Profit & Loss A/c)		1,618	 418 1,200
2018 Dec.31	Interest A/c Dr. To XYZ Ltd. (Being the charge of interest @ 10% on Rs. 2,194)		218	 218
Dec.31	Depreciation A/c Dr. To Machinery A/c (Being theannual charge of depreciation)		1,200	 1,200
Dec.31	XYZ Ltd. A/c Dr. To Bank A/c (Being the 3rd and final instalment paid)		2,412	 2,412
Dec.31	Profit & Loss A/c Dr. To Interest A/c To Depreciation A/c (Being the transfer of annual charges to Profit & Loss A/c)		1,418	 218 1,200

Ledger Accounts in the Books of ABC Ltd

Machinery Account

Dr.					Cr.
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan. 1	To XYZ Ltd	6,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	4,800
		6,000			6,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	4,800	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	3,600
		4,800			4,800
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	3,600	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,200
			Dec. 31	By Balance c/d	2,400
		3,600			3,600

XYZ LTD (Hire Vendor) Account

Dr.					Cr.
2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Machinery A/c	6,000
Dec.31	To Balance c/d	4,188	Dec. 31	By Interest A/c	600
		6,600			6,600
2017			2017		
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Balance b/d	4,188
Dec.31	To Balance c/d	2,194	Dec. 31	By Interest A/c	418
		4,606			4,606
2018			2018		
Dec.31	To Bank A/c	2,412	Jan. 1	By Balance b/d	2,194
			Dec. 31	By Interest A/c	218
		2,412			2,412

Working Notes :

	Rs.
Cash Price	6,000
Add : Interest on Ist Instalment	600
	6,600
Less : Ist Instalment	2,412
Amount outstanding at the time of 2nd Instalment	4,188
Add : Interest on 2nd Instalment $(\frac{10}{100} \times 4{,}188)$	418
	4,606
Less : 2nd Instalment	2,412
Amount outstanding at the time of 3rd instalment	2,194
Add : Interest on 3rd Instalment	218
	2,412

11.5.2 जब परिसम्पत्ति के नकद मूल्य के भुगतान किये गये भाग पर रिकॉर्ड की जाती है

आप जानते हैं कि अवक्रय की स्थिति में माल के स्वामित्व का हस्तांतरण अवक्रेता को अन्तिम किश्त का भुगतान करने पर ही होता है। इसलिये अवक्रेता की पुस्तकों में परिसम्पत्ति खाते को उसके पूरे मूल्य पर तुरन्त डेबिट करना उचित नहीं है। अतः जब परिसम्पत्ति खरीदी जाती है तो जब तक कुछ तुरन्त भुगतान न किया जाये अवक्रेता की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी। जैसे–जैसे किश्तें देय होती हैं और उनका

भुगतान किया जाता है, पुस्तकों में प्रविष्टियाँ की जाती हैं। इस विधि के अन्तर्गत जर्नल प्रविष्टियाँ इस प्रकार की जाती हैं।

1. **जब परिसम्पति क्रय की जाती है।**
   No Entry

2. **तत्काल भुगतान के लिये**
   Asset A/c Dr.
   To Bank A/c

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिये**
   Asset A/c Dr. (cash price part of instalment)
   Interest A/c Dr. (interest on instalment)
   To Hire Vendor

4. **किश्त के भुगतान के लिये**
   Hire Ventor A/c Dr.
   To Bank A/C

5. **लेखा वर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिये**
   Depreciation A/c Dr.
   To Asset A/c

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अन्तरित करने के लिये**
   Profit and Loss A/c Dr.
   To Interest A/c
   To Depreciation A/c

यह ध्यान रखना चाहिए कि यद्यपि परिसम्पत्ति (asset) खाते को भुगतान किये गये नकद मूल्य से डेबिट किया जाता है (पूरे नकद मूल्य से नहीं), **मूल्यह्रास पूरे नकद मूल्य पर लगाया जाता है।** बैलेंस शीट में परिसम्पत्ति खाते को डेबिट की गई नकद मूल्य की राशि में से **मूल्यह्रास** की रकम घटा कर दिखाया जायेगा।

उदाहरण 6 देखिये, इससे पता चलता है कि परिसम्पत्ति को वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड करने की स्थिति में लेखा कैसे किया जाता है।

उदाहरण 6

उदाहरण 5 की परिसम्पत्ति को वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य के भाग पर डेबिट करके हल कीजिये।

हलः

Journal Entries in the Books of ABC Ltd.

Date	Particulars		Amount (Dr.) Rs.	Amount (Cr.) Rs.
2016				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	1,812	
	Interest A/c	Dr.	600	
	To XYZ Ltd.			2,412
	(Being first instalment due)			

Dec. 31	XYZ Ltd Dr.		2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being first instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Asset A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,800	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			600
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			
2017				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	1,994	
	Interest A/c	Dr.	418	
	To XYZ Ltd.			
	(Being third instalment due)			2,412
Dec. 31	XYZ Ltd	Dr.	2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being third instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Machinery A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,618	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			418
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			
2018				
Dec. 31	Machinery A/c	Dr.	2,194	
	Interest A/c	Dr.	218	2,412
	To XYZ Ltd.			
	(Being third instalment due)			
Dec. 31	XYZ Ltd	Dr.	2,412	
	To Bank A/c			2,412
	(Being third instalment paid)			
Dec. 31	Depreciation A/c	Dr.	1,200	
	To Asset A/c			1,200
	(Being annual depreciation charged)			
Dec. 31	Profit & Loss A/c	Dr.	1,418	
	To Depreciation A/c			1,200
	To Interest A/c			218
	(Being annual charges transferred to Profit & Loss A/c)			

Note: Depreciation has been charged on straight line method @20% p.a. at the full cash price of Rs. 6,000.

11.6 विक्रेता की पुस्तकों में लेखा

जहां तक विक्रेता का संबंध है, अवक्रय एक साधारण विक्रय की भाँति होता है। अन्तर केवल यह है कि अवक्रय कि स्थिति में मूल्य का भुगतान स्थगित कर दिया जाता है, जो किश्तों में होता है। इसके लिये विक्रेता ब्याज लेता है। वह अवक्रेता के खाते को पूरे नकद मूल्य से डेबिट करता है। और विक्रय खाते को उसी राशि से क्रेडिट करता है। जब किश्त देय होती है तो ब्याज की राशि अवक्रेता के खाते को डेबिट की जाती है। प्राप्त की गई किश्त की राशि अवक्रेता के खाते को क्रेडिट की जाती है और बैंक खाते को डेबिट की जाती है। जो जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं वे निम्नलिखित हैं :

1. **जब माल बेचा जाता है।**
   Hire Purchaser A/c Dr.
   To Sales A/c (with full cash price)
2. **तत्काल भुगतान प्राप्त करते समय**
   Bank A/c Dr.
   To Hire Purchaser A/c
3. **किश्त पर देय ब्याज के लिये**
   Hire Purchaser A/c Dr.
   To Interest A/c
4. **किश्त की राशि की प्राप्ति के लिये**
   Bank A/c Dr.
   To Hire Purchaser A/c

उपर्युक्त प्रविष्टियों की सहायता से आप आसानी से अवक्रेता का खाता तथा ब्याज खाता बना सकते हैं। उदाहरण 7 का अध्ययन कीजिए और नोट कीजिए कि विक्रेता की पुस्तकों में लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 7

1 जनवरी, 2017 को IFB. Ltd. ने 1,886 रु. (नकद मूल्य) में एक मशीन JK. Ltd, से अवक्रय के अन्तर्गत प्राप्त की। तुरन्त भगुतान 400 रु. था। शेष रकम आठ–आठ सौ रु. की दो किश्तों में दी जानी थी। ब्याज की दर 6 प्रतिशत प्रति वर्ष थी। JK. Ltd.की पुस्तकों में लेजर खाते बनाइये। मूल्यह्रास सरल रेखा विधि के अनुसार 10 प्रतिशत प्रति वर्ष के हिसाब से लगाइये।

हलः

In the books of JK. Ltd.
IFB LTD.

Dr. **Cr.**

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.	To Sales A/c 1	1,886	Jan. 1	By Bank A/c	400
Dec. 31	To Interest A/c	89	Dec. 31	By Bank A/c (1st Inst.)	800
			Dec. 31	By Balance c/d	775
		1,975			1,975
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	775	Dec. 31	By Bank A/c (2nd Inst.)	800
Dec. 31	To Interest A/c	25			
		800			800

Interest Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	89	Dec. 31	By IFB Ltd.	89
		89			89
2018			2018		
Dec. 31	To Profit & Loss A/c	25	Dec. 31	By IFB Ltd	25
		25			25

Working Note

Statement having calculation of hire purchases interest and the amount of principal in each instalment.

	Rs.	**Interest Rs.**	**Cash Price Rs.**
Cash Price	1,886	—	400
Less: Down Payment	400		
	1,486		
Add: Interest on 1st instalment to be paid on Dec. 31, 2017 @ 6%	89		
	1,575		
Less : 1st Instalment on Dec. 31, 2017	800	89	711
	775		
Add: Interest on 2nd instalment @ 6%	25		
	800		
Less: 2nd Instalment on Dec. 31, 2018	800	25	775

बोध प्रश्न ग

1 अवक्रय संबंधी लेन–देन का लेखा करने से पहले किन सूचनाओं की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

2 निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन **सही** है और कौन सा **गलत** ।

i) जब परिसम्पत्ति को पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड किया जाता है, तो अवक्रय अचल सम्पत्ति की वित्त व्यवस्था की एक विधि बन जाता है।

ii) जब परिसम्पत्ति को भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड किया जाता है तो पूरे नकद मूल्य से परिसम्पत्ति खाते को डेबिट और विक्रेता के खाते को क्रेडिट किया जाता है।

iii) अवक्रय पर बेचे गये माल के लिये विक्रेता पूरे नकद मूल्य से अवक्रेता के खाते को डेबिट करता है।

iv) जब परिसम्पत्ति भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है तो किश्त देय होने पर कोई प्रविष्टि नहीं की जाती।

v) अवक्रेता का खाता एक व्यक्तिगत खाता है।

11.7 सारांश

अवक्रय करार में क्रेता माल की सुपुर्दगी लेता है और मूल्य का किश्तों में भुगतान करने का करार करता है। इस करार के अन्तर्गत यद्यपि क्रेता माल का कब्जा ले लेता है, लेकिन उसे माल का स्वामित्व हस्तांतरित नहीं होता। स्वामित्व केवल अन्तिम किश्त के भुगतान कर देने के बाद ही हस्तांतरित हुआ माना जाता है। यदि अवक्रेता किसी किश्त का भुगतान करने में सफल होता है तो विक्रेता माल का कब्जा वापस ले सकता है।

अवक्रय मूल्य हमेशा नकद मूल्य से अधिक होता है, दोनो में अन्तर स्थागित भुगतान के लिये लिया गया ब्याज माना जाता है। यदि तीन सूचनाओं यानि अवक्रय मूल्य, नकद मूल्य और ब्याज में से दो दी हुई तो तीसरी सूचना एक सूत्र से मालूम की जा सकती है। यह सूत्र है:

HP = CP + ब्याज (HP अवक्रय मूल्य है एवं CP नकद मूल्य)

अवक्रय करार के दोनों पक्षकार, यानि विक्रेता और अवक्रेता, अपनी–अपनी पुस्तकों में अवक्रय सौदों को रिकार्ड करते हैं। अवक्रेता दो तरह से लेखा कर सकता है : (i) परिसम्पत्ति पूरे नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है या (ii) परिसम्पत्ति वास्तव में भुगतान किये गये नकद मूल्य पर रिकार्ड की जाती है। अवक्रेता मुख्यतया दो खाते बनाता है यानि विक्रेता का खाता और परिसम्पत्ति खाता। दूसरी ओर, विक्रेता अवक्रेता का खाता और ब्याज खाता बनाता है।

11.8 शब्दावली

विक्रय का करार (agreement to sell): विक्रय अनुबंध में जब माल का स्वामित्व क्रेता को कुछ शर्तों के पूरा होने पर दिया जाता है तो ऐसे विक्रय को विक्रय करार कहते हैं।

नकद मूल्य (cash price): एकदम नकद विक्रय पर जो राशि देनी होती है।

तुरन्त भुगतान (down payment): अवक्रय करार के अन्तर्गत क्रय के समय किया गया पारंपरिक भुगतान।

किराया (hire charges): यदि अवक्रेता एक करार में अन्तिम किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो तब तक उसने जितनी राशि का भुगतान किया है वह परिसम्पत्ति के प्रयोग के लिये किराया मान ली जाएगी।

अवक्रय (hire purchase): एक विक्रय करार जिसके अन्तर्गत अवक्रेता माल की सुपुर्दगी लेता है और मूल्य का भुगतान किश्तों में तब तक करने का करार करता है जब तक कि पूरा भुगतान न कर दिया जाये और वह भुगतान को माल के प्रयोग के लिए किराया मानने का वचन देता है।

अवक्रेता (hire purchaser): एक अवक्रय अनुबंध में क्रेता।

11.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 1. i) करार ii) विक्रय iii) शर्तों, हस्तांतरित, iv) किश्तों, v) किराये, vi) पुनः कब्जा, vii) लिखित, viii) समाप्त, ix) अधिकार, स्वामित्व

2. i) गलत ii) सही iii) गलत iv) सही v) गलत vi) गलत

ख) 1. कुल ब्याज = (25+17+9) = 51रु.
ii) कुल व्याज = (264+178+58) = 500 रु.

2. i) नकद मूल्य = 18,616 रु., ii) नकद मूल्य 43,294 रु.

ग) 2. i) सही ii) गलत iii) सही iv) गलत v) सही

11.10 स्व–परख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. अवक्रय करार की क्या विशेषताएं हैं ?
2. अवक्रय करार के अन्तर्गत अवक्रेता के अधिकारों का वर्णन कीजिये।
3. जब कुल नकद मूल्य और किश्तें दी हुई हों तो आप ब्याज का परिकलन किस प्रकार करेंगे।

अभ्यास

1. नीचे दिये गये विवरण के आधार पर, अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत अवक्रेता और विक्रेता दोनों की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ कीजिये।

   अ) रमेश एंड कं. — अवक्रेता

   क्रय की तिथि – 1 जनवरी 2018, क्रय किया गया माल – ट्रक

   नकद मूल्य – 1,49,000 रु.।

   करार पर हस्ताक्षर करने पर किश्त – 40,000 रु.

   बाकी राशि तीन किश्तों में, प्रत्येक किश्त 40,000 रु. की,

   ब्याज की दर – 5%, मूल्यह्रास की दर – 10% घटते हुए शेष धन पर ।

   ब) सभी विवरण वहीं हैं जो (अ) में दिये गये हैं, केवल ब्याज की दर नहीं दी गयी है। स) सभी विवरण वही हैं जो ऊपर दिये गये हैं केवल नकद मूल्य नहीं दिया गया है।

2. हायर परचेज लि. ने अवक्रय पर एक कार खरीदी। 12,000 रु. सुपुर्दगी पर यानि 1.1.18 को देय थे और बाकी राशि प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय 12,000 रु. प्रति किश्त चार किश्तों में देय थी। विक्रेता हायर वेंडर लि. वार्षिक शेष पर 5% की दर से ब्याज लेने के लिए सहमत हुआ। कार का नकद मूल्य 54,551 रु. था। ह्रासित मूल्य पर 25% की दर से मूल्यह्रास लगाया जाना था। हायर परचेज लि. की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये और लेजर खाते बनाइये।

Total Interest Rs. 5449. The written down value of the Car at the end of fourth year Rs. 17260.

3. दिनेश लि. ने अवक्रय पर एक मशीन राजेश लि. से 1.4.15 को खरीदी। मशीन का नकद मूल्य 25,000 रु. था। अनुबंध की तिथि पर 5,000 रु. का भुगतान करना था और बाकी राशि 4 वार्षिक किश्तों में देनी थी। प्रत्येक किश्त की राशि 5,000 रु. थी और साथ ही 5% प्रति वर्ष की दर से ब्याज भी देना था। किश्त प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को देय थी तथा ऐसी पहली किश्त 31.12.15 को देय हुई। मूल्यह्रास 10% की दर से मूल लागत पर लगाना है। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ और लेजर खाते दिखाइये।

Total Interest Rs. 2500, balance of machinery account on 1-1-2019 Rs. 15000/-. The written down value of the Car at the end

4. एक इंजीनियरिंग कम्पनी ने 1.1.16 को एक मशीन अवक्रय प्रणाली पर 3 साल की अवधि पर 846 रु. तुरन्त भुगतान के रूप में देकर खरीदी और आगे के 2,000 के वार्षिक भुगतान 31.12.16, 31.12.17 और 31.12.18 को देय थे। मशीन का नकद मूल्य 6,000 रु. था और विक्रेता कम्पनी को अदत्त शेष राशि पर 8% प्रति वर्ष की दर से ब्याज लेना था। यह मानते हुए कि मशीन पर 10% प्रति वर्ष की दर से मूल्य ह्रास लगाया जाना था, अवक्रेता की पुस्तकों में उपयुक्त लेजर खाते दिखाइये। यह मान लीजिये कि प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय पूंजीकरण किया जाना था।

(Answer: Inerest total Rs. 846

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 12 अवक्रय लेखा-II

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 चूक तथा पुनर्ग्रहण

12.2.1 विक्रेता के अधिकार

12.2.2 स्वामी (विक्रेता) पर प्रतिबंध

12.3 चूक तथा पुनर्ग्रहण का लेखा

12.3.1 पूर्ण पुनर्ग्रहण

12.3.2 आंशिक पुनर्ग्रहण

12.4 किश्तों में भुगतान प्रणाली

12.5 किश्तों में भुगतान की प्रणाली के लिये लेखा

12.5.1 क्रेता की पुस्तकों में

12.5.2 विक्रेता की पुस्तकों में

12.6 अवक्रय पर बेचे गए मूल्य वाले माल का मूल रिकार्ड

12.7 लाभ–हानि का परिकलन

12.7.1 पुनर्ग्रहण किये गये माल का लेखा

12.7.2 अज्ञात राशियों का परिकलन

12.8 स्टॉक एवं देनदार विधि

12.9 सारांश

12.10 शब्दावली

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.12 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- अवक्रय अनुबंध के संबंध में चूक और पुनर्ग्रहण का अर्थ स्पश्ट कर सकें;
- विक्रेता तथा क्रेता दोनों की पुस्तकों में माल के पूर्ण और आंशिक पुनर्ग्रहण का लेखा कर सकें;
- किश्तों में भुगतान की प्रणाली की व्याख्या कर सकें तथा अवक्रय प्रणाली से इसका अंतर बता सकें;
- यदि कोई परिसंपत्ति किश्तों में भुगतान की प्रणाली के अंतर्गत खरीदी गयी है, तो उसकी लेखा प्रविष्टियाँ कर सकें;

- अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल के मूल रिकॉर्ड का उल्लेख कर सकें;
- अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर हुई लाभ–हानि के संबंध में प्रयोग होने वाले शब्दों की व्याख्या कर सकें;
- अवक्रय व्यापार खाते की सहायता से अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि का परिकलन कर सके;
- स्टॉक एवं देनदार विधि द्वारा अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि ज्ञात कर सकें।

12.1 प्रस्तावना

इकाई 11 में आपने अवक्रय अनुबंध की प्रकृति, उसकी कानूनी स्थिति तथा अवक्रय से संबंधित लेनदेनों के लेखे के संबंध में पढ़ा। जहाँ तक अवक्रय लेखा का संबंध है, अभी तक हमने एक ऐसी सरल स्थिति का वर्णन किया है जिसमें क्रेता ने सारी किश्तों का भुगतान कर दिया था तथा उसे स्वामित्व का हस्तांतरण हो गया। कभी–कभी अवक्रेता सारी किश्तों का भुगतान नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में विक्रेता को यह अधिकार होता है कि वह माल को वापस ले ले तथा दी हुई किश्तों को परिसंपत्ति के उपयोग के लिये दिया गया किराया मात्र मान ले। परंतु, व्यवहार में वह (विक्रेता) अवक्रेता के साथ कोई समझौता कर लेता है जिससे अवक्रेता को अधिक हानि न हो।

इस इकाई में आप पढ़ेंगे कि किश्तों के भुगतान में चूक होने पर अवक्रेता तथा विक्रेता की पुस्तकों में किस प्रकार लेखा किया जाता है। यहाँ इस बात का भी विवेचन है कि यदि परिसंपत्ति का क्रय अवक्रय पद्धति की बजाय किश्तों में भुगतान पद्धति के अंतर्गत किया गया हो, तो संबंधित लेन–देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

पिछली इकाईं में आपने अवक्रेता और विक्रेता दोनों की पुस्तकों में अवक्रय लेन–देन के लेखाकरण के बारे में पढ़ा। लेखाकरण की यह पद्धति अधिक विक्रय मूल्य वाले माल के अवक्रय सौदों से संबंधित है। व्यवहार में, कम मूल्य वाले माल जैसे फ्रिज, टी.वी., स्कूटर आदि भी अवक्रय पर बेचे जाते हैं। फुटकर व्यापारी बहुधा इन लेन–देनों का अलग रिकॉर्ड रखते हैं और उनसे होने वाली लाभ–हानि का अलग से परिकलन करते हैं। इस काम के लिये लेखा की एक विशेष विधि प्रयोग की जाती है। इस इकाई में हम इसी विधि पर विचार करेंगे तथा अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल के मूल रिकॉर्ड का भी उल्लेख करेंगे।

12.2 चूक तथा पुनर्ग्रहण (Default and Repossession)

चूक का अर्थ है कार्य करने, उपस्थित होने अथवा भुगतान करने में असफलता अर्थात् किसी दायित्व का निर्वाह करने में असफल होना। अवक्रय करार के अन्तर्गत अवक्रेता का दायित्व होता है कि वह सारी किश्तों का भुगतान करे ताकि उसे स्वामित्व का हस्तांतरण सुगमतापूर्वक हो जाये। यदि वह किसी किश्त का भुगतान करने में असफल होता है तो यह उसकी चूक (default) मानी जायेगी। ऐसी स्थिति में विक्रेता को यह कानूनी अधिकार होता है कि वह माल को वापस ले ले। माल की वापसी के इस कार्य को ही पुनर्ग्रहण (repossession) कहा जाता है। चूक होने की स्थिति में विक्रेता तथा अवक्रेता दोनों की कानूनी स्थिति बड़ी जटिल होती है। अवक्रय अधिनियम 1972 में इस मुद्दे को संहिताबद्ध किया गया था परन्तु इस अधिनियम को लागू नहीं किया गया जिससे आज भी कानूनी स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं है।

इस अधिनियम के सम्बद्ध प्रावधान निम्नलिखित हैं।

12.2.1 विक्रेता के अधिकार

1. **विक्रेता को अवक्रय करार समाप्त करने का अधिकारः** करार में दी गयी शर्तों के अनुसार जब अवक्रेता किश्तों के भुगतान में एक से अधिक बार चूक करता है तब विक्रेता को यह अधिकार होगा कि वह लिखित सूचना दे कर करार को समाप्त कर दे।

2. **करार की समाप्ति पर अधिकारः** जब अवक्रय करार को समाप्त कर दिया जाता है तो विक्रेता, जो माल का स्वामी अभी भी है, को अधिकार होगा कि (i) वह अवक्रेता के परिसर में प्रवेश कर सके, (ii) पहले दिये गये किराये को अपने पास रख सके और बकाया किराये की वसूली कर सके, तथा (iii) माल की सुपुर्दगी न मिलने पर हर्जाना वसूल कर सके।

12.2.2 स्वामी (विक्रेता) पर प्रतिबंध

विक्रेता के उपरोक्त अधिकारों के साथ–साथ उस पर कुछ प्रतिबंध भी हैं जो निम्नलिखित हैं।

1. **स्वामी द्वारा माल वापस ले लेने की स्थिति में अवक्रेता के अधिकारः** जब स्वामी अवक्रय करार के अन्तर्गत दिये गये माल का पुनर्ग्रहण कर लेता है तब अवक्रेता उस (स्वामी) से वह रकम वसूल कर सकता है जिससे अवक्रय मूल्य (hire purchase price) इन दो राशियों के पूर्ण योग से कम पड़ता है – (अ) अभिग्रहण की तिथि तक अवक्रय मूल्य के संबंध में दी गई राशियाँ तथा (ब) अभिग्रहण की तिथि पर माल का मूल्य।

2. **स्वामी के पुनर्ग्रहण के अधिकार पर प्रतिबंधः** जहां माल अवक्रय करार के अन्तर्गत दिया गया हो तथा अवक्रय मूल्य की कानूनी (statury) राशि का भुगतान कर दिया गया हो, वहां स्वामी अवक्रेता से माल के पुनर्ग्रहण के अधिकार को तब तक लागू नहीं कर सकता **जब तक कि उसे यह अधिकार किसी सक्षम अदालत के फैसले द्वारा प्राप्त न हुआ हो।**

12.3 चूक तथा पुनर्ग्रहण का लेखा

आप जानते हैं कि जब अवक्रेता किसी किश्त का भुगतान करने में असफल हो जाता है, तब विक्रेता माल वापिस ले सकता है। परिसम्पत्ति के लिए पहले किये गए भुगतान के भाग की राशि को किराया मान लिया जाता है। जहां तक माल के पुनर्ग्रहण का सम्बन्ध है, विक्रेता या तो सारा माल वापिस ले सकता है या उसका कुछ भाग। आईये अब हम उन प्रविष्टियों का विवेचन करें जो (i) पूर्ण पुनर्ग्रहण, तथा (ii) आंशिक पुनर्ग्रहण की स्थिति में की जाएंगी।

12.3.1 पूर्ण पुनर्ग्रहण (Complete Repossession)

जब अवक्रेता किश्त का भुगतान नहीं करता, तो विक्रेता माल का स्वत्व वापिस ले सकता है। यदि विक्रेता सम्पूर्ण माल का स्वत्व वापिस ले लेता है, तो उसे पूर्ण पुनर्ग्रहण कहते हैं। इसका अर्थ है। कि विक्रेता अपनी पुस्तकों में अवक्रेता का खाता बन्द कर देगा। इसके लिए की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियाँ निम्नलिखित हैं।

विक्रेता की पुस्तकों में

1. चूक की तिथि तक समस्त प्रविष्टियाँ (भुगतान की प्रविष्टि के अतिरिक्त) पहले की भांति की जाती हैं।

2. **अवक्रेता का खाता बन्द करने के लिए :**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Hire Purchaser
(Transfer of balance)

3. **पुनर्ग्रहीत माल की मरम्मत और उस पर किये गए अन्य खर्चों के लिए**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Cash A/c
(Repairs and other expenses)

4. **पुनर्ग्रहीत माल की दुबारा बिक्री के लिए**

Cash A/c Dr.
To Goods Repossessed A/c

5. **पुनर्ग्रहीत माल खाते में बचा हुआ कोई भी शेष लाभ अथवा हानि होता है, जिसे अन्ततः लाभ–हानि खाते को अंतरित कर दिया जाता है। लाभ की स्थिति में प्रविष्टि इस प्रकार होगीः**

Goods Repossessed A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

हानि की स्थिति में प्रविष्टि इसके विपरीत होगी।

अवक्रेता की पुस्तकों में

1. **भुगतान की प्रविष्टि के विपरीत, मूल्यह्रास के लिए की जाने वाली प्रविष्टि सहित समस्त प्रविष्टियाँ पहले के समान चूक की तिथि तक की जाएंगी।**

2. **विक्रेता का खाता बन्द करने के लिए**

Hire Vendor A/c Dr.
To Asset A/c

3. **परिसम्पत्ति खाता बन्द करने के लिए**

Profit & Loss A/c Dr.
To Asset A/c

सामान्यतः अवक्रेता को हानि होती है, अतः माल के अभिग्रहण पर होने वाली हानि के लिए उपर्युक्त प्रविष्टि की जाती है। लाभ की स्थिति में इसके विपरीत प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण 1 पर दृष्टि डालिये तथा देखिये कि पूर्ण पुनर्ग्रहण की स्थिति में प्रविष्टियाँ किस प्रकार की जाती हैं तथा पुस्तकों को कैसे बन्द किया जाता है।

उदाहरण 1

1 जनवरी 2017 को ए.बी.सी.लि. ने कुछ प्लांट और मशीनें, जिनका मूल्य 28,000 रु. था, एक्स.वाई. जैड लि. को अवक्रय पर बेचा। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 7,500 रु. तत्काल नकद, तथा तीन वर्षों तक प्रत्येक वर्ष के अन्त में 7,500 रु. प्रत्येक का तीन किश्तें । ब्याज की दर 5% वार्षिक थी, तथा परिसम्पत्ति के लिए मूल्यह्रास की दर 10% वार्षिक थी।

एक्स.वाई.जेड. लि. ने नकद 7,500 रु. तथा प्रथम किश्त का भुगतान तो कर दिया, परन्तु दूसरी किश्त का भुगतान नहीं कर सका। परिणामस्वरूप ए.बी.सी. लि. ने माल का पुनर्ग्रहण कर लिया। ए. बी.सी. लि. ने मरम्मत पर 300 रु. व्यय किये तथा परिसम्पत्ति को 15,350 रु. में बेच दिया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में लेजर खाते खोलिये।

हलः

Books of XYZ Ltd.
Plant & Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To ABC Ltd	28,000	Dec.31	By Depreciation (10% on 28,000)	2800
			Dec.31	By Balance c/d	25,200
		28,000			28,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	25,200	Dec. 31	By Depreciation (10% on 25,200)	2,520
			Dec. 31	By ABC Ltd	14,726
			Dec. 31	By Profit and Loss A/c	7,954
		25,200			25,200

ABC Ltd's Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Cash A/c (down payment)	7,500	Jan. 1	By Plant & Machinery	28,000
			Dec.31	By Interest A/c	1,025
Dec.31	To Cash A/c (first instalment)	7,500			
Dec. 31	To Balance c/d	14,025			
		29,025			29,025
2018			2018		
Dec. 31	To Plant & Machinery A/c (default)	14,726	Jan.1	By Balance b/d	14,025
			Dec.31	By Interest A/c	701
		14726			14,726

Books of ABC Ltd
XYZ Ltd's Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	28,000	Jan.1	By Cash A/c	7,500
Dec.31	To Interest A/c (5% on 20,500)	1,025	Dec.31	By Cash A/c	7,500
			Dec.31	By Balance c/d	14,025
		29,025			29,025
2018			2018		
Jan.1	To Balance b/d	14,025	Dec.31	By Goods Repossessed A/c	14,726
Dec. 31	To Interest A/c (5% on 14,025)	701			
		14,726			14,726

Goods Repossessed Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Dec.31	To XYZ Ltd A/c	14,726	Dec.31	By Cash A/c (sales)	15,350
Dec.31	To Cash A/c (repairs)	300			
Dec.31	To Profit & Loss A/c (profit on sale)	324			
		15,350			15,350

12.3.2 आंशिक पुनर्ग्रहण (Partial Repossession)

कभी–कभी चूक की स्थिति में विक्रेता अवक्रेता से समझौता कर लेता है, तथा पूरे माल का पुनर्ग्रहण नहीं करता, बल्कि माल के केवल एक भाग का पुनर्ग्रहण करता है, जिसे 'आंशिक पुनर्ग्रहण' कहा जाता है। इस स्थिति में परिसम्पत्ति का कुछ भाग अवक्रेता के पास ही रह जाता है। जहां तक आंशिक पुनर्ग्रहण के लिए लेखाविधि का प्रश्न है, ब्याज तथा मूल्यह्रास की प्रविष्टियाँ दोनों पक्षों के खातों में सदा की भांति की जाती हैं, परंतु भुगतान के लिए प्रविष्टि नहीं की जाती। ये प्रविष्टियाँ चूक की तिथि तक की जाती हैं। चूंकि परिसम्पत्ति का कुछ भाग अवक्रेता के पास ही रह जाता है, अतः विक्रेता अपनी पुस्तकों में अवक्रेता के खाते को बन्द नहीं करता, न ही अवक्रेता अपनी पुस्तकों में विक्रेता के खाते को बन्द करता है। वे सम्मत मूल्यह्रास की दर (जो सामान्यतः बढ़ी हुई होती है) की सहायता से पुनर्ग्रहीत परिसम्पत्ति का वर्तमान मूल्य निश्चित करते हैं। विक्रेता इस राशि से पुनर्ग्रहीत माल के खाते को डेबिट कर देता है तथा अवक्रेता के खाते को क्रेडिट कर देता है इसी प्रकार अवक्रेता, विक्रेता के खाते को पुनर्ग्रहीत परिसम्पत्ति के सम्मत मूल्य से डेबिट कर देता है। तथा परिसम्पत्ति खाते को इस राशि से क्रेडिट कर देता है। अपने पास छूटे हुए परिसम्पत्ति के भाग के लिए अवक्रेता मूल्यह्रास की सामान्य दर लागू करता है तथा ह्रासित मूल्य को परिसम्पत्ति खाते में शेष के रूप में दिखाता है। परिसम्पत्ति खाते में शेष राशि (balancing figure) चूक होने पर हुआ लाभ–हानि दर्शाती है। जिसे लाभ–हानि खाते में अन्तरित कर दिया जायेगा। उदाहरण 2 का अध्ययन कीजिये तथा नोट कीजिये कि आंशिक पुनर्ग्रहण की स्थिति में खाते कैसे तैयार किये जाते हैं।

उदाहरण 2

जालान डिस्ट्रीब्यूटर्स ने तीन वाहन 1 जनवरी, 2017 को जैन एन्टरप्राइजेज को अवक्रय पर बेचे। प्रत्येक वाहन की कीमत 90,000 रु. थी जिसका भुगतान निम्न प्रकार से होना तय हुआ।

i) प्रत्येक वाहन के लिये 30,000 रु. तत्काल दिये जायें।

ii) शेष रकम 15% प्रति वर्ष ब्याज सहित तीन बराबर वार्षिक किश्तों में दी जाये।

जैन एन्टरप्राइजेज घटते हुए शेष पर ह्रासित मूल्य विधि (written down value method) के अनुसार 20% प्रति वर्ष की दर से मूल्यह्रास लगाते हैं। 31 दिसम्बर, 2017 को पहली किश्त के भुगतान के बाद वे आगे की किश्त का भुगतान नहीं कर सके। दोनों पक्षों के बीच यह समझौता हुआ कि देय राशि में से दो वाहनों के मूल्य के समायोजन के पश्चात् दो वाहनों का पुनर्ग्रहण कर लिया जाये। पुनर्ग्रहण के उद्देश्य से 30% की वार्षिक दर से मूल्यह्रास लगाया गया। पुनर्ग्रहीत माल की मरम्मत पर 2,000 रु. व्यय किये गए तथा उसे 92,000 रु. पर पुनः बेच दिया गया। पुनर्ग्रहीत माल के मूल्य का परिकलन कीजिये तथा दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते दिखाइये।

हलः

In the books of Jain Enterprises
Light Commercial Vans Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2017		Rs.	2017		Rs.
Jan, 1	To Jalani Distributors (Rs. 90,000×3)	2,70,000	Dec. 31	By Depreciation A/c (20% on 2,70,000)	54,000
			Dec. 31	By Balance c/d	2,16,000
		2,70,000			2,70,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	2,16,000	Dec. 31	By Depreciation A/c (20% on 2,16,600)	43,200
			Dec. 31	By Jalani Distributors (value of two vans on repossession)	88,200
			Dec. 31	By Profit & Loss A/c (loss on repossession)	27,000
			Dec. 31	By Balance c/d	57,600
2019		2,16,000			2,16,000
Jan. 1	To Balance b/d	57,600			

Jalani Distributors' Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c (down payment) (Rs. 30,000×3)	90,000	Jan. 1	By Light Commercial Vans A/c	2,70,000
Dec.31	To Bank A/c (first instalment Rs. 60,000+27,000)	87,000	Dec 31	By Interest A/c $(1,80,000 \times \frac{15}{100})$	27,000

Dec.31	To Balance c/d	1,20,000			
		2,97,000			2,97,000
2018			2018		
Dec. 31	To Light Commercial Vans A/c	88,200	Jan. 1	By Balance b/d	1,20,000
Dec. 31	To Balance c/d	49,800	Dec. 31	By Interest $(1,20,000 \times \frac{15}{100})$	18,000
		1,38,000			1,38,000
			2019		
			Jan. 1	By Balance b/d	49,800

Books of Jalani Distributors
Jain Enterprises' Account

2017		Rs.	2017		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	2,70,000	Dec. 31	By Bank A/c (down payment)	90,000
Dec. 31	To Interest A/c $(\frac{15}{100} \times 1,80,000)$	27,000	Dec. 31	By Bank A/c (Ist instalment)	87,000
			Dec. 31	By Balance c/d	1,20,000
		2,97,000			2,97,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	1,20,000	Dec. 31	By Goods Repossessed A/c	88,200
Dec. 31	To Interest A/c $(\frac{15}{100} \times 1,20,000)$	18,000	Dec. 31	By Balance c/d	49,800
		1,38,000			1,38,000
2019					
Jan. 1	To Balance b/d	49,800			

Goods Repossessed Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Dec. 31	To Jain enterprises	88,200	Dec. 31	By Cash A/c (sale)	92,000
Dec. 31	To Cash A/c (repairs)	2,000			
Dec. 31	To Profit & Loss A/c (profit on sale)	1,800			
		92,000			92,000

Working Notes

1. **Calculation of the value of repossessed asset** Rs.

Cost Price of two vans (90,000×2)		1,80,000
Depreciation		
First year $(\frac{30}{100}\times 1,80,000)$	54,000	
Second year $(\frac{30}{100}\times 1,80,000-54,000)$	37,800	91,800
Value of repossessed stock		88,200

2. **Loss on Repossession** Rs.

Cost Price of two vans (90,000×2)		1,80,000
Depreciation		
First year $(\frac{20}{100}\times 1,80,000)$	36,000	
Second year $(\frac{20}{100}\times 1,80,000-36,000)$	28,800	64,800
Depreciated value of two vans		1,15,200
Less : Value of the two vans at higher rate of depreciation for repossession		88,200
Loss on repossession		27,000

12.4 किश्तों में भुगतान प्रणाली (Instalment Payment System)

किश्तों में भुगतान प्रणाली जिसे 'आस्थगित किश्तें' (Deferred Instalment) भी कहा जाता है एक ऐसी प्रणाली है जिसके अन्तर्गत क्रेता को अनुबंध पर हस्ताक्षर होने के समय से ही माल का स्वामित्व व कब्जा दे दिया जाता है। क्रेता को मूल्य का भुगतान किश्तों में करने की सुविधा होती है। किश्तों में भुगतान प्रणाली की विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

1. यह एक पूर्ण बिक्री (outright sale) है।
2. अनुबंध पर हस्ताक्षर होते ही स्वामित्व तथा कब्जा दोनों ही क्रेता को हस्तांतरित हो जाते हैं।
3. क्रेता किश्तों में भुगतान कर सकता है।
4. भुगतान में चूक होने की स्थिति में विक्रेता माल का पुनर्ग्रहण नहीं कर सकता।
5. चूक होने तक दी गई राशि को जब्त नहीं किया जाता, तथा विक्रेता देय राशि के लिए क्रेता पर मुकदमा चला सकता है।

उपरोक्त विवेचन से हम यह देख सकते हैं कि किश्तों में भुगतान प्रणाली तथा अवक्रय प्रणाली में कुछ समानताएं हैं, परन्तु कुछ भिन्नताएं भी हैं। ये भिन्नताएं निम्नलिखित हैं।

अवक्रय प्रणाली	किश्तों में भुगतान प्रणाली
1. यह किराए पर लेने का एक करार है।	1. यह बिक्री का एक करार है।
2. अनुबंध पर हस्ताक्षर के समय क्रेता को माल का केवल कब्जा ही मिलता है।	2. अनुबंध पर हस्ताक्षर होने पर क्रेता को माल का कब्जा व स्वामित्व दोनों ही मिल जाते हैं।
3. चूक होने पर माल का पुनर्ग्रहण किया जा सकता है।	3. चूक होने पर माल का पुनर्ग्रहण नहीं जा सकता।
4. चूक होने पर चूक की तिथि तक किये गये भुगतान को जब्त कर लिया जाता है तथा उसे किराया मान लिया जाता है।	4. चूक की तिथि तक किया गया भुगतानपरिसम्पत्ति के मूल्य के रूप में किया भुगतान होता है तथा इसे जब्त नहीं किया जा सकता। विक्रेता केवल देय राशिके लिए क्रेता पर मुकदमा चला सकता है।
5. क्रेता माल को न तो बेच सकता है, न नष्ट कर सकता है न हस्तांतरित कर सकता है, न हानि पहुँचा सकता है और न ही बन्धक रख सकता है।	5. क्रेता माल को बेच सकता है, नष्ट कर सकता है, हानि पहुँचा सकता है, हस्तांतरित कर सकता है, तथा बन्धक रख सकता है

12.5 किश्तों में भुगतान प्रणाली के लिए लेखा

आप जानते हैं कि अनुबंध पर हस्ताक्षर होते ही स्वामित्व तत्काल क्रेता को प्राप्त हो जाता है। अतः जब किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रय का लेखांकन किया जाए, तब इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। तदनुसार क्रेता विक्रेता को दी जाने वाली पूरी राशि (जिसमें कुल ब्याज भी सम्मिलित होता है) से क्रेडिट कर देता है, तथा परिसम्पत्ति को नकद मूल्य से तथा ब्याज निलम्बित खाते (Interest Suspense Account) को ब्याज की कुल राशि से, जो कि कुल देय राशि तथा नकद मूल्य का अन्तर होता है, डेबिट कर देता है। ब्याज निलम्बित खाते को प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय ब्याज की वास्तविक राशि से क्रेडिट कर दिया जाता है तथा इसे ब्याज खाते को अंतरित कर दिया जाता है। इसी प्रकार विक्रेता क्रेता को पूरी राशि से डेबिट कर देता है, तथा बिक्री को नकद मूल्य (cash price) से तथा ब्याज निलम्बित खाते को कुल ब्याज से क्रेडिट कर देता है। वह प्रत्येक किश्त के भुगतान के समय ब्याज की वास्तविक राशि को ब्याज निलम्बित खाते को डेबिट करके तथा ब्याज खाते को क्रेडिट करके ब्याज खाते को अंतरित कर देता है।

अतः लेखांकन की दृष्टि से किश्तों में भुगतान प्रणाली तथा अवक्रय प्रणाली में मुख्य अन्तर ब्याज के लेखा से सम्बन्धित है किन्तु व्यवहार में इसके बिना भी काम चलाया जा सकता है। क्रेता परिसम्पत्ति खाता अवक्रय प्रणाली के परिसम्पत्ति खाते के समान ही रखता है, अर्थात् मूल्यह्रास प्रचलित रीति के अनुसार ही चार्ज किया जाता है तथा बैलेंस शीट में परिसम्पत्ति का ह्रासित मूल्य दिखाया जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि विक्रेता के खाते का शेष प्रतिवर्ष बैलेंस शीट के देयता पक्ष में दिखाया जाएगा।

आईये, अब हम किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता और विक्रेता दोंनों की पुस्तकों में होने वाली जर्नल प्रविष्टियों का अध्ययन करें।

12.5.1 क्रेता की पुस्तकों में

क्रेता अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ करता है।

1. **जब परिसम्पत्ति क्रय की जाती है।**

Asset A/c	Dr.	(नकद मूल्य से)
Interest Suspense A/c	Dr.	(नकद मूल्य व किश्तों की कुल राशि के अन्तर से)
To Vendor		(किश्तों के मूल्य से)

2. **तत्काल भुगतान के लिए**

Vendor	Dr.
To Bank A/c	

3. **किश्त के समय देय ब्याज के लिए**

Interest A/c	Dr.
To Interest Suspense A/c	

4. **किश्त के भुगतान के लिए**

Vendor	Dr.
To Bank A/c	

5. **लेखावर्ष के अन्त में मूल्यह्रास के लिए**

Deprecation A/c	Dr.
To Asset A/c	

6. **ब्याज तथा मूल्यह्रास को लाभ–हानि खाते में अंतरित करने के लिए**

Profit & Loss A/c	Dr.
To Interest A/c	
To Depreciation A/c	

ऊपर दी हुई जर्नल प्रविष्टियाँ करने के पश्चात् क्रेता निम्नलिखित लेजर खाते बनाता है:

i) परिसम्पत्ति खाता (Asset A/c)

ii) विक्रेता खाता (Vendor'sA/c)

iii) ब्याज निलम्बित खाता (Interest Suspense A/c)

iv) ब्याज खाता (Interest A/c)

उदाहरण 3 का अध्ययन कीजिए तथा देखिये कि जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत खरीदा जाता है, तब क्रेता की पुस्तकों में लेजर खाते किस प्रकार बनाए जाते हैं।

उदाहरण 3

फायर इण्डस्ट्रीज लि. ने 1 जनवरी 2016 को एम. एम. सी. लिमिटेड से किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत एक मशीन खरीदी। इसका नकद मूल्य 20,000 रु. था जिसका भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 6,384 रु. तत्काल भुगतान और शेष पांच–पांच हजार रु. की तीन वार्षिक किश्तों में, जिनमें 5% प्रति वर्ष के हिसाब से ब्याज भी शामिल होगा। मूल्य ह्रास ह्रासित मूल्य (W.D.V) पद्धति के अनुसार 10% की दर से लगाया जायेगा। फायर इण्डस्ट्रीज की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये।

In the books of Fire Industries Ltd.
MMC Ltd. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To Bank A/c	6,384	Jan. 1	By Plant A/c	20,000
Dec.31	To Bank A/c (1st Inst.)	5,000	Dec.31	By Interest Suspense A/c	1,384
Dec.31	To Balance c/d	10,000			
		21,384			21,384
2017			2017		
Dec.31	To Bank A/c (2nd Inst.)	5,000	Jan. 1	By Balance b/d	10,000
Dec.31	To Balance c/d	5,000			
		10,000			10,000
2018			2018		
Dec.31	To Bank A/c (3rd Inst.)	5,000	Dec.31	By Balance b/d	5,000
		5,000			5,000

Plant Account

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To MMC Ltd.	20,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	2,000
			Dec. 31	By Balance c/d	18,000
		20,000			20,000
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	18,000	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,800
			Dec. 31	By Balance c/d	16,200
		18,000			18,000
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	16,200	Dec. 31	By Depreciation A/c	1,620
			Dec. 31	By Balance c/d	14,580
		16,200			16,200

Interest Suspense Account

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To MMC Ltd.	1,384	Dec.31	By Interest A/c	681
			Dec.31	By Balance c/d	703
		1,384			1,384
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	703	Dec. 31	By Interest A/c	465
			Dec. 31	By Balance c/d	268
		703			703
2018			2018		
Jan. 1	To Balance b/d	238	Dec. 31	By Interest A/c	238
		238			238

Working Note:

Statement showing calculation of Interest for deferment period

Particulars	Amount	Principal	Interest	Total
	Rs.	Rs. (a)	Rs. (b)	Rs. c = (a+b)
Cash Price (6384+13616)	20,000			
1.1.16				
Less : Down payment	6,384	6,384		6,384
	13,616			
31.12.16				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 13,616)$	681			
	14,297			
Less : Ist Instalment	5,000	4,319	681	5,000
	9,297			
31.12.17				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 9,297)$	465			
	9,762			
Less : 2nd Instalment	5,000	4,535	465	5,000
	4,762			
31.12.18				
Add : Interest @ 5% $(\frac{5}{100}\times 4,762)$	238			
	5,000			
Less : 3rd Instalment	5,000	4,762	238	5,000
Total	NIL	20,000	1,384	21,384

12.5.2 विक्रेता की पुस्तकों में

जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अनुसार बेचा जाता है, तब विक्रेता निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ करता है।

1. **जब माल बेचा जाता है**

Purchaser A/c	Dr.	(सकल मूल्य से)
To Sales A/c	Dr.	(नकद मूल्य से)
To Interest Suspense A/c		(सकल मूल्य तथा नकद मूल्य के अन्तर से)

2. **तत्काल भुगतान के रूप में प्राप्त नकद राशि के लिए**

Bank A/c	Dr.	
To Purchaser		

3. **किश्त पर देय ब्याज के लिए**

Interest Suspense A/c Dr.
To Interest A/c

4. **किश्त की राशि प्राप्त के लिए**

Bank A/c Dr.
To Purchaser

5. **ब्याज को लाभ–हानि खातें में अंतरित करने के लिए**

Interest A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

क्रेता की भांति ही विक्रेता भी कुछ लेजर खाते बनाता है, जो इस प्रकार हैं:

i) क्रेता का खाता

ii) ब्याज निलम्बित खाता

iii) ब्याज खाता

उदाहरण 4 का अध्ययन कीजिये तथा देखिये कि जब माल किश्तों में भुगतान प्रणाली के अनुसार बेचा जाता है तो विक्रेता की पुस्तकों में खाते किस प्रकार रखे जाते हैं।

उदाहरण 4

उदाहरण में दिये गये तथ्यों को लेकर विक्रेता की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइये।

हल:

In the books of MMC Ltd.
Fire Industries Ltd. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2016		Rs.	2016		Rs.
Jan.1	To Sales A/c	20,000	Jan. 1	By Bank A/c (down payment)	6,384
Dec.31	To Interest Suspense A/c	1,384	Dec.31	By Bank A/c (Ist Instalment)	5,000
			Dec.31	By Balance c/d	10,000
		21,384			21,384
2017			2017		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec.31	By Bank A/c (2nd Instalement)	5,000
			Dec.31	To Balance c/d	5,000
		10,000			10,000
2018			2018		
Jan.1	To Balance b/d	5,000	Dec.31	By Bank A/c (3rd Instalment)	5,000
		5,000			5,000

Interest Suspense Account

Dr. **Cr.**

2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Interest A/c	681	Jan. 1	By Fire Industries Ltd A/c	1,384
Dec.31	To Balance c/d	703	2016		
		1,384			1,384
2017			2017		
Dec.31	To Interest A/c	465	Jan. 1	By Balance b/d	703
Dec.31	To Balance c/d	238			
		703			703
2018			2018		
Dec.31	To Interest A/c	238	Jan. 1	By Balance b/d	238
		238			238

Interest Account

Dr. **Cr.**

2016		Rs.	2016		Rs.
Dec.31	To Profit & Loss A/c	681	Dec.31	By Interest Suspense A/c	681
		681			681
2017			2017		
Dec.31	To Profit & Loss A/c	465	Dec.31	By Interest Suspense A/c	465
		465			465
2018			2018		
Dec.31	To Profit & Loss A/c	238	Dec.31	By Interest Suspense A/c	238
		238			238

बोध प्रश्न क

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

   i) चूक कार्य करने में, उपस्थित होने में या भुगतान करने में ..... है।

   ii) माल पर कब्जा होने का अर्थ होता है माल पर ..... होना।

   iii) ..... की ..... के कार्य को पुनर्ग्रहण कहते हैं।

   iv) जब भुगतान चूक के कारण अवक्रय करार ..... तब विक्रेता को अवक्रेता के परिसर में प्रवेश करने का माल तथा माल के ..... का अधिकार होगा।

   v) भुगतान में चूक के कारण करार समाप्त होने की स्थिति में माल की सुपुर्दगी न होने पर विक्रेता को ..... का अधिकार होता है।

   vi) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत, क्रेता को .....की तिथि पर माल का ..... प्राप्त हो जाता है।

2. बताइए कि निम्न कथन **सही** है अथवा **गलत** है।

i) अवक्रय करार के अन्तर्गत केवल अन्तिम किश्त के भुगतान में असफलता को चूक माना जाएगा।

ii) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत चूक होने पर विक्रेता को पहले दी गई राशि को अपने पास रखने का तथा देय किराये के बकाया को वसूल करने का अधिकार होता है।

iii) पुनर्ग्रहण के पश्चात् विक्रेता को पुनर्ग्रहीत माल को दुबारा बेचने का अधिकार नहीं होता।

iv) किश्तों में भुगतान प्रणाली की स्थिति में क्रेता को खरीदे गए माल को बेचने का अधिकार है।

v) किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता किसी भी समय माल वापिस कर सकता है।

12.6 अवक्रय पर बेचे गये मूल्य वाले माल का मूल रिकॉर्ड

आप जानते हैं कि प्रौद्योगिकी की प्रगति और रहन–सहन के स्तर में सुधार के साथ–साथ टिकाऊ उपभोग वस्तुओं जैसे फ्रिज, टी.वी., कारों आदि की माँग पिछले कुछ वर्षों से बहुत बढ़ गयी है। माँग की इस तीव्र वृद्धि का लाभ उठाने के लिये व्यापारियों ने अनेक नई–नई योजनाएं बनाई हैं जो उपभोक्ताओं को ऐसी वस्तुएं खरीदने में सुविधा प्रदान करती हैं। ऐसी एक योजना 'अवक्रय पर विक्रय' करना है। सीमित साधनों वाले उपभोक्ता इस योजना का पूरा लाभ उठाते हैं क्योंकि इसके अन्तर्गत किश्तों में भुगतान करना होता है तथा ब्याज की दर भी उचित होती है। इस संबंध में महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लेन–देन फुटकर व्यापारी और उपभोक्ताओं के बीच होते हैं, दो व्यावसायिक इकाइयों के बीच नहीं। अतः इनका लेखा केवल विक्रेता की पुस्तकों में ही करना होता है, क्रेता की पुस्तकों में नहीं। आईये, अब यह अध्ययन करें कि जब कम मूल्य वाले माल अवक्रय पर बेचे जाते हैं तब फुटकर विक्रेता की पुस्तकों में इसका लेखा किस प्रकार किया जाता है।

ऐसे लेन–देन काफी मात्रा में होते हैं। अतः विक्रेता के लिये प्रत्येक सौदे के लिये अलग–अलग जर्नल प्रविष्टियाँ करना व्यावहारिक रूप से असुविधाजनक होता है। इसीलिये इन्हें रिकॉर्ड करने की एक ऐसी विधि बनाई गई है जिसके अन्तर्गत कुछ नियंत्रण खातों (control account) के माध्यम से इस प्रकार के सारे लेन–देनों पर पूरा नियंत्रण रखा जा सके तथा इन पर हुई लाभ–हानि ज्ञात की जा सके। इन लेन–देनों का मूल रिकॉर्ड एक सहायक बही जिसे 'अवक्रय विक्रय रजिस्टर' (Hire Purchase Sales Register) कहते हैं, में रखा जाता है। इस रजिस्टर में वह सारी जानकारी रिकॉर्ड की जाती है जिसकी क्रेताओं के व्यक्तिगत खातों को नियमित करने के लिये आवश्यकता होती है। इस रजिस्टर का प्रारूप चित्र 12.1 में दिया गया है।

Fig 12.1 Hire Purchase Sales Register

S.No	Date of Agreement	Name of Article	Name of Customer	Cost Price	Hire Purchase Price	Cash Down Payment	No. of Instalments	Instalments Due				Total installments received	Instalments due but not paid	Instalments not yet due
								1	2	3	4			

इसमें आप देखेंगे कि अवक्रय पर बेचे गये माल का पूरा ब्यौरा दिया गया है। अलग–अलग कालमों में लागत मूल्य, अवक्रय मूल्य, तुरन्त भुगतान की राशि, प्राप्त हुई किश्तों की राशि, प्राप्य किश्तों की राशि और उन किश्तों की राशि जो अभी प्राप्य नहीं हुई हैं ये आंकड़े अवक्रय लेन–देनों का लेखा और उन पर हुई लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये बहुत प्रासंगिक हैं इसीलिये यह बहुत आवश्यक है कि इन राशियों को बहुत सावधानी से रिकॉर्ड किया जाये इन कॉलनों के योग की आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं और उन्हें सम्बद्ध नियंत्रण खातों में पोस्ट किया जाता है। यह कार्यवाही प्रायः मासिक, त्रैमासिक अथवा वार्षिक आधार पर की जाती है।

12.7 लाभ–हानि का परिकलन

अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये हमें एक 'अवक्रय व्यापार खाता' बनाना होता है। यह प्रेषण के माल की लाभ–हानि ज्ञात करने के लिये बनाये जाने वाले 'प्रेषण खाते' की भांति होता है। अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिये हमें अवक्रय पर बेचे गये माल की राशि, प्राप्त राशि, पुनर्ग्रहीत माल, अवक्रय देनदार (लेखा अवधि के शुरू में और अन्त में) तथा अवक्रय स्टॉक (लेखा अवधि के शुरू में और अन्त में) की राशियों की आवश्यकता होती है। ये राशियाँ अवक्रय रजिस्टर या सम्बद्ध नियंत्रण खातों से मालूम की जा सकती हैं। इन्हें जर्नल में आवश्यक अन्तिम प्रविष्टियाँ (closing entries) करके अवक्रय व्यापार खाते (Hire Purchase Trading Account) में लाया जाता है। इसके अतिरिक्त हमें भार (loading) का प्रतिशत और अवक्रय पर किया गया खर्च ज्ञात करना पड़ेगा। अवक्रय व्यापार खाते का प्रारूप (Proforma of Hire Purce Trading Account) चित्र 12.2 में दिखाया गया है।

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
To H.P. Stock (opening)	...	By Cash Received	...
To H.P. Debtors (opening)	...	By Goods Repossessed (market value)	...
To Goods Sold on H.P (at H.P. price)	...	By H.P. Stock (closing)	...
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	...	By H.P. Debtors (closing)	...

To Expenses	...	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	...
To Net Profit (transferred to P&L A/c)	...	By Goods Sold on H.P. (loading)	...
	...		...

चित्र 12.2 में दिखाया गया अवक्रय व्यापार खाते का प्रारूप अवक्रय व्यापार खाते का सामान्य रूप है। लेकिन इसे दो भागों में बांटना ज्यादा अच्छा है जैसा कि चित्र 12.3 में दिखाया गया है। पहले भाग में केवल वे मदें आती हैं जो अवक्रय मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं और दूसरा भाग लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये अवक्रय व्यापार से संबंधित भार, खर्चे, हानि आदि का समायोजन दर्शाता है। इस प्रकार बनाये गये अवक्रय व्यापार के पहले भाग के दोनों पक्षों का योग बराबर होता है। यदि ऐसा न हो तो इसका अर्थ होगा कि कहीं कुछ गलती हुई है। केवल इतना ही नहीं, पहले भाग से हमें किसी भी ऐसी मद की राशि ज्ञात करने में सहायता मिलती है जो दी नहीं है क्योंकि यह अज्ञात राशि दोनों ओर के अन्तर (balancing figure) के बराबर मान ली जाती है बशर्ते कि अन्य सभी मदों की राशियाँ उपलब्ध हों।

Figure 12.3 : Another Proforma of Hire Purchase Trading Account

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
To H.P. Stock (opening)	..	By Cash Received	...
To H.P. Debtors (opening)	...	By Goods Repossessed (Instalments unpaids)	...
To Goods Sold on H.P (at H.P. price)	...	By H.P. Stock (closing)	...
		By H.P. Debtors (closing)	...
	...		...
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	...		
To Loss on Goods Repossessed (dif. between market value or cost and unpaid instalments)	....		
	...	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	...
To Expenses (on hire purchase business)	...	By Goods Sold on H.P. (loading)	...
To Net Profit (Transferred to P&L A/c)	...		...

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि अवक्रय व्यापार खाते की सहायता से अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लाभ–हानि कैसे निकाला जाता है।

उदाहरण 5

कैपिटल इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कं. ने अवक्रय आधार पर इलेक्ट्रॉनिक्स माल बेचने के लिये 1.1.18 को व्यवसाय शुरू किया। 31.12.18 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित लेन–देन हुए।

क) कृष्णा ने 3,000 रु. की लागत की एक टी वी 4,500 रु. में खरीदा जिसमें से 1,500 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 250 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

ख) विम ने 1,000 रु. की लागत का एक ग्राइंडर 1,500 रु. में खरीदा जिसमें से 300 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 100 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

ग) अर्जुन ने 2,400 रु. की लागत का एक रेफ्रिजरेटर 3,000 रु. में खरीदा जिसमें से 600 रु. का भुगतान तत्काल करना था तथा शेष का भुगतान प्रत्येक मास 200 रु. की 12 मासिक किश्तों में करना था।

31.12.18 तक सात देय किश्तों में से कृष्णा एक किश्त का भुगतान नहीं कर पाया, पांच किश्तों में से विम एक किश्त का भुगतान नहीं कर सका तथा आठ किश्तों में से अर्जुन दो किश्तों का भुगतान नहीं कर सका। इन अवक्रय लेन–देनों पर होने वाले लाभ–हानि का परिकलन कीजिए।

हल

Hire Purchase Trading Account

Dr.	Rs.		Cr. Rs.
To Goods Sold on Hire Purchase	9,000	By Cash Received	5,500
		By Goods Repossessed	.....
		By Hire Purchase Stock (closing)	2,750
		By Hire Purchase Debtors (closing)	750
	9,000		9,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	810	By Goods Sold on Hire Purchase (closing)	2,600
To Net Profit transferred to P & L A/c	1,790		
	2,600		2,600

Working Notes:

a) **Goods sold on hire purchase** (H.P. Price)

		Rs.
i)	TV purchased by Krishna	4,500
ii)	Grinder purchased by Vim	1,500
iii)	Refrigerator purchased by Arjun	3,000
	Total	9,000

b) **Cash received**

i)	From Krishna [Rs. 1,500 + (250 × 6)]	3,000
ii)	From Vim [Rs. 300 + (100 × 4)]	700
iii)	From Arjun[Rs. 600 + (200 × 6)]	1,800
	Total	5,500

c) Amount of instalment due but not paid (H.P. Debtors)

i)	From Krishna Rs. 250 × 1	250
ii)	From Vim Rs. 100 × 1	100
iii)	From Arjun Rs. 200 × 2	400
	Total	750

d) Amount of instalment which are not due (H.P. Stock)

i)	From Krishna	
	Amount not due Rs. 250 × 5	1,250
ii)	From Vim	
	Amount not due Rs. 100 × 7	700
iii)	From Arjun	
	Amount not due Rs.200 × 4	800
	Total	2,750

e) Loading

i) On goods sold on hire purchase

Hire Purchase Price – Cost Price
= (4,500 + 1,500 + 3,000) – (3,000 + 1,000 + 2,400)
= 9,000 – 6,400
= Rs. 2,600

ii) On hire purchase stock (Closing)

	HP. Stock Rs.	Loading	Rs.
Krishna	1,250	$(\frac{1,500}{4,500} \times 1,250) =$	417
Vim	700	$(\frac{500}{1,500} \times 700) =$	233
Arjun	800	$(\frac{600}{3,000} \times 800) =$	160
		Total	810

12.7.1 पुनर्ग्रहण किए गये माल का लेखा (Accounting Treatment of Goods Repossessed)

आप जानते हैं कि यदि अवक्रेता किश्तों के भुगतान में चूक करता है तो विक्रेता माल वापस ले सकता है। ऐसे माल से संबंधित अदत्त किश्तों की राशि (जिसे देय किश्तें भी कहा जाता है) अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग के क्रेडिट की ओर दिखायी जाती है, जैसा कि चित्र 12.3 में दिखाया गया है।

यदि ऐसे माल का बाजार मूल्य दिया हुआ है या वापस लेने पर इसे तुरन्त बेच दिया गया है तो अदत्त राशि और बाजार मूल्य (यदि बेच दिया गया है तो विक्रय मूल्य) के अन्तर को पुनर्ग्रहण किए गये माल पर हानि या लाभ माना जाता है। यदि यह हानि है तो इसे अवक्रय व्यापार खाते के दूसरे भाग में डेबिट कर दिया जाता है और यदि यह लाभ है (ऐसी स्थिति दुर्लभ है) तो इसे इस खाते के क्रेडिट की ओर दिखाया जाता है। **कठिनाई तब आती है जब पुनर्ग्रहण किए गये माल का बाजार मूल्य या विक्रय मूल्य मालूम न हो। ऐसी स्थिति में ऐसे माल के लिये अदत्त किश्त में जो भार**

शामिल है उसका समायोजन करना पड़ेगा क्योंकि इनका असली मूल्य इसके आनुपातिक लागत के बराबर होता है। इस प्रकार अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग को अदत्त किश्तों की राशि से क्रेडिट करने के बाद आपको इस खाते को अदत्त किश्तों में शामिल भार की राशि से डेबिट करना होगा। विकल्पतः यदि आप अवक्रय व्यापार खाते को दो भागों में नहीं बना रहे हैं, तो इस खाते को ऐसे माल के असली मूल्य/बाजार मूल्य/विक्रय मूल्य से क्रेडिट कीजिये ऐसा करने पर किसी समायोजन की आवश्यकता नहीं होगी।

उदाहरण 6 देखिए और अध्ययन कीजिए कि पुनर्ग्रहण किए गए माल को अवक्रय व्यापार खाते में किस प्रकार दिखाया जाता है।

उदाहरण 6

ईजी पेमेन्ट्स लि. लागत पर 50% लाभ पर अवक्रय के आधार पर माल बेचता है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित विवरण दिए गए हैं।

	रु.
अवक्रय स्टाक खाता (प्रारंभिक)	18,000
देय किश्तें, ग्राहक भुगतान कर रहे हैं (प्रारंभिक)।	10,000
वर्ष के दौरान अवक्रय पर बेचा गया माल (अवक्रय मूल्य पर)	1,74,000
ग्राहकों से प्राप्त नकद राशि	1,20,000
पुनर्ग्रहण किए गए माल का मूल्य (देय किश्तें 6,000 रु.)	3,000
अंत में अवक्रय स्टाक खाता	60,000
देय किश्तें (अंत में), ग्राहक भुगतान कर रहे हैं	16,000
व्यय	19,000

Hire Purchase Trading Account

Dr. **Cr.**

Date Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Hire Purchase Stock (opening)	18,000	By Cash Received	1,20,000
To Hire Purchase Debtors (opening)	10,000	By Goods Repossessed (instalments unpaid)	6,000
To Goods sold on Hire Purchase	1,74,000	By Hire Purchase Debtors (closing)	16,000
		By Hire Purchase Stock (closing)	60,000
	2,02,000		2,02,000
To Loss on Goods Repossessed (diff. between instalments unpaid and market value)	3,000	By Stock Reserve (Loading on opening H.P. stock)	6,000
		By Goods sold on Hire Purchase (loading)	58,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	20,000		
To Expenses	19,000		
To Profit & Loss A/c (Profit)	22,000		
	64,000		64,000

Working Notes:

1. **Loading**

   a) On Opening H.P. Stock $(18,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 6,000

   b) On GoodsSoldonH.P. $(1,74,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 58,000

   c) On Closing H.P. Stock $(60,000 \times \frac{50}{150})$ = Rs. 20,000

2. **Loss on Goods Repossessed:** Amount of unpaid instalments - Market Value

   = 6,000- 3,000 = Rs. 3,000

Alternatively

Hire Purchase Trading Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		**Rs.**
To Hire Purchase Stock (opening)	18,000	By Cash Received	1,20,000
To Hire Purchase Debtors (opening)	10,000	By Goods Repossessed (market value)	3,000
To Goods sold on Hire Purchase (H.P. Price)	1,74,000	By Hire Purchase Debtors (closing)	16,000
To Stock Reserve (loading on closing H.P. stock)	20,000	By Hire Purchase Stock (closing)	60,000
To Expenses	19,000	By Stock Reserve (loading on opening H.P. stock)	6,000
To Net Profit (Transferred to P & L A/c)	22,000	By Goods sold on Hire Purchase (loading)	58,000
	2,63,000		2,63,000

12.7.2 अज्ञात राशियों का परिकलन (Ascertainment of Missing Figures)

अवक्रय पर बेचे गये माल पर लाभ–हानि निकालने के लिए जिन विभिन्न राशियों की आवश्यकता होती है उनमें से कुछ राशियाँ कई बार नहीं दी जाती हैं, जैसे अवक्रय स्टॉक (प्रारंभिक या अन्तिम), अवक्रय देनदार (प्रारंभिक या अन्तिम), क्रय प्राप्त राशि आदि। अतः पहले अज्ञात इन राशियों को मालूम करना आव यक है, इसके बाद की अवक्रय व्यापार खाता बना कर लाभ–हानि निकाली जा सकती है। **यदि एक ही राशि अज्ञात है तो इसे अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग की सहायता से ही मालूम किया जा सकता हैं** लेकिन यदि एक से अधिक राशियाँ न दी हुई हों तो ऐसी स्थिति में निम्नलिखित विधि अपनानी चाहिए।

1. नीचे दिये हुए क्रम में तीन मेमोरेंडम खाते बनाइयेः

   i) दुकान पर स्टॉक खाता

ii) अवक्रय स्टॉक खाता

iii) अवक्रय देनदार खाता

2. दी हुई सभी राशियों को इन खातों में यथास्थान लिख दीजियें

3. जिस खातें की सबसे अधिक राशियाँ दी हों उससे शुरू करिये इससे आपको उस खाते की वह राशि निकालने में सहायता मिलेगी जो दी नहीं है, दोनों पक्षों के अन्तर के आधार पर।

4. इस प्रकार निकाली गयी राशि को टन; सम्बद्ध खाते में भी लिख लीजिये इससे उस खाते में भी केवल एक ही अज्ञात राशि बचेगी जो उस खातें के दोनों पक्षों के आधार पर निकाली जा सकती है।

5. अन्तरण का यह क्रम तब तक जारी रखिये जब तक कि इन तीनों खातों में सभी राशियाँ न लिख दी जायें।

दुकान पर स्टाक खाते के संबंध में यह बात ध्यान रहे कि इसमें सभी राशियाँ लागत पर लिखी जाती हैं, अवक्रय मूल्य पर नहीं । अतः इस खाते से कोई भी राशि अन्तरित करते समय उसे पहले अवक्रय मूल्य में परिवर्तित कर लेना चाहिये, तभी उसे दूसरे खाते में लिखना चाहिये। इसी प्रकार दूसरे खातों (अवक्रय स्टाक या अवक्रय खाता) से कोई राशि दुकान पर स्टाक खाते में अन्तरित करने के लिये पहले उसे अवक्रय मूल्य में परिवर्तित कर लेना चाहिय।

तीनों मेमोरेंडम खातों के प्रारूप नीचे दिये गये हैं।

Memorandum Stock at Shop Account

Dr.			**Cr.**
To Balance b/d	Rs.	By Goods Sold on Hire Purchase (at cost)(1)	Rs.
To Purchases		By Balance c/d	

Memorandum Hire Purchase Stock Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Instalment Due (2)	
To Goods Sold on Hire Purchase(at HP. price) (1)		By Goods Repossessed (instalments not yet fallen due)	
		By Balance c/d	

Memorandum Hire Purchase Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Cash Received from Customers	
To Stock with Customer Account (total instalments fallen due) (2)		By Goods Repossessed (instalment due but not paid)	
		By Balance c/d	

उदाहरण 7 के अध्ययन से आपको अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिए आवश्यक सभी अज्ञात राशियों के परिकलन की विधि पूरी तरह स्पष्ट हो जायेगी।

उदाहरण 7

होम एप्लाएंसेज लि. अवक्रय मूल्य पर 25% लाभ पर अवक्रय पर माल बेचता है। 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में हुए लेन–देन के विवरण निम्नलिखित हैं।

		रु.
1 जनवरी	लागत पर अवक्रय स्टॉक	6,000
	दुकान पर स्टॉक	1,000
	देय किश्तें	600
	प्राप्त नकद राशि	16,000
31 दिसंबर	लागत पर अवक्रय स्टॉक	6,900
	दुकान पर स्टॉक	1,400
	देय किश्तें	1,000

देनदार प्रणाली के अंतर्गत अवक्रय पर होने वाले लाभ या हानि का परिकलन कीजिए।

हल

Hire Purchase Trading Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Stock with Customers	8,000	By Cash Received	16,000
To Instalment Due	600	By Stock with Customers	9,200
To Goods Sold on Hire Purchase	17,600		
		By Instalment Due	1,000
	26,200		26,200
To Stock Reserve (loading)	2,300	By Stock Reserve (loading)	2,000
To Profit & Loss A/c (Profit)	4,100	By Goods sold on Hire Purchase (loading)	4,400
	6,400		6,400

Working Note :

Calculation of Missing Figure :

Memorandum Stock at Shop Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,000	By Stock with Customers (at cost)	13,200
To Purchases (balance figure)	13,600	By Balance c/d	1,400
	14,600		14,600

Memorandum Stock with Customers Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	8,000	By Instalment Due	16,400
To Stock at Shop (at hire purchase price) (missing figure)	17,600	By Balance c/d	9,200
	25,600		25,600

Memorandum Instalments Due Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	600	By Cash Received	16,000
To Stock with Customers (balancing figure)	16,400	By Balance c/d	1,000
	17,000		17,000

बोध प्रश्न ख

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) कम मूल्य के माल का लेखाकरण केवल .....की पुस्तकों में किया जाता है।

   ii) विक्रेता एक ..... रजिस्टर बनाता है।

   iii) अवक्रय करार पर लाभ या हानि निकालने के लिये विक्रेता ..... खाता बनाता है।

   iv) अवक्रय पर बेचे गये माल को अवक्रय व्यापार खातें के ..... की ओर दिखाया जाता हे।

   v) विक्रेता द्वारा पुनर्ग्रहण किए गए माल पर हानि इस माल के बाजार मूल्य और इसकी ..... के अन्तर के बराबर होती है।

vi) जो राशियाँ मिल नहीं रही है उन्हें ज्ञात करने के लिए जो तीन खाते बनाये जाते हैं वे दुकान पर स्टॉक खाता ..... खाता और देय किश्त खाता है।

2. अवक्रय देनदार से आप क्या समझते हैं ?

.....

.....

.....

.....

3. अवक्रय स्टॉक का अर्थ समझाइये।

.....

.....

.....

.....

12.8 स्टॉक एवं देनदार विधि (Stock and Debtors System)

अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य वाले माल पर लेखा अवधि में हुई लाभ–हानि एक अन्य विधि द्वारा भी ज्ञात की जा सकती है। इस विधि को 'स्टाक एवं देनदार विधि' कहते हैं। यह विधि शाखा खातों के लिये अपनायी गयी स्टॉक विधि जैसी ही है। इस प्रणाली के अन्तर्गत हम चार नियंत्रण खाते बनाते हैं। ये हैं : (i) अवक्रय स्टॉक खाता (Hire Purchase Stock Account), (ii) अवक्रय देनदार खाता (Hire Purchase Debtors Account), (iii) पुनर्ग्रहीत माल खाता (Goods Repossessed Account), तथा (iv) अवक्रय पर बेचा गया माल खाता (Goods Sold on Hire Purchase Account)। फिर अवक्रय समायोजन खाते में अवक्रय पर बेचे गये माल तथा अवक्रय स्टॉक (किश्तें जो अभी तक देय नहीं हैं) की प्रारम्भिक और अन्तिम राशियों में, अन्तर्गस्त भार (loading) की प्रविष्टियाँ की जाती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें अवक्रय व्यापार से संबंधित खर्चे तथा हानियाँ डेबिट की जाती हैं। अवक्रय समायोजन खाते के दोनों पक्षों का अन्तर अवक्रय व्यापार की लाभ हानि को दर्शाता है।

इस प्रणाली के अंतर्गत लेजर में आव यक खाते खोलने के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1. **अवक्रय पर बेचे गये माल के लिये**

Hire Purchase Stock A/c	Dr.	
To Goods sold on H.P. A/c		

2. **उन किश्तों की कुल राशि के लिये जो चालू वर्ष में देय हुई**

Hire Purchase Debtors A/c	Dr.	
To Hire Purchase Stock A/c		

3. **प्राप्त राशि के लिये**

Cash A/c	Dr.	
To Hire Purchase Debtors A/c		

4. **पुनर्ग्रहण किये गये माल के लिये (अदत्त किश्तें)**
Goods Repossessed A/c Dr.
To Hire Purchase Stock A/c

5. **अवक्रय पर बेचे गये माल पर भार के लिये**
Goods sold on H.P. A/c Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c

6. **प्रारम्भिक अवक्रय स्टाक पर भार के लिये**
Stock Reserve A/o Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c

7. **अन्तिम अवक्रय स्टाक पर भार के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

8. **पुनर्ग्रहण किये गये माल पर हुई हानि के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Goods Repossessed A/c
(With difference between instalments unpaid and market value of goods repossessed or for loading only)

9. **अवक्रय लेन–देनों से सम्बंधित व्यय के लिये**
Hire Purchase Adjustment A/c Dr.
To Expenses A/c

10. **अवक्रय व्यापार पर हुये लाभ के अन्तरण के लिये**
Profit & Loss A/c Dr.
To Hire Purchase Adjustment A/c
In case of loss, the entry can be reversed

11. **अवक्रय पर बेचे गये माल के खाते को बंद करने के लिये**
Goods Sold on H.P. A/c Dr.
To Trading (Stock at shop) A/c

उदाहरण 8 तथा 9 देखिये और अध्ययन कीजिए कि स्टाक एवं देनदार विधि के अन्तर्गत विभिन्न नियंत्रण खाते बना कर अवक्रय व्यापार की लाभ–हानि कैसे ज्ञात की जाती है।

उदाहरण 8

एस.एस.के. एंड कं. ने लागत मूल्य पर 25% की दर से लाभ पर अपना माल बेचा। इस संबंध में निम्नलिखित सूचना के आधार पर उनकी पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए। स्टॉक एवं देनदार विधि अपनाइए।

दुकान में स्टॉक	रु.
1.4.18 को	15,000
31.3.19 को	12,500
1.4.18 को अवक्रय पर ग्राहकों के पास माल	18,000
दुकान के स्टॉक के लिए क्रय	32,300
18–19 वर्ष में अवक्रय पर बेचा गया माल	43,500
प्राप्त किश्तें	30,000

बाकी किश्तें

1.4.18 को	1,000
31.3.19 को	1,500

हलः

Hire Purchase Stock Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	18,000	By Hire Purchase Debtors A/c (1)	30,500
To Goods Sold on Hire Purchase A/c	43,500	By Balance c/d	31,000
	61,500		61,500
To Balance b/d	31,000		

Hire Purchase Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,000	By Bank A/c	30,000
To Hire Purchase Stock A/c (1) (amount of instalments due-balancing figure)	30,500	By Balance c/d	1,500
	31,500		31,500
To Balance b/d	1,500		

Goods Sold on Hire Purchase Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Hire Purchase Adjustment A/c	8,700	By Hire Purchase Stock A/c	43,500
To Shop Stock	34,800		
	43,500		43,500

Hire Purchase Adjustment Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Stock Reserve A/c (loading on closing H.P. Stock)	6,200	By Stock Reserve A/c (loading on opening H.P.stock)	3,600
To Profit & Loss A/c (balancing figure)	6,100	By Goods Sold on H.P. A/c (loading)	8,700
	12,300		12,300

i) On goods sold on H.P. = 43,500 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 8,700

ii) On opening H.P. stock = 18,000 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 3,600

iii) On closing H.P. stock = 31,000 × $\frac{25}{125}$ = Rs. 6,200

उदाहरण 9

उदाहरण 6 से सूचना लेकर स्टॉक एवं देनदार विधि अपनाते हुए अवक्रय व्यापार से होने वाले लाभ को ज्ञात कीजिए।

Hire Purchase Stock Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d (at hire purchase price)	18,000	By Hire Purchase Debtors A/c (balancing figure)	1,28,000
To Goods Sold on Hire Purchase A/c (at hire purchase price)	1,74,000	By Goods Repossessed A/c	6,000
		By Balance c/d (at hire purchase price)	60,000
	1,92,000		1,92,000
To Balance b/d	60,000		

Hire Purchase Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	10,000	By Cash A/c	1,20,000
To Hire Purchase Stock A/c. (total instalment due— balancing figure)	1,26,000	By Balance c/d	16,000
	1,36,000		1,36,000
To Balance b/d	16,000		

Goods Repossessed Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To H.P. Stock A/c	6,000	By H.P. Adjustment A/c (loss being the diff. between instalments unpaid and its market value)	3,000
		By Balance c/d	3,000
	6,000		6,000
To Balance b/d	3,000		

Hire Purchase Adjustment Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Stock Reserve A/c (loading on closing H.P. stock)	20,000	By Stock Reserve A/c (loading on opening H.P. Stock)	6,000
To Loss on Goods Repossessed (diff. between instalment due and market price)	3,000	By Goods Sold on Hire Purchase A/c (loading)	58,000
To Expenses A/c	19,000		
To Profit & Loss A/c (Profit)	22,000		
	64,000		64,000

बोध प्रश्न ग

1. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) अवक्रय समायोजन खाता आरंभिक और अन्तिम स्टॉक पर और अवक्रय पर बेचे गये माल पर ..... दर्शाता है।

   ii) अवक्रय देनदार खाते को अन्तिम शेश और ..... से क्रेडिट किया जाता है।

   iii) अवक्रय पर बेचा गया माल दुकान पर स्टॉक खाते में ..... पर दिखाया जाता है।

   iv) पुनर्ग्रहण किये गये माल पर हानि ..... खाते के डेबिट की ओर दिखायी जाती है।

   v) .....खाते का शेष ग्राहकों के पास स्टॉक के मूल्य को ..... मूल्य पर दर्शाता है।

2. स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि निकालने के लिये जो खाते खोले जाते हैं उनकी सूची बनाइये।

   .....

   .....

   .....

   .....

12.9 सारांश

अवक्रय करार के अन्तर्गत विक्रेता अवक्रेता को माल का स्वामित्व (कब्जा) नहीं देता है। स्वामित्व अन्तिम किश्त का भुगतान होने पर ही अवक्रेता को प्राप्त होता है, तथा यदि अवक्रेता चूक करता है, तो विक्रेता को माल के पुनर्ग्रहण का अधिकार होता है। किन्तु वह अवक्रेता से समझौता कर सकता है, तथा माल के एक अंश का पुनर्ग्रहण कर सकता है।

जब अवक्रेता की चूक होने पर विक्रेता माल का केवल एक अंश ही पुनर्ग्रहण करता है, तब वह इसके मूल्य का पुनर्निर्धारण करता है तथा इसका समायोजन अवक्रेता द्वारा देय राशि में कर देता है।

अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली में प्रमुख अन्तर उस समय से सम्बन्धित है जबकि माल का स्वामित्व विक्रेता क्रेता को हस्तांतरित होता है। अवक्रय प्रणाली में माल का स्वामित्व अन्तिम किश्त के भुगतान के समय हस्तांतरित होता है, जबकि किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत स्वामित्व अनुबंध पर हस्ताक्षर के समय ही हस्तांतरित हो जाता है। दोनों प्रणालियों के अन्तर्गत लेखाविधि लगभग समान है। अन्तर केवल ब्याज के निरूपण से सम्बन्धित है। अवक्रय प्रणाली की स्थिति में जैसे ही किश्तें देय होती हैं, तभी अवक्रेता को ब्याज की वास्तविक राशि से डेबिट कर दिया जाता है। किन्तु किश्तों में भुगतान प्रणाली की स्थिति में क्रेता को बिक्री के समय ही ब्याज की पूरी राशि से डेबिट कर दिया जाता है, तथा इसे ब्याज निलम्बित खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। जब–जब किश्तें देय होती हैं, तब–तब ब्याज निलम्बित खाते को ब्याज की वास्तविक राशि से डेबिट कर दिया जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत क्रेता को कुल ब्याज सहित पूरी राशि के लिए देनदार माना जाता है। किन्तु व्यवहार में इसके बिना भी काम चलाया जा सकता है।

जब कम मूल्य के माल अवक्रय पर बेचे जाते हैं तो लेखाकरण की एक विशेष विधि की आव यकता होती है। ऐसे माल का लेखाकरण केवल विक्रेता द्वारा ही किया जाता है। वह एक अवक्रय–विक्रय रजिस्टर बनाता है जिसमें उपयुक्त कॉलम होते हैं इन कॉलमों के योगों की खतौनी विभिन्न नियंत्रण खातों में समय–समय पर की जाती है पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करने की दो विधियाँ हैं (i) देनदार विधि – जिसके अन्तर्गत अवक्रय व्यापार खाता बनाया जाता है और (ii) स्टॉक और देनदार विधि।

अवक्रय व्यापार खाता परेशण खाते (Consignment Account) की भांति होता है। इसका पहला भाग आरंभिक अवक्रय स्टॉक, आरंभिक अवक्रय देनदार और अवक्रय पर बेचे गये माल को डेबिट की ओर दिखाता है तथा नकद प्राप्त राशि, पुनर्ग्रहण किये गये माल, अन्तिम अवक्रय स्टॉक और अन्तिम अवक्रय देनदार को क्रेडिट की ओर दिखाता है। इसके दोनों ओर के योग बराबर होने चाहिये। इसका दूसरा भाग मुख्यतः अवक्रय पर बेचे गये माल पर भार (loading), आरंभिक स्टॉक और अन्तिम स्टॉक पर भार और पुनर्ग्रहण किए गये माल पर हानि और अवक्रय व्यापार पर हुए खर्च को दर्शाता है। दोनों ओर का अन्तर अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि दर्शाता है जिसे लाभ या हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है। अवक्रय व्यापार खाता बनाने के लिए जिन मदों की आवश्यकता होती है कभी–कभी उनमें से कुछ का पता नहीं होता। इन्हें तीन मेमोरेंडम खाते बनाकर ज्ञात किया जात सकता हैः (i) दुकान पर स्टॉक खाता, (ii) अवक्रय स्टॉक खाता और (iii) अवक्रय देनदार खाता। यदि एक मद पता नहीं है तो इसे प्रत्यक्ष रूप से अवक्रय व्यापार खाते के पहले भाग से ही ज्ञात किया जा सकता है।

स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत, अवक्रय व्यापार पर लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये जो खाते बनाये जाते हैं वे हैं : (i) अवक्रय पर बेचा गया माल खाता (Goods sold on Hire Purchase Account), (ii) अवक्रय स्टॉक खाता (Hire Purchase Stock Account), (iii) अवक्रय देनदार खाता (Hire Purchase Debtors Account), (iv) पुनर्ग्रहण किया गया माल खाता (Goods Repossessed Account), और अवक्रय समायोजन खाता (Hire Purchase Adjustment Account)। अवक्रय समायोजन खाता अवक्रय व्यापार खाते के दूसरे भाग जैसा ही है जो अवक्रय–विक्रय पर लाभ या हानि दर्शाता है। यह ब्रांच खातों में बनाये जाने वाले ब्रांच समायोजन खाते जैसा ही है।

12.10 शब्दावली

चूक (Default): भुगतान करने में अवक्रेता की असफलता।

किश्तों में बिक्री (Instalment Sale): बिक्री का एक सामान्य सौदा जिसमें भुगतान आस्थगित आधार पर किया जाता है, किन्तु क्रेता सौदा पूरा होते ही माल का स्वामी बन जाता है।

स्वामित्वाधिकार का अंतरण (Passing of Title): स्वामित्व का हस्तांतरण।

अभिग्रहण (Seizure): कानून के प्रावधान के अन्तर्गत माल का पुनर्ग्रहण। अवक्रय करार, विक्रेता को यह अधिकार दे सकता है कि यदि अवक्रेता किश्तों में भुगतान में चूक करता है, तो वह बेचे हुए माल का अभिग्रहण कर ले।

नियंत्रण खाते (Control Accounts): अवक्रय स्टॉक, अवक्रय देनदार आदि खाते जाँचने के लिये समग्र राशियों (aggregate figure) से बनाये जाने वाले खाते।

अवक्रय देनदार (Hire Purchase Debtors): देय किश्तों की राशि जिनका अभी भुगतान नहीं किया गया है।

अवक्रय स्टॉक (Hire Purchase Stock): किश्तें जो अभी देय नहीं हुई हैं।

अवक्रय व्यापार खाता (Hire Purchase Trading Account): अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करने के लिये बनाया जाने वाला खाता।

स्टॉक रिजर्व (Stock Reserve): अवक्रय स्टॉक में भार (loading) की राशि।

दुकान पर स्टॉक (Stock at Shop): स्टोर में पड़ा अनबिका माल।

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 1. i) असफलता, ii) भौतिक कब्जा, iii) कब्जे, पुनः प्राप्ति, iv) समाप्त किया जाता है, अभिग्रहण, v) हरजाना प्राप्त करने, vi) प्रथम भुगतान, स्वामित्वाधिकार

2. i) गलत, ii) सही, iii) गलत, iv) सही, v) गलत ।

ख 1. i) विक्रेता, ii) अवक्रय विक्रय, iii) अवक्रय व्यापार, iv) डेबिट v) अदत्त किश्त, vi) ग्राहकों के पास स्टॉक।

ग 1. i) भार, ii) नकद प्राप्त राशि, iii) लागत, iv) अवक्रय समायोजन, v) अवक्रय स्टॉक, अवक्रय।

12.12 स्व–परख पश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. 'अवक्रय' तथा 'किश्तों में बिक्री' दोनों के सम्बन्ध में 'चूक तथा पुनर्ग्रहण' शब्दों की व्याख्या कीजिये।

2. अवक्रय अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत चूक होने की स्थिति में अवक्रय विक्रेता के क्या–क्या अधिकार हैं?

3. अवक्रय अधिनियम, 1972 के अन्तर्गत माल का अभिग्रहण तथा पुनर्ग्रहण होने की स्थिति में अवक्रेता के अधिकार क्या हैं?

4. अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत लेखा विधि के बीच के अन्तर का विवेचन कीजिये।

5. अवक्रय प्रणाली तथा किश्तों में भुगतान प्रणाली की समानताओं और विषमताओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये।

6. व्यक्तिगत लेन–देन का रिकार्ड सहायक पुस्तक में किस प्रकार रखा जाता है ?

7. अवक्रय व्यापार में प्रयोग की जाने वाली स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत विभिन्न खाते खोलने के लिये की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियाँ बनाइये।

8. अवक्रय पर बेचे गये कम मूल्य के माल पर लाभ या हानि ज्ञात करे के लिए अपनायी जाने वाली 'स्टॉक और देनदार विधि' और 'अवक्रय व्यापार खाता' विधि में अन्तर स्पश्ट कीजिए।

अभ्यास

1. पी क्यू आर लि. ने 1.1.15 को एक संयंत्र आर एस टी लि. को अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत बेचा। भुगतान प्रत्येक वर्ष के अन्त में 4,230 रु. प्रत्येक किश्त के हिसाब से चार वार्षिक किश्तों में किया जाना था। ब्याज की दर 5% की दर से लिया जाना था। आर एस टी लि. ने तीसरी किश्त के भुगतान के समय चूक कर दी तथा पी क्यू आर लि. ने संयंत्र पुनर्ग्रहण किया। आर एस टी लि. ने ह्रासित मूल्य विधि (W.D.V. method) के अनुसार मूल्यह्रास 10% वार्षिक दर से चार्ज किया। आर एस टी लि. की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये।

   (**Answer :** Cash Price Rs, 15,000, Total Interest Rs. 1920, Loss on repossession Rs. 2,676).

2. करीम लि. ने सोलोमन लि. से 1.1.17 को 60,000 रु. नकद मूल्य का कुछ फर्नीचर अवक्रय प्रणाली के आधार पर खरीदा। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 15,480 रु. तत्काल नकद, तथा शेष राशि 10,000 रु. प्रत्येक की 5 वार्षिक किश्तों में ब्याज 4% वार्षिक की दर से चार्ज किया गया। करीम लि. केवल पहली किश्त का भुगतान कर सका। तथा चूक होने पर सोलोमन लि. ने माल का जिसका मूल्यांकन स्थायी किश्त पद्धति के अनुसार 15% वार्षिक की दर से मूल्यह्रास चार्ज करके किया गया, पुनर्ग्रहण कर लिया। 1.3. 2019 को सोलोमन लि. ने माल की मरम्मत पर 1500 रु. खर्च किया तथा उसे 45,000 रु. में बेच दिया। सोलोमन लि. की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

   (**Answer:** Amount due from Karim Ltd. on 31.12.2018 Rs. 37,753; Profit taken to P & L A/c in 2018 Rs. 4,247 : Profit on resale in 2019 Rs. 1,500.)

3. फेयर लि. ने 1.1.16 को अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत 1200 रु. मूल्य की मशीनरी अनफेयर लि. से खरीदी, जिसका भुगतान चार–चार हजार रुपये की तीन वार्षिक किश्तों में किया जाना था। ब्याज 6% वार्षिक की दर से चार्ज किया जाना था तथा किश्तों के साथ दिया जाना था। फेयर लि. दूसरी किश्त का भुगतान नहीं कर सका

तथा यह सहमति हुई कि यदि फेयर लि. उस तिथि तक के ब्याज का बकाया का भुगतान कर दे, तो अनफेयर लि. 8,000 रु. लागत वाली मशीनरी का 4,500 रु. के मूल्य पर आंशिक पुनर्ग्रहण कर लेगा। यह मानते हुए कि मूल्यह्रास ह्रासित मूल्य विधि के आधार पर 10% प्रति वर्ष की दर से लगाया जाना है, फेयर लि. की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Loss on partial repossession Rs. 1,980, value of the machinery carried forward Rs. 3,240. Total amount of interest paid Rs. 1,200).

4. अजय ने 1 जुलाई 2016 को पांच ट्रक अवक्रय प्रणाली के अन्तर्गत खरीदे। प्रत्येक ट्रक का नकद मूल्य 1,00,000 रु. था। उसे नकद मूल्य का 25% सुपुर्दगी के समय तत्काल नकद के रूप में, तथा शेष 5% वार्षिक ब्याज के साथ पांच वार्षिक किश्तों में चुकाना था। अजय 30 जून 2019 को देय तीसरी किश्त का भुगतान करने में असफल रहा। यह सहमति हुई कि दो ट्रक विक्रेता को वापिस कर दिये जाएंगे तथा इन दो ट्रकों का मूल्य देय राशि के प्रति समायोजित कर लिया जाएगा। वापिस किये जाने वाले ट्रकों का मूल्यांकन ह्रासित मूल्य विधि के अनुसार 25% वार्षिक मूल्यह्रास लगाकर किया जाएगा। पुनर्ग्रहीत ट्रक 4,000 रु. की लागत पर मरम्मत किये गये, तथा 90,000 रु. में बेच दिये गये। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइये। खाते प्रति वर्ष 30 जून को बन्द किये जाते हैं, तथा मूल्यह्रास 20% वार्षिक की दर से चार्ज किया जाता है। ।

(**Answer:** Goods Repossessed Rs. 84,375. Loss on Goods repossessed Rs. 18,025. Balance due to Hire Vendor Rs. 1,88,297)

5. हरीश ने 1.1.2017 को रमेश से कुछ मोटर पम्प किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत खरीदे। इनका नकद मूल्य 74,466 रु. था जिसका भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 20,000 रु. तत्काल भुगतान के रूप में तथा शेष 5% वार्षिक ब्याज सहित बीस–बीस हजार रु. की तीन समान वार्षिक किश्तों में – मूल्यह्रास सरल रेखा विधि के अनुसार 10% वार्षिक मानते हुए हरीश और रमेश की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Total Interest for Interest Suspense A/c Rs. 5,534 adjusted Rs. 2,723 in 2017,Rs. 1,859 in 2018 and Rs. 952 in 2019).

6. 1.1.17 को लोकेश ने सुरेश से किश्तों में भुगतान प्रणाली के अन्तर्गत कुछ मशीनरी खरीदी। भुगतान इस प्रकार किया जाना था – 6,000 रु. तत्काल नकद, तथा शेष 5% ब्याज पर तीन समान वार्षिक किश्तों में। लागत मूल्य 22,350 रु. था। मूल्यह्रास ह्रासित विधि के अनुसार 10% की दर से चार्ज किया गया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में लेजर खाते दिखाइये।

(**Answer:** Total interest for Interest Suspense A/c Rs. 1,650 adjusted as Rs. 818 in 2017, Rs. 558 in 2018 and Rs. 274 in 2019)

7. प्रीमियर ट्रेडर कं. नामक एक विक्रेता ने 31.12.2018 को समाप्त हाने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित सूचना दी है।

	रु.
1.1.2018 को अवक्रय ग्राहकों के पास माल (अवक्रय मूल्य पर)	32,000

वर्ष के अंतर्गत अवक्रय पर बेचा गया माल (क्रय मूल्य पर)	1,60,000
वर्ष के प्राप्त रोकड़	1,12,000
बाज़ार मूल्य पर वापस प्राप्त माल (अदत्त किश्तें, 4,000 रु.)	600
31.12.2018 को अवक्रय ग्राहकों के पास माल (अवक्रय मूल्य पर)	72,000

प्रीमियर ट्रेडर कं. की पुस्तकों में अवक्रय व्यापार खाता बनाइये जिसने लागत में 60% जोड़ कर अवक्रय पर माल बेचा।

(Answer: Profit Rs. 41 ,600; Missing figure : H.P. Debtors at the end Rs. 4,000)

8. ली लिमिटेड नामक विक्रेता के निम्नलिखित लेन–देनों से 31.12.18 को समाप्त हाने वाले वर्श के लिए देनदार विधि के अन्तर्गत पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए। माल को लागत में $33\frac{1}{3}\%$ जोड़कर बेचा जाता है।

		रु.
1 जनवरी, 2018	दुकान में स्टाक	2,000
	देय किश्तें	1,200
	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास स्टॉक	16,000
31 दिसंबर, 2018	दुकान मे स्टॉक	2,800
	देय और अदत्त किश्तें	2,000
	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास स्टॉक	18,400
	वर्ष में प्राप्त रोकड़	32,000
	अवक्रय व्यापार पर व्यय	3,000
	क्रय	27,200

(Answer: Goods sold on Hire Purchase at H.P. price Rs. 35,000; Profit Rs. 5,200)

9. एच. सी. सेल्स नामक एक विक्रेता अवक्रय व्यापार करता है। उसके व्यापार के संबंध में 31.12. 2018 को समाप्त होने वाले वर्श के लिए निम्नलिखित सूचनाएं प्राप्त हुई हैं।

		रु.
1 जनवरी, 2018	अवक्रय मूल्य पर ग्राहकों के पास माल	4,500
	देय किश्त	2,500
31 दिसंबर, 2018	ग्राहकों से प्राप्त रोकड़	30,000

	बाजार मूल्य पर पुनर्ग्रहण किया गया माल	
	(देय किश्तें 1,000 रु.)	650
	देय किश्तें	4,500
	अवक्रय पर बेचा गया माल	43,500

(**Answer:** Net profit Rs. 10,650; missing figure H.P. Stock at end Rs. 15,000)

10. 30 जून, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ऑटो डिलर्स लि. के संबंध में निम्नलिखित सूचना प्राप्त हुई, जो अवक्रय व्यापार करता है। स्टॉक और देनदार विधि के अन्तर्गत लाभ की राशि की गणना कीजिए।

		रु.
1 जुलाई, 2017	देय किश्तें	4,000
	दुकान में स्टॉक	12,000
	ग्राहक के पास स्टॉक (अवक्रय मूल्य पर)	25,000
	वर्ष में प्राप्त रोकड़	2,00,000
	क्रय	1,67,000
	पुनर्ग्रहण किए गए माल का मूल्यांकन (देय किश्तें 3,000 रु.)	5,00
30 जून 2018	देय किश्तें	6,000
	दुकान में स्टॉक	11,000
	ग्राहकों में पास स्टॉक (अवक्रय मूल्य पर)	30,000

अवक्रय मूल्य पर 20% पर क्रय पर माल बेचा गया।

(**Answer** : Profit Rs. 38,500)

11. गिरधारी अवक्रय पर भी माल बेचता है। लागत में 50% जोड़कर अवक्रय मूल्य निश्चित किया जाता है। 2018 वर्ष के लिए अवक्रय व्यापार के संबंध में निम्नलिखित सूचनाएं दी गई हैं।

	रु.
1 जनवरी, 2018 को अवक्रय स्टॉक	36,000
1.1. 2018 को अवक्रय देनदार	900
अवक्रय मूल्य पर बेचा गया माल	2,71,800
वर्ष में प्राप्त रोकड़	2,77,200
2018 में देय हुई किश्तों की कुल राशि	2,78,100

जिस ग्राहक को 3,600 रु. का माल बेचा गया था उसने प्रत्येक 300 रु. की तीन किश्तों का भुगतान किया। 1 दिसंबर, 2018 को उसे चौथी किश्त देनी थी लेकिन वह उसका भुगतान न कर सका। इसके फलस्वरूप कानूनी नोटिस देने के बाद 27 दिसंबर को माल का पुनर्ग्रहण कर लिया गया।

31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वर्ष के लिए स्टॉक और देनदार विधि के अंतर्गत आवश्यक खाते बनाइये।

(**Answer:** Profit Rs. 92,600; Missing figures; H.P. Stock at the end Rs. 27,300 and H.P. Debtors at the end Rs. 1,500 after crediting Rs. 2,400 and Rs. 300 for goods repossessed.)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ताः एडवांस्ड एकाउंटिग, (2018), सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

के. एल. मॉटाः एडवांस्ड एकाउंटेसी (2018) जीं लाल एंड कंपनी, नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी :एडवांस्ड एकाउंटेंसी (2018), जी. लाल एडं कंपनी., नई दिल्ली

एम. सी शुक्ला, टी. एस. ग्रेवाल एवं एस. सी. गुप्ताः एडवांस्ड एकाउंटेंसी, (2018) एस. चांद एण्ड कंपनी,. नई दिल्ली)

इकाई 13 ब्रांच लेखा-I

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 ब्रांच लेखा की आवश्यकता

13.3 ब्रांचों की श्रेणियां

13.4 आश्रित ब्रांचों का लेखा

13.5 देनदार प्रणाली

13.5.1 लागत मूल्य विधि

13.5.2 बीजक मूल्य विधि

13.6 अन्तिम लेखा प्रणाली

13.7 स्टॉक एवं देनदार प्रणाली

13.8 सारांश

13.9 शब्दावली

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- ब्रांच लेखा की आवश्यकता बता सकें;
- लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों की विभिन्न श्रेणियां बता सकें;
- किसी आश्रित ब्रांच का लेखा रखने की तीन प्रणालियों का वर्णन कर सकें;
- लागत मूल्य और बीजक मूल्य पर आधारित देनदार प्रणाली के अर्न्तगत ब्रांच खाता बना सकें; और
- अन्तिम लेखा प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता बना सकें;
- स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत आवश्यक खाते बना सकें।

13.1 प्रस्तावना

किसी व्यवसाय को कई भागों में बांटा जा सकता है। यदि व्यवसाय के विभिन्न भाग एक ही भवन में हैं तो उन्हें विभाग (departments) कहा जाता है और यदि ये उसी शहर में विभिन्न स्थानों पर अथवा देश या विदेश में विभिन्न स्थानों पर स्थित हैं तो इन्हें ब्रांच कहा जाता है। उदाहरण के लिए कॉटेज एम्पोरियम के विभिन्न भाग हैं जैसे – वस्त्र, फर्नीचर, उपहार वस्तुए, गहने आदि। ये सभी एक ही भवन में स्थित हैं। इसलिए ये विभाग कहलाते

हैं। स्नोवाइट के शोरूम कनॉट प्लेस, नेहरू प्लेस, करोल बाग, साउथ एक्सटेंशन और कमला नगर में स्थित हैं। ये सभी स्नोवाइट की ब्रांचे हैं। इसी प्रकार बाटा की ब्रांचे सारे देश में है और लेवेन्टीज की ब्रांचें पूरे विश्व में है। प्रत्येक ब्रांचे को एक पृथक लाभ केन्द्र (profit centre) की तरह माना जाता है और इसलिए प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि अलग से निकालना होता है। इसके अतिरिक्त, फर्म को प्रत्येक ब्रांच की विभिन्न गतिविधियों पर नियंत्रण रखना होता है और यह सुनिश्चित करना होता है कि इनका कार्य सुचारू रूप से चले। इसलिए, लेखाकारों ने ब्रांच स्तर पर लेने–देनों को रिकार्ड करने के लिए और फर्म की पुस्तकों में ब्रांचों के लेन–देनों के निवल प्रभाव (net effect) को समाविष्ट (incorporate) करने के लिए कुछ विशिष्ट लेखा विधियाँ बनाई हैं।

लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है : (i) आश्रित ब्रांचे (dependent branches), : (ii) स्वतंत्र ब्रांचे (independent branches) और (iii) विदेशी ब्रांचे (foreign branches) इस इकाई में आप यह अध्ययन करेंगे कि आश्रित ब्रांचों के खाते कैसे बनाये जाते हैं और इनके लाभ या हानि कैसे निकाले जाते हैं।

13.2 ब्रांच लेखा की आवश्यकता

जैसा पहले बताया जा चुका है प्रत्येक ब्रांच को एक पृथक् लाभ केन्द्र की भांति माना जाता है। अतः इसके विभिन्न लेन–देनों को इस प्रकार रिकार्ड करना चाहिए कि इसका लाभ या हानि अलग से निकाला जा सके और उसे लेखा वर्ष के अन्त में फर्म के कुल लाभ–हानि में समाविष्ट किया जा सके। इसके अतिरिक्त, ब्रांचे अपनी सभी गतिविधियों का संचालन मुख्य कार्यालय (head office) के नियंत्रण और निर्देशन के अन्तर्गत करती हैं और मुख्य कार्यालय को समय–समय पर प्रत्येक ब्रांच की कार्य प्रणाली के बारे में कई तरह की सूचनाओं की आवश्यकता पड़ सकती है। ये सूचनाएं प्रदान करना तभी संभव होगा जब ब्रांचे उचित लेखा पुस्तकें रखें। इस प्रकार ब्रांच लेखे रखने के मुख्य कारणों को संक्षेप में यों कहा जा सकता है:

i) लेखा अवधि के लिए प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करना;

ii) लेखा वर्ष के अन्त में प्रत्येक ब्रांच की वित्तीय स्थिति का पता लगाना;

iii) ब्रांचों के लेन–देनों के शुद्ध प्रभाव को और उनकी परिसम्पत्तियों और देयताओं को फर्म के अन्तिम लेखा में समाविष्ट करना;

iv) प्रत्येक ब्रांच के लिए स्टॉक और नकद राशि की आवश्यकता का अनुमान लगाना;

v) प्रत्येक ब्रांच के कार्य और उसकी प्रगति का मूल्यांकन करना;

vi) यदि मैनेजरों को दिया जाने वाला कमीशन ब्रांच के लाभ पर आधारित है तो उसका परिकलन करना;

vii) प्रत्येक ब्रांच में व्यापार के विस्तार की सम्भावनाओं का पता लगाना; और

viii) अंकेक्षण (audit) संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना।

13.3 ब्रांचों की श्रेणियां

लेखाकरण की दृष्टि से ब्रांचों को निम्नलिखित श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

1. ऐसी ब्रांचे जो पूरे खाते स्वयं नहीं रखती
2. ऐसी ब्रांचें जो पूरे खाते स्वयं रखती हैं, और
3. विदेशी ब्रांचे

आइए, इन विभिन्न प्रकार की ब्रांचों की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करें।

ऐसी ब्रांचे जो पूरे खाते स्वयं नहीं रखती हैं: जो ब्रांचे पूरे खाते नहीं रखती हैं उन्हें **आश्रित ब्रांचे** भी कहा जाता है। ऐसी ब्रांचों की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

i) ये केवल मुख्य कार्यालय से प्राप्त किये गये माल को बेचती हैं और वे प्रायः मुख्य कार्यालय की इजाजत के बिना बाजार से माल नहीं खरीद सकती।

ii) मुख्य कार्यालय द्वारा ऐसी ब्रांचों को माल लागत मूल्य पर या बीजक मूल्य पर सप्लाई किया जाता है।

iii) ब्रांच के सभी प्रमुख खर्चों का भुगतान मुख्य कार्यालय द्वारा किया जाता है। ब्रांच के मैनेजर को केवल छोटे–छोटे खर्चे जैसे ढुलाई, डाक–व्यय आदि करने की अनुमति होती है। वह ये खर्चे उसे प्रदान की गई खुदरा रोकड़ (petty cash) में से करता है और इनके लिए उसे एक साधारण खुदरा रोकड़ बही (Petty Cash Book) रखनी होती है।

iv) नकद बिक्री और देनदारों से प्राप्त राशि या तो प्रतिदिन मुख्य कार्यालय को भेज दी जाती है या किसी स्थानीय बैंक में मुख्य कार्यालय के खाते में जमा कर दी जाती है।

v) ब्रांच मैनेजर से सामान्यतया माल नकद बेचने की अपेक्षा की जाती है लेकिन कुछ स्थितियों में उसे माल उधार बेचने का भी अधिकार दिया जा सकता है।

vi) ऐसी ब्रांचे पूर्ण लेखा पुस्तकें नहीं रखती। ये केवल बिक्री के रिकार्ड रखती हैं और यदि आवश्यक हो तो देनदारों के खाते बनाती हैं। इन्हें स्टॉक रजिस्टर भी रखना होता है और मुख्य कार्यालय को स्टॉक की स्थिति और माल के आने–जाने के बारे में पूर्ण जानकारी भी साप्ताहिक या मासिक विवरणों के रूप में प्रस्तुत करना होता है। इससे मुख्य कार्यालय ब्रांच के स्टॉक पर उचित नियंत्रण रख सकता है।

ऐसी ब्रांचे जो सम्पूर्ण लेखे रखती हैं: जो ब्रांच सम्पूर्ण लेखे रखती हैं उन्हें **स्वतंत्र ब्रांच** कहते हैं। इन्हें बाजार से माल खरीदने की भी अनुमति दी जाती है और यदि आवश्यक हो तो ये मुख्य कार्यालय को भी माल सप्लाई कर सकती हैं। ये प्राप्त की गई नकद राशि में से खर्च कर सकती हैं और अपने नाम से बैंक में खाता रख सकती हैं। अतः व्यावहारिक दृष्टि से ये स्वतंत्र इकाइयों की भांति कार्य करती हैं। मुख्य कार्यालय से इनका एकमात्र संबंध यह होता है कि मुख्य कार्यालय इनका स्वामी होता है और जो भी लाभ ये कमाती हैं या जो भी हानि इन्हें होती है, अंततः वे मुख्य कार्यालय के होते हैं।

ऐसी ब्रांचे अपनी सारी पुस्तकें दोहरी प्रविष्टि प्रणाली (double entry System) के आधार पर रखती हैं और अपना तलपट (Trial Balance), व्यापार तथा लाभ–हानि खाता, और बैलेन्स शीट बनाती हैं। ये अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय का खाता खोलती हैं और इस खाते में मुख्य कार्यालय से होने वाले सभी लेन–देनों को दर्ज करती हैं।

विदेशी ब्रांचे: जब कोई ब्रांच विदेश में स्थित होती है तो उसे विदेशी ब्रांच कहते हैं। ये ब्रांचे अपनी लेखा पुस्तकें विदेशी मुद्रा में रखती हैं। इनकी अन्य प्रकार की ब्रांचों से भिन्न

एक विशेषता यह है कि इनसे प्राप्त वित्तीय सूचनाएं विदेशी मुद्रा में होती हैं और इसे मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट करने से पहले मुख्य कार्यालय के देश की मुद्रा में परिवर्तित करना होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी भारतीय कम्पनी की एक ब्रांच नैरोबी में है तो ब्रांच का तलपट कीनिया की शिलिंग में होगा। मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट करने से पहले इसे रुपये में परिवर्तित करना होगा। व्यावहारिक रूप में विदेशी ब्रांचों को स्वतंत्र ब्रांचों की भांति माना जाता है।

ब्रांचों का सम्पूर्ण वर्गीकरण चित्र 13.1 में दिखाया गया है:

चित्र 13.1

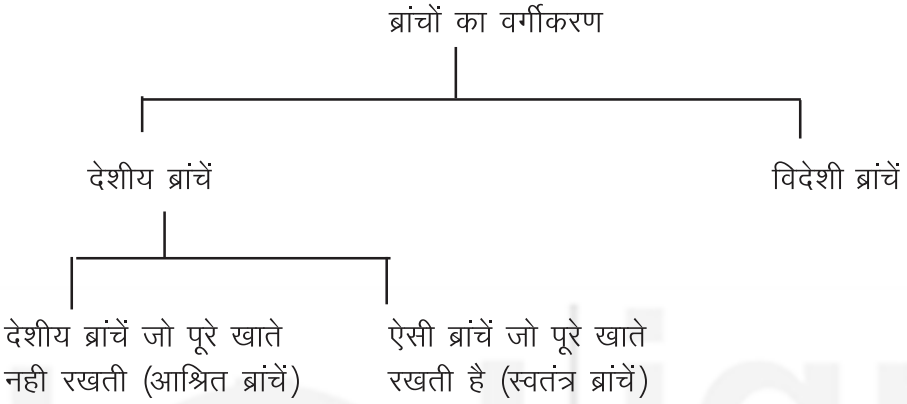

13.4 आश्रित ब्रांचों का लेखा

आप जानते हैं कि आश्रित ब्रांचे पूरी लेखा पुस्तकें नहीं रखतीं। उनके अधिकांश लेन–देन मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में रिकार्ड किये जाते हैं। मुख्य कार्यालय किसी ब्रांच के लिए कैसी लेखा प्रणाली अपनाए, यह ब्रांच के आकार और मुख्य कार्यालय द्वारा उस पर रखे जाने वाले नियंत्रण की मात्रा पर निर्भर करता है। वे विभिन्न विधियाँ जिनके द्वारा मुख्य कार्यालय प्रायः अपनी पुस्तकों में ब्रांच के खाते रखता है निम्नलिखित हैं :

i) **देनदार प्रणाली (Debtors System)**: यह प्रणाली सामान्यतः उन ब्रांचों के लिए अपनायी जाती है जिनका आकार छोटा होता है। इसके अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिए केवल एक ब्रांच खाता (Branch Account) खोलता है जिसमें वह ब्रांच से संबंधित सारे लेनदेनों को रिकार्ड करता है। ब्रांच खाता ऐसे तरीके से बनाया जाता है जिससे कि ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायता मिले।

ii) **अन्तिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System)**: इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच का लाभ या हानि मालूम करने के लिए एक व्यापार एवं लाभ और हानि खाता (Trading and Profit and Loss Account) बनाता है और उस ब्रांच को देय राशि तथा उसके द्वारा देय राशि ज्ञात करने के लिए एक ब्रांच खाता बनाता है। यह ब्रांच खाता केवल एक व्यक्तिगत खाते का काम करता है।

iii) **स्टॉक और देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System)**: इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय कोई ब्रांच खाता नहीं खोलता। प्रत्येक ब्रांच के लाभ या हानि को ज्ञात करने के लिए यह ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account), ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account) और ब्रांच को भेजे गए माल का खाता (Goods Sent to Branch Account) बनाता है।

13.5 देनदार प्रणाली (Debtors System)

जैसा पहले बताया गया है देनदार प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिए एक ब्रांच खाता खोलता है जिसमें वह ब्रांच से संबंधित सभी लेन–देनों को रिकार्ड करता है। ब्रांच खाता, ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायक होता है। ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य पर या विक्रय मूल्य (जिसे बीजक मूल्य भी कहते हैं) पर बनाया जा सकता है। अतः ब्रांच खाता बनाने की दो विधियां हैं : (i) लागत मूल्य विधि और (ii) बीजक मूल्य विधि। आइये अब यह अध्ययन करें कि इन दोनों विधियों के अंतर्गत ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

13.5.1 लागत मूल्य विधि (Cost Price Method)

जब माल का बीजक लागत मूल्य पर बनाया जाता है तो ब्रांच से संबंधित विभिन्न लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियाँ की जाती हैं :

1) **For Goods sent to Branch**
Branch A/c Dr.
To Goods Sent to Branch A/c
(Being goods sent to branch)

2) **For return of goods to head office**
Goods Sent to Branch A/c Dr
To Branch A/c
(Being goods returned by the branch)

3) **For amount sent to branch for expenses**
Branch A/c Dr.
To Bank A/c
(Being cheque sent to branch for expenses)

4) **For amount received from branch**
Bank A/c Dr.
To Branch A/c
(Being cash or cheque received from branch)

5) **For closing goods sent to branch account**
Goods Sent to Branch A/c Dr.
To Purchases/Trading A/c
(Being balance transferred to Trading Account)

6) **For closing balances of assets at the branch**
Branch Assets A/c (Individually) Dr.
To Branch A/c
(Being closing balances of assets brought into account)

7) **For closing balances of liabilities at the branch**
Branch A/c Dr.
To Branch Liabilities A/c (Individually)
(Being closing balances of liabilities brought into account)

8) **For transferring profit or loss to the General Profit and Loss Account**

i) If profit

Branch A/c Dr.
To General Profit and Loss A/c
(Being branch profit transferred to General P & L A/c)

ii) If loss

General Profit and Loss A/c Dr.
To Branch A/c
(Being branch loss transferred to General P & L A/c)

ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं के अन्तिम शेष मुख्य कार्यालय की बैलेन्स शीट में दिखाये जाते हैं। अगले वर्ष के प्रारंभ में ब्रांच खाते में प्रारंभिक शेष दिखाने के लिए ऊपर दी गयी 6 और 7 प्रविष्टियों की उल्टी प्रविष्टियां की जाती हैं।

ब्रांच खाते का प्रारूप चित्र 13.2 में दिखाया गया है।

Figure 13.2: Proforma of Branch Account

Branch Account

Dr.			**Cr.**
To Opening Balances		**By Opening Balances**	
Stock		Creditors	
Debtors		Outstanding expenses	
Petty Cash		**By Bank**	
Furniture		Cash Sales	
Prepaid expenses		Collections from Debtors	
To Goods Sent to Branch A/c		(for remittances)	
To Bank A/c (for expenses of		By Goods Sent to Branch A/c	
any payment made by the H.O.		(goods returned by the	
on behalf of the Branch)		branch to head office)	
To Closing Balances		**By Closing Balance**	
Outstanding expenses		Petty Cash	
Creditors		Stock	
To Profit, if any		Debtors	
(Transferred to General		Furniture (at depreciated value)	
Profit & Loss A/c)		Prepaid Expenses	
		By Loss, if any	
		(Transferred to General	
		Profit & Loss A/c)	

उदाहरण 1 तथा 2 का अध्ययन कीजिए और समझने का प्रयत्न कीजिए कि दी हुई सूचनाओं के आधार पर ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 1

दिल्ली ब्रांच से संबंधित 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइए।

ब्रांच को भेजे गए चैक

ब्रांच में स्टॉक 1.1. 2018 को	रु.15,000	वेतन के लिए	9,000	
		किराया और कर के लिए	1,500	
		खुदरा रोकड़ के लिए	1,100	11,600

ब्रांच में देनदार 1.1. 2018 को	30,000	ब्रांच द्वारा वापस किया गया माल	2,000
ब्रांच में खुदरा रोकड़ 1.1. 2018	300	31.12. 2018 को ब्रांच में स्टॉक	25,000
ब्रांच को भेजा गया माल	2,52,000		
		31.12. 2018 को ब्रांच में खुदरा रोकड़	200
नकद विक्रय	60,000	31.12. 2018 को ब्रांच में देनदार	48,000
देनदारों से प्राप्ति	2,10,000		
उधार विक्रय	2,28,000		

हल :

Head Office Ledger
Delhi Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.			Rs.
To Balance b/d			By Cash:		
Branch Stock		15,000	Cash Sales	60,000	
Branch Debtors		30,000	Received from		
Branch Petty Cash		300	Debtors	2,10,000	2,70,000
To Goods sent to Branch A/c		2,52,000			
To Bank A/c			By Goods sent to Branch A/c		2,000
Salaries	9,000				
Rent & Taxes	1,500				
Petty Cash	1,100	11,600	By Balance c/d		
To Profit (transferred to General P & L A/c)		36,300	Branch Stock		25,000
			Branch Debtors		48,000
			Branch Petty Cash		200
		3,45,200			3,45,200

उदाहरण 2

संकट मोचन लि. वाराणसी ने 1 जनवरी, 2018 को मद्रास में अपनी एक ब्रांच खोली। 2018 वर्ष के लिए ब्रांच से संबंधित विवरण उपलब्ध हैं।

	Rs.		Rs.
ब्रांच को भेजा गया माल	75,000	खुदरा रोकड़ के लिए ब्रांच को भेजा गया रोकड़	6,000
ब्रांच में नकद विक्रय	50,000	31.12.2018 को ब्रांच में खुदरा रोकड़	500
ब्रांच में उधार विक्रय	60,000	31.12.2018 को ब्रांच में देनदार	5,000
मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किया गया ब्रांच के कर्मचारियों का वेतन	15,000	31.12. 2018 को ब्रांच में स्टॉक	27,000
मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किया गया ब्रांच का कार्यालय व्यय	12,000		

Prepare Branch Account to show the profit/loss from the branch for the year 2018.

Books of Sankat Mochan Ltd. Madras Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.			Rs.
To Goods sent to Branch A/c		75,000	By Bank A/c		
To Bank A/c			Cash Sales	50,000	
Salaries	15,000		Received from Debtors	55,000	1,05,000
Office expenses	12,000	27,000			
To Bank A/c (for petty expenses)		6,000	By Balance c/d:		
To Profit (Transferred to General			Branch Petty Cash		500
P & L A/c)		29,500	Branch Debtors		5,000
			Branch Stock		27,000
		1,37,500			1,37,500

नोटः देनदार से प्राप्त नकद राशि नहीं दी गई है।

Memorandum Madras Branch Debtors Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Credit Sales	60,000	By Cash Received (balancing figure)	55,000
		By Balance c/d	5,000
	60,000		60,000

कुछ विशिष्ट मदें (Some Peculiar Items)

खुदरा रोकड़ व्यय (Petty Cash Expenses): ब्रांच द्वारा जो खर्चे अपने खुदरा रोकड़ में से किये जाते हैं उनकी ब्रांच खाते में कोई प्रविष्टि नहीं की जाती। प्रथा के अनुसार ब्रांच खाते को खुदरा रोकड़ के प्रारम्भिक शेष (opening balance of petty cash) और मुख्य कार्यालय द्वारा भेजी गयी खुदरा रोकड़ की रकम (amount sent for petty cash) से डेबिट कर दिया जाता है तथा इसे खुदरा रोकड़ के अन्तिम शेष (closing balance of petty cash) से क्रेडिट कर दिया जाता है। ब्रांच खाते में इन तीन प्रविष्टियों का नेट डेबिट ब्रांच के खुदरा व्यय की राशि के बराबर होता है। उदाहरण के लिये, एक ब्रांच में खुदरा रोकड़ बही का प्रारंभिक शेष 200 रु. था। मुख्य कार्यालय ने ब्रांच को 300 रु. खुदरा व्यय के लिये भेजे। पूरे साल में ब्रांच ने 400 रु. के खुदरा व्यय किये। जब हम ब्रांच खाते को खुदरा रोकड़ के प्रारंभिक शेष 200 रु. और मुख्य कार्यालय द्वारा खुदरा व्यय के लिये भेजे गये 300 रु. की राशियों से डेबिट करेंगे तथा उसे खुदरा रोकड़ के अन्तिम शेष के 100 रु. की राशि से क्रेडिट करेंगे तो ब्रांच खाते में वास्तविक नेट डेबिट 400 रु. (200 + 300 – 100) का होगा जो ब्रांच द्वारा किये गये खुदरा व्यय की राशि (400 रु.) के बराबर है।

उधार विक्रय (credit sales), विक्रय वापसी (sales returns), अशोध्य ऋण (bad debts), देनदारों को छूट (discount allowed), आदिः ये सभी मदें ब्रांच के देनदारों से संबंधित हैं। इन सभी मदों को ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जायेगा। इसका कारण भी वही है जो खुदरा व्ययों पर लागू होता है। वास्तव में जब ब्रांच खाते को ब्रांच देनदारों के प्रारंभिक शेष (opening balance of debtors) से डेबिट तथा देनदारों से प्राप्त राशि (cash

received from debtors) और ब्रांच देनदारों के अन्तिम शेष (closing balance of debtors) से क्रेडिट किया जाता है तो उधार बिक्री आदि की राशियों का लेखाकरण अपने आप ही हो जाता है।

स्टॉक की कमी या आधिक्य (Shortage or surplus of stock): यह संभव है कि ब्रांच के स्टॉक की जाँच के समय स्टॉक कम या अधिक पाया जाए। इस कमी या आधिक्य को ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जाता क्योंकि ब्रांच खाते में जो अन्तिम स्टॉक (Closing Stock) क्रेडिट किया जाता है वह वास्तविक स्टॉक होता है और इस प्रकार स्टॉक की कमी या आधिक्य का लेखाकरण अपने आप ही हो जाता है।

स्थायी परिसम्पत्तियों का मूल्यह्रास (Depreciation of fixed asset): यह भी ब्रांच खाते में नहीं दिखाया जाता क्योंकि स्थायी परिसम्पत्तियों के अन्तिम शेष को मूल्यह्रास की राशि घटाकर ही ब्रांच खाते के क्रेडिट की ओर दिखाने की प्रथा है।

आप यह ध्यान रखिये कि आश्रित ब्रांचों का ब्रांच खाता बनाते समय निम्नलिखित मदों को छोड़ दिया जाता है।

1. खुदरा नकद खर्चे
2. उधार विक्रय
3. विक्रय वापसी
4. अशोध्य ऋण
5. देनदारों को दी गई छूट
6. स्टॉक में कमी या आधिक्य,
7. मूल्यह्रास

उदाहरण 3 देखिये और अध्ययन कीजिये कि ऊपर दी गयी मदों को दिखाये बिना ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 3

प्रताप ट्रैक्टर लि. इलाहाबाद की हिसार में एक ब्रांच है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इस ब्रांच के निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइए।

ब्रांच में स्टॉक 1.1. 2018	10,000	देनदारों को दी गई छूट	100
ब्रांच में देनदार 1.1. 2018	4,000	**ब्रांच को भेजा गया रोकड़**	
ब्रांच में खुदरा रोकड़ (1.1. 2018)	500	किराया	2,000
फर्नीचर 1.1 .2018	2,000	वेतन	2,400
पूर्वदत्त बीमा 1.1. 2018	150	खुदरा रोकड़	1,000
अदत्त वेतन 1.1.2018	1,00,000	बीमा (31.3. 2019)	600
ब्रांच को भेजा गया माल	80,000	ब्रांच द्वारा वापस किया गया माल	1,000
नकद विक्रय	30,000	देनदार द्वारा वापस किया गया माल	2,000
उधार विक्रय	40,000	ब्रांच में स्टॉक 31.12. 2018	5,000
देनदारों से प्राप्त राशि (सीधे मुख्य कार्यालय को)	35,000	ब्रांच द्वारा खुदरा व्ययों का भुगतान	850
देनदारों द्वारा नकद भुगतान	2,000		

फर्नीचर पर प्रतिवर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान कीजिए।

Hisar Branch Account

Dr.					**Cr.**
		Rs.			Rs.
To Balance b/d			By Balance b/d		
Branch Stock		10,000	Branch Outstanding Salaries		1,00,000
Branch Debtors		4,000			
Branch Petty Cash		500	By Cash:		
Branch Furniture		2,000	Cash Sales	30,000	
Branch Prepaid Insurance		150	Cash Received from Debtors	37,000	67,000
To Goods Sent to Branch	80,000		By Balance c/d		
Less : Return from Branch	1,000	79,000	Branch Stock		5,000
To Bank			Branch Petty Cash		650
Rent	2,000		Branch Debtors		4,900
Salaries	2,400		Branch Furniture		1,800
Petty Cash	1,000		Branch Prepaid Insurance		150
Insurance	600				
		6,000			
To Profit (Transferred to General P & L A/c)		77,850			
		1,79,500			1,79,500

नोटः 1. देनदारों से प्राप्त राशि में 2,000 रु. शामिल हैं जिसे देनदारों ने सीधे मुख्य कार्यालयों को दिया।

2. ब्रांच का अंतिम खुदरा रोकड़ शेष नहीं दिया गया है। इसे निम्नलिखित प्रकार से निकाला गया हैः

प्रारंभ में खुदरा रोकड़	500
जमाः मुख्य कार्यालय द्वारा भेजी गई राशि	1,000
	1,500
घटाः खुदरा रोकड़ व्यय	850
	650

3. मूल्यह्रास के लिए 200 रु. घटाने के बाद अंत में फर्नीचर को दिखाया गया है।

4. 31.12. 2018 को पूर्वदत्त बीमा 600 रु. का चौथाई भाग है।

5. ब्रांच देनदारों का अंतिम शेष नहीं दिया गया है। निम्नलिखित प्रकार से मेमोरेंडम ब्रांच देनदार खाता बनाकर इसे निकाला गया हैः

Memorandum Branch Debtors Account

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	4,000	By Cash Received from Debtors	37,000
To Sales (Credit)	40,000	By Sales Returns	2,000
		By Discount Allowed	100
		By Balance c/d (balancing figure)	4,900
	44,000		44,000

13.5.2 बीजक मूल्य विधि (Invoice Price Method)

जैसा कि परेषण (consignment) के संबंध में किया जाता है जिसके बारे में आप आगे की इकाई में पढेंगे। ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य से अधिक मूल्य पर बनाया जा सकता है इसे बीजक मूल्य कहते हैं, ऐसा मुख्यतया ब्रांचों के स्टॉक पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण रखने और लाभ की दर को ब्रांच मैनेजर से गोपनीय रखने के लिये किया जाता है। ऐसी स्थिति में ब्रांच खाते में माल संबंधी सभी प्रविष्टियां बीजक मूल्य पर की जाती हैं और भार (loading) [बीजक मूल्य और लागत मूल्य का अन्तर] के लिये आवश्यक समायोजनों को अन्त में निम्नलिखित अतिरिक्त जर्नल प्रविष्टियां करके रिकार्ड किया जाता है:

1) **For adjustment of loading in opening stock at branch**
Stock Reserve A/c Dr.
To Branch A/c

2) **For adjustment of loading in goods sent to branch less returns**
Branch A/c Dr.
To Goods Sent to Branch A/c

3) **For adjustment of loading in closing stock at branch**
Branch A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

उदाहरण 4 देखिये और अध्ययन कीजिये कि जब ब्रांच को भेजे गये माल का बीजक लागत मूल्य से अधिक मूल्य पर बनाया जाता है तो ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 4

मुकुन्द गैस कं. वाराणसी का गाजियाबाद में एक बिक्री ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक लागत मूल्य जमा $33\frac{1}{3}$ पर बनाया जाता है। व्यवस्था की गई है कि ब्रांच द्वारा प्राप्त सभी नकद राशि को प्रतिदिन बनारस स्टेट बैंक लि. में मुख्य कार्यालय खाते में जमा कर दिया जाए और इस संबंध में आवश्यक सूचना मुख्य कार्यालय को दे दी जाए। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए ब्रांच को हुए वास्तविक लाभ या हानि को दिखाते हुए मुख्य कार्यालय के लेजर में ब्रांच खाता और ब्रांच को भेजा गया माल खाता बनाइए।

	रु.		रु.
1.1.2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	12,000	किराया, रेट और कर	3,200
ब्रांच को भेजा गया माल (बीजक मूल्य पर)	96,000	वेतन और मजदूरी	4,800
1.1.2018 को देनदार	1,500	31.12. 2018 को देनदार	1,600
मूख्य कार्यालय को भेजा गया रोकड़	77,100	मुख्य कार्यालय को वापस किया गया (बीजक मूल्य पर)	16,000
विक्रय	77,000	स्टॉक में कमी (बीजक मूल्य पर)	200

हल

Books of Mukund Gas. Co., Varanasi
Ghaziabad Branch Account

Dr. **Cr.**

		Rs.		Rs.
To Balance b/d				
Branch Stock		12,000	By Cash Received	77,100
Branch Debtors		1,500	By Goods Returned by Branch A/c	16,000
To Goods Sent to Branch		96,000	By Stock Reserve A/c (loading in op. stock)	3,000
To Bank A/c			By Goods Sent to Branch A/c (loading in goods sent less returns)	20,000
Rent, Rates & Taxes	3,200		By Balance c/d	
Salaries & Wages	4,800	8,000	Branch Stock	14,800
To Stock Reserve A/c (loading in Cl. Stock)		3,700	Branch Debtors	1,600
To Profit (Transferred to General P & L A/c)		11,300		
		1,32,500		1,32,500

Goods Sent to Branch Account

	Rs.		Rs.
To Ghaziabad Branch A/c	16,000	By Ghaziabad Branch A/c	96,000
To Ghaziabad Branch A/c (loading on Rs. 80,000)	20,000		
To Trading A/c (transfer)	60,000		
	96,000		96,000

नोटः 1.) ब्रांच का अंतिम स्टॉक नहीं दिया गया है। निम्नलिखित प्रकार से मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक खाता बनाकर इसे ज्ञात किया गया है।

2) भार बीजक मूल्य का 25% है।

Memorandum Branch Stock Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	12,000	By Goods returned to Head Office	16,000
To Goods received form Head Office	96,000	By Sales	77,000
To Goods returned to Customers	...	By Shortage of stock	200
		By Balance c/d	14,800
	1,08,000		1,08,000

ध्यान दें कि मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक खाते में सभी राशियों को बीजक मूल्य पर लिखा गया है।

बोध प्रश्न क

1. आश्रित ब्रांच किसे कहते हैं ?

   .....

   .....

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों को भरिये।

   i) मुख्य कार्यालय द्वारा भुगतान किये गये ब्रांच के खर्चे को ब्रांच खाते में ..... किया जाता है।

   ii) ब्रांच खाते को भेजे गए माल खाते (Goods sent to Branch Account) का शेष ..... खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

   iii) यदि लागत मूल्य 100 रु. है और बीजक मूल्य लागत मूल्य जमा बीजक मूल्य का 20% के बराबर है तो बीजक मूल्य ..... रु. है।

   iv) भार (loading) बीजक मूल्य और लागत मूल्य ..... होता है।

   v) यदि प्रारंभिक और अन्तिम स्टॉक नहीं दिया हो तो उन्हें .....मूल्य पर ..... खाता बनाकर निकाला जा सकता है।

3. देनदार विधि के अन्तर्गत जो मदें ब्रांच खाते में नहीं दिखायी जाती उनकी सूची बनाइये।

   .....

   .....

   .....

   .....

13.6 अन्तिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System)

किसी आश्रित ब्रांच का लाभ या हानि ब्रांच का मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ–हानि खाता (Menorandum Branch Trading and Profit and Loss Account) बनाकर भी निकाला जा सकता है। यह खाता ब्रांच को भेजे गये माल के लागत के आधार पर बनाया जाता है (बीजक मूल्य पर नहीं)। ब्रांच के व्यापार एवं लाभ और हानि खाते के अतिरिक्त मुख्य कार्यालय ब्रांच खाता भी रखता है लेकिन इस प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता एक व्यक्तिगत खाता (personal account) ही होता है जो मुख्य कार्यालय और ब्रांच के केवल आपसी लेन–देनों को दर्शाता है। अतः ब्रांच खाते का शेष ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियों (net assets) को दर्शाता है।

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि लाभ या हानि कैसे निकाला जाता है और अन्तिम लेखा प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाता कैसे बनाया जाता है।

उदाहरण 5

ए वन लि. भोपाल की मद्रास में एक ब्रांच है जिसे लागत जमा 25% पर माल भेजा जाता है। मद्रास ब्रांच अपना विक्रय लेजर रखता है और उसे जो भी नकद राशि प्राप्त होती है उसे वह प्रति दिन मुख्य कार्यालय को भेज देता है। सभी व्ययों का भुगतान मुख्य कार्यालय करता है। 31 दिसंबर 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष में मद्रास ब्रांच के लेन–देनों का विवरण निम्नलिखित था।

	रु.		रु.
स्टॉक (1.1. 2018)	11,000	Return Inward आवक वापसी	500
देनदार (1.1. 2018)	100	ब्रांच को भेजे गए चैक:	
खुदरा रोकड़	100	किराया	600
नकद विक्रय	2,650	मजदूरी	200
उधार विक्रय	23,950	वेतन और अन्य व्यय	900
ब्रांच को भेजा गया माल	20,000	स्टॉक (31.12. 2018)	13,000
लेजर खाते पर वसूली	21,000	देनदार (31.12. 2018)	2,000
मुख्य कार्यालय को वापस किया गया माल	300	खुदरा रोकड़ (31.12. 2018) (जिसमें 25 रु. की विविध आय को शामिल नही किया गया है)	125
अशोध्य ऋण	300		
ग्राहकों को छूट	250		

31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए मेमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा मद्रास ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Memorandum Branch Trading and Profit & Lass Account for the year ending 31.12.2018

Dr.				**Cr.**
	Rs.			Rs.
To Opening Stock (11,000 – 2,200) (1/5 loading)	8,800	By Sales		
		Cash	2,650	
To Goods sent to Branch (20,000 – 4,000) (1/5 loading)	16,000	Credit	23,950	
			26,600	
To Wages	200	Less Returns	500	26100
To Gross Profit c/d	11,740	By Goods sent to HO. (300-60) 1/5 loading		240
		By Closing Stock (13,000 – 2,600) (1/5 loading)		10,400
	36,740			36,740
To Bad Debts	300	By Gross Profit b/d		11,740
To Allowances	250	By Misc. Income		25
To Rent	600			
To Salaries and other expenses	900			
To Profit transferred to General Profit & Loss A/c	9,715			
	11,765			11,765

Madras Branch Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d		By Bank A/c	
Stock	8,800	Cash Received from	
Debtors	100	Debtors	21,000
Petty Cash	100	Cash Sales	2,650
To Goods sent to Branch A/c	16,000	By Goods Sent to Branch (returns to H.O.)	240
To Bank A/c		By Balance c/d	
Rent	600	Stock	10,400
Wages	200	Debtors	2,000
Salaries and other expenses	900	Petty Cash	125
To Profit as per Branch Trading and P & L A/c	9,715		
	36,415		36,415

13.7 स्टॉक एवं देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System)

इस प्रणाली के अन्तर्गत मुख्य कार्यालय अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाता नहीं बनाता। यह ब्रांच के विभिन्न लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिये कुछ नियंत्रण खाते (control accounts) बनाता है। ये खाते प्रायः (i) ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account), (ii) ब्रांच देनदार खाता (Branch Debtors Account), (iii) ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), (iv) ब्रांच रोकड़ खाता (Branch Cash Account), (v) ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account), और (vi) ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account) होते हैं। लेखा वर्ष के अन्त में (Branch Profit & Loss Account) बनता है। **यह प्रणाली केवल तब अपनाई जाती है जब माल का विक्रय बीजक मूल्य पर होता है जिसे ब्रांच घटा–बढ़ा नहीं सकता।**

आईये अब यह अध्ययन करें कि इस प्रणाली के अपनाने पर मुख्य कार्यालय द्वारा रखे गये ये खाते किस प्रकार बनाये जाते हैं।

ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account): यह सबसे महत्वपूर्ण खाता है जो मुख्य कार्यालय को ब्रांच के स्टॉक पर नियंत्रण रखने में सहायता प्रदान करता है। यह ब्रांच के माल संबंधी सभी लेन–देनों को दर्शाता है। ब्रांच को भेजे गये माल और विक्रय वापसी इसके डेबिट की ओर दिखाये जाते हैं और बिक्री (नकद और उधार दोनों) एवं मुख्य कार्यालय को वापस भेजे गए माल इसके क्रेडिट की ओर दिखाये जाते हैं। ये सभी मदें बीजक मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं। अतः यदि इन मदों में से किसी मद की राशि लागत पर दी हुई है तो उसे ब्रांच स्टॉक खाते में रिकार्ड करने से पहले बीजक मूल्य में परिवर्तित करना चाहिये। इस खाते का शेष ब्रांच के पास बिना बिके माल (स्टॉक) को दर्शायेगा। यदि ब्रांच का वास्तविक स्टॉक ब्रांच स्टॉक खाते द्वारा दिखाये जाने वाले शेष से कम पाया जाता है तो इसका अर्थ है कि ब्रांच के स्टॉक में कमी (shortage) है। इसी प्रकार, यदि ब्रांच में वास्तविक स्टॉक ब्रांच स्टॉक खाते के शेष से अधिक है तो यह ब्रांच के स्टॉक में आधिक्य (surplus) को दर्शाता है। दोनों ही स्थितियों में जांच करना उचित है। लेकिन जहां तक इन अन्तरों को रिकार्ड करने का संबंध है, 'कमी' को ब्रांच स्टॉक खाते के क्रेडिट की ओर दिखाया जाएगा और 'आधिक्य' को डेबिट की ओर। तब ब्रांच स्टॉक खाते का शेष ब्रांच के वास्तविक स्टॉक की सही राशि होगा। दूसरे शब्दों में, ब्रांच स्टॉक खाता बनाते समय आप इस खाते में ब्रांच का वास्तविक स्टॉक शेष के रूप में दिखायेंगे और तब यदि दोनों ओर का योग बराबर नहीं आता तो आप अन्तर को कमी या आधिक्य, जैसी भी स्थिति आये, के रूप में दिखायेंगे।

ब्रांच देनदार खाता (Branch Debtors Account): यह खाता ब्रांच के देनदारों से संबंधित सभी लेन–देनों को दिखाता है। उधार बिक्री इसके डेबिट की ओर दिखायी जाती है और देनदारों से प्राप्त नकद राशि, विक्रय वापसी, अशोध्य ऋण तथा दी गई छूट आदि इसके क्रेडिट की ओर दिखाये जाते हैं। इस खाते का शेष ब्रांच के अंतिम देनदारों (closing debtors) को दर्शाता है।

ब्रांच व्यय खाता (Branch ExpensesAccount): यह खाता ब्रांच द्वारा किये गये सभी खर्च दिखाता है। इसके अतिरिक्त, अशोध्य ऋण, दी गई छूट, ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास आदि मदें भी इस खाते में डेबिट की जाती हैं। इस खाते के शेष को ब्रांच समायोजन खाते में अंतरित करके इस खाते को बन्द कर दिया जाता है।

ब्रांच रोकड़ खाता (Branch Cash Account): यह खाता ब्रांच के सभी लेन–देनों को उस स्थिति में दर्शाता है जब ब्रांच को अपनी नकद प्राप्तियों को तुरन्त मुख्य कार्यालय

को समय–समय पर भेजती है। यह खाता मुख्य कार्यालय द्वारा ब्रांच के रोकड़ पर नियंत्रण रखने में सहायता करता है। सामान्यतया आश्रित ब्रांच नकद प्राप्तियों को अपने पास नहीं रख सकती। अतः इस खाते को बनाना जरूरी नहीं होता।

ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account): मुख्य कार्यालय ब्रांच की प्रत्येक प्रकार की परिसम्पत्ति जैसे फर्नीचर, मशीन, भवन आदि का अलग खाता रखता है। ये खाते सामान्य तरीके से बनाये जाते हैं। परंतु ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास ब्रांच व्यय खाते में डेबिट कर दिया जाता है और संबंधित खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है।

ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account): यह खाता उसी तरह बनाया जाता है जैसे कि ब्रांचों को माल बीजक मूल्य पर भेजे जाने कि स्थिति में बनाया जाता है।

ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account): यह खाता ब्रांच के व्यापार खाते जैसा होता है। यह विभिन्न मदों पर भार (loading) बीजक मूल्य और लागत का अन्तर को रिकार्ड करके ब्रांच के सकल लाभ या सकल हानि (gross profit or gross loss) ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। इसके डेबिट की ओर ब्रांच के प्रारंभिक स्टॉक पर भार, ब्रांच को भेजे गये माल वापसी घटाकर) और स्टॉक के आधिक्य को दिखाया जाता है। इस खाते का शेष सकल लाभ या सकल हानि दर्शाता है जिसे ब्रांच के लाभ–हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

ब्रांच का लाभ–हानि खाता (Branch Profit and Loss Account): यह खाता ब्रांच में हुए निवल लाम या निवल हानि को ज्ञात करने के लिये बनाया जाता है। जैसा कि पहले बताया गया है ब्रांच समायोजन खाते से ज्ञात किये गये सकल लाभ या सकल हानि को इस खाते में अंतरित कर दिया जाता है। इसे ब्रांच व्यय खाते द्वारा दिखाये गये ब्रांच व्यय और स्टॉक में कमी के कारण हुई हानि, जो ऐसी कमी के लागत मूल्य के बराबर होती है, से डेबिट किया जाता है। यदि ब्रांच स्टॉक खाता कुछ आधिक्य दर्शाता है तो इस आधिक्य की लागत की बराबर राशि ब्रांच के लाभ–हानि खाते के क्रेडिट की ओर दिखायी जाती है। ब्रांच के लाभ और हानि खाते का शेष निवल लाभ या निवल हानि को दर्शाता है जिसे सामान्य लाभ–हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

ब्रांच के विभिन्न लेन–देनों से संबंधित ऊपर बताये गये खाते खोलने के लिये मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियाँ की जाती हैं।

1) **When goods are sent to the branch (at invoice price)**

Branch Stock Ale	Dr.	
To Goods Sent to Branch A/c		

2) **When goods are returned by the branch to the H.O. (at invoice price)**

Goods Sent to Branch A/c	Dr.	
To Branch Stock A/c		

3) **When sales are made by the branch**

i) **For Cash Sales**

Cash A/c	Dr.	
To Branch Stock A/c		

ii) **For Credit Sales**

Branch Debtors A/c Dr.
To Branch Stock A/c

4) **When cash is received from debtors**

Cash A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

5) **For sales returns**

Branch Stock A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

6) **For discount allowed, bad debts, etc.**

Branch Expenses A/c Dr.
To Branch Debtors A/c

7) **For shortage of stock**

Branch Adjustment A/c Dr.
(with amount of loading)

Branch P & L A/c Dr.
(with cost of shortage)
To Branch Stock A/c

For surplus at branch, the reverse entry will be passed.

8) **For Branch expenses paid in Cash**

Branch Expenses A/c Dr.
To Cash A/c

9) **For closing branch expenses account**

Branch P & L A/c Dr.
To Branch Expenses A/c

10) **For adjustment of loading on the opening stock**

Stock Reserve A/c Dr.
To Branch Adjustment A/c

11) **For adjustment of loading on the closing stock**

Branch Adjustment A/c Dr.
To Stock Reserve A/c

12) **For adjustment of loading on net goods sent to branch**

Goods Sent to Branch A/c Dr.
To Branch Adjustment A/c

13) **For transfer of gross profit**

Branch Adjustment A/c Dr.
To Branch P & L A/c

14) **For transfer of net profit to General Profit & Loss Account**

Branch Adjustment A/c Dr
To General P & L A/c

The entry will be reversed if there is net loss.

15) **For closing the Goods Sent to Branch Account**
Goods Sent to Branch A/c
To Trading A/c

उदाहरण 6 देखिये और अध्ययन कीजिए की स्टॉक एवं देनदार विधि के अंतर्गत ब्रांच के लेन देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 6

इंडियाना ट्रेडर्स जयपुर ने 1.7. 2018 को जोधपुर में एक ब्रांच खोली। मुख्य कार्यालय द्वारा ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक ब्रांच के बिक्री मूल्य पर बनाया गया जो मुख्य कार्यालय के लागत मूल्य का 125% था।

जोधपुर ब्रांच की लेन देनों से संबंधित विवरण निम्नलिखित है:

	रु.		रु.	रु.
ब्रांच को भेजा गया माल (मुख्य कार्यालय की लागत पर)	2,80,000	**ब्रांच को भेजा गया** रोकड़		
नकद विक्रय	1,25,000	मजदूरी के लिए	3,000	
उधार विक्रय	1,75,000	मालभाड़ा के लिए	11,000	
Cash collected from debtors	1,55,000	गोदाम के किराए सहित अन्य व्ययों के लिए	6,000	20,000
दी गई छूट	4,000	30 जून 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)		55,500
गठ्ठरों में रखे हुए खराब हो गए कपड़ों को बीजक मूल्य पर अपलिखित किया गया	500			

स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत खाते बनाकर 30 जून, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए जोधपुर ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात कीजिए।

हल:

Branch Stock Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Goods Sent to Branch A/c	3,50,000	By Cash A/c (cash sales)	1,25,000
To Branch Debtors A/c (sales returns being balancing figure)	6,000	By Branch Debtors A/c (credit sales)	1,75,000
		By Branch Adjustment A/c (spoilage-loading)	100
		By Branch P & L A/ (spoilage-cost)	400
		By Balance c/d	55,500
	3,56,000		3,56,000

नोट: ब्रांच स्टॉक खाते के क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष से 6,000 से अधिक है। इसका कारण ग्राहकों द्वारा वापस किये गये माल को माना गया है।

Goods Sent to Branch Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Branch Adjustment A/c (loading)	70,000	By Branch Stock A/c	3,50,000
To Trading A/c	2,80,000		
	3,50,000		3,50,000

Branch Debtors Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Branch Stock A/c	1,75,000	By Cash A/c	1,55,000
		By Branch Stock A/c (returns)	6,000
		By Branch Expenses A/c (discount allowed)	4,000
		By Balance c/d	10,000
	1,75,000		1,75,000

Branch Expenses Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Cash A/c			
Wages	3,000	By Branch Profit & Loss A/c	24,000
Freight	11,000		
Other Expenses	6,000		
To Branch Debtors A/c (discount)	4,000		
	24,000		24,000

Branch Adjustment Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Branch Stock A/c (loading on spoilage)	100	By Goods Sent to Branch A/c (loading)	70,000
To Stock Reserve A/c (loading on closing stock)	11,100		
To Branch Profit & Loss A/c	58,800		
	70,000		70,000

Branch Profit & Loss Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Branch Expenses A/c	24,000	By Branch Adjustment A/c	58,800
To Branch Stock A/c (spoilage-cost)	400		
To Net Profit transferred to General P & L A/c	34,400		
	58,800		58,800

यह ध्यान रखिये कि यदि ब्रांच में माल की चोरी हो जाए या माल खराब हो जाए या रास्ते में कुछ माल खो जाए तो इसका लेखाकरण उसी प्रकार किया जाएगा जैसे माल में कमी हो जाने की स्थिति में किया जाता है। परंतु यदि स्टॉक की ऐसी असामान्य हानि के लिए बीमा कम्पनी से कुछ राशि प्राप्त होती है तो उसे ब्रांच के लाभ हानि खाते में क्रेडिट कर दिया जाता है।

बोध प्रश्न ख

1. अन्तिम खाते प्रणाली के अन्तर्गत बनाये गये ब्रांच खाते से देनदार प्रणाली के अन्तर्गत बनाया गया ब्रांच खाता किस प्रकार भिन्न होता है।

   .....

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों को भरियें:

   i) अन्तिम खाते प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच खाते का अन्तिम शेष ब्रांच की ..... को दर्शाता है।

   ii) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच व्यय खाता ..... खाते में अंतरित करके बंद कर दिया जाता है।

   iii) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत ब्रांच स्टॉक खाते में सभी राशियों ..... मूल्य पर रिकार्ड की जाती हैं।

   iv) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत जब ब्रांच मुख्य कार्यालय को माल वापस करती है तो ..... खाते को क्रेडिट किया जाता है।

   v) स्टॉक और देनदार प्रणाली के अन्तर्गत, अशोध्य ऋण ब्रांच देनदार खाते में क्रेडिट किये जाते हैं और ..... खाते में डेबिट किये जाते हैं।

   vi) यदि ब्रांच स्टॉक खाते का शेष ब्रांच के वास्तविक स्टॉक से भिन्न हो तो अन्तर ..... को दर्शाता है।

13.8 सारांश

लेखाकरण की दृष्टि से प्रत्येक ब्रांच को एक पृथक् लाभ केन्द्र माना जाता है। अतः ब्रांच के लेनदेन का लेखा इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक ब्रांच में हुए लाभ या हानि को सही–सही मालूम किया जा सके और उनकी वित्तीय क्रियाओं पर नियंत्रण रखा जा सके। इस उद्देश्य से ब्रांचों को तीन श्रेणियों में बांटा जाता है : (i) ब्रांच जो पूर्ण लेखे नहीं रखती (आश्रित ब्रांचे), (ii) ब्रांचे जो पूर्ण लेखे रखती हैं (स्वतंत्र ब्रांचे), और (iii) विदेशी ब्रांचें।

जहाँ ब्रांचे पूर्ण लेखे नहीं रखती, वहाँ मुख्य कार्यालय को ब्रांच के लेन–देन का उचित रिकार्ड रखना होता है। इसके लिये तीन विधियाँ हैं : (i) देनदार प्रणाली, (ii) अंतिम लेखा प्रणाली, और (iii) स्टॉक एवं देनदार प्रणाली।

देनदार प्रणाली प्रायः छोटी ब्रांचों के लिये अपनायी जाती है जो केवल विक्रय डिपो (sales depots) की तरह कार्य करती है। इस प्रणाली के अंतर्गत मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिये केवल एक ब्रांच खाता खोलता है जिसमे उससे संबंधित सभी लेन–देन रिकार्ड किये जाते हैं। ब्रांच खाता एक परेषण खाते की भांति बनाया जाता है जो ब्रांच द्वारा अर्जित लाभ या हानि ज्ञात करने में भी यह सहायता करता है।

अंतिम लेखा प्रणाली के अंतर्गत, मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच के लिये मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ–हानि खाता (Memorandum Trading and Profit Loss Account) ब्रांच द्वारा प्रदान किये गये आँकड़ों से बनाता है और लेखा अवधि के लिये उसका लाभ या हानि ज्ञात करता है। यह ब्रांच और मुख्य कार्यालय के आपसी लेन–देनों को रिकार्ड करने के लिये ब्रांच खाता भी बनाता है जो अन्त में ब्रांच को देय और ब्रांच द्वारा देय राशियाँ दर्शाता है। वास्तव में, इस खाते का शेष ब्रांच की निवल, परिसम्पत्तियों के बराबर होगा।

स्टॉक और देनदार प्रणाली वहाँ अपनायी जाती है जहाँ ब्रांच को माल विक्रय मूल्य पर भेजा जाता है। इस प्रणाली के अंतर्गत कोई ब्रांच खाता नहीं खोला जाता। मुख्य कार्यालय (i) ब्रांच स्टॉक खाता (Branch Stock Account) (ii) ब्रांच व्यय खाता (Branch Expenses Account), (iii) ब्रांच को भेजा गया माल खाता (Goods Sent to Branch Account), और ब्रांच स्थायी परिसंपत्ति खाता (Branch Fixed Assets Account) रखता है। लेखा अवधि के अन्त में, मुख्य कार्यालय ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account) और ब्रांच लाभ–हानि खाता (Branch Profit & Loss Account) तैयार करता है, जिनसे क्रमशः ब्रांच के सकल लाभ/सकल हानि और निवल लाभ/निवल हानि के संबंध में जानकारी हो सके। इस प्रणाली से मुख्य कार्यालय को ब्रांच स्टॉक पर प्रभावी नियंत्रण रखने में भी सहायता मिलती है।

13.9 शब्दावली

ब्रांच समायोजन खाता (Branch Adjustment Account): ब्रांच का सकल लाभ या सकल हानि ज्ञात करने के लिये स्टॉक एवं देनदार प्रणाली के अन्तर्गत बनाया गया एक खाता।

देनदार प्रणाली (Debtors System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसमें ब्रांच खाता खोला जाता है जो लाभ या हानि ज्ञात करने में भी सहायता करता है।

आश्रित ब्रांच (Dependent Branch): एक छोटी ब्रांच जो पूर्ण लेखे नहीं रखती।

अंतिम लेखा प्रणाली (Final Accounts System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसके अंतर्गत ब्रांच मेमोरेंडम व्यापार एवं लाभ और हानि खाता

(Memorandum Branch Trading and Profit & Loss Account) बनाकर ब्रांच का लाभ या हानि ज्ञात किया जाता है।

सामान्य लाभ–हानि खाता (General Profit & Loss Account): मुख्य कार्यालय का लाभ और हानि खाता जो पूरी व्यवसाय इकाई का लाभ या हानि दर्शाता है।

स्वतंत्र ब्रांच (Independent Branch): वह ब्रांच जो पूर्ण खाते रखती है।

भार (Loading): बीजक मूल्य और लागत मूल्य का अंतर

स्टॉक और देनदार प्रणाली (Stock and Debtors System): ब्रांच के लेन–देनों के लेखाकरण की एक प्रणाली जिसमें ब्रांच खाता नहीं खोला जाता। इस प्रणाली के अंतर्गत ब्रांच का लाभ या हानि ब्रांच समायोजन खाते (Branch Adjustment Account) से ज्ञात किया जाता है।

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 2. i) डेबिट ii) व्यापार iii) 125 iv) का अंतर v) बीजक मूल्य, मेमोरेंडम ब्रांच स्टॉक

ख) 2. i) निवल परिसम्पत्तियों ii) ब्रांच समायोजन iii) बीजक
iv) ब्रांच स्टॉक v) ब्रांच व्यय vi) कमी या आधिक्य

13.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. ब्रांच लेखे बनाने के क्या उद्देश्य हैं ?
2. आश्रित ब्रांच के लेखे रखने की तीन प्रणालियों के नाम बताइये और यह भी बताइये कि प्रत्येक प्रणाली के अंतर्गत लाभ कैसे ज्ञात किया जाता है।
3. यह समझाइये कि ब्रांच स्टॉक खाता किस प्रकार ब्रांच स्टॉक पर प्रभावपूर्ण नियंत्रण रखने में सहायक होता है।

अभ्यास

1 मुरादाबाद की कबीर एंड कपंनी की कानपुर में एक ब्रांच है। 31 दिसबंर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इस ब्रांच से संबंधित लेनदेनों का विवरण निम्नलिखित है।

		रु.
1 जनवरी, 2018 को प्रारंभिक स्टॉक		20,000
ब्रांच को भेजे गए माल		50,000
ब्रांच को भेजा गया रोकड़		
किराया के लिए	200	
अन्य व्ययों के लिए	100	300
वर्ष में ब्रांच से प्राप्त रोकड़		60,000
31 दिसंबर को अंतिम स्टॉक		15,000
31 दिसंबर को खुदरा रोकड़ का अंतिम शेष		10

उपर्युक्त सूचना के आधार पर जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता तथा अन्य आवश्यक खाते बनाइए।

(Answer : Branch Net Profit Rs. 4,710)

2. मेरठ की एक कंपनी का कोटा में एक रिटेल ब्रांच है जिसके पास सभी सामान मेरठ से भेजा जाता है। यह ब्रांच अपना बिक्री लेजर रखती है, देनदारों से रोकड़ प्राप्त करती है ओर प्राप्त रोकड़ की पूरी राशि प्रति दिन मुख्य कार्यालय को भेज देती है। मजदूरी और ब्रांच व्ययों के लिए आवश्यक रकम प्रति सप्ताह अग्रदाय पद्धति के अनुसार मुख्य कार्यालय से चैक से निकाली जाती है। ब्रांच मैनेजर द्वारा दी गई निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में ब्रांच खाता बनाइये।

	रु.		रु.
छह मास की उधार बिक्री	2,387	31 दिसबंर, 2018 को स्टॉक	1,121
आवक वापसी	20	1 जुलाई, 2018 को देनदार	1,227
देनदार से प्राप्त रोकड़	2,384	मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल	2,178
नकद बिक्री	1,214	किराया, करों आदि का भुगतान	375
1 जुलाई, 2018 को स्टॉक	720	विविध व्यय	396
अयोध्य ऋण	100		

(Answer : Net Profit 933; Missing figure – Closing Debtors Rs. 1,110)

3. कानपुर के रॉयल स्टोर ने 1 जुलाई, 2018 को मद्रास में एक विक्रय ब्रांच खोली। मुख्य कार्यालय से ब्रांच को माल लागत जमा 25% पर भेजा जाता है। ब्रांच को कहा गया है कि वह प्रति दिन रोकड़ बैंक में मुख्य कार्यालय के खातें में जमा कर दे। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में 31 दिसम्बर 2018 को समाप्त होने वाली अवधि के लिए ब्रांच खाता बनाइए। ब्रांच में खुदरा रोकड़ को अग्रदाय पद्वति (imprest system) के अनुसार रखा जाता है।

	Rs.		Rs.
खुदरा व्ययों के लिए ब्रांच को भेजा गया रोकड़	1,500	31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक petty expenses	80,000
ब्रांच के लिए खरीदा गया फर्नीचर	12,000	6 मास में उधार विक्रय	30,000
बीजक मूल्य पर ब्रांच को भेजा गया माल	1,60,000	देनदारों से प्राप्त रोकड़	22,000
		देनदारों को दी गई छूट	400
मुख्य कार्यालय द्वारा किए गए भुगतान		देनदारों द्वारा वापस माल (बीजक मूल्य पर)	800
किराया	2,200	अपलिखित अशोध्य ऋण	100
विज्ञापन	800	ब्रांच द्वारा खुदरा व्ययों का भुगतान	1,000
वेतन	4,600		
बीमा (30 जून, 2019 तक)	400	31 दिसम्बर को बीजक मूल्य पर स्टॉक (देनदारों से प्राप्त स्टॉक को छोड़कर)	40,000

फर्नीचर पर प्रति वर्ष 10% की दर से मूल्यह्रास का प्रावधान कीजिए।

(**Answer:** Profit Rs. 3,940; Debtors at the end Rs. 6,700)

4. मुम्बई के एक्स लि. की दिल्ली में एक ब्रांच है। मुख्य कार्यालय ब्रांच को लागत जमा 50% पर माल भेजता है निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में स्टॉक ओर देनदार प्रणाली के अंतर्गत आवश्यक खाते बनाइए।

	रु.		रु.
मुख्य कार्यालय से भेजा गया माल	50,000	उधार विक्रय	8,000
मुख्य कार्यालय को लौटाया गया	1,000	प्रारंभिक स्टॉक	10,000
नकद विक्रय	35,500	अंतिम स्टॉक	11,000

(**Answer:** Profit Rs. 11,500; Shortage of Goods Rs. 4,500)

5. दिल्ली के श्याम ब्रदर्स की हैदराबाद में एक ब्रांच है। स्टॉक पर कड़ा नियंत्रण रखने के लिए ब्रांच को भेजे गए माल का बीजक विक्रय मूल्य पर बनाया जाता है जिसमें विक्रय मूल्य पर 25% की दर से लाभ भी शामिल होता है। निम्नलिखित विवरणों के आधार पर ब्रांच स्टॉक खाता, ब्रांच देनदार खाता, ब्रांच को भेजा गया माल खाता, ब्रांच समायोजन खाता तथा ब्रांच लाभ–हानि खाता बनाइए।

	रु
1 जनवरी, 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	30,000
1 जनवरी, 2018 को देनदार	22,800
ब्रांच को भेजे गए माल को बीजक मूल्य पर बनाया गया	1,34,000
ब्रांच में विक्रय	
नकद	62,000
उधार	74,800
देनदारों से प्राप्त रोकड़	80,000
अपलिखित अशोध्य ऋण	500
ग्राहकों को दी गई छूट	600
ब्रांच में व्यय	13,400
31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक (बीजक मूल्य पर)	26,800

(Answer: Gross Profit Rs. 34,200; Net Profit Rs. 19,400)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 14 ब्रांच लेखा-II

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली

14.3 कुछ विशेष मदें

14.3.1 मार्गस्थ माल

14.3.2 मार्गस्थ रोकड़

14.3.3 मुख्य कार्यालय के ऐसे व्यय जो ब्रांच के नाम डाले जाते हैं।

14.3.4 ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं

14.3.5 ब्रांचों के आपसी लेन–देन

14.4 मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के तलपट का समावेशन

14.4.1 विस्तृत समावेशन

14.4.2 संक्षिप्त समावेशन

14.5 ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ

14.6 एक समग्र उदाहरण

14.7 सारांश

14.8 शब्दावली

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- किसी स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली की विशेषताओं का वर्णन कर सकें;
- स्वतंत्र ब्रांचों से संबंधित कुछ विशेष मदों की समायोजन प्रविष्टियाँ मुख्य कार्यालय और ब्रांच दोनों की पुस्तकों में कर सकें;
- ब्रांच के शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेश करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कर सके;
- ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ कर सकें;
- व्यापार की समेकित बैलेन्स शीट बना सकें।

14.1 प्रस्तावना

इकाई 13 में आपने एक आश्रित ब्रांच की लेखा प्रणाली के बारे में अध्ययन किया था। आश्रित ब्रांच प्रायः एक छोटी ब्रांच होती है जो केवल एक विक्रय डिपो के रूप में कार्य

करती है। यह पूर्ण लेखे नहीं रखती। ऐसी ब्रांचों के मुख्य रिकार्ड कार्यालय में रखे जाते हैं लेकिन जब ब्रांच एक स्वतंत्र इकाई के रूप में कार्य करती है और उसके पास काम करने की कुछ स्वायत्तता (operational autonomy) होती है तो वह पूर्ण लेखे रखती है। ऐसी ब्रांचों को स्वतंत्र ब्रांच (independent branch) कहते हैं और ये दोहरी प्रविष्टि (double entry system) के आधार पर पूर्ण लेखा पुस्तकें रखती हैं। ये अपना तलपट, लाभ-हानि खाता और बैलेन्स शीट स्वयं बनाती हैं। लेखा वर्ष के अंत में इनकी संक्षिप्त उपलब्धियों (summarised result) और परिसम्पत्तियों एवं देयताओं का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेश किया जाता है। इस इकाई में आप अध्ययन करेंगे कि मुख्य कार्यालय ब्रांचों के सभी शेषों का अपनी पुस्तकों में समावेश कैसे करता है और ब्रांच एवं मुख्य कार्यालय के आपसी लेन-देनों के लिये किस प्रकार के रिकार्ड रखे जाते हैं।

14.2 स्वतंत्र ब्रांच की लेखा प्रणाली

आप जानते हैं कि एक स्वतंत्र ब्रांच के पास काम करने की कुछ स्वायत्तता होती है। मुख्य कार्यालय से माल प्राप्त करने के अतिरिक्त यह बाहर से भी माल खरीद सकती है। यह अपना बैंक खाता रखती है और मुख्य कार्यालय के आदेशों के अनुसार समय-समय पर उसे पैसा भेजती है। इसे एक पृथक् लेखा इकाई की तरह माना जाता है। ऐसी ब्रांचों की लेखा प्रणाली की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. यह ब्रांच दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर पूर्ण लेखा पुस्तकें रखती है।

2. यह अपनी पुस्तकों में एक मुख्य कार्यालय खाता (Head Office Account) खोलती है। यह एक व्यक्तिगत खाता होता है जिसमें ब्रांच और मुख्य कार्यालय के बीच सभी लेन-देन ब्रांच स्तर पर रिकार्ड किये जाते हैं। इस खाते को मुख्य कार्यालय को भेजे गए रोकड़ और उसे वापस भेजे गये या सप्लाई किये गये माल की राशि से डेबिट कर दिया जाता है तथा मुख्य कार्यालय से प्राप्त माल की राशि और केन्द्रित सेवाओं (centralized services) के लिये ब्रांच के नाम डाले गये मुख्य कार्यालय के व्यय से क्रेडिट कर दिया जाता है।

3. मुख्य कार्यालय भी किसी विशेष ब्रांच के साथ किये गये सभी लेन-देनों के लिये अपनी पुस्तकों में एक ब्रांच खाता (Branch Account) रखता है। यह भी एक वैयक्तिगत खाता होता है जो वही प्रविष्टियाँ दिखाता है जो ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता दिखाता है लेकिन यहाँ ये प्रविष्टियाँ उल्टी ओर होती हैं यानि डेबिट की ओर होने वाली प्रविष्टियाँ क्रेडिट की ओर होती हैं और क्रेडिट की ओर होने वाली प्रविष्टियाँ डेबिट की ओर होती हैं।

4. लेखा अवधि के अंत में ब्रांच अपना तलपट (Trial Balance) और अंतिम लेखे (Final Accounts) बनाती है और उनकी प्रतिलिपियाँ मुख्य कार्यालय को भेजती है।

5. जैसे की मुख्य कार्यालय ब्रांच से तलपट प्राप्त करता है वह उसमें दिखाये गये मुख्य कार्यालय खाते के शेष की तुलना अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाते द्वारा दिखाये गये शेष से करता है। यदि इन दोनों में कोई अतंर होता है तो उसकी जाँच की जाती है और इस अतंर के कारण जान लेने के बाद आवश्यक समायोजन प्रविष्टियाँ (adjustment entries) कर दी जाती हैं।

6. मुख्य कार्यालय खाते के शेष का ब्रांच खाते के शेष से मिलान के बाद मुख्य कार्यालय विभिन्न ब्रांच शेषों को अपनी पुस्तकों में समावेश करने के लिये आवश्यक प्रविष्टियाँ करता है।

14.3 कुछ विशेष मदें (Some Peculiar Items)

स्वतंत्र ब्रांचों के संबंध में कुछ ऐसी मदें होती हैं जिनका लेखाकरण विशेष प्रकार से करना होता है। ये मदें निम्नलिखित हैं:

i) मार्गस्थ माल

ii) मार्गस्थ रोकड़

iii) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे

iv) ब्रांच की उन अचल परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनकें खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं।

v) ब्रांचों के आपसी लेन-देन

अब हम इन मदों पर एक-एक करके विचार करेंगे।

14.3.1 मार्गस्थ माल (Goods in Transit)

मुख्य कार्यालय और ब्रांच एक दूसरे को अक्सर ही माल भेजते रहते हैं। जब माल मुख्य कार्यालय से ब्रांच को भेजा जाता है तो मुख्य कार्यालय तुरन्त अपनी पुस्तकों में ब्रांच खाते को डेबिट कर देता है। लेकिन ब्रांच अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को केवल तभी क्रेडिट करती है जब वह माल प्राप्त कर ले। इसी प्रकार जब ब्रांच मुख्य कार्यालय को माल भेजती है या माल वापिस करती है तो वह अपनी पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को तुरन्त डेबिट कर देती है। लेकिन मुख्य कार्यालय ब्रांच खाते को तभी क्रेडिट करेगा जब उसे माल प्राप्त हो जाए। यह संभव है कि लेखा वर्ष की समाप्ति से कुछ समय पहले भेजा गया माल मुख्य कार्यालय या ब्रांच को लेखा वर्ष की अन्तिम तिथि तक न मिला हो। ऐसे माल को 'मार्गस्थ माल' कहते हैं ओर जिसे माल प्राप्त करना है उसकी पुस्तकों में खाते बन्द करने के समय इस माल की कोई प्रविष्टि नहीं होगी। अतः ब्रांच पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते का शेष और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते का शेष बराबर नहीं होंगे। इसके लिये एक समायोजन प्रविष्टि (adjustment entry) की आवश्यकता होती है जो या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की जाती है या ब्रांच की पुस्तकों में की जाती है, **लेकिन दोनों की पुस्तकों में नहीं की जाती।**

यदि मुख्य कार्यालय समायोजन प्रविष्टि करता है तो यह इस प्रकार होगी:

Goods in Transit A/c	Dr.	
To Branch A/c		

यदि समायोजन ब्रांच की पुस्तकों में किया जाता है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगी:

Goods in Transit A/c	Dr.	
To Head Office A/c		

यह ध्यान रखिये की मार्गस्थ माल के लिए समायोजन प्रविष्टि केवल एक ही पुस्तक में होगी या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तक में या ब्रांच की पुस्तक में। प्रायः ऐसी प्रविष्टि मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ही की जाती है।

14.3.2 मार्गस्थ रोकड़ (Cash in Transit)

माल की भांति रोकड़ भी मुख्य कार्यालय और ब्रांच एक दूसरे को नियमित रूप से भेजते रहते हैं। इसके लिये दोनों की पुस्तकों में प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं जैसे कि माल

के लिये की जाती हैं। यहाँ भी यह संभव है कि लेखा वर्ष के लिये लेखा पुस्तकें बन्द करने के समय कुछ भेजा गया रोकड़ रास्ते में हो। इससे फिर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते के शेष और ब्रांच पुस्तकों के मुख्य कार्यालय खाते के शेष में अन्तर आ जाएगा। अतः इसका समाधान करने के लिये समायोजन प्रविष्टि करनी पड़ेगी। यह प्रविष्टि या तो मुख्य कार्यालय द्वारा की जा सकती है या ब्रांच द्वारा लेकिन दोनों के द्वारा नहीं।

यदि मुख्य कार्यालय यह समायोजन प्रविष्टि करता है तो इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c Dr.
To Branch A/c

लेकिन यदि समायोजन ब्रांच की पुस्तकों में किया जाता है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c Dr.
To Head Office A/c

यह ध्यान रखिये कि मार्गस्थ रोकड़ के लिये भी प्रविष्टि केवल एक ही पुस्तक में की जाएगी, या तो मुख्य कार्यालय की पुस्तक में या ब्रांच की पुस्तक में। यह प्रविष्टि भी प्रायः मुख्य कार्यालय स्तर पर की जाती है। यह प्रविष्टि मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में करने का कारण यह है कि ब्रांच का तलपट प्राप्त करते समय वे सभी मदें जो रास्ते में हैं मुख्य कार्यालय को मालूम हो जाती हैं और इस समय ब्रांच की पुस्तकों में दिखाये गये शेषों को बदलना वांछनीय नहीं समझा जाता।

उदाहरण 1 देखिये और अध्ययन कीजिये की मार्गस्थ माल और मार्गस्थ रोकड़ की राशि कैसे ज्ञात की जाती है और ब्रांच खाते के शेष एवं मुख्य कार्यालय खाते के शेष के अंतर का समाधान करने के लिये समायोजन प्रविष्टियाँ किस प्रकार की जाती हैं।

उदाहरण 1

एक मुख्य कार्यालय और उसकी ब्रांच के तलपट निम्नलिखित है। मुख्य कार्यालय खाता और ब्रांच खाते के शेषों के समायोजन के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Trial Balance

Particulars	**Head Office**		**Branch Office**	
	Dr.	**Cr.**	**Dr.**	**Cr**
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Current Accounts	1,00,000			90,000
Goods sent/received by Branch		1,50,000	1,45 ,000	

हलः

चालू खाता मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाते को और ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते को दिखाता है। उपर्युक्त तलपट के अनुसार इन दो चालू खातों के शेष में 10,000 रु. का अंतर है। हम देखते है कि ब्रांच को भेजे गए और ब्रांच द्वारा प्राप्त किए गए माल मे 5,000 रु. का अंतर है। ऐसा मार्गस्थ माल के कारण हो सकता है। शेष 5,000 रु. का अंतर मार्गस्थ रोकड़ के कारण हो सकता है। मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में आवश्यक समायोजन प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से की जाएंगीः

Cash in Transit A/c	Dr.	5,000	
Goods in Transit A/c	Dr.	5,000	
To Branch A/c			10,000

(Being cash in transit and goods in transit adjusted)

किन्तु यदि यह प्रविष्टि मुख्य कार्यालय के बजाय ब्रांच की पुस्तकों की जाती है तो यह इस प्रकार होगीः

Cash in Transit A/c	Dr.	5,000	
Goods in Transit A/c	Dr.	5,000	
To Head Office A/c			10,000

(Being cash in transit and goods in transit adjusted)

14.3.3 मुख्य कार्यालय के ऐसे व्यय जो ब्रांच के नाम डाले जाते हैं (Head Office Expenses Chargeable to Branch)

मुख्य कार्यालय स्तर पर प्रदान की गयी केन्द्रित सेवाओं (centralized services) के लिए मुख्य कार्यालय अपने खर्चों का कुछ भाग ब्रांचों के नाम डालने का इच्छुक हो सकता है। वास्तव में मुख्य कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों का काफी समय ब्रांचों का कार्य करने में लग जाता है। अतः मुख्य कार्यालय यह निर्णय ले सकता है कि इन कर्मचारियों के वेतन पर किये गये व्यय का एक भाग ब्रांचों के नाम डाला जाए। खर्चों की कुछ अन्य मदों के संबंध में भी यही स्थिति हो सकती है। यदि मुख्य कार्यालय कुछ खर्चे ब्रांच के नाम डालने का निर्णय लेता है तो मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की गई जर्नल प्रविष्टि इस प्रकार होगीः

Branch A/c	Dr.	
To Expenses (Salaries A/c)		
(Being Head Office expenses chargeable to branch)		

इसके अनुरूप ब्रांच भी अपनी पुस्तकों में एक प्रविष्टि करेगी जो इस प्रकार होगीः

Head Office Expenses A/c	Dr.	
To Head Office		
(Being Head Office expenses chargeable to branch)		

अन्य व्यय खातों की भांति मुख्य कार्यालय व्यय खाता (Head Office) भी इसके शेष को लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच के लाभ-हानि खाते में अतंरित करके बंद कर दिया जाएगा।

14.3.4 ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं

कभी-कभी स्वतंत्र ब्रांचों की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में, जब भी ब्रांच के लिये कोई स्थायी परिसम्पत्ति खरीदी जाती है। तो मुख्य कार्यालय ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते (Branch Fixed Assets Account) को डेबिट कर देता है और रोकड़ खाते (Cash Account) को क्रेडिट कर देता है जब तक इस परिसम्पत्ति के क्रय के लिये ब्रांच खाते द्वारा भुगतान नहीं किया जाता, तब तक इसके लिये ब्रांच द्वारा कोई प्रविष्टि नहीं की जाती। यदि ऐसी परिसम्पत्ति के क्रय के लिये भुगतान ब्रांच द्वारा किया गया है तब भी ब्रांच अपनी पुस्तकों में स्थायी परिसम्पत्ति खाते को डेबिट नही करेगी। वास्तव में ऐसे भुगतान को मुख्य कार्यालय को भेजी गयी रोकड़ की भांति माना जाता है और इसलिये इसे मुख्य कार्यालय के खाते में डेबिट कर दिया जाता है।

लेकिन जहां तक ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास का प्रश्न है, ब्रांच को अपनी पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टि करनी होती है क्योंकि परिसम्पत्तियों का उपयोग ब्रांच ने किया है, मुख्य कार्यालय ने नहीं। सामान्यतया, स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिए प्रविष्टि मूल्यह्रास खाते को डेबिट करके और स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट करके की जाती है लेकिन इस स्थिति में ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट नहीं कर सकती क्योंकि इसकी स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। अतः ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिये की गयी प्रविष्टि मूल्यह्रास के लिये की जाने वाली सामान्य प्रविष्टि से भिन्न होती है। यह इस प्रकार की जाती है:

Depreciation A/c Dr.
To Head Office A/c
(Being depreciation on fixed assets)

क्योंकि ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में रखे जाते हैं अतः मुख्य कार्यालय को ब्रांच स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते के शेष को उनके मूल्यह्रास की राशि से घटाना होगा। लेकिन यह मूल्यह्रास खाते को डेबिट नहीं कर सकता क्योंकि यह हानि ब्रांच से संबंधित है। अतः जब ब्रांच की स्थायी परिसम्पत्तियों के खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं तो उनके मूल्यह्रास के लिये मुख्य कार्यालय निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि करता है:

Branch A/c Dr.
To Branch Fixed Assets A/c
(Being depreciation on branch fixed assets)

यह ध्यान रखिये कि ऊपर दी गयी प्रविष्टियाँ ब्रांच की केवल ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों के लिये की जाती हैं जिनके खाते मुख्य कार्यालय द्वारा रखे जाते हैं। ब्रांच की किसी भी ऐसी स्थायी परिस्म्पत्तियों, जिसका खाता वह स्वयं रखती है, उसके मूल्यह्रास के लिये ब्रांच सामान्य प्रविष्टि करेगी। ऐसी स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास की राशि के लिये मुख्य कार्यालय को अपनी पुस्तकों में कोई प्रविष्टि करने की आव यकता नहीं होती।

14.3.5 ब्रांचों के आपसी लेन–देन (Inter Branch Transactions)

जब किसी संगठन की एक से अधिक ब्रांचे होती हैं तो यह सम्भव कि ब्रांचों के बीच भी कुछ लेन-देन हो। ऐसा प्रायः मुख्य कार्यालय के आदेश के अर्न्तगत होता है। उदाहरण के लिये एक ब्रांच को अपने अतिरिक्त स्टॉक को किसी अन्य ब्रांच को जिसे उसकी आव यकता हो, के हवाले करने को कहा जा सकता है। ऐसी स्थिति में, स्टॉक भेजने वाली ब्रांच के लिये इसे मुख्य कार्यालय को वापस भेजे गये माल की तरह माना जाता है। इसी प्रकार, स्टॉक प्राप्त करने वाली ब्रांच इसे मुख्य कार्यालय से प्राप्त किए गए माल की तरह मानेगी। इसी आधार पर ब्राचों और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में प्रविष्टियाँ की जाती हैं। ये प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैं:-

In the books of the Head Office

Receiving Branch A/c Dr.
To Sending Branch A/c
(Being goods transferred from ..... branch to ..... branch)

In the books of the sending branch

Head Office A/c Dr.
To Goods Sent to H.O. A/c
(Being goods sent to ..... branch under instructions from H. O.)

In the books of the receiving branch

Goods from H.O. A/c Dr.
To Head Office A/c
(Being goods received from ..... branch under instruction from H.O.)

उदाहरण 2 में देखिए कि मुख्य कार्यालय की और ब्रांचों की लेखा पुस्तकों में उपर्युक्त विशेष मदों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 2

निम्नलिखित लेन-देनों का लेखा करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

i) मुख्य कार्यालय के निर्देश पर 1,000 रु. का माल मद्रास ब्रांच से बम्बई ब्रांच को भेजा गया।

ii) मुख्य कार्यालय द्वारा रखे गए ब्रांच स्थायी परिसम्पत्ति खाते पर मूल्यह्रास बम्बई 4,000 रु. और मद्रास 6,000 रु.।

iii) बम्बई ब्रांच ने मुख्य कार्यालय को 6,000 रु. 27 दिसंबर, 2018 को भेजे, जिसे मुख्य कार्यालय ने 7 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

iv) मुख्य कार्यालय ने 25 दिसंबर, 2018 को मद्रास ब्रांच को 10,000 रु. का सामान भेजा जिसे मद्रास ब्रांच ने 15 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

v) मुख्य कार्यालय द्वारा दी गई प्रशासनिक सेवाओं के लिए मद्रास ब्रांच के नाम 10,000 रु. की राशि को डालना है।

हल:

Head Office Books
Journal

			Rs.	Rs.
i)	Bombay Branch A/c To Madras Branch A/c (Being goods transferred from Madras branch to Bombay branch)	Dr.	1,000	1,000
ii)	Bombay Branch A/c To Branch Fixed Assets A/c (Being depreciation)	Dr.	4,000	4,000
iii)	Madras Branch A/c To Branch Fixed Assets A/c (Being depreciation)	Dr.	6,000	6,000
iv)	Goods in Transit A/c To Bombay Branch A/c (Being Goods in transit adjusted)	Dr	6,000	6,000
v)	Goods in Transit A/c To Madras Branch A/c (Being Goods in transit adjusted)	Dr	10,000	10,000
vi)	Madras Branch A/c To Gen. P & L A/c (Being Administrative expenses charged to Madras branch)	Dr.	10,000	10,000

बोध प्रश्न क

1. 'मार्गस्थ रोकड़' का अर्थ समझाइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2. मुख्य कार्यालय अपने खर्चों का एक भाग ब्रांचों के नाम क्यों डाल देता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3. सही उत्तर के सामने सही का निशान (√) लगाइये।

i) एक स्वतंत्र ब्रांचः

क) मुख्य कार्यालय से माल प्राप्त करती है।

ख) बाहर से माल खरीदती है।

ग) क और ख दोनों स्रोतों से माल प्राप्त करती है।

ii) ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते कोः

क) मुख्य कार्यालय को भेजे गये रोकड़ और उसे वापस किये गये माल से डेबिट किया जाता है।

ख) मुख्य कार्यालय से प्राप्त किये गये रोकड़ एवं माल और मुख्य कार्यालय द्वारा अपने खर्चों के उस भाग से डबिट किया जाता है जो ब्रांच के नाम डाले गये हैं।

ग) ऊपर (क) और (ख) में दी गई मदों में से किसी से भी डेबिट नहीं किया जाता ।

iii) मार्गस्थ माल के लिये समायोजन प्रविष्टि (adjustment entry)

क) ब्रांच की पुस्तकों में या मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में की जाती है।

ख) ब्रांच और मुख्य कार्यालय दोनों की पुस्तकों में की जाती है।

ग) दोनों में से किसी की पुस्तकों में नही की जाती।

iv) उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास के लिये जिनके खाते मुख्य कार्यालय रखता है, मुख्य कार्यालयः

क) स्थायी परिसम्पत्ति खाते को डेबिट करता है और ब्रांच खाते को क्रेडिट करता है।

ख) ब्रांच खाते को डेबिट करता है और उसके स्थायी परिसम्पत्ति खाते को क्रेडिट करता है।

ग) ऊपर दी गयी प्रविष्टियों में से कोई भी नहीं करता।

v) ब्रांचों के आपसी लेन-देनों की स्थिति में, प्रत्येक ब्रांचः

क) अन्य ब्रांचों के लिये पृथक् खाते खोलती है।

ख) कोई प्रविष्टि नहीं करती।

vi) ब्रांच द्वारा रखा गया मुख्य कार्यालय खाताः

क) वास्तविक खाता होता है

ख) वैयक्तिगत खाता होता है

ग) आय-व्यय खाता होता है

14.4 मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के तलपट का समावेशन

एक स्वंतत्र ब्रांच पूर्ण लेखे स्वयं रखती है और अपने अंतिम लेखे भी बनाती है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वर्ष के अंत में इसकी उपलब्धियाँ मुख्य कार्यालय के अंतिम लेखा में समाविष्टि नहीं की जाएंगी। वास्तव में किसी आश्रित ब्रांच की ही भांति, स्वतंत्र ब्रांच द्वारा आर्जित लाभ या हानि भी सामान्य लाभ-हानि (General Profit and Loss Account) में शामिल किया जायेगा। यह खाता पूरी कंपनी के लाभ या हानि को दर्शाता है। इसी प्रकार स्वतंत्र ब्रांच की परिसम्पत्तियाँ और देयताएँ (assets and liabilities) भी कंपनी की परिसम्पत्तियों और देयताओं के एक भाग के रूप में दिखाई जाएंगी। ऐसा करने के लिये मुख्य कार्यालय और उसकी ब्रांच की एक सयुंक्त (combined) या समेकित (consolidated) बैलेन्स शीट बनाई जाती है। अतः मुख्य कार्यालय के लिये लेखा अवधि के अंत में उपयुक्त जर्नल प्रविष्टियों के द्वारा ब्राचों के शेषों का अपनी पुस्तको में समावेश करना आवश्यक हो जाता है।

ब्रांच के शेषों का समावेशन करने के लिये दो कार्य करने होते हैं।

i) ब्रांच के लाभ या हानि का समावेशन, और

ii) ब्रांच की परिसम्पत्तियों और दायित्वों का समावेशन

ब्रांच के लाभ या हानि का समावेश करने के उद्देश्य से मुख्य कार्यालय या तो सभी आयगत मदों (revenue items) को शामिल करने के लिये विभिन्न प्रविष्टियाँ करे और ब्रांच का एक उचित व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाए या फिर एक मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाते (Memorandum Branch Trading and Profit and Loss Account) की सहायता से ब्रांच द्वारा अर्जित और लाभ-हानि ज्ञात करने के बाद उसकी केवल एक

प्रविष्टि करे। पहली विधि को 'विस्तृत समावेशन' (detailed incorporation) कहते हैं और दूसरी विधि को 'संक्षिप्त समावेशन' (abridged incorporation) कहते हैं (या केवल सरल विधि)। ब्रांच के लाभ-हानि के समावेश के लिये जो भी विधि अपनायी जाए ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं का समावेश करने के लिये की जाने वाली प्रविष्टियाँ वही रहती हैं।

14.4.1 विस्तृत समावेशन (Detailed Incorporation)

जैसा की पहले बताया जा चुका है, इस विधि के अंतर्गत, मुख्य कार्यालय एक उचित ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Branch Trading and Profit & Loss Account) बनाता है और अपनी पुस्तकों में ब्रांच परिसम्पत्तियों और देयताओं का समावेश करने से पहले सभी आयगत मदों के लिये प्रविष्टियाँ करता है। इस विधि के अंतर्गत की जाने वाली प्रविष्टियाँ निम्नलिखित हैं।

1) **For items on the debit side of the Trading Account**
Branch Trading A/c Dr.
To Branch A/c
(This entry is passed for the total amount of items like opening stock, net purchases, wages, goods received from HO., carriage inwards, etc.)

2) **For items on the credit side of the Trading Account**
Branch A/c Dr.
To Branch Trading A/c
(This entry is passed for the total amount of items like net sales, closing stock, etc.)

3) **For branch gross profit**
Branch Trading A/c Dr.
To Branch Profit & Loss A/c
(In case of gross loss, the above entry will be reserved)

4) **For items on the debit side of the Profit and Loss Account**
Branch Profit & Loss A/c Dr.
To Branch A/c
(This entry is passed for the total amount of items like salaries, rent, bad debts, repairs, depreciation, etc.).

5) **For items on the credit side of the Profit & Loss Account**
Branch A/c Dr.
To Branch Profit & Loss A/c
(This entry is passed for total amount of items like interest received, discount received, commission received, etc.)

6) **For branch net profit**
Branch Profit & Loss A/c Dr.
To General Profit & Loss A/c
(If there is net loss, the above entry will be reversed)

7) **For branch assets**
Branch Assets A/c Dr.
To Branch A/c
(Each asset should be debited individually)

8) **For Branch liabilities**

Branch A/c Dr.

To Branch Liabilities A/c

(Each liability credited individually. This should not include H.O. A/c balance)

ऊपर दी गयी प्रविष्टियों 7 एवं 8 के फलस्वरूप मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता बंद हो जायेगा क्योंकि जब शाखा के निवल लाभ या निवल हानि का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट कर लिया जाता है तो शाखा की निवल सम्पत्ति (परिसम्पतियाँ घटा देयताऐं) ब्रांच खाते के शेष के बराबर रह जाती हैं। अगले वर्ष की पुस्तकों में ब्रांच खाता खोलने के लिये और उसमें ब्रांच से प्राप्य राशि दिखाने के लिये अगले वर्ष के शुरू में मुख्य कार्यालय को इन दोनों प्रविष्टियों की उल्टी प्रविष्टियां करनी होती हैं।

उदाहरण 3 देखिये और अध्ययन कीजिये कि विस्तृत समावेशन के अंतर्गत ब्रांच शेष मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में किस प्रकार समाविष्ट किये जाते हैं।

उदाहरण 3

31 दिसंबर 2018 को कानपुर ब्रांच का तलपट निम्नलिखित थाः

Trial Balance

	Dr.	Cr.
	Rs.	Rs.
Stock on January 1, 2018	12,000	
Furniture	4,800	
Debtors	11,200	
Goods received from H.O.	32,000	
Salaries, rent and expenses	4,400	
Cash in hand	3,600	
Head Office Account		22,000
Sales		45,600
Sundry creditors		400
	68,000	68,000

31 दिसबंर, 2018 को स्टॉक 9,200 रु. था।

मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच का समावेश करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Head Office Books

JOURNAL

		Rs.	Rs
2018			
Dec.31	Kanpur Branch Trading A/c Dr	44,000	
	To Kanpur Branch A/c		44,000
	(Being incorporation of opening stock and goods received from HO.)		

" 31	Kanpur Branch A/c Dr. To Kanpur Branch Trading A/c (Being incorporation of branch sales and closing stock)	54,800	54,800
" 31	Kanpur Branch Trading A/c Dr. To Kanpur Branch P&L A/c (Being gross profit transferred to Branch P & L A/c)	10,800	10,800
" 31	Kanpur Branch P & LA/c Dr. To Kanpur Branch A/c (Being incorporation of branch expenses)	4,400	4,400
" 31	Kanpur Branch P & LA/c Dr. To General Profit & Loss A/c (Being incorporation of branch expenses)	6,400	6,400
" 31	Branch Closing Stock A/c Dr. Branch Furniture A/c Dr. Branch Debtors A/c Dr Branch Cash **A/c** Dr. To Kanpur Branch A/c (Being incorporation of branch assets)	9,200 4,800 11,200 3,600	 28,800
" 31	Kanpur Branch A/c Dr. To Branch Creditors A/c (Being incorporation of branch liabilities)	400	400

Kanpur Branch Account

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Branch Trading A/c	44,000
To Branch Trading A/c	54,800	By Branch P & L A/c	4.400
To Creditors	400	By Closing Stock	9,200
		By Furniture	4,800
		By Debtors	11,200
		By Cash	3,600
	77,200		77,200

14.4.2 संक्षिप्त समावेशन (Abridged Incorporation)

मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में शाखा शेषों (branch balances) का समावेश एक सरल विधि द्वारा भी किया जा सकता है जिसे 'सक्षिप्त समावेशन' कहते हैं। इस विधि के अंतर्गत हम एक मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता (Memorandum Branch Trading and Profit and Loss A/c) बनाते हैं और केवल निवल लाभ या निवल हानि की एक जर्नल प्रविष्टि करते हैं। इस प्रकार विस्तृत समावेशन विधि के अन्तर्गत छः प्रविष्टियाँ करने के स्थान पर केवल एक प्रविष्टि की जाती है जो निम्नलिखित रूप में होती है:

Branch Account Dr.
To General Profit & Loss A/c
Being branch net profit incorporated) d)

निवल हानि की स्थिति में ऊपर दी गयी प्रविष्टि की उलट प्रविष्टि की जाएगी।

उदाहरण 4 देखिये और अध्ययन कीजिये की सरल विधि द्वारा ब्रांच शेषों को मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कैसे समाविष्ट किया जाता है।

उदाहरण 4

उदाहरण 3 में दिए गए विवरणों के आधार पर मैमोरेंडम ब्रांच व्यापार एवं लाभ-हानि खाता बनाइए, कानपुर ब्रांच को समावेश करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में कानपुर ब्रांच खाता बनाइए।

हलः

Books of Head Office

Memorandum Kanpur Branch Trading and Profit & Loss Account for the year ended December 31, 2018

Dr.			**Cr.**
	Rs.		Rs.
To Opening Stock	12,000	By Sales	45,600
To Goods Received from H.O.	32,000	By Closing Stock	9,200
To Gross Profit c/d	10,800		
	54,800		54,800
To Salaries, Rent and Expenses	4,400	By Gross Profit b/d	10,800
To Net Profit	6,400		
	10,800		10,800

Solution

Journal

			Rs.	Rs.
2018				
Dec. 31	Kanpur Branch A/c	Dr.	6,400	
	To General Profit & Loss A/c			6,400
	(Being branch net profit incorporated)			
" 31	Kanpur Branch Closing Stock A/c	Dr.	9,200	
	Kanpur Branch Furniture A/c	Dr.	4,800	
	Kanpur Branch Debtors A/c	Dr.	11,200	
	Kanpur Branch Cash A/c	Dr.	3,600	
	To Kanpur Branch A/c			28,800
	(Being branch assets incorporated)			
" 31	Kanpur Branch A/c	Dr.	400	
	To Kanpur Branch Creditors A/c			400
	(Being branch liabilities incorporated)			

Kanpur Branch Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Balance b/d	22,000	By Closing Stock	9,200
To General Profit &	6,400	By Furniture	4,800
Loss A/c		By Debtors	11,200
To Creditors	400	By Cash	3,600
	28,800		28,800

14.5 ब्रांच की पुस्तकों में अंतिम प्रविष्टियाँ (Closing Entries in Branch Books)

लेखा अवधि के अंत में ब्रांच पुस्तकों को भी बंद करना होता है। इस उद्देश्य से ब्रांच सभी आगम मदों को अपने व्यापार तथा लाभ-हानि खाते में अंतरित करने के लिये सामान्य अंतिम प्रविष्टियाँ कर सकती है और अपना निवल लाभ या निवल हानि ज्ञात कर सकती है। निवल लाभ या निवल हानि को निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि द्वारा मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित किया जायेगाः

निवल लाभ की स्थिति में

Profit and Loss A/c Dr.
To Head Office A/c

निवल हानि की स्थिति में

Head Office A/c Dr.
To Profit and Loss A/c

निवल लाभ या निवल हानि को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करने के बाद मुख्य कार्यालय खाते का शेष ब्रांच की निवल संपत्ति (net assets) के बराबर होगा। इसके बाद ब्रांच अपनी बैलेन्स शीट बना सकती है। इसमें मुख्य कार्यालय खाते का शेष देयता के अंतर्गत दिखाया जायेगा क्योंकि मुख्य कार्यालय खाता सामान्यतया क्रेडिट शेष दर्शाता है। लेकिन यदि मुख्य कार्यालय खाते का शेष डेबिट है तो इसे बैलेन्स शीट में परिसम्पत्तियों के अंतर्गत दिखाया जायेगा। यदि आवश्यक समझें तो परिसम्पत्तियों तथा देयताओं के खाते भी उनके शेषों को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करके बंद किये जा सकते हैं। इसके लिए ब्रांच की पुस्तकों में निम्नलिखित दो प्रविष्टियाँ करनी होंगी।

1) **For transfers of assets**
Head Office A/c Dr.
To Assets A/c
The assets should be credited individually

2) **For transfer of liabilities**
Liabilities A/c Dr.
To Head Office A/c
(The liabilities should be debited individually)

इन दो प्रविष्टियों के फलस्वरूप मुख्य कार्यालय खाता भी बंद हो जायेगा क्योंकि अब इसमें कोई शेष नहीं होगा।

उदाहरण 5 देखिये और अध्ययन कीजिये कि ब्रांच अपनी पुस्तकें किस प्रकार बंद करती है।

उदाहरण 5

दिल्ली के एक व्यापारी की पटना में एक स्वतंत्र ब्रांच है। 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इसका तलपट निम्नलिखित है। पटना ब्रांच की पुस्तकों को बंद करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा मुख्य कार्यालय खाता बनाइए।

Trial Balance

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
Purchases	25,600	Creditors	5,400
Stock on 1.1.18	16,400	Sales	69,900
Wages	13,100	Head Office	28,000
Factory Expenses	6,800	Discount	300
Salaries	8,000	Purchase Returns	600
Rent	3,400		
Sundry Expenses	4,000		
Goods Received from HO.	14,400		
Debtors	11,000		
Cash	1,500		
	1,04,200		1,04,200

अतिरिक्त सूचना

1. ब्रांच स्थायी परिसंपत्ति के खाते मुख्य कार्यालय में रखे गये हैं जिसमें 50,000 रु. की मशीनरी और 2,000 रु. का फर्नीचर दिखाया गया है।
2. मशीनरी पर 10% और फर्नीचर पर 15% की दर से मूल्यह्रास लगाना है।
3. वेतन के लिए 300 रूपये देय हैं।
4. 31 दिसंबर, 2018 को ब्रांच ने 8,000 रु. भेजे जिसे मुख्य कार्यालय ने 3 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।
5. ब्रांच में अंतिम स्टॉक 28,700 रु. था।

हल:

Books of Patna Branch
Journal

2017			Rs.	Rs.
Dec.31	Depreciation A/c	Dr.	5,300	
	To Head Office A/c			5,300
	(Being depreciation on fixed assets accounts maintained by Head Office)			
" 31	Cash in Transit A/c	Dr.	8,000	
	To Head Office A/c			8,000
	(Being outstanding salaries)			
" 31	Salaries A/c	Dr.	300	
	To Salaries Outstanding A/c			300
	(Being outstanding salaries)			
" 31	Profit & Loss A/c	Dr.	2,200	
	To Head Office A/c			2,200
	(Being net profit transferred)			
" 31	Head Office A/c	Dr.	49,200	
	To Debtors			
	To Cash A/c			11,000
	To Cash in Transit A/c			1,500
	To Closing Stock A/c			8,000
	(Being assets account balance transferred)			28,700
" 31	Creditors A/c	Dr.	5,400	
	Salaries Outstanding A/c	Dr.	300	
	To Head Office A/c			5,700
	(Being liabilities account balances transferred)			

Head Office Account

Dr.				**Cr.**
	Rs.			Rs.
To Balance c/d	43,500	By Balance b/d		28,000
		By Depreciation A/c		5,300
		By Cash in Transit A/c		8,000
		By Profit & Loss A/c		2,200
	43,500			43,500
To Debtors	11,000	By Balance b/d		43,500
To Cash A/c	1,500	By Creditors		5,400
To Cash in Transit A/c	8,000	By Salaries outstanding A/c		300
To Closing Stock A/c	28,700			
	49,200			49,200

Trading and Profit & Loss Account

Dr.					Cr.
		Rs.			Rs.
To Opening Stock A/c		16,400	By Sales		69,900
To Purchases	25,600		By Closing Stock		28,700
Less Return	600	25,000			
To Goods from H.O.		14,400			
To Wages		13,100			
To Factory Expense		6,800			
To Gross Profit c/d		22,900			
		98,600			98,600
To Salaries	8,000		By Gross Profit b/d		22,900
Add O/s	300	8,300	By Discount		300
To Rent		3,400			
To Depreciation		5,300			
To Sundry Expenses		4,000			
To Net Profit		2,200			
		23,200			23,200

नोट :

1. आगम मदों के अंतरण के लिए अंतिम प्रविष्टियों को छोड़ दिया गया है।

2. समायोजन प्रविष्टियां और निवल लाभ के अंतरण के बाद मुख्य कार्यालय खाते में शेष 43,500 रु. है। यह पटना की निवल परिसम्पत्तियों के बराबर है जैसा कि नीचे दिखाया गया है

		रु.	रु.
परिसंपत्तियां			
	देनदार	11,000	
	रोकड़	1,500	
	मार्गस्थ रोकड़	8,000	
	अंतिम स्टॉक	28,700	
देयताएं			49,200
	लेनदार	5,400	
	अदत्त वेतन	300	5,700
	निवल परिसम्पत्तियां		43,500

3. मुख्य कार्यालय की परिसंपत्तियाँ और देयताओं के अंतरण के बाद यह बंद हो जाता है।

बोध प्रश्न ख

1. मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच शेषों को समाविष्ट करना क्यों आवश्यक है?

.....

.....

2. मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच शेषों को समाविष्ट करने की दो विधियाँ बताइये।

.....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों को भरियेः

i) शाखा शेषों को समाविष्ट करने की सरल विधि को ..... कहते हैं।

ii) ..... खाते को डेबिट करके और ..... खाते को क्रेडिट करके ब्रांच के निवल लाभ को मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समाविष्ट किया जा सकता है।

iii) मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच के निवल लाभ या निवल हानि की प्रविष्टियाँ करने के बाद ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियाँ ब्रांच खाते के ..... बराबर होंगी।

iv) निवल लाभ या निवल हानि मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करने के बाद ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते का शेष ब्रांच की ..... को दर्शाता हैं।

14.6 एक समग्र उदाहरण (A Comprehensive Illustration)

जैसा पहले बताया जा चुका है, कोई भी ऐसी संस्था जिसकी कुछ ब्रांचें होती हैं, पूरे संस्थान के लिये एक ही अंतिम लेखा प्रस्तुत करती हैं। वह मुख्य कार्यालय और विभिन्न ब्रांचों के लिये अलग-अलग अंतिम लेखे प्रस्तुत नहीं करती। अतः यह एक सामान्य लाभ-हानि खाता (General Profit and Loss Account) बनाती है जिसमें सभी ब्रांचों के लाभ-हानि शामिल होते हैं। इसी प्रकार मुख्य कार्यालय और ब्राचों दोनों की परिसम्पत्तियों तथा देयताओं को मिलाकर एक समेकित बैलेन्स शीट (Consolidated Balance Sheet) बनायी जाती है। उदाहरण 6 समेकित बैलेन्स शीट बनाने की विधि को समझने में सहायक होगा।

उदाहरण 6

31 दिसंबर 2018 को निम्नलिखित मुख्य कार्यालय और उसका ब्रांच का तलपट है।

Particulars	**Head Office**		**Branch Office**	
	Dr.	**Cr.**	**Dr.**	**Cr**
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Capital		1,50,000		
Fixed Assets	86,000		26,000	
Stock	34,700		20,700	
Debtors and Creditors	17,820	13,900	14,800	23,000
Cash	10,740		1,500	
Profit & Loss		14,720		13,100
Branch Office	29,360			
Head Office A/c				26,900
	1,78,620	1,78,620	63,000	63,000

31 दिसंबर, 2018 को व्यवसाय की बैलेन्स शीट बनाइए तथा निम्नलिखित के समायोजन के लिए लेखा पुस्तकों के दोनों सेटों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

क) ब्रांच ने 28 दिसंबर को मुख्य कार्यालय को 1,600 रु. का एक चैक भेजा परन्तु अभी तक वह मुख्य कार्यालय में प्राप्त नहीं हुआ है।

ख) मुख्य कार्यालय ने ब्रांच को 560 रु. का माल और उसका बीजक 30 दिसंबर को भेजा लेकिन यह अभी तक ब्रांच को प्राप्त नहीं हुआ।

ग) यह निर्णय हुआ कि वर्ष के दौरान मुख्य कार्यालय द्वारा प्रदान की गई प्रशासनिक सेवाओं के लिए ब्रांच के नाम 400 रु. डाला जाएगा।

घ) ब्रांच की परिसम्पत्तियों, जिसका लेखा मुख्य कार्यालय में रखा जाता है, पर मूल्यह्रास के लिए 1,250 रु. का प्रावधान करना है।

ड़) ब्रांच द्वारा दिखाए गए लाभ के शेष का अंतरण मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में करना है।

हलः

Head Office Journal

2018			Rs.	Rs.
1	Cash in Transit A/c Dr. To Branch A/c (Being cash sent by branch but not received by H.O. till December 31)		1,600	1,600
2	Goods in Transit A/c Dr. To Branch A/c (Being goods invoiced on December 31 not yet received by the branch)		460	460
3	Branch A/c Dr. To Gen. Profit & Loss A/c (Being administrative expenses charged by H.O. to the Branch)		400	400
4	Branch A/c Dr. To Branch Fixed Assets A/c (Being depreciation on branch fixed assets accounts maintained by H.O.)		1,250	1,250
5	Branch A/c Dr. To General P & L A/c (Being profit of branch transferred to General P & L A/c)		11,450	11,450

Branch Journal

2018			Rs.	Rs.
1	Profit & Loss A/c Dr To Head Office A/c (Being administrative expenses charged by H.O.)		400	400

2	Depreciation A/c Dr. To Head Office A/c (Being depreciation on Branch fixed assets accounts which are maintained by H.O.)	1,250	 1,250
3	Profit & Loss A/c Dr. To Head Office A/c (Being transfer of profit credited to Head Office A/c)	11,450	 11,450

Balance Sheet as on December 31, 2018

Liabilities		Rs.	Assets			Rs.
Capital		1,50,000	**Fixed Assets**			
Creditors			H.O.		86,000	
H.O.	13,900		Branch	26,000		
Branch	23,000	36,900	Less Dep.	1,250	24,750	1,10,750
Profit & Loss A/c			**Stock**			
H.O.	15,120		H.O.		34,700	
Branch	11,450	26,570	Branch		20,700	
			Goods in Transit		460	55,860
			Debtors			
			H.O.		17,820	
			Branch		14,800	32,620
			Cash			
			H.O.		10,740	
			Branch		1,500	
			Cash in Transit		1,600	
			Cash for Exp.		400	14,240
		2,13,470				2,13,470

कार्यकारी नोटः

1. ब्रांच और मुख्य कार्यालय में हुए लाभ को मुख्य कार्यालय और ब्रांच का लाभ-हानि खाता बनाकर ज्ञात किया गया है।

Branch Profit and Loss Account

Dr.			Cr.
	Rs.		Rs.
To Head Office Exp.	400	By Profit (as given)	13,100
To Depreciation	1,250		
To Profit taken to General P & L A/c	11,450		
	13,100		13,100

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Profit c/d	15,120	By Profit (as given)	14,720
		By Branch A/c	400
	15,120		15,120
To Net Profit			
(taken to Balance Sheet)	26,570	By Profit b/d	15,120
		By Branch A/c (profit made by branch)	11,450
	26,570		26,570

2. ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच खाता ऐसे होगा।

Branch Books
Head Office Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	40,000	By Balance b/d	26,900
		By H.O. Exp. A/c	400
		By Depreciation	1,250
		By P & L A/c	11,450
	40,000		40,000

Head Office Books
Branch Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	29,360	By Goods in Transit	460
To Branch Assets A/c	1,250	By Cash in Transit	1,600
To General P & L A/c	11,450	By Balance c/d	40,000
	42,060		42,060

3. मुख्य कार्यालय की लेखा पुस्तकों में ब्रांच खाते के शेष तथा ब्रांच की लेखा पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाते के शेष की राशि एक ही है, अर्थात् 40,000 रु. है लेकिन ब्रांच खाता शेष डेबिट शेष है जबकि मुख्य कार्यालय खाता शेष क्रेडिट शेष है। मुख्य कार्यालय खाते के साथ ब्रांच खाते को मिला देने के बाद इन दोनों के शेष एक-दूसरे को रद्द कर देते हैं, अतः इन्हे समेकित बैलेन्स शीट में नहीं दिखाया जाता है।

14.7 सारांश

स्वतंत्र ब्रांचें वे ब्रांचें है जो पूर्ण लेखा प्रणाली रखती हैं और जिन्हें कार्य करने की कुछ स्वायत्तता होती है। ये दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के आधार पर पूर्ण रिकार्ड रखती हैं और

अपने तलपट स्वयं बनाती हैं। मुख्य कार्यालय प्रत्येक ब्रांच का केवल एक वैयक्तिगत खाता है जो ब्रांच और मुख्य कार्यालय के बीच के सभी लेन-देनों को दर्शाता है। इसी प्रकार इसके अनुरूप प्रविष्टियाँ दिखाने के लिये प्रत्येक ब्रांच एक मुख्य कार्यालय खाता (Head Office Account) रखती है।

कुछ विशेष लेन-देन होते हैं जिनका मुख्य कार्यालय और ब्रांच दोनों की पुस्तकों में विशेष तरीके से लेखाकरण किया जाता है। ये हैं: (i) मार्गस्थ माल (ii) मार्गस्थ रोकड़ (iii) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे (iv) उन स्थायी परिसम्पत्तियों पर मूल्यह्रास जिनके खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं और (v) ब्रांचों के आपसी लेन-देन।

लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच अपना तलपट मुख्य कार्यालय को भेजती है। इससे मुख्य कार्यालय ब्रांच के सभी शेषों को अपनी पुस्तकों में समाविष्ट कर सकता है जिससे कि उन्हें सगठन के अंतिम लेखा में शामिल किया जा सके। ब्रांच के तलपट में दी गई सभी मदों के लिये समावेशन प्रविष्टियां (incorporation entries) की जा सकती हैं (इसे विस्तृत समावेशन कहते हैं) या केवल ब्रांच के लाभ-हानि (मेमोरेंडम ब्रांच लाभ ओर हानि खाते के आधार पर) और ब्रांच परिसम्पत्तियों एवं देयताओं के लिये समावेशन प्रविष्टियां करने के बाद ब्रांच खाते बंद हो जाते हैं। अगले वर्ष के प्रारंभ में ब्रांच की परिसम्पत्तियों और देयताओं के लिये समावेशन प्रविष्टियाँ की जा सकती हैं जो ब्रांच खाते के शेष को पुनः स्थापित करती हैं। ब्रांच अपने लाभ या हानि को मुख्य कार्यालय खाते में अंतरित करके अपनी पुस्तकें बंद कर देती है और इसके बाद मुख्य कार्यालय खाता जो भी क्रेडिट शेष दर्शाता है वह ब्रांच की निवल परिसम्पत्तियों के बराबर होता है।

14.8 शब्दावली

संक्षिप्त समावेशन (Abridged Incorporation): ब्रांच के विभिन्न शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में समावेशन की संक्षिप्त विधि।

मार्गस्थ रोकड़ (Cash in Transit): ब्रांच द्वारा भेजी गई राशि जो मुख्य कार्यालय द्वारा लेखा वर्ष के अंत तक प्राप्त न की गई हो, अथवा इसका उल्टा।

समेकित बैलेन्स शीट (Consolidated Balance Sheet): मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच की परिसम्पत्तियाँ और देयताओं की संयुक्त बैलेन्स शीट।

मार्गस्थ माल (Goods in Transit): मुख्य कार्यालय द्वारा भेजा गया माल जो ब्रांच को लेखा वर्ष के अंत तक प्राप्त नहीं हुआ, अथवा इसका उल्टा।

ब्रांचों के परस्पर लेन-देन (Inter Branch Transaction): दो या दो से अधिक ऐसी ब्रांचों के आपसी लेन-देन जो एक ही मुख्य कार्यालय के अंतर्गत आती हैं।

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) 3. i) ग ii) क iii) क iv) ख v) ग vi) ख

ख) 3. i) संक्षिप्त समावेशन

ii) ब्रांच सामान्य लाभ हानि

iii) शेष

iv) निवल परिसम्पत्तियाँ

14.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. लेखा वर्ष के अंत में ब्रांच शेषों का मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में किस प्रकार समावेशन किया जाता है ?

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये और बताइये कि इनका लेखा किस प्रकार किया जाता है:

   क) मार्गस्थ रोकड़

   ख) मार्गस्थ माल

   ग) ब्रांच के नाम डाले जाने वाले मुख्य कार्यालय के खर्चे

   घ) ब्राचों के आपसी लेन-देन

3. ब्रांच की उन स्थायी परिसम्पत्तियों के क्रय और मूल्यह्रास का लेखाकरण किस प्रकार करते हैं जिनके परिसंपत्ति खाते मुख्य कार्यालय के स्तर पर रखे जाते हैं?

अभ्यास

1. दिखाइए कि अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित लेन-देनों को रिकार्ड करने के लिए मुख्य कार्यालय द्वारा क्या जर्नल प्रविष्टियां की जाएंगी।

   क) मुख्य कार्यालय के आदेश पर 1,000 रु. का माल वाराणसी ब्रांच से इलाहाबाद ब्रांच को भेजा गया।

   ख) ब्रांच स्थायी परिसंपत्तियों पर 2,000 रु. का मूल्यह्रास जब इस प्रकार के परिसम्पत्ति खाते मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में खोले जाते हैं।

   ग) कलकत्ता ब्रांच ने 25 दिसंबर, 2019 को मुख्य कार्यालय को 3,000 रु. भेजे जिसे मुख्य कार्यालय ने 4 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

   घ) मुख्य कार्यालय ने 27 दिसंबर, 2018 को कलकत्ता ब्रांच को 10,000 रु. का माल भेजा जिसे उस ब्रांच ने 10 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

   ड़) इलाहाबाद ब्रांच ने मुख्य कार्यालय के इलाहाबाद स्थित ग्राहकों से 4,000 रु. वसूल किये।

   च) वाराणसी ब्रांच ने मुख्य कार्यालय द्वारा वाराणसी में खरीदी गई मशीनरी के लिए 25,000 रु. का भुगतान किया।

2. दिखाइए कि निम्नलिखित लेन-देनों को अपनी पुस्तकों में रिकार्ड करने के लिए सूरत ब्रांच द्वारा क्या जर्नल प्रविष्टियाँ की जाएंगी।

   क) कलकत्ता के मुख्य कार्यालय के आदेश पर 6,000 रु. का माल सूरत से लखनऊ ब्रांच को भेजा गया। इस संबंध में यह मान्यता है कि ब्रांचों के आपसी लेन-देन पर मुख्य कार्यालय नियंत्रण रखता है।

ख) लखनऊ ब्रांच की मशीनरी पर 4,000 रु. का मूल्यह्रास तथा सूरत ब्रांच की मशीनरी पर 3,000 रु. का मूल्यह्रास जब ब्रांच मशीनरी खाता मुख्य कार्यालय को पुस्तकों में रखा जाता है।

ग) सूरत ब्रांच ने मुख्य कार्यालय को 28 दिसंबर, 2018 को 10,000 रु. भेजे, लेकिन मुख्य कार्यालय ने इसे 4 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

घ) मुख्य कार्यालय ने 26 दिसंबर, 2018 को सूरत ब्रांच को 15,000 रु. का माल भेजा लेकिन सूरत ब्रांच ने इसे 2 जनवरी, 2019 को प्राप्त किया।

3. 31 दिसंबर, 2018 को वाराणसी ब्रांच का तलपट (Trial Balance) निम्नलिखित था:

Particulars	Debit Rs.	Credit Rs.
Stock on January 1, 2018	12,000	
Furniture	4,800	
Debtors	11,200	
Goods Received from Delhi HO.	32,000	
Salaries, Rent and Expenses	4,400	
Cash in Hand	3,600	
Delhi Office Account		22,000
Sales		45,600
Sundry Creditors		400
Total Rs.	68,000	68,000

31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक 9,200 रु. था। (1) वाराणसी ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता, बैलेन्स शीट तथा कार्यालय खाता बनाइए। (2) वाराणसी ब्रांच के तलपट को शामिल करने के लिए मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और वाराणसी ब्रांच खाता दिखाइए।

(**Answer:** Branch Profit Rs. 6,400; Balance Sheet Total Rs. 28,800; Head Office A/c Balance Rs. 28,400 and Total of Varanasi Branch A/c Rs. 77,200)

4. वाही बदर्स के कानपुर ब्रांच ने 31 दिसंबर, 2018 को निम्नलिखित तलपट (Trial Balance) मुख्य कार्यालय को भेजा।

	Rs.		Rs.
Sundry Debtors	12,000	Sundry Creditor	8,600
Cash in hand	6,250	Goods returned to H.O.	2,250
Furniture	1,900	Sales	1,12,500
Stock on 1-1-88	2,250	Head Office A/c	10,250
Goods from H.O.	34,000		
Purchases	66,450		
Wages & Salaries	5,500		
Trade Expenses	5,250		
1,33,600		1,33,600	

31 दिसंबर, 2018 को स्टॉक 5,200 रु. था। उपर्युक्त राशियों को शामिल करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच

खाता दिखाइए तथा ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता एवं बैलेन्स शीट दिखाइए।

(**Answer:** Branch profit Rs. 6,500; Balance Sheet Total Rs. 25,350; Total of Branch A/c Rs. 1,38,800.)

5. वाराणसी मुख्य कार्यालय के कानपुर ब्रांच का तलपट (Trial Balance) नीचे दिया गया है। ब्रांच की पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाता और बैलेन्स शीट बनाइए। ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय खाता भी दिखाइए।

Trial Balance

Rs.		Rs.	
Furniture & Fixtures	1,500	Cash in Bank	3,000
Purchases	20,000	Carriage etc.	150
Goods from H.O.	40,000	Bad Debts	100
Sales	80,000	Allowances to Customers	200
Sundry Debtor	10,000	Bills Receivable	4,000
Sundry Creditors	12,000	Stock on 1-1-2018	10,000
Head Office A/c Salaries	6,400	Returns Inwards	1,000
General Exp.	600	Returns to H.O.	400
Rent & Taxes	600		

Closing Stock on December 31, 2018 Rs. 9,000

(**Answer:** Branch Net Profit Rs. 10,350; Balance Sheet Total Rs. 27,500; H.O. A/c Balance including net profit Rs. 15,500.)

6. निम्नलिखित शेषों के आधार पर मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में ब्रांच चालू खाता और ब्रांच की पुस्तकों में मुख्य कार्यालय चालू खाता बनाइए।

Particulars	**Head Office**		**Branch**	
	Dr. Rs.	**Cr. Rs.**	**Dr. Rs.**	**Cr. Rs.**
Branch Current A/c	5,000	-	-	-
Goods sent to Branch	-	7,800	-	-
Goods received from H,O.	-	-	7,000	-
Head Office Current A/c	-	-	-	1,400

(**Answer:** Goods in Transit Rs. 800: Cash in Transit Rs. 2,800.)

7. एक लिमिटेड कंपनी का मुख्य कार्यालय दिल्ली में है तथा कोटा में उसकी एक ब्रांच है। ब्रांच मुख्य कार्यालय से तो माल प्राप्त करती ही है पर उसके साथ ही साथ बाहर के सप्लायरों से भी ब्रांच को माल आता है। ब्रांच लेखा पुस्तकों के अलग सैट रखती है। 30 जून, 2018 को मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच के तलपट निम्नलिखित थेः

Particulars	Head Office		Branch	
	Dr. Rs.	Cr. Rs.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
Share Capital	–	30,000	–	–
P & L Account balance on 1-7-18	–	4,000	–	–
Fixed Assets	16,000	–	8,000	–
Opening Stock	14,000	–	1,900	–
Debtors and Creditors	17,000	10,000	1,500	2,050
Cash	3,000	–	1,000	–
Purchases and Sales	1,20,000	1,40,000	6,750	20,500
Sundry Expenses	15,000	–	2,250	–
Goods from HO. to Branch	–	12,000	11,500	–
Current Accounts on 30-6-19	11,000	–	–	10,350
	1,96,000	1,96,000	32,900	32,900

मुख्य कार्यालय तथा ब्रांच चालू खातों के शेषों में अंतर का कारण यह था कि वर्ष के अंत में माल तथा रोकड़ मार्गस्थ (goods and cash being in transit) थे। स्थायी परिसंपत्तियों का मूल्यह्रास 10: की दर से करना है। 30 जून, 2019 को स्टाक थाः मुख्य कार्यालय 10,000 रु.और ब्रांच 2,100 रु.।

कंपनी की समेकित (consolidated) बैलेन्स शीट बनाइए। ब्रांच तलपट के समायोजनों और समावेशन के लिए जर्नल प्रविष्टियां भी दिखाइए।

(**Answer:** Balance Sheet Total Rs. 56,850.)

Hints: Goods in Transit Rs. 500; Cash in Transit Rs. 150; Branch Net Loss Rs. 600; H.O. Net Profit (excluding branch net loss) Rs. 11,400.

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

NOTES